अनोखी तृप्ति

ऑलिवर गोल्डस्मिथ

लखनऊ
अशोक प्रकाशन
१६५६

प्रथम हिन्दी संस्करण १९५६

अनुवादक
शिवकंठ त्रिवेदी

मुद्रक
रामायण प्रेस, प्रयाग

१
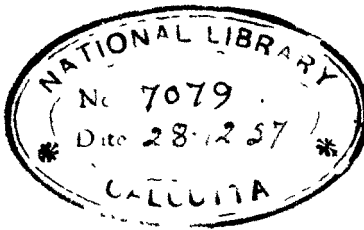
इन्सान दो तरह के होते हैं, एक वह जो शादी करते हैं, और भरे पूरे परिवार का पालन करते हैं और दूसरे वह जो अकेली जिन्दगी बसर करते हैं, बालू में उगे खजूर की तरह जो जीवन भर अकेले रहते हैं। मेरा पक्का विश्वास हमेशा से रहा है कि पहिली किस्म के आदमी ईमानदार आदमी हैं वनिस्बत दूसरी किस्म के लोगों के जो केवल आबादी की समस्या सुलझाने की बकवास किया करते हैं। अपने इसी विश्वास के कारण मैंने अपनी धर्मसंघ की सदस्यता के एक साल पूरा होने के पहले ही विवाह की समस्या पर गम्भीरता पूर्वक सोचना शुरू कर दिया। इतना ही नहीं, मैंने अपने लिये एक धर्मपत्नी भी उतनी ही आसानी से छाँटली जितनी आसानी से मेरी धर्मपत्नी ने अपनी शादी के कपड़ों का चुनाव किया था—यह चुनाव कपड़ों का केवल चमक देखकर ही न किया गया था; बल्कि कपड़े के टिकाऊपन का भी ख्याल रखा गया था। वास्तव में वह एक सुशील और अच्छी औरत थी और जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न है देहात में इन से अधिक पढ़ी लिखी स्त्री और कोई नहीं थी। वह कोई भी अंग्रेजी की पुस्तक जिसमें वर्ण विन्यास (spelling) अधिक न हो पढ़ लेती थी। किन्तु अचार बनाने, मुरब्बा बनाने तथा पाक शास्त्र में उसका कोई सानी नहीं था। घर का सुप्रबन्ध तथा देखभाल करने में वह

गर्व अनुभव करती थी; यद्यपि हम लोगों ने उसकी इस सारी सुव्यवस्था से अपने को अमीर होते नहीं पाया।

फिर भी हम लोग एक दूसरे को दिल से प्यार करते थे और यह प्यार हम लोगों की उमर के साथ बढ़ता गया। वास्तव में कोई ऐसी बात थी भी नहीं जो संसार में अथवा हम दोनों के बीच मन मुटाव का कारण बन पाती। हमारा घर साफ सुथरा और सुन्दर था। देहात में होने के साथ ही पड़ोस भी बढ़िया था। एक वर्ष तो नैतिक कार्यों अथवा देहाती खेल कूद और मन बहलाव में ही व्यतीत हो गया। कभी अमीर पड़ोसी से मिलते थे तो कभी गरीबों की सहायता करते थे। हमें न तो किसी क्रान्ति का खतरा था और न किसी तरह का परिश्रम ही करना पड़ता था। हम लोगों के सारे साहस भरे काम आग के किनारे बैठे बैठे हुआ करते थे और एक चारपाई छोड़कर दूसरी चारपाई पर जा बैठना देशान्तर गमन था।

घर सड़क के किनारे होने के कारण कोई न कोई राही अथवा अनजान आदमी आकर बैठ जाता और झरबेरी की शराब पी लेता। झरबेरी की शराब की वजह से हम लोग बहुत परिचित हो गए थे और एक इतिहासकार की सच्चाई के साथ मैं प्रतिज्ञा कर सकता हूँ कि अब तक किसी भी आगन्तुक को इस शराब में कोई भी बुराई नहीं मिल सकी। हमारे कुछ दूर के रिश्तेदार भी अक्सर आ जाया करते थे। यद्यपि हमने चालीसवीं बार जगह बदली थी पर उनके प्यार में जरा भी कमी नहीं हुई थी और वे किसी न किसी तरह पता लगा कर अक्सर पहुँच ही जाते थे हम सब को देखने के बहाने से—अभी तक हम लोगों को राज्याश्रय भी नहीं मिल पाया था। आने वालों के कारण मेरे सम्मान में वृद्धि की जरा भी आशंका नहीं थी क्योंकि यह लोग अन्धे तथा लूले लंगड़े होते थे। फिर भी मेरी पत्नी इन सब को अपने बराबर बिठाती तथा सम्मान करती थी। उसका कहना था, कि यह सब उसी खून मांस के बने हुए हैं जिसके हम हैं—अपने परिवार के हैं। इसलिए हमारे अतिथि बहुत अमीर तो नहीं पर अक्सर खुश मिजाज दोस्त होते थे। एक बात जो हमेशा सच्च रहेगी वह

यह कि जितना ही गरीब अतिथि होता है आवभगत से उतना ही संतुष्ट और प्रसन्न होता है और जैसे कुछ आदमी किसी बहुत रंगीन फूल अथवा तितली के रंगीन पंखों को बहुत नजर गढ़ाकर देखते हैं तथा बड़ी तारीफ करते हैं वैसे ही मैं अपने स्वभाव से खुश मिजाज आदमियों का बड़ा प्रशंसक हूँ। फिर जब हमारा कोई अतिथि बड़े खराब चरित्र का अथवा तकलीफ देह आदमी होता अथवा हम लोग उससे पीछा छुड़ाना चाहते तो चलते समय मैं उसे अपना कोट या अपने जूते या फिर कोई मामूली कीमत का थोड़ा उसको उधार दे देता था और मुझे बड़ा संतोष होता था जब वह लौट कर कभी वापस करने न आता था। इस प्रकार घर अनिश्चित चीजों मे बिल्कुल खाली हो गया था, मेरे इस वेकफील्ड के परिवार से कोई पथिक अथवा बेसहारा गरीब आदमी निराश न लौटा था और हम सब इस बात के लिये मशहूर भी हो गये थे।

इस तरह से हम लोगों ने कई वर्ष वहाँ हंस खेल कर बिता दिये। कभी कभी छोटी मोटी तकलीफें भी सामने आती थीं पर इससे तकलीफ होने के बजाय ईश्वर के द्वारा दी हुई सुविधाओं और सुखों के अनुभव में आनन्द ही आता। कभी कभी नन्हें नन्हें बच्चे स्कूल से भाग कर मेरी छोटी सी बगिया में चुपके से पिल पड़ते और नोच खसोट मचा देते थे। इसी तरह कभी कोई बिल्ली या कोई लड़का मेरी पत्नी द्वारा पकाये हुए अण्डे उठा ले जाता। कभी धर्मोपदेश के बहुत कारुणिक स्थल पर नम्बरदार साहब (Squire) को मैं सोता हुआ देखता तो कभी उनकी पत्नी मेरी पत्नी को उसके स्वागत पर अजीब ढंग से धन्यवाद देती हुई दिखाई देती। किन्तु बहुत जल्दी हम इस सब के अभ्यस्त हो गये तथा तीन चार दिन के बाद हम सब को उनके व्यवहार के अनोखेपन पर आश्चर्य न रहा।

मेरे बच्चे संयम से रहने तथा समुचित शिक्षा पाने के कारण स्वास्थ तथा सुशील थे, मेरे लड़के शक्तिवान तथा कार्यशील और मेरी लड़कियाँ सुन्दरी तथा युवा थीं। जब मैं अपने इस छोटे से परिवार के बीच, जो मेरे इन पके दिनों का सहारा था, खड़ा होता तो काउण्ट एवेन्स वर्ग की कहानी

जरूर दुहराता। हेनरी द्वितीय की जर्मनी की उन्नति के सिलसिले में जब और दरबारियों ने राजा को खजाने में भेंट किये तो एवेन्सबर्ग ने अमूल्य बत्तीस लड़को को लाकर खड़ा कर दिया। इस तरह, यद्यपि मेरे कुल छः ही लड़के थे, मैं उन्हें स्वदेश के लिये एक अमूल्य भेंट समझता था, और इसी बिना पर देश को मैं अपना ऋणी मानता था। मेरे सबसे बड़े लड़के का नाम मेरे बड़ भाइ के ऊपर जो दस हजार पाउण्ड की सम्पत्ति छोड़ कर मरे थे, जियार्ज रखा गया था। दूसरे नम्बर पर एक लड़की थी; मेरा इरादा था कि मैं उसका नाम उसकी चाची के नाम के ऊपर ग्रीजेल रखूँ, किन्तु मेरी पत्नी, जो अपनी गर्भावस्था म उपन्यास तथा कहानियाँ पढ़ रही थी, इस लड़की का नाम ओलीविया रखने पर जोर दे रही थी। एक साल के अन्दर ही एक लड़की और हुई और इस बार मैंने पक्का इरादा कर लिया कि मैं इसका नाम ग्रीजेल ही रखूंगा पर एक धनी रिश्तेदार को सूझा कि वह इस लड़की का नाम सोफिया रखें; और इस तरह से परिवार में दो रोमांचक नाम हो गये। पर मैं सच कहता हूं इन के नामकरणों में मेरा बिलकुल हाथ नहीं था। इसके बाद मोजेज पैदा हुआ और फिर बारह साल का अन्तर देकर दो लड़के और पैदा हुए।

यदि मैं इन्कार करूँ कि अपने छोटे छोटे नन्हें मुन्नों के बीच मुझे खुशी न होती थी तो गलत होगा। मेरी पत्नी को तो मुझसे अधिक गौरव और संतोष था। जब मेरे घर आने वालो में से कोई कहता, "श्रीमती प्रिमरोज मैं सच कहता हूँ, तुम्हारे बच्चे देश भर के बच्चो से अच्छे हैं"—"हाँ पड़ोसी" वह जवाब देती "जैसा ईश्वर ने बनाया है वैसे हैं—काफी सुन्दर हैं यदि वह सुन्दर और अच्छे काम करें, क्योंकि सुन्दर वही है जिस के सुन्दर काम होते हैं भलाई करने वाले ही भले कहे जाते हैं।" और तब वह लड़कियों को मुँह ऊपर उठाने की आज्ञा देती, वे वास्तव में बहुत सुन्दर थीं। मेरे लिए केवल बाहरी बनावट और सुन्दरता बहुत कम महत्व रखती है, और इसलिए मैंने इसका जरा भी जिक्र न किया होता यदि सारे देश में यही चर्चा का विषय न होता। ओलीविया अब अठारह

साल की थी—उसका सौन्दर्य पूर्ण विकास पर था—सौन्दर्य और युवावस्था की देवी, देवी की कल्पना कोई कलाकार ओलीविया को देख कर आसानी से कर सकता था। सोफिया पहली नजर में इतना न जँचती थी पर प्रायः वह अधिक आकर्षक थी, क्योंकि उसकी बनावट में कोमलता गम्भीरता और आकर्षण था।

साधारणतया स्त्रियों का स्वभाव उनके सौन्दर्य तथा शरीर की बनावट पर निर्भर करता है, कम से कम यह बात मेरी लड़कियों के विषय में बिलकुल सही है। ओलीविया बहुत से प्रेमियों की इच्छा रखती थी और सोफिया केवल एक को अपनाने की। ओलीविया खुश करने के लिए बहुत शृँगार और बनाव करती थी, सोफिया अपने सौन्दर्य को कुछ थोड़ा और छिपाती थी। एक उत्साह के साथ मेरा स्वागत करती जब मैं प्रसन्न होता, और दूसरी जब मैं गम्भीर होता बुद्धि से काम लेती। किन्तु उनका यह व्यवहार सीमित था और कभी कभी सारे दिन ओलीविया का व्यवहार सोफिया जैसा तथा सोफिया का व्यवहार ओलीविया का सा हो जाता। सबेरे का एक प्रेमोपहार मेरी विलास प्रिय लड़की को एक एक अति-विनीत शील स्त्री के रूप में बदल देता तो उसकी छोटी बहिन एक रिबन (बालों में लगाने का रेशमी फीते) का जोड़ा पाकर जरूरत से ज्यादा अस्वाभाविक उत्साह दिखाती। मेरे सबसे बड़े लड़के की शिक्षा दीक्षा आक्स-फोर्ड विश्वविद्यालय में हुई थी—क्योंकि मेरा विचार था कि यह किसी पठन पाठन सम्बन्धी पेशे को अख्तियार करे मेरे दूसरे लड़के मोजेज की शिक्षा घर पर ही हुई थी क्योंकि मैं उसे एक व्यापारी बनाना चाहता था। छोटे बच्चों के विशेष चरित्र वर्णन् का प्रयत्न बेकार है क्योंकि उन्हें इस दुनिया में आये बहुत थोड़े दिन हुये हैं। संक्षेप में सब में एक प्रकार की पारिवारिक एकरूपता थी और सच तो यह है कि उन सब का एक चरित्र था और वह था सहृदयता, सहज विश्वास, सादगी तथा दूसरों की भलाई की इच्छा।

२

घर के सारे ऐहिक उत्तरदायित्वों का सम्बन्ध मेरी पत्नी से था, पारलौकिक अथवा पूजा सम्बन्धी सारे कार्यों का भार एक मात्र मेरे कन्धों पर था और मेरे ही निर्देश से होता था। अपनी जीविका वृत्ति को जो केवल पैंतीस पाउन्ड वार्षिक थी मैं अपने क्षेत्र के अनाथों और विधवाओं में बांट दिया करता था क्योंकि अपनी खुद की सम्पत्ति होने के कारण मैं इस वेतन अथवा सांसारिक लाभ की परवाह न करता था और बिना किसी लाभ की आशा से काम करने के आनन्द का अनुभव करता था। मैंने यह भी दृढ़ संकल्प कर लिया था कि मैं अपना कोई सहायक क्यूरेट, नहीं रखूँगा और अपने धर्म क्षेत्र की सारी जनता से परिचय प्राप्त कर हर एक विवाहित आदमी को संयम और निग्रह की शिक्षा दूँगा और अविवाहितों का विवाह कराऊँगा। और इसलिए कुछ वर्षों में एक कहावत चल पड़ी कि वेकफील्ड में तीन अजीब कमियाँ हैं—पादड़ी गर्व की कमी, पत्नी चाहने वाले नवयुवकों की कमी और शराब की दूकानों में ग्राहकों की कमी।

विवाह मेरा हमेशा से प्रिय विषय रहा है और इसीके सुखों को सिद्ध करने के लिए मैंने कई उपदेश भी लिखे हैं, किन्तु एक विशिष्ट मत है जिसको मैंने समर्थन का आधार बना लिया है। ह्विस्टन की तरह मेरा सिद्धान्त है कि इग्लैण्ड के पादरी की पहली पत्नी के मर जाने पर दूसरा

विवाह करना अवैधानिक है। संक्षेप में मुझे 'एक पत्नी व्रत' होने पर गर्व है।

इस विवादग्रस्त विषय में जिस पर बड़े परिश्रम के साथ कई विशालकाय पुस्तकों की रचना हो चुकी है, मैंने बहुत पहले विचार करना प्रारम्भ कर दिया था। इस विषय पर मैंने स्वयं ही कुछ लेख लिखे कर छपवाए भी थे परन्तु वे बिक नहीं सके; मुझे संतोष है कि वे बहुत थोड़े भाग्यवानों द्वारा पढ़े जा सके। मेरे कुछ मित्र इसे मेरी कमजोरी कहते हैं किन्तु अफसोस, उन्होंने मेरी तरह इस विषय पर अधिक नहीं सोचा है। जितना ही मैं इस विषय पर सोचता था मुझे उतना ही अधिक महत्व पूर्ण लगता था। मैं अपने सिद्धान्तों के प्रदर्शन में ह्विस्टन से भी एक कदम आगे बढ़ गया। उन्होंने अपनी पत्नी की समाधि-स्तम्भ पर खुदवाया था, "ह्विस्टन की एक मात्र पत्नी" इसलिए मैंने भी अपनी पत्नी के लिए यद्यपि मेरी पत्नी अभी जीवित ही थी एक समाधि-स्तम्भ पत्र लिखा, जिसमें मैंने उसकी जीवन पर्यन्त बुद्धिमत्ता, मितव्ययिता और आज्ञाकारिता की प्रशंसा की थी। इतना ही नहीं मैंने उसे सुन्दर लिखावट में लिखाने के बाद एक खूबसूरत फ्रेम में मढ़वाकर चिमनी के पास रखवा दिया जिससे मेरे बहुत से उद्देश्यों की सिद्धि में सहायता मिली। इससे मेरी पत्नी मेरे प्रति अपने कर्त्तव्यों में सतर्क रहने लगी और मैं उसके प्रति ईमानदार; इससे उसे अपनी ख्याति के लिए उत्साह मिलता और वह अपने उद्देश्य को सदा अपने ध्यान में रखती।

शायद इसीलिए मेरे बड़े लड़के ने जो बराबर विवाह की आवश्यकता और महत्ता की चर्चा सुना करता था कालेज छोड़ते ही एक पड़ोसी पादरी की लड़की को प्यार करना शुरू कर दिया। यह पादरी चर्च में एक पदाधिकारी था तथा ऐसी सम्पन्न स्थिति में था कि वह अपनी लड़की के लिए पर्याप्त जीविका साधन छोड़ सकता था। किन्तु धन उसकी शोभा एवं सौंदर्य का तुच्छतम भाग था। मेरी दो लड़कियों के अतिरिक्त सारा परिचित समाज कुमारी अराबेला विल्मट को पूर्ण सौंदर्य की देवी

मानता था। वह पूर्ण युवती थी। उसकी आकर्षक चितवन तथा मुस्कान भरा चेहरा, उसके युवा एवं स्वस्थ शरीर तथा भोलेपन में चार चाँद लगा देता था। युवकों की तो बात ही क्या, ढलती हुई उमर के लोग भी उसे उदासीन दृष्टि से न देख सकते थे। श्री विल्मट मेरी आर्थिक स्थिति से पूर्ण परिचित थे, जानते थे मैं अपने लड़के के लिए काफी धन छोड़ सकता हूँ अतएव उनको इस विवाह सम्बन्ध में कोई आपत्ति नहीं थी। दोनों परिवारों के किसी सदस्य को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। अनुभव से हम लोग जानते हैं कि कोर्टशिप के दिन हम सब की जिन्दगी के सबसे सुखमय दिन होते हैं अतएव मेरी इच्छा थी कि इस अवधि को और अधिक बढ़ा दिया जाय—तरह तरह के मनोविनोद जो कि शीघ्र ही विवाह पाश में पड़ने वाले स्त्री और पुरुष एक दूसरे के साथ रहने में करते हैं, उनके पारस्परिक प्रेम को और बढ़ा देते हैं। सबेरे से ही मेरी बेटियाँ संगीत प्रारम्भ कर देतीं और यदि दिन अच्छा होता तो हम लोग शिकार खेलने भी जाते। सबेरे नाश्ता करने से दोपहर के भोजन तक का समय स्त्रियाँ बनाव शृंगार तथा पढ़ने में बिता देतीं अक्सर वे एक पृष्ठ पढ़तीं और फिर शीशे मे अपना चेहरा काफी देर तक घूर घूर कर देखती थीं दार्शनिकों को भी मानना पड़ेगा कि शीशा उस समय सौंदर्य का सर्वश्रेष्ठ पृष्ट बन जाता। भोजन के समय मेरी पत्नी अगुवा रहती—वह सदा भोजन अपने हाथों परोस कर सजाती थी—उसने यह अपनी मां से सीखा था—ऐसे मौके पर वह हर एक थाली और हर एक तश्तरी का पूरा इतिहास और कहानी सुना जाती। जब भोजन समाप्त हो जाता तो औरतों को रोकने के लिए मैं मेज हटवा दिया करता था; कभी कभी मेरी लड़कियाँ संगीत शिक्षा की सहायता से मुझे गाने सुना दिया करती थीं। दिन का शेष समय टहलने, चाय पीने, गाँव के नाच कूद देखने में बीत जाता था। मैं किसी तरह का खेल और फिर ताश तो बिलकुल नहीं पसन्द करता—हाँ कभी कभी अपने एक पुराने साथी के साथ बैकगेमन खेलने बैठ जाता और दो एक पेनी की चोट कर लेता। यहाँ पर एक दुर्घटना जो

पिछली बार खेलते समय हुई बिना कहे नहीं छोड़ सकता—मैंने चौआ फेकना चाहा लेकिन लगातार पाँच बार दुक्की ही निकली।

ईस तरह से कुछ महीने बीत गए, हम लोगों ने सोचा कि इन दो प्रेमियों के विवाह बन्धन की कोई तिथि निश्चित की जानी चाहिए; यह दोनों भी बड़े इच्छुक थे। विवाह की तैयारी के दिनों में अपनी पत्नी के व्यस्त क्षणों की महत्ता और अपनी लड़कियों की कपट भरी उत्तेजक चितवन का वर्णन मैं नहीं करना चाहता। वास्तव में इस समय मैं अपने प्रिय सिद्धान्त के समर्थन में एक छोटी सी पुस्तिका को प्रकाशित करने के लिए पूरी करने में लगा था। इस पुस्तिका को मैं शैली तथा तर्क दोनों दृष्टियों से एक बहुत उत्तम रचना मानता था और इस हार्दिक गर्व के कारण इसे मैं अपने पुराने मित्र मिस्टर विल्मट को दिखाये बिना न रह सका। मुझे पूरा विश्वास था कि उन्हें प्रति प्रापित सिद्धान्त स्वीकार अवश्य होगा—परन्तु शीघ्र ही मुझे ज्ञात हुआ कि मिस्टर विल्मट उसके विपरीत सिद्धान्त के कट्टर पक्षपाती हैं और उसका समुचित कारण भी है—उस समय उनका प्रस्ताव चल रहा था एक स्त्री से शादी करने का चौथी बार। जैसा कि आशा की जाती है, हम दोनों में मतभेद होने के कारण पारस्परिक व्यवहार में कुछ रूक्षता आ गयी और जिससे निकट भविष्य में ही होने वाले विवाह सम्बन्ध को भी खतरा मालूम पड़ने लगा। किन्तु विवाह की निश्चित तिथि से एक दिन पहले हम दोनों आसानी से विषय पर विवाद करने के लिए राजी हो गये।

दोनों पक्षों ने समुचित रूप से इसकी व्यवस्था की। उन्होंने मेरे ऊपर नास्तिक होने का अपराध लगाया। मैंने विरोध किया। उन्होंने विरोध का उत्तर देते हुए अपने सिद्धान्त का समर्थन किया। इसी बीच वाद विवाद जब खूब गरमी पर पहुँच गया था, मेरे एक सम्बन्धी ने मुझे बाहर बुला कर हित भरे शब्दों में मुझे—सलाह दी कि मुझे कम से कम अपने लड़कों के विवाह तक यह विवाद बन्द कर देना चाहिए।

नौ

"क्यों !" मैं गरज पड़ा "मैं सत्य का पक्ष छोड़ दूँ और इन्हें जो मूर्खता की सीमा तक पहुँच गए हैं फिर विवाह कर लेने दूँ ! तुम इसी तरह मुझे धन सम्पति सब का त्याग करने की सलाह दे सकते हो !"

"तुम्हारी धन सम्पत्ति !!" मेरे मित्र ने आश्चर्य मिश्रित घृणा के स्वर में कहा, "तुम्हें सूचना देते मुझे दुख होता है, तुम्हारा सारा धन तुम्हारे हाथ से निकल गया। शहर में रहने वाले व्यापारी सज्जन जिनके हाथ आपने सारी सम्पत्ति सौंप रखी थी दिवालिया घोषित होने से बचने के लिए सारी पूँजी लेकर नौ'दो ग्यारह हो गए। मैं विवाह के पहले तुम्हें या तुम्हारे परिवार को इस दुर्घटना के आघात से दुखी नहीं करना चाहता था, परन्तु चलो, इससे तुम्हारी बहस की गरमी कम पड़ेगी, क्योंकि मेरा विचार है कि अब आप, जब तक इस विवाह सम्बन्ध द्वारा भावी बहू की सम्पत्ति को हाथ में न कर लेंगे, अपनी बुद्धि से ही विवाद न बढ़ाएँगे।"

'अच्छा" मैने जवाब दिया "जो कुछ तुम कह रहे हो यदि सच है। और यदि मुझे भिखारी होना है तो भी इस छोटी सी बात के लिए मैं नीच बनना नहीं पसन्द करूँगा, मेरा सिद्धान्त अटल है, यह सह कर भी मैं सत्य का समर्थन करूँगा। मैं अभी जाकर सब को इस बात की सूचना देता हूँ, और जहाँ तक इस सिद्धान्त तथा तर्क का प्रश्न है मैं महाशय जी को दी गयी सारी सुविधाएँ अभी वापस ले लूँगा। वे अब किसी तरह विवाह नहीं कर सकेंगे।"

मेरे अभाग्य की इस सूचना से दोनों परिवारों को जो दुख हुआ उसका वर्णन असम्भव है। लेकिन जो कष्ट दोनों प्रेमियों को हुआ उसके सामने और सबका दुख नगण्य था। मिस्टर विल्मट ने, जो पहले से ही इस विवाह के विच्छेद के पक्ष में मालूम पड़ने लगे थे, इस घटना से अपना इरादा पक्का कर लिया। उनमें केवल एक गुण ऐसा था जो पूर्णता प्राप्त कर चुका था और वह था दूरदर्शिता का गुण। बहत्तर वर्ष की अवस्था में हमारे पास यही एक गुण शेष रह भी तो जाता है।

३

मेरे दुखी परिवार को अब केवल एक आशा शेष रह गयी थी—हो सकता है खबर झूठी हो, सूचना देने वाले सज्जन ने अपनी कोई पुरानी दुश्मनी अदा करने के लिए अफवाह उड़ायी हो। लेकिन यह आशा भी देर तक संतोष न दे सकी। शहर में रहने वाले मेरे एजेन्ट का पत्र मिला जिससे अब हमें अपनी दुर्भाग्य सूचना की सत्यता में कोई संदेह न रह गया। इस धन हानि से यदि केवल मैं ही सम्बन्धित होता तो मुझे कोई परवाह न होती। मुझे यदि किसी तरह का दुख हुआ तो वह था मेरे परिवार के प्रति; मैं भूखा रह सकता था, फटे कपड़े पहिन सकता था, पर जब सोचता कि बच्चों की शिक्षा कैसे होगी, उनका पालन पोषण कैसे होगा, तो मन को तकलीफ होती थी।

यदि किसी दुखी आदमी को तत्काल संतोष दिलाया जाता है तो वह अपने दुखों को याद कर और भी दुखी होता है इसीलिए मैंने एक पखवारे तक अपने दुखी परिवार को संतोष देने की कोशिश नहीं की। इस बीच मैं बराबर अपने परिवार के पालन पोषणार्थ किसी साधन की खोज में व्यस्त रहा, और अन्त में एक रास्ता निकल आया। कुछ दूर पर पन्द्रह पाउन्ड प्रतिवर्ष वृत्ति मुझे मिल गयी। सबसे मार्के की बात यह थी कि मैं बिना किसी परेशानी के अपने सिद्धान्तों का पालन कर सकता

था। मैंने सोचा कि वहाँ चल कर थोड़ी खेती कर लूँगा और इस तरह गुजर बसर हो जायगी।

यह इरादा करने के बाद मैंने अपनी नष्ट सम्पत्ति का हिसाब देखा और लेनी देनी चुका देने के बाद चौदह हजार पाउण्ड की सम्पत्ति में केवल चार सौ पाउण्ड शेष बचे। इसलिए मेरा ध्यान अब अपने परिवार के गर्व को कम करने की ओर गया क्योंकि मुझे बिलकुल ठीक ठीक मालूम है कि घर की गरीबी में अमीर मिजाजी खुदबखुद एक बुरी बला है। "प्यारे बच्चों" मैंने कहा "हम लोग चाहे जितनी दूरदर्शिता से काम लेते पर इस दुर्भाग्य से नहीं बच सकते थे; पर हाँ दूरदर्शिता से काम लेकर इस दुर्भाग्य के प्रभाव को कम कर सकते हैं। हम सब अब गरीब हैं मेरे लाड़लो, और अब बुद्धिमानी इसी बात में है कि हम अपनी स्थिति के अनुसार रहें। तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर। तो अब, चलो अपनी अमीरी की चमक दमक हम सब बिना किसी अफसोस के उतार फेंके तथा गरीबी में रहकर खुश रहें। गरीब लोग बिना हमारी सहायता के प्रसन्न रहते हैं, तो हम क्यों उनकी सहायता के प्रभाव में प्रसन्न न रहें। नहीं, मेरे बच्चो, इसी समय से हम अमीरी के सारे ढोंग ताख पर रखते हैं; यदि हममें बुद्धि है तो हममें प्रसन्न रहने के लिए बहुत शेष है। दुर्भाग्य से हमारे ऊपर जो आर्थिक संकट आ पड़ा है हमें संतोष रखना चाहिए।

मेरा बड़ा लड़का पढ़ा लिखा था, इसलिए मैंने सोचा कि इसे शहर भेज दूँ जिससे वह कुछ कमा कर मेरी सहायता करे तथा अपनी जीविका चलाए। परिवार और मित्रों का इस तरह का बिछोह शायद गरीबी का सबसे बड़ा दुख है। वह दिन जब हम लोगों को पहले पहल एक दूसरे से बिलग होना था बहुत जल्दी आ गया। मेरे लड़के ने अपनी माँ तथा शेष रोते हुए दुखी परिवार से विदा ली और मेरे पास मेरा आशीर्वाद लेने आया। मैंने अपने हार्दिक आशीर्वाद के साथ ही पाँच गिन्नियाँ भी दी। "तुम जा रहे हो, मेरे बच्चे" मैंने भरे हुए स्वर में कहा "लन्दन तक

का सफर और फिर पैदल—पर कोई बात नहीं, तुम्हारे महापूर्वज साहब भी इसी तरह गए थे। लो यह छड़ी, यही तुम्हारे लिए घोड़े का काम देगी। ऐसा ही घोड़ा पादरी जेवेल ने उन्हें भी दिया था। यह किताब भी लो; यह तुम्हें मार्ग में शांति प्रद होगी; इसमें लिखी हुई ये दो पंक्तियाँ करोड़ों रुपयों की हैं—मैं जवान रहा हूँ और अब बुड्ढा हूँ; पर मैंने किसी आदमी को परितक्त नहीं देखा है और न उसके बच्चों को रोटी के लिए दूसरों के सामने हाथ फैलाते हुए। तुम्हें मार्ग में यह धैर्य और संतोष दे। जाओ मेरे बच्चे; चाहे तुम किसी स्थिति में रहो वर्ष में एक बार घर जरूर आना; हमेशा अपना दिल साफ रक्खो; अलविदा।" वृद्ध सत्यवादी और सम्मानित था अतएव जीवन के रंग मंच पर उसे छोड़ते हुये मुझे हिचक न हुई। मुझे विश्वास था कि वह अच्छा उदाहरण छोड़ जावेगा चाहे अन्त में उसे हार खानी पड़े या विजय मिले।

उसकी विदाई ने हम लोगों की विदाई के लिए जो जल्दी होने वाली थी, केवल एक रास्ता तैयार कर दिया। जिस पड़ोस में रहकर इतने दिन हम सबने इतनी शाति से विताये थे बिना आंसू बहाये छोड़ देना बड़े धैर्य को बात थी। इसके साथ ही सत्तर माल की यात्रा; और वह भी मेरे जैसे परिवार को जो अपने घर से १० मील की दूरी से अधिक कभी न गया था, बहुत खतरनाक और दुखदाई मालूम पड़ रही थी, और जब कुछ गरीब पड़ोसी हम लोगों को विदा करके रोते हुए लौटे तो हम सब के दुःख की सीमा न रही। पहले दिन हम लोग सुरक्षित ३० मील की यात्रा करके एक मामूली सराय में पहुँच गये। एक कमरे में सामान रखने के बाद मैंने गाँव के नम्बरदार से मिलने की इच्छा प्रकट की, उन्होंने बिना किसी आपत्ति के मेरी बात मान ली। जहां मैं जा रहा था वहां से— ये नम्बरदार महोदय भली भांति परिचित थे, विशेष कर स्क्वायर थार्नहिल से जो अब मेरे भावी क्षत्रय थे और जो निकट ही कुछ मील की दूरी पर रहते थे। बातचीत से मालूम हुआ कि मेरे भावी क्षत्रय महोदय सासारिक सुखों के अतिरिक्त और किसी चीज की इच्छा न रखते थे। स्त्रियों से

उनका अधिक लगाव था। उनके बीच घिरे रहना उन्हें भाता था। उन्होंने बताया कि किसी तरह की बुद्धिमानी और चतुरता उनकी कला एवं उत्साह में बाधा नहीं पहुँचा सकती थी। १० मील के गिर्द में कोई भी कृषक बालिका ऐसी न थी शायद जिसे पाने में स्क्वायर थार्नहिल सफल न हुए हों। यद्यपि इस सूचना से मुझे कुछ दुःख हुआ पर मेरी लड़कियों पर इसका बिल्कुल उल्टा प्रभाव पड़ा था। उनका चेहरा भावी विजय की आशा से चमक उठा। मेरी पत्नी को उनकी सुन्दरता और आकर्षण पर कम विश्वास न था—अतएव उसे भी कम प्रसन्नता न हुई। हम लोग सोच ही रहे थे कि मेरे अतिथेय (Host) की पत्नी कमरे के अन्दर आ गयी। उसने बताया कि वह अजीब आदमी जो दो दिन से घर टिका था रुपये चाहता था और अपने हिसाब के पूरे रुपए नहीं दे सका। "रुपये चाहता है!" अतिथेय (Host) ने उत्तर दिया, "यह तो असम्भव है क्योंकि अभी कल की ही बात है, उसने मेरे नौकर को तीन गिन्नियाँ दी थीं। उस पुराने सिपाही को छोड़ देने के लिए जो कुत्ते चुराने के जुर्म में शहर भर में कोड़े से पीटा जाने वाला था। फिर भी अतिथेय की पत्नी अपनी बात पर अड़ी रही और अतिथेय कथन की सच्चाई जानने के लिए चल पड़े। मैंने प्रार्थना की कि मैं भी इस कथित दानी आगन्तुक से परिचय प्राप्त करना चाहता हूँ। अतिथेय ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। यह महोदय सुदृढ़ आकार के थे और मुख पर विचारशीलता के चिन्ह वर्तमान थे। इन महाशय के कपड़े कुछ छोटे तथा गन्दे थे—लगता था ये शिष्टाचार नहीं समझते पर साथ ही शिष्टाचार से घृणा भी नहीं थी। नम्बरदार के चले जाने पर मैं एक सज्जन मनुष्य को ऐसी परिस्थितियों में पाकर अपनी सद्भावना प्रकट किये बिना न रह सका, मैंने अपने रूपयों की थैली उसकी ओर बढ़ा दी। "मैं इसे अपने पूरे हृदय से लेता हूँ" उसने उत्तर दिया, "और मुझे खुशी है कि मैं अपना सारा धन खोकर आप जैसे महात्माओं के दर्शन का अवसर तो पा सका हूँ। मैं अपने सहायक का नाम और पता जानना चाहूँगा जिससे मैं यथासम्भव शीघ्र इस ऋण से मुक्त

हो सकूँ।" मैंने उसके सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया साथ ही आर्थिक दुर्घटना, स्थान परिवर्तन और नये स्थान का पता आदि सारी कहानी बता दी। "यह तो और भी अच्छा है" उसने उत्सुकता से कहा, "मैं भी वहीं चल रहा हूँ, बाढ़ आ जाने के कारण मुझे यहाँ दो दिन रुकना पड़ गया; मुझे आशा है कल तक बाढ़ समाप्त हो जावेगी और रास्ता चलने योग्य हो जावेगा।" मैंने भी उसके साथ में रहने को खुशी प्रगट की। मेरी लड़कियाँ और पत्नी भी खूब प्रसन्न हुईं और उससे साथ ही भोजन करने का आग्रह किया। आगन्तुक की बातचीत हृदयाकर्षक और शिक्षाप्रद थी अतएव मैंने उससे बात जारी रखने की इच्छा प्रगट की। किन्तु दिन भर के परिश्रम के बाद विश्राम करने का समय आ गया था हम लोग भोजन करने के बाद सोने लगे।

दूसरे दिन सबेरे हम लोग आगे चले। हमारा परिवार घोड़े की पीठ पर सवार था और हमारे नये साथी मि० वर्चेल सड़क के किनारे किनारे पैदल चल रहे थे। मुस्कराते हुए उन्होंने हम लोगों का मंजिल तक साथ देने को कहा क्योंकि हम लोगों की सवारी बहुत अच्छी न थी। चूँकि बाढ़ अभी पूरी तरह नहीं शान्त हुई थी अतएव हमने एक पथ प्रदर्शक और साथ ले लिया। उसके पीछे हम सब पानी के अन्दर रास्ते—टटोलते से चलने लगे रास्ते की थकान को हम लोग दार्शनिक बाद-विवाद से हल्का करते थे—ऐसे दार्शनिक बाद-विवादों को वह पूरी तरह समझाता था। किन्तु सबसे अधिक आश्चर्य तो मुझे तब हुआ जब वह अपने विचारों का समर्थन इतनी जिद के साथ करने लगा जैसे वह मेरा क्षत्रप हो, यद्यपि उसे मैंने रुपये उधार दिये थे और वह मेरा ऋणी था। यदा कदा राह के किनारे दिखाई देने वाले घरों के मालिकों की भी वह चर्चा करता रहता, इन सबसे भी वह कुछ परिचित था। "वह घर" एक विशाल भवन की ओर तर्जनी से निर्देश करते हुये उसने कहा, "मिस्टर थार्नहिल का है; मिस्टर थार्नहिल अभी नवयुवक हैं। उनके चाचा सर विलियम थार्नहिल जो सारी सम्पत्ति के अधिकारी हैं थोड़ी ही सम्पत्ति से अपना बसर कर लेते हैं,

शेष अपने भतीजे को दे रखा है, शहर में रहते हैं।"—"क्या" मैंने आश्चर्य से पूछा "मेरे नवयुवक नम्बरदार महोदय उस आदमी के भतीजे हैं, जो अपनी सहृदयता सदाचार और बड़प्पन में अपना सानी नहीं रखता। मैंने सुन रक्खा है कि सर विलियम थार्नहिल राज्य के एक बहुत बड़े सनकी पर साथ ही साथ सहृदय व्यक्तित्व के प्रतिनिधि हैं—एक अत्यन्त परोपकारी मनुष्य हैं।"—"शायद बहुत कुछ ऐसा ही है।" मिस्टर वर्चेल ने उत्तर दिया, "कम से कम जब वह युवक थे उन्होंने परोपकारिता की हद कर दी, क्योंकि तब उनकी वासना तीव्र थी किन्तु सदाचार पर आधारित होने के कारण वह एक अद्भुत सीमा पर पहुँच गई थी। उनका लक्ष्य था एक योद्धा और विद्वान बनना; फलतः शीघ्र ही सेना में ख्याति प्राप्त कर ली विद्वान मंडली में प्रसिद्ध हो गये। प्रसिद्ध आदमियों की चापलूसी करने वाले हो ही जाते हैं; और ऐसों को ही इसमें सब आनन्द आता है। वह आदमियों से घिरे रहते जो अपने चरित्र का केवल एक हिस्सा दिखाते थे। इस तरह उनके विश्वास पर सौहार्द में व्यक्ति मूलक रुचि कम पड़ने लगी। वे मनुष्य मात्र से प्यार करते थे, क्योकि सम्पत्ति और सौभाग्य के कारण यह न समझ पाये कि समाज में दुर्जन भी होते हैं। चिकित्सकों का कहना कि गड़बड़ी की एक ऐसी अवस्था भी होती है जब सारा शरीर बहुत ही अधिक सूक्ष्म ग्राही हो जाता है और स्पर्श मात्र से ही वेदना का सारे शरीर में संचार हो जाता है। कुछ लोगों को यह बीमारी शरीर में होती है पर इन सज्जन को यह बीमारी मस्तिष्क में हुयी थी। दूसरों की जरा सी भी तकलीफ, चाहे वह सही हो या बनावटी, उन पर बहुत जल्दी असर करती थी। उनकी आत्मा दूसरों के दुःखों से हर घड़ी बीमार बनी रहती थी। आसानी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि इस तरह दूसरे को शान्ति देने के लिये प्रवृत्त को कितने ही सामने के लिये प्रवृत्त मिले होंगे। उनकी इस सहृदयता से उनकी सम्पत्ति तो कम पड़ने लगी पर उनकी सज्जनता और स्वभाव की सहृदयता में कमी नहीं आनेपाई-वास्तव में उनकी सज्जनता बढ़ती गई और उनकी सम्पत्ति दिन दिन घटती गई। गरीब के

साथ अदूरदर्शिता बढ़ती गई, यद्यपि वे एक बुद्धिमान आदमी की तरह बातें करते थे.परन्तु उनके काम बेवकूफ जैसे थे। गरीबी ने घेर लिया था, मागने वाले घेरे रहते थे—रुपया न था अतएव रुपया देने के स्थान पर वायदा देने लगे। सच तो यह है कि यही एक चीज उनके पास देने के लिये बच भी रही थी, उनमें इतनी शक्ति नहीं थी कि वे किसी को देने से इन्कार कर उन्हें दुःखी कर सकें। इस तरह उनके पास माँगने वाले की एक भीड़ इकट्ठी हो गई जिनकी वे निश्चित रूप से मदद नहीं कर सकते थे। फिर भी मदद करने की हृदय से इच्छा करते थे। यह लोग कुछ दिन तक तो पीछे पड़े रहे पर कुछ दिन बाद घृणा और निन्दा करने लगे, यह स्वाभाविक भी था किन्तु जितना अधिक वे दूसरों की निन्दा के पात्र थे उतना ही अपने लिये वह अपने को नीच समझते थे। उनका मस्तिष्क उनकी मिथ्या प्रशंसा और चापलूसी से भरा हुआ था और उसके अभाव में उनके हृदय को प्रसन्न करने वाली कोई चीज नहीं रह गयी थी। वे अपने मुसाहिबों की झूठी प्रशंसा के अतिरिक्त अपनी आत्मा का सच्चे मानों में आदर कभी नहीं कर पाये। उनकी तरफ से दुनिया अपना रुख बदलने लगी; उनके दोस्तों की चापलूसी सामान्य प्रशंसा में बदल गयी; प्रशंसा शीघ्र ही अपना रूप बदलकर मैत्री पूर्ण सलाह के रूप में आगई और सलाह जब न मानी गयी तो उन सलाहकारों ने गालियाँ देना तथा निन्दा करना शुरू कर दिया। इसलिये उन्होंने अब सोचा कि ऐसे मित्र जो अपने लाभ के लिये उनको घेरे रहते थे बेकार थे उनको मालूम हुआ कि दूसरे का हृदय प्राप्त करने के लिये हमेशा अपना हृदय देना पड़ता है। अब मुझे मालूम हुआ कि मैं···कि···कि—नहीं नहीं—मैं क्या कहने जा रहा था भूल गया; संक्षेप में, उन्होंने अपना सम्मान स्वयं करने का पक्का इरादा कर लिया, अपनी बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिती को फिर से ठीक दशा में लाने की योजना बना डाली। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये अपने सनकी ढंग पर योरोप की पैदल यात्रा की, और अब जब मुश्किल से उनकी आयु तीस के लग भग है उनकी आर्थिक स्थिति हमेशा से अधिक समृद्ध है। वर्तमान काल में उनकी उदारता पहले से अधिक बुद्धि प्रधान और सामान्य

सब्द

हो गयी है; किन्तु उनमें अब भी विनोदी प्रवृत्ति शेष रह गई है और उन्हें केन्द्र भ्रष्ट सदाचारों में बड़ा आनन्द आता है।

मिस्टर वर्चेल की बातों में मैं इतना मग्न था कि आगे देख भी नहीं रहा था। पर इतने में ही मेरा ध्यान दूसरी ओर गया। मैंने देखा कि मेरी सबसे छोटी लड़की अपने घोड़े पर से एक तेज धार में गिर गयी है और उससे बच निकलने का असफल प्रयत्न कर रही है। वह दो बार पानी के अन्दर जा चुकी थी,अब उसकी मदद कर पाना मेरी शक्ति के बाहर था। मैं यह दृश्य देख कर इतना अधिक घबड़ा गया था कि मैं उसकी जान बचाने की कोशिश भी न कर सकता था। यदि मेरा साथी न होता तो मेरी लड़की डूब कर मर गयी होती। उसे खतरे में देख कर वह तुरन्त पानी में कूद पड़ा उसके प्राण बचाने के लिए और बड़ी मुश्किल से उसे दूसरे किनारे पर निकाल ले गया। हम लोगों ने धारा को थोड़ा ऊपर से सुरक्षित पार कर लिया और अपनी लड़की से मिले। सबसे मिल कर नए साथी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की। मेरी लड़की की कृतज्ञता वर्णन करने से अधिक कल्पना करने में समझी जा सकती है। उसने अपने को मुक्त करने वाले को शब्दों से तो कम पर अपनी आँखों से अधिक धन्यवाद दिया और उसकी बाँह म सर रख रही मानों अब भी सहायता चाह रही हो। मेरी पत्नी ने आशा प्रकट की कि एक दिन वह उसकी इस दयालुता का बदला अपने घर में चुका कर प्रसन्न होगी। इस तरह जब हम लोगों ने दूसरी सराय में नाश्ता पानी कर लिया तो मिस्टर वर्चेल ने, जिनको यहाँ से दूसरे रास्ते जाना था, विदा ली। हम लोग भी अपने रास्ते पर चल पड़े। मेरी पत्नी ने कहा कि मिस्टर वर्चेल उसे बहुत ज्यादा पसन्द है; और जोर देते हुए कहा कि यदि मिस्टर वर्चेल जन्म और सम्पत्ति से हम लोगों जैसे परिवार में शादी करने की योग्यता रखते होते तो वह सोफिया के लिए उन्हीं को चुनती। मैं उसे इस तरह डींग हांकते सुन कर बिना मुस्कराए न रह सका; परन्तु मैं इस तरह के निरापद भ्रमों से जो हमें और अधिक खुश रखने की शक्ति रखते हैं अप्रसन्न नहीं होता।

४

मेरा नया घर एक छोटे से गाँव में था जिसमें अधिकतर किसानों की बस्ती थी। यह किसान अपनी स्वयं की जमीन जोतते बोते थे; इन्होंने न तो कभी बहुत बड़ी अमीरी और वैभव के दिन बिताए थे और न कभी गरीबी का ही सामना किया था। शिष्ट समाज से अपरिचित थे पर पुरानी सादगी और सदाचार उनमें था। आदत से ही वे मितव्ययी थे और मुश्किल से वे जानते थे कि यह एक बहुत बड़ा गुण है। मेहनत के दिनों में भी उनके चेहरे प्रसन्न दिखाई देते पर त्योहार मनाने हँसने खेलने तथा आराम करने में दिन बिताते थे।* बड़े दिन में वह हर्ष के गीत गाते, वालेन्टाइन प्रभात में सत्य प्रेम ग्रन्थियाँ भेजते, शोवेटाइड को वे पैन केक खाते, पहली अप्रैल को वे अपनी बुद्धि चातुरी दिखाते और माइ-केल्माज़ संध्या को धर्म शील आचरण करते। हम लोगों के आने की सूचना पाकर यह लोग स्वागत करने के लिए निकल पड़े। हम लोगों के स्वागत में एक दावत भी दी गई जिसमें हम सब ने प्रसन्नता पूर्वक भाग लिया बात चीत में जो वाक् चातुरी की कमी थी हँसी से पूरी हो गयी।

हमारा यह नया छोटा गांव एक पहाड़ी के ढाल पर था। पड़ोस में एक छोटा किन्तु घना जंगल था और समीप में एक छोटी सी नदी कल कल करती हुई बहती थी एक तरफ हरे भरे खेत थे और दूसरी तरफ हरियाली से

लदे हुए पेड़। मेरे पास बीस एकड़ बहुत उपजाऊ और सुन्दर जमीन थी जिस पर खेती होती थी। लगभग सौ पाउन्ड प्रति वर्ष की आयु होती थी। हमारे इस छोटे से फार्म से ज्यादा सुन्दर और कोई जगह न हो सकती थी; किनारे की छोटी छोटी झाड़ियों तथा पंक्तिबद्ध हरी भरी फसल की सुन्दरता अवर्णीय थी। मेरा घर केवल एक मंजिल का था जिसमें फूस के छप्पर पड़े थे और बड़ा स्वस्थ वातावरण था। अन्दर की तरफ दीवारें बहुत उम्दा साफ पुती हुई थीं और इन पर मेरी लड़कियों ने बहुत बढ़िया बढ़िया अपनी पसन्द के चित्र बनाए थे। बैठने और भोजन बनाने का काम एक ही कमरे से लिया जाता था जिससे यह कमरा काफी गरम रहता था। इसके साथ ही चूंकि कमरा बहुत साफ सुथरा रहता था इसलिए रसोई के बर्तन तथा आलमारी में सजा कर रखी हुई कप तश्तरियाँ आगन्तुकों को देखने में बड़ी भली लगतीं; कमरा इन साफ सुथरी चीजों से भरा रहता अतएव उसे सजाने के लिए और अधिक फर्नीचर की जरूरत भी नहीं थी। तीन कमरे और थे; एक मेरे और मेरी पत्नी के लिए, दूसरा हमारी दो लड़कियों के लिए तथा तीसरा शेष बच्चों के लिए था। इस कमरे में केवल दो चारपाइयाँ थीं।

हमारा छोटा सा यह जनतंत्र जिसका नायक मैं था निम्नलिखित रीति से काम करता था। सूर्योदय होते ही हम सब बैठक के कमरे में इकट्ठे होते जिसमें नौकर पहले से ही आग जला देता था। आपस में एक दूसरे से अभिवादन करने के बाद—क्योंकि मैं इस तरह के शिष्टाचारों को परिवार का एक आवश्यक अंग मानता हूँ—हम ईश्वर को जिसने हमें नया दिन दिखाया झुककर हृदय से धन्यवाद देते। अपना यह कर्त्तव्य पूरा कर लेने के बाद मैं अपने लड़के के साथ नित्य का बाहरी काम करने के लिए चल देता और मेरी पत्नी तथा लड़कियाँ घर का काम तथा रोटियाँ बनाने का प्रबन्ध शुरू कर देतीं जो एक निश्चित समय से समाप्त हो जाता। मैं इस काम में केवल आध घण्टा ही व्यतीत करता। इसके बाद अपने लड़के के साथ दार्शनिक वादविवाद करना शुरू कर

देता और मेरी लड़कियाँ अपनी माँ के साथ हँसी खेल और गपशप करना शुरू कर देतीं।

हम लोग सूर्य निकलते ही काम करना शुरू करते और सूर्यास्त होते होते काम बन्द कर घर की तरफ चल देते जहाँ पर हम लोगों की राह देखता हुआ मेरा परिवार मेरे बच्चों के मुस्कराते हुए चेहरे, साफ सुथरे तथा सजे हुए कमरे और जलती हुई आग को देखकर हमारी सारी थकावट दूर भाग जाती। यहाँ हमारे अतिरिक्त और मिलने जुलने वाले भी आते थे। हमारा बातूनी पड़ोसी किसान फ्लैमबारो तथा अन्धा बांसुरी बजाने वाला आकर बैठ जाता और हमारे घर की बनी हुई झरबेरी की शराब, जिसके लिए हम अब तक मशहूर थे, पी लेता। यह भोले भाले आदमी कई तरह से हमारा मनोरंजन करते थे; जब एक बांसुरी बजाता तो दूसरा कोई ग्राम गीत अलाप देता। रात का जलूस और खेल-कूद प्रायः उसी क्रम से समाप्त होते जिस क्रम से प्रायः हम लोग शुरू करते। मेरे छोटे बच्चे दिन का पाठ पढ़ने में लगा दिए जाते और जो सबसे तेज साफ तथा अच्छा पढ़ पाता उसे एक पेनी का पुरस्कार रविवार को निर्धनों को दान देने के लिए मिलता।

इतवार आया। यह दिन सचमुच अच्छे कपड़े पहिनने और चटक-मटक का दिन था मेरे तड़क भड़क सम्बन्धी सारे उपदेश और आदेश बेकार हो गए। मैंने अपने भाषणों और प्रवचनों द्वारा अपनी लड़कियों के अमीरी के घमण्ड को चाहे कितना कुचलने की कल्पना की हो पर आज मैंने अनुभव किया कि अच्छे और बहुमूल्य कपड़े पहिनने का मोह मेरी लड़कियों के हृदय से अभी गया न था। वे अब भी रेशमी फीते, अच्छी धोतियाँ, रिबन, कीमती चूड़ियाँ और सजावट के सामान पसन्द करती थीं। मेरी पत्नी स्वयं गहरे लाल रंग की धोती पहनने का मोह त्याग न कर सकी थी क्योंकि मैंने पहिले कहीं कह रखा था कि यह पहिनने से वह बहुत जंचती है।

पहले इतवार को विशेष कर उनके व्यवहार से मुझे दुख हुआ।

एक रात पहले मैंने अपनी लड़कियों से अपनी इच्छा प्रकट की कि वे बहुत सबेरे ही कपड़े पहन कर तैयार हो जांय क्योंकि मैं चर्च में श्रोताओं की भीड़ जमा होने के काफी देर पहले ही पहुँच जाना पसन्द करता हूँ। उन्होंने ठीक से मेरा निर्देश मान लिया; किन्तु जब हमें सबेरे नाश्ता करने के लिए इकट्ठा होना था तो मेरी पत्नी अपनी लड़कियों सहित खूब कीमती कपड़े पहिने हुए उपस्थित हुई। उनके बालों पर क्रीम और होटों पर लिपस्टिक लगी हुई थी, कपड़ों में चुनाव देकर बड़े आकर्षक ढंग से पहना गया था। हर छोटे कदम के उठने पर कपड़ों की सरसराहट सुनाई पड़ती थी। मैं उनके, विशेषकर अपनी पत्नी के, थोथे घमण्ड पर बिना मुस्कराए न रह सका। मुझे उससे ऐसे अवसर पर विशेष बुद्धिमानी की आशा थी। अब मेरे लिए एक मात्र रास्ता यही था कि मैं अपने लड़के को गम्भीरता भरे स्वर में बग्घी लाने के लिए आज्ञा देता। मैंने ऐसा ही किया। लड़कियों को मेरे इस व्यवहार पर कुछ आश्चर्य हुआ पर मैंने और अधिक गम्भीरता प्रदर्शित करते हुए अपनी आज्ञा को कई बार दुहराया। "सचमुच प्रियतम, तुम हँसी कर रहे हो" मेरी पत्नी ने जोर देते हुए कहा "हम लोग पैदल मजे में चलेंगे, अब हमें सवारी के लिए बग्घी की आवश्यकता नहीं।"

"तुम गलती करते हो बच्चों" मैंने उत्तर दिया "नहीं नहीं हमें बग्घी की जरूरत है क्योंकि यदि हम इस तरह चर्च तक पैदल जाएँगे तो गाँव के सारे लड़के ही हमारी हँसी उड़ाएँगे।"—"सचमुच" मेरी पत्नी ने उत्तर दिया "मैं हमेशा कल्पना करती हूँ कि मेरा चार्ल्स अपने बच्चों को साफ सुथरा और सुन्दर देखने का शौकीन था"—"तुम जितना चाहो साफ सुथरी और सुन्दर रहो"—मैंने रोक कर कहा "और इसके लिए तुम्हें मैं और ज्यादा प्यार करूँगा; किन्तु यह सफाई नहीं दिखावा है। हम लोग इस बेकार की सज धज तथा बनाव शृंगार की चीजें पहिन पहिन कर गांव की स्त्रियों की घृणा के पात्र बन जाएँगे। नहीं, मेरे बच्चों" मैंने और अधिक गम्भीर होते हुए कहा "तुम्हारे इन कपड़ों में और

अधिक सादगी आ सकती है। हम लोगों के पास तड़क भड़क के साथ रहने के साधन नहीं हैं और ऐसी स्थिति में इस तरह के कीमती और अच्छे सिले हुए कपड़े और बुरे लगते हैं। मुझे नहीं मालूम कि यह तड़क भड़क और फैशनेबुली अमीर आदमियों को शोभा देती है या नहीं। यदि हम ठण्डे दिल से सोचें तो निर्धन और दुखी संसार का सारा नंगापन इन वस्त्रों से बहुत आसानी से ढका जा सकता है।"

इस बात का उन पर उचित प्रभाव पड़ा। उसी कारण वे सब अपने कपड़े बदलने लौट गयीं; दूसरे दिन अपनी लड़कियों को सादे लिवास में देखकर मुझे बड़ा संतोष और खुशी हुई। मेरी लड़कियों ने अपने फैशनेबुल कपड़ों को काटकर छोटा कर दिया तथा बचे हुए कपड़े से डिक और बिल के लिए कुर्त्ते तैयार कर लिए। इस तरह उनके वस्त्र अधिक भले और सादे लगने लगे।

५

घर से थोड़ी दूर पर हमारे पूर्व-अधिकारी ने एक बैठने का स्थान बनाया था जो विभिन्न प्रकार की झाड़ियों और पेड़ों से ढका हुआ था। जब मौसम अच्छा होता और हम लोग अपना काम संध्या के पहले ही समाप्त कर लेते तो इस स्थान पर बैठकर दूर तक फैले हुए प्राकृतिक दृश्य का आनन्द लेते। यहाँ पर हम चाय भी पीते जो अब एक सामयिक दावत हो गयी थी और चूंकि अब यह जल्दी जल्दी होने लगी थी अतएव अब इससे एक बड़ी खुशी होती थी। इसकी तैयारी बड़े उत्साह और चहल पहल के साथ की जाती। इस अवसर पर हमारे दोनों बच्चे हम लोगों को पढ़ कर जरूर सुनाते और अक्सर हम सब के बाद उन्हें चाय पीने को मिलती। कभी कभी हमारे आनन्द में विविधिता लाने के लिए हमारी लड़कियाँ सितार के साथ गाने लगतीं। ऐसे समय पर मैं अपनी पत्नी के साथ खुले आसमान के नीचे घूमने के लिए निकल पड़ता; मेरी पत्नी अपने बच्चों के विषय में बड़ी उत्सुकता तथा उत्साह से बातें करती—मंद समीर के झोकों से हम दोनों आनन्द विह्वल हो जाते और प्रकृति के सुख का अनुभव करते।

इस तरह मुझे अनुभव हुआ कि जीवन की हर परिस्थिति में एक विशेष प्रकार का आनन्द मिल सकता है। रोज सबेरे उठकर खेतों में

परिश्रम करते और संध्या समय सानन्द हँसते खेलते निद्रा देवी की गोद में जा पड़ते मानो दिन भर के परिश्रम का पुरस्कार ले रहे हों।

जाड़े के प्रारम्भ में एक छुट्टी के दिन—क्योंकि निरन्तर परिश्रम के बाद मैं अवकाश आवश्यक समझता हूँ—मैं अपने परिवार को उसी स्थान पर जहाँ मैं अक्सर बैठा करता था, ले गया और मेरे बाल-संगीतज्ञों ने गायन आरम्भ कर दिया। इस तरह हम सब जब गाना सुनने में व्यस्त थे तो एक बारहसिंगा लगभग बीस कदम दूरी पर भागता दिखायी दिया। वह शिकारियों द्वारा सताया हुआ मालूम पड़ता था। हम लोग इस जीव के विषय में कुछ अधिक सोचते कि इसके पहिले ही हम ने देखा, कुछ कुत्ते और शिकारी उसके पीछे दौड़ते हुए चले आ रहे थे और जिस रास्ते बारहसिंगा भागा था उसी तरफ वे भी मुड़ रहे थे। मैं जल्दी ही अपने परिवार को लेकर लौटने वाला था पर या तो जिज्ञासा या आश्चर्य अथवा और किसी गुप्त उद्देश्य से मेरी पत्नी और मेरी लड़कियाँ अपनी जगह पर बैठी रहीं। शिकारी जो सबसे आगे था हम लोगों की बगल से बड़ी तेजी के साथ निकल गया; उसके बाद चार या पाँच आदमी और उतनी ही जल्दी भागे जा रहे थे। अन्त में एक नवयुवक सज्जन जो देखने में औरों से अधिक शरीफ मालूम पड़ते थे आए। एक निगाह हम लोगों की तरफ देखने के बाद शिकार का पीछा करने के बजाय वह उतर पड़े। साथ दौड़ने वाले नौकर को घोड़ा थमा कर हम लोगों की तरफ एक बड़े आदमी की नजर से देखने लगे। उन्हें परिचय कराने की आवश्यकता नहीं मालूम पड़ी। वह मेरी लड़कियों से नमस्ते करने जा रहे थे किन्तु मेरी लड़कियों ने चेहरा देख कर मन का भेद जान लेने की कला बहुत पहले सीख रखी थी। इसके बाद उन्होंने बताया कि उनका नाम थानहिल था और सारी रियासत जिसमें हम रहते थे उन्हीं की थी। अतएव, उन्होंने हमारे परिवार के नारी वर्ग से दुबारा नमस्ते करना चाहा और सम्पत्ति तथा कीमती कपड़ों में इतनी शक्ति होती है कि उन्हें दुबारा निराश नहीं होना पड़ा। मेरी लड़कियों ने मुस्करा कर उनके अभिवादन का उत्तर

दिया। थोड़ी ही देर में सब एक दूसरे से परिचित हो गए और बगल में सितार रखा हुआ देख कर उन्होंने एक गीत सुनाने की प्रार्थना की। चूंकि मैं इस तात्कालिक परिचय को एकाएक इतना अधिक न बढ़ने देना चाहता था अतएव मैंने आँख से ऐसा न करने का इशारा किया पर मेरी पत्नी ने अपने आँख के इशारे से मेरी इच्छा को न होने दिया। फलत: लड़कियों ने ड्राइडेन के एक गीत को बड़े उत्साह के स्वर में गाना शुरू किया। मिस्टर थार्नहिल हमारी लड़कियों के संगीत कौशल से बहुत प्रसन्न हुए और तब अपने हाथ में सितार ले स्वयं तार खींचे पर बिलकुल अनभिज्ञता के साथ; फिर किसी तरह मेरी बड़ी लड़की ने उनकी उतनी ही प्रशंसा की जितनी कि उन्होंने मेरी लड़कियोंकी की थी और कहा कि मि० थार्नहिल उसके शिक्षक से भी अधिक अच्छा सितार वादन जानते हैं। इस प्रशंसा को सुनकर उन्होंने थोड़ा सा अपना सर झुका दिया जिसका उत्तर मेरी लड़की ने अदब के साथ मुस्करा कर दिया उन्होंने मेरी लड़की की रुचि की प्रशंसा की और मेरी लड़की ने उनकी समझ की; एक पूरी उमर में भी वे इससे ज्यादा परिचित न हो सकते थे। मेरी पत्नी भी इस कारण बहुत अधिक प्रसन्न थी। नम्बरदार को अपने घर झरबेरी की शराब के लिए साग्रह निमंत्रित करने लगी। मेरा सारा परिवार उनकी प्रसन्नता के लिए हार्दिक प्रयास कर रहा था। मेरी लड़कियाँ उनसे आधुनिकतम विषयों पर बात करके उन्हें प्रसन्न करना चाह रहीं थीं। इसके विपरीत मोजेज ने एक दो प्रश्न प्राचीन काल के सम्बन्ध में किए इस कारण और लोग उस पर हँस पड़े तथा नम्बरदार महोदय को संतोष हुआ। मेरे छोटे बच्चे कम व्यस्त न थे और बड़े प्यार से आगन्तुक से सटे हुए बैठे थे। मेरे सारे प्रयत्नों के बावजूद भी मेरे छोटे बच्चों के गंदे हाथों से आगंतुक महोदय के बहुमूल्य कपड़े बिना गंदे हुए न बच सके। उन्होंने नम्बरदार के कोट और कपड़ों पर लगे हुए फीतों को रद्दी कर दिया। वे उनकी जेब पर लगे हुए कपड़ों को उठा कर जेब के अन्दर जो कुछ था देखने का प्रयास करते। संध्या समय उन्होंने हम लोगों से फिर मिलने की प्रार्थना

करते हुए बिदा ली। चूँकि वह हमारे नम्बरदार थे अतएव हम लोगों को उन की प्रार्थना स्वीकार करनी पड़ी।

जैसे ही वह घर से रवाना हुए कि मेरी पत्नी ने उस दिन हुई घटना के विषय में विमर्श करने के लिए सबको बुलाया। उसकी राय थी कि यह बहुत ही शुभ अवसर था क्योंकि वह इससे भी अधिक अजीब होने वाली घटनाओं के विषय में जानती थी। उसने उस दिन की आशा की जब हम सब उनके बराबर पद वाले हो जाएँगे। उसने कहा कि कोई कारण नहीं कि मि० रिकलर की दोनों लड़कियों की शादियाँ इतने बड़े घराने में हों और हमारी लड़कियाँ अविवाहित ही रह जाँय। चूँकि यह बात मेरी तरफ इशारा करके कही गयी थी मैंने दृढ़ता पूर्वक कहा कि इसका कारण भी मैं नहीं बता सकता हूँ। मिस्टर सिम्पकिन को दस हजार पाउण्ड लाटरी में इनाम मिल गया और हम लोग यों ही बैठे रह गए। "मैं कहती हूँ चार्ल्स" मेरी पत्नी ने चिल्ला कर कहा "जब मैं और मेरी लड़कियां उत्साहित और प्रसन्न होती हैं तो तुम इसी तरह हमें दुखी कर देते हो। सोफी! बताओ, तुम नवागंतुक के विषय में क्या सोचती हो? क्या तुम उसे सच्चरित्र और शीलवान् नहीं समझतीं!" —"सचमुच बहुत ज्यादा सुशील अम्मा" उसने उत्तर दिया "मैं सोचती हूँ हर विषय में वह काफी बात कर सकते हैं और कभी भी उनमें कहने की कमी नहीं मालूम देती, और जितना छोटा विषय होता है उतना ही अधिक बोलने की कामना है उनमें।"—"हाँ" ओलीविया जोर से बोली, "उनमें मनुष्य के सब गुण वर्तमान हैं; किन्तु मैं तो उन्हें बहुत अधिक पसन्द नहीं करती। वह बहुत ही अधिक धृष्ट हैं तथा शीघ्र परिचित होकर घुल मिल जाते हैं इतना ही नहीं सितार बजाना तो बिलकुल नहीं आता।" अंतिम इन दो कथनों को मैंने विपरीत अर्थ में लिया। इससे मुझे लगा कि सोफिया उसे अन्दर से घृणा करती है और ओलीविया उसका हृदय से आदर करती है। "उनके विषय में तुम्हारी चाहे जो राय हो, मेरे बच्चों" मैंने जोर से कहा "यदि सच कहूँ तो मैं उनसे जरा भी

प्रभावित नहीं हुआ। बहुत जल्दी बढ़ जाने वाली मित्रता का अन्त हमेशा दुखमय होता है; बातें तो नम्बरदार महोदय बहुत घुल मिल कर रहे थे पर जब मैं ध्यान देता था तो लगता कि वे हम लोगो कों बहुत तुच्छ मान रहे हैं और अपने तथा हम लोगों के सामाजिक स्तर के अन्तर के प्रति पूर्ण सतर्क थे। सम्पत्ति के पीछे शिकारी की भांति पड़ने वाले की अपेक्षा संसार में किसी दूसरे का चरित्र अधिक खराब नहीं होता। और मुझे कोई कारण नहीं दिखाई देता कि सम्पति के पीछे शिकारिनी की तरह पड़ने वाली स्त्रियां मनुष्यों से कम घृणा की पात्री क्यों हों। अतएव यदि उनके विचार आदरणीय हों तो भी वे अधिक से अधिक हमारी घृणा के पात्र हो सकते हैं! और यदि उनके विचार इसके विपरीत हुए— मैं उनके विषय में सोच भी नहीं सकता हूँ। यह सही है, मुझे अपने बच्चों के चरित्र से किसी प्रकार की आशंका नहीं है; परन्तु उनके चरित्र से मुझे कुछ भय अवश्य है।" मैंने अभी और कहा होता यदि नम्बरदार के नौकर के आ जाने से मुझे रुकना न पड़ गया होता। नौकर अपने साथ थोडा सा हिरन का मांस और एक पात्र लाया था जिसमें नम्बरदार महोदय ने कुछ दिन बाद आकर मेरे घर भोजन करने का बचन दिया था। इस सुअवसर की भेंट ने उनके हित में बहुत बड़ा काम किया और मेरा विरोध उस समय के लिए बेकार सा हो गया। अतएव मैं चुप हो गया। मैंने केवल खतरे की ओर संकेत करके संतोष कर लिया और उससे बचना न बचना उनका काम था। वह सदाचार जिसकी हमेशा रक्षा करना पड़े मुश्किल से रक्षा करने लायक होता है।

६

हम लोग नम्बरदार के विषय में बराबर बात करते रहे, अन्त में सर्व सम्मति से तय हुआ कि हिरन के मांस का कुछ भाग दोपहर के भोजन के लिए जरूर तैयार किया जाय और लड़कियों ने यह काम बड़ी सावधानी और लगन के साथ किया। "मुझे अफसोस है" मैंने कहा, "क्यों कि मेरे भोजन में भाग लेने वाला न तो कोई पड़ोसी ही है और न कोई आगंतुक, इस तरह के भोजन का स्वाद अतिथि के आ जाने पर दूना हो जाता है।"– "ईश्वर की कृपा है" मेरी पत्नी ने जोर से कहा "लो मिस्टर बर्चेल, जिन्होंने अपनी सोफिया को डूबने से बचाया था और तुम्हें वाद-विवाद में बुरी तरह से हराया था, आगए।"—"वाद विवाद में मुझे हराया था!" मैंने तेजी से कहा "यहां तुम गलती करती हो प्रियतमे मेरा विश्वास है कि मुझे हराने वाला बिरला ही होगा; भोजन तथा मांस पकाने की तुम्हारी योग्यता पर मैं कभी शंका नहीं करता, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वाद विवाद का विषय तुम मेरे लिए छोड़ दो।" मैं यह कह ही रहा था कि मिस्टर वर्चेल घर में दाखिल हुए और परिवार ने उनका स्वागत किया—सब लोगों ने उनसे हाथ मिलाया—छोटे डिक ने मुस्कराते हुए उन्हें कुर्सी पर बैठाया।

मैं इस बेचारे आदमी की मित्रता से दो बातों से खुश हुआ : क्योंकि मैं जानता था कि वह मेरी मैत्री का इच्छुक है और यह भी जानता था कि

थे और अब उस लम्पट की सेवा में दिन रात जुटे रहते हैं, वे पहले उसकी बुद्धि चातुरी पर ठहाका मार कर हँसते थे पर उनका वह ठहाका उसकी बेवकूफी में व्यंग्य बन गया है। वह अब गरीब है और शायद गरीबी उसके लिये उचित भी है क्योंकि उसमें न तो स्वतन्त्र होने की इच्छा है और न लाभदायक काम करने का कौशल ही। "शायद किन्हीं गुप्त कारणों से प्रोत्साहन पाकर मैंने यह बात कही थी। सोफिया ने मेरी बात काटते हुये जबाब दिया, "उसका पहले चाहे जैसा चरित्र रहा हो, पिता जी, परन्तु उसकी परिस्थितियों को चाहिये कि अब उसे बाधाओं से मुक्ति दें। उसकी वर्तमान परेशानियाँ उसकी पिछली बेवकूफी के लिये बहुत बड़ा दण्ड हैं; और मैंने पिता जी, आपको खुद कहते हुये सुना है कि उस आदमी को जिस पर ईश्वर स्वयं ही नाराज हो अनावश्यक रूप से परेशान न करना चाहिये।"

"तुम सही कहती हो सोफी" मेरे लड़के मोजेज ने कहा "मैं नहीं जानता कि इस आदमी की परिस्थिति इतनी ज्यादा खराब है जितनी पिताजी बताते हैं। हम लोग दूसरे के विचारों का निर्णय उनके स्थान पर अपने को रख कर नहीं कर सकते। छछून्दर का बिल हम लोगों के लिये चाहे जितना अंधकारमय हो पर उस जीव के लिये उसके अन्दर आवश्यकता भर के लिये उजाला होता है। और यदि सच कहा जाय तो मालूम पड़ता है इस आदमी का मस्तिष्क उसकी परिस्थितियों के बिलकुल योग्य है, क्योंकि मैंने आज तक इतना उत्साहित किसी को नहीं देखा है जितना उसे जब वह तुम से बात कर रहा था।" यह बिना किसी निहित उद्देश्य से कहा गया था; फिर भी सोफिया के गालों में लाली की एक रेखा दौड़ गयी जिसे उसने एक कृत्रिम हँसी हँसकर छिपाने का प्रयास किया, वह उसे यह विश्वास दिलाने का यत्न कर रही थी कि उसने बर्चेल की किसी भी बात पर ध्यान नहीं दिया था किन्तु उसका विश्वास था कि वह कभी एक बहुत सुन्दर नवयुवक रहा होगा। जिस तत्परता से उसने अपने को तटस्थ और निरपेक्ष सिद्ध करने एवं अपने गालों पर आने वाली अनुराग लाली को

छिपाने का यत्न किया मुझे हृदय से अच्छी नहीं लगी; किन्तु मैंने अपने मुखर नहीं होने दिया।

दूसरे दिन नम्बरदार महोदय के आने की उम्मीद थी अतएव मेरी पत्नी बारहसिंगे का गोश्त बनाने के लिये चल दी। मोजेज बैठा पढ़ता रहा और मैं छोटे बच्चों को बैठा पढ़ाता रहा। मेरी लड़कियाँ औरों के साथ बराबर व्यस्त दिखायी देती थीं और मैंने देखा कि काफी देर तक आग के ऊपर वह कुछ पकाती रहीं। मैंने पहले सोचा की भोजन बनाने में वे अपनी माँ की सहायता कर रही होंगी पर बाद को छोटे डिक ने कान में चुपके से बताया कि वह मुँह में लगाने के लिये कोई लेप बना रही हैं। मुझे हर तरह के मुख लेपों से कुछ स्वाभाविक घृणा सी थी; क्योंकि मैं जानता हूँ कि चेहरे की सुन्दरता बढ़ने के स्थान पर इन लेपों से चेहरा देखने में और बुरा लगता है। इसलिये बहुत धीमे धीमे मैं अपनी कुर्सी आग के नजदीक खिसका ले गया और चम्मच को हाथ में लेकर जैसे कि उसे ठीक करने की आवश्यकता हो, मैंने अनजाने की तरह बर्तन का सारा लेप उलट दिया; अब इस बचे हुये समय में फिर से लेप तैयार नहीं हो सकता था।

७

नम्बरदार साहब के आने का दिन आ गया था, आसानी से कल्पना की जा सकती है कि सौंदर्य प्रदर्शन के लिए क्या क्या तयारियाँ हुई होंगी। इसका भी अन्दाज आसानी से किया जा सकता है कि मेरी पत्नी और लड़कियों ने चिड़ियों की तरह अपनी सबसे ज्यादा खुशी के पंख फैलाए। मि० थार्नहिल अपने कुछ मित्रों, अपने पुरोहित तथा रसोइए के साथ घर आए। नौकरों को जो संख्या में बहुत थे दूसरे घर में जाने के लिए कह दिया; पर मेरी पत्नी ने सब का स्वागत करना चाहा और उनके रोकने की जिद की; इस कारण हमारे परिवार को तीन सप्ताह बाद तक भी तकलीफ उठानी पड़ी। मिस्टर वर्चेल ने एक दिन पहले अपनी शादी कुमारी विल्मट से करने के सम्बन्ध में चर्चा चलाई थी। कुमारी विल्मट की शादी की बात-चीत हमारे बड़े लड़के जियार्ज के साथ भी हो चुकी थी अतएव मिस्टर वर्चेल का जो हार्दिक स्वागत मेरे घर पर होता था उसमें कुछ रुक्षता आने लगी; किन्तु इस घटना से कुछ शान्ति भी मिली, क्योंकि साथ वालों में से एक को कुमारी विल्मट का नाम लेते सुनकर मिस्टर थार्नहिल ने कसम खाते हुए कहा कि एक खौफनाक चेहरे को खूबसूरत कहने से ज्यादा बेवकूफी की चीज उन्हें नहीं मालूम। यदि यह बात सही न हो तो मेरा नाम बदल दो, कह कर वे हँस पड़े और फिर हम लोग भी।

ओलीविया भी बिना फुसफुसाए न रह सकी जिससे उसके हंसमुख होने का प्रमाण मिल गया।

भोजनोपरान्त मैंने नित्य की भाँति चर्च के विषय में बात चीत चलाई। इसके लिए उनके पुरोहित ने मुझे धन्यवाद दिया और मुझे बताया कि चर्च ही उनके प्रेम की एकमात्र अधिकारिणी है। "आओ मुझे बताओ फ्रैन्क" नम्बरदार ने अपने स्वाभाविक तीखे पन की टोन में कहा 'मान लो तुम्हारी वर्तमान मालकिन चर्च अपनी ढीली बाहों का कुर्ता पहने एक ओर खड़ी हो और कुमारी सोफिया बिना ढीली बाहों के कुर्ते के बताओ तुम किसे पसन्द करोगे।"—"दोनों को" पुरोहित ने जोर से कहा। "सही है फ्रैन्क" नम्बरदार ने कहा, "मैं इस शीशे की कसम खाता हूँ एक सुन्दर लड़की सारे संसार के पण्डितपने से ज्यादा मूल्यवान है। चर्च के तरह तरह के कर बेवकूफी नहीं तो और क्या हैं? मैं इसे सिद्ध कर सकता हूँ—"

—मैं चाहता हूँ कि तुम सिद्ध कर सकते" मेरे लड़के मोजेज ने जोर देते हुए कहा; "और मैं सोचता हूँ", वह कहता गया, "मैं उन सब का उत्तर दे सकूँगा।"

—"बहुत अच्छा जनाब" नम्बरदार ने कहा और तम्बाकू का एक कश लेते हुए शेष बैठे हुए आदमियों को तैयार करने के लिए आँख का इशारा किया—"यदि तुम लोग इस विषय पर ठण्डे दिल से विचार करना चाहते हो तो मैं इसके लिए तैयार हूँ; पर पहले तुम यह बताओ कि तुम इसे उदाहरण पद्धति से सिद्ध करोगे या केवल शुद्ध तर्क पद्धति के बल पर ही?"

—"मैं इस विषय में केवल बुद्धि और तर्क का आश्रय लूँगा" मोजेज तर्क का अवसर पाकर प्रसन्नता पूर्वक बोला।

"फिर भी बहुत ठीक" नम्बरदार ने कहा, "और सबसे पहले, पहली बात लीजिए; मुझे विश्वास है कि तुम सच बात से इन्कार नहीं करोगे—और यदि यह नहीं तो मैं आगे कुछ न कहूँगा।"

—"क्यों" मोजेज ने उत्तर दिया "मैं सोचता हूँ मैं यह स्वीकार कर अपने पक्ष का समर्थन करूँगा।"

—"मैं भी यही आशा करता हूँ" दूसरे ने उत्तर दिया, "तुम स्वीकार करोगे कि किसी भी वस्तु का कोई एक भाग सम्पूर्ण वस्तु से छोटा होता है।"

—"मैं इसे स्वीकार करता हूँ" मोजेज ने कहा, यह तो ठीक और सत्य ही है।"

"मुझे आशा है" नम्बरदार ने कहा "तुम इन्कार नहीं करोगे कि एक त्रिभुज के तीनों अन्तःकोणों का योग दो समकोण के बराबर होता है।"

—"इससे ज्यादा सच और क्या हो सकता है।" दूसरे ने उत्तर दिया और स्वाभाविक आत्म गौरव पूर्ण दृष्टि से इधर उधर देखने लगा।

—"बहुत अच्छा," नम्बरदार ने तेजी से कहा। "प्रस्तावना इस तरह से निश्चित हो जाने के बाद मैं अब आगे बढ़ता हूँ; आत्म स्तित्वों की यह संलग्न शृंखला एक सम्बन्धित दुहरे अनुपात में बढ़ती हुई स्वाभाविक रूप से एक समस्या मूलक विवाद को जन्म देती है जो कुछ हद तक यह सिद्ध करती है कि आत्मा का तत्व द्वितीय अभिधेय से सम्बन्धित किया जा सकता है।"

—"ठहरो, ठहरो," दूसरे ने चिल्ला कर कहा, "मैं इसे नहीं मानता, क्या तुम समझते हो कि मैं इन रद्दी सद्दी सिद्धान्तों को चुपके से मान लूंगा?"

"क्या" नम्बरदार ने जबाब दिया जैसे कि वे किसी गुस्से में कह रहे हों; नहीं मानोगे! मेरे एक सीधे से प्रश्न का उत्तर दो : क्या तुम अरस्तू के कथन को जब वह कहता है कि सम्बन्धितों में सम्बन्ध होता है—ठीक समझते हो?"

—"बेशक।" दूसरे ने उत्तर दिया।

"यदि ऐसा है तो" नम्बरदार ने कहा, "जो मैं प्रस्ताव करता हूँ उसका सीधे उत्तर दो : तुम मेरे पहले विश्लेषणमूलक अनुसंधान को

न्याय अथवा सत्यहीन समझते हो; पर मुझे इसका कारण बताओ— इसका कारण बताओ, मैं कहता हूँ जल्दी इसका उत्तर दो—"मैं दृढ़ता पूर्वक कहता हूँ" मोजेज ने कहा, "मैं ठीक से तुम्हारी तर्क शक्ति समझ नहीं पा रहा हूँ; यदि इसे संक्षिप्त करके एक निश्चित रूप दिया जाय तो मैं इसका उत्तर दे सकता हूँ।"

—"अच्छा जनाब" नम्बरदार महोदय ने क्रोध के स्वर में कहा; "मैं तुम्हारा नौकर हूँ; मैं सोच रहा हूँ कि तुम मुझसे बुद्धि और तर्क दोनों लेने की आशा कर रहे हो। नहीं, जनाब, मैं दृढ़ता से कहता हूँ, तुम मुझसे बहस करने लायक नहीं।" इस बात से सब लोग बेचारे मोजेज के ऊपर हँस पड़े और वह उदास होकर हँसते हुए लोगों के बीच बैठा रहा। लोग बराबर हँसते रहे पर वह एक शब्द भी नहीं बोला।

मुझे इस सबमें जरा भी मजा न आया और औलीविया के ऊपर इसका बिलकुल उलटा असर पड़ा—उसने इस सबको मनबहलाव के लिए केवल एक मजाक भर समझा। इसलिए उसने उन्हें एक बहुत सुन्दर सहृदय युवक माना। मिस्टर थार्नहिल अपने विजय गर्व के कारण अपनी स्वाभाविक मूर्खता भूल गए और अन्य कितने ही सर्व सामान्य विषयों पर धारावाहिक रूप से बात-चीत करते रहे। ऐसे मनुष्य के लिए किसी लड़की के हृदय को जीत लेना आश्चर्य की बात नहीं; और फिर मेरी लड़की ने अपने अध्ययन से अपने मुख सौंदर्य पर गर्व करना सीखा था; अतएव दूसरे का मूल्य भी वह दूसरे के मुख सौदर्य के अनुपात मे ही करती थी।

उसके चले जाने के बाद हम लोगों ने अपने युवक नम्बरदार के गुणों के विषय में विवाद आरम्भ कर दिया। अपनी बात चीत के सिलसिले में नम्बरदार महोदय ओलीविया की तरफ अक्सर देखते रहते थे, अतएव हम सब को पूर्ण विश्वास हो गया कि उनके घर आने का कारण ओली-विया ही थी। वह अपने छोटे भाइयों और बहिनों की इस अवसर पर भोली भाली हँसी से कुछ नाराज होती दिखाई पड़ी। डिवोरह स्वयं दिन के वैभव से बहुत प्रसन्न थी और अपनी बेटियों की विजय में इतना अधिक

प्रसन्न थी जैसे स्वयं उसे ही सफलता मिली हो। "और अब प्रियतम" उसने उत्साह दिखाते हुए कहा, "मैं खुशी से यह मानती हूँ कि मैंने ही अपनी लड़कियों को नम्बरदार महोदय से परिचय बढ़ाने का इशारा किया था। मैं सदा कुछ इच्छा किया करती हूँ और तुम देखोगे कि मैंने ठीक ही किया; क्योंकि कौन जानता है कि इसका अन्त क्या हो?"

—"हां सचमुच कौन जानता है।" मैंने कुछ कराहते हुए कहा—"जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं इसे बहुत कम पसन्द करता हूँ। मुझे एक गरीब किन्तु ईमानदार आदमी के साथ इससे ज्यादा सुख हुआ होता जितना कि इस सम्पत्तिवान किन्तु चरित्रहीन युवक से; तुम मेरी बात पर विश्वास करो, यदि मेरा संदेह सही है तो कोई विचारशील आदमी हमारे घर से कोई विवाह सम्बन्ध नहीं करेगा।"

"बिलकुल सही बात है, पिता जी!" मोजेज ने कहा, "आप इस विषय में आवश्यकता से अधिक निर्दय हो रहे हैं, क्योंकि ईश्वर उसे उसके कर्मों के लिए दण्ड देगा, उसके विचारमात्र के लिए नहीं। हर एक आदमी हजारों बुरे विचार करता है—ऐसे विचार जिन्हें वह स्वयं ही नहीं दबा सकता। धर्म के विषय में स्वतन्त्र रूप से सोचना इन महाशय के लिए क्षम्य हो सकता है। इनकी गलतियों के लिए हमें इनको दोष न देना चाहिए क्योंकि इनमें अपने विचारों को कार्य रूप देने की क्षमता नहीं है और इन के साथ कुछ ऐसी परिस्थितियां है जिनके कारण यह अपने विचारों को दबा भी नहीं सकते। इनकी तुलना शहर के एक शासक से की जा सकती है जो रक्षा के अभाव में अपना समर्पण कर देता है।"

"सच है मेरे बच्चे" मैंने कहा, "पर यदि शासक शत्रु को आमन्त्रित करता है तब तो वह सचमुच दोषी है। यही बात हमेशा उन सबके लिए सही है जो जान बूझकर गलतियों को गले लगाते हैं। उन सिद्धियों को जिन्हें वे देखते हैं, स्वीकार करने में दोष नहीं; बल्कि दोष है उन सिद्धियों के प्रति आँख मूद लेने में। इसलिए हम अपनी भ्रान्त धारणाओं के जो अपने आरम्भ में अनैच्छिक होती हैं—क्योंकि हम लोग या तो जान बूझ-

कर गलती करते हैं या उनके प्रति असावधान रहते हैं—दोष के लिये दण्ड अथवा अपनी बेवकूफी के लिए घृणा के अधिकारी होते हैं।

अब मेरी पत्नी ने यद्यपि तर्क तो छोड़ दिया पर बात चीत जारी रखी। उसने कहा कि हमारे परिचित बहुत से आदमी स्वतन्त्र विचारक रहे पर एक पति के रूप में वह बहुत ही सफल और प्रिय सिद्ध हुये। उसने कुछ लड़कियों के नाम गिनाए जिन्होंने अपनी बुद्धि तथा कौशल से अपने पतियों को सुमार्ग पर चलना सिखा दिया। "और कौन जानता है प्रियतम! वह कहती गयी "ओलाविया क्या नहीं कर सकती है? इस लड़की को हर विषय का अच्छा ज्ञान है और जहाँ तक मैं जानती हूँ विवाद और तर्क करने में वह बहुत प्रवीण है।"

"क्यों प्रियतमे। कौन सा विवाद पढ़ा है उसने?" मैंने कहा, "मुझे नहीं याद आता कि मैंने उसे ऐसी कोई भी पुस्तक कभी दी हो; तुम निश्चित रूप से उसके गुणों की अनावश्यक प्रशंसा कर रही... ..."

—"सचमुच पिता जी" ओलीविया ने उत्तर दिया, "मैंने इस विषय में काफी पढ़ रखा है। मेरी मां ठीक ही कहती हैं। मैंने थाकम और स्क्वायर के बीच के विवाद पढ़े हैं; राबिन्सन क्रूसो और सैवेज के बीच के द्वन्दों से मैं परिचित हूँ और आजकल धार्मिक विवाह बन्धनों के विवाद को पढ़ रही हूँ।"

"बहुत ठीक" मैंने कहा "तुम बड़ी अच्छी लड़की हो, मुझे मालूम पड़ रहा है कि परिवर्तन करने में तुम माहिर हो और इसलिए आकर अपनी मा की झरबेरी की शराब बनाने में सहायता करो।"

८

दूसरे दिन सबेरे मिस्टर वर्चेल फिर घर आए। यद्यपि कुछ कारणों से मेरे यहाँ उनका बार बार आना मुझे अच्छा न लगता था पर फिर भी मैं उनको अपने घर आने जाने से मना न कर सका। यह सही है कि घर आकर वे खूब परिश्रम करते और चाहे भूसे से अनाज निकालने की बात ही हो या हल चलाने की, वह हर काम में हम सब से आगे रहते। इसके अतिरिक्त वह हर समय कुछ प्रसन्न करनेवाली बात करने के लिए तैयार रहते जिससे हम लोगों की थकान बहुत कुछ कम पड़ जाती थी। उनके बात करने का ढंग बेतुका होने के साथ ही साथ कुछ-तुक का भी होता जिससे उनके ऊपर मुझे प्यार हँसी और दया आती। वे मेरी लड़की की तरफ आकर्षित थे और केवल इसी लिए मैं उन्हें नापसन्द करता था। वह हँसी हँसी में उसे अपनी छोटी मालकिन कह देता और वह जब सब लड़कियों को रिबन का एक एक जोड़ा लाया तो उसका जोड़ा सब से अच्छा था। मैं नहीं जानता कैसे, पर वह प्रति दिन सब का प्यारा होता जा रहा था, उसकी हँसी में शिष्टता बढ़ती जाती और उसकी सादगी में बुद्धिमत्ता का विकास मालूम पड़ता।

मेरा सारा परिवार खेत में था और हम लोग बैठे थे, थोड़ा सा पेड़ पर झुके हुए; हम लोगों के कपड़े भूसे के ढेर पर फैले हुये थे और मिस्टर

बर्चेल सबको हँसाने का यत्न कर रहे थे। एक नन्हीं सी चिड़िया दायीं तरफ से मीठे स्वर में कुछ गा रही थी तथा दूसरी बायीं तरफ से; कुछ और छोटी छोटी चिड़ियाँ पास ही फुदक रही थीं और हर ध्वनि शांति की प्रति ध्वनि लग रही थी। "मैं इस तरह कभी नहीं बैठती" सोफिया ने कहा "किन्तु मैं उन दो प्यार करने वालों के विषय में सोचती हूँ जिनका वर्णन मिस्टर गे ने बड़े प्यारे ढंग से किया है; यह लोग एक दूसरे के बाहुपाश में मार डाले गये थे। इस वर्णन में कुछ इतनी करुणा है कि इसको मैंने एक नहीं अनेक बार बड़े ध्यान से पढ़ा है और हर वार मुझे एक अजीब आनन्द मिला है।'

"मेरी राय में" मेरे लड़के ने कहा "उस कविता के सर्वश्रेष्ठ स्थल भी एसिज और गाल्टी के ओविड की तुलना में कुछ भी नहीं हैं। रोमन कवि तुलनात्मक वर्णन की उपयोगिता अधिक समझते हैं और इसी रीति को कला पूर्ण ढंग से निवाहने में ही करुण रस की सारी शक्ति निर्भर करती है।

—"यह ध्यान देने की बात है" मिस्टर बर्चेल ने कहा, "दोनों कवियों ने जिनकी चर्चा अपने अभी की है आपने अपने देश में एक गलत किस्म की रुचि प्रचलित करने में योग दान दिया है। उनकी पंक्तियाँ अनेक तरह के विशेषणों से भरी पड़ी है। छोटे मोटे कवियों ने ऐसी शैली के दोषों की ज्यादा नकल कर डाली। रोम के राज्य के आखिरी दिनों की कविता की तरह अंग्रेजी काव्य भी विविध प्रकार के श्रृंखला हीन अथवा असम्बद्ध सुन्दर दृश्यों का संकलन अथवा स्वर साम्य रखने वाले ऐसे विशेषणों का जिनका कोई अर्थ नहीं एक समूह मात्र है।"

सोफिया स्त्री सुलभ कोमलता के साथ स्वीकार मुद्रा में बर्चेल की मौन प्रशंसा सी कर रही थी। परन्तु हम लोगों की शांति एकाएक भंग हो गई। पास के बंदूक के दगने का एक जोर का धड़ाका हुआ और शीघ्र ही एक आदमी एक झाड़ी के बीच से होता हुआ आकर अपना मारा हुआ शिकार उठाता देख पड़ा। यह नम्बरदार का पुरोहित था जिसने काली चिड़िया

को जो लगभग एक घन्टे से अपना मधु संगीत सुनाकर हम लोगों को शांति दे रही थी, अपनी बंदूक का निशाना बनाया था। इतने ज़ोर की आवाज और फिर इतने नज़दीक होने के कारण मेरी लड़कियाँ घबड़ा गयीं; इतना ही नहीं, मैंने देखा सोफिया मारे डर के मिस्टर बर्चेल की बाहों में भाग पाने के लिये पहुँच गयी। पुरोहित महोदय ने आकर हम लोगों के मनो विनोद में विघ्न डालने के लिए क्षमा माँगी, उन्हें इस बात का जरा भी पता नहीं था कि हम लोग यहीं बैठे थे। इसलिये वह मेरी सब से छोटी लड़की के बगल में बैठ गये और एक शिकारी की तरह सबेरे से अब तक का किया हुआ शिकार देने के लिये उसकी तरफ हाथ बढ़ाया। पहले तो वह उसे अस्वीकार करने जा रही पर उसी क्षण मेरी पत्नी ने आँख के इशारे से उसे ऐसी गलती करने से मना कर भेंट स्वीकार कर लेने के लिये कहा। मेरी लड़की ने कुछ हिचकिचाते हुये भेंट स्वीकार कर ली। मेरी पत्नी ने फुसफुसाते हुये उसके घमंड की निन्दा की और कहा कि सोफी ने पुरोहित के हृदय पर और उसकी बहिन ने नम्बरदार के हृदय पर विजय पा ली है। यद्यपि मुझे शक हुआ कि उसके प्रेम का पात्र पुरोहित नहीं वरन् कोई और है। पुरोहित जी हमें नम्बरदार महोदय का संदेश पहुँचाने आये थे। मिस्टर थार्नहिल ने उसी दिन कुछ संगीत एवं वाद्य का आयोजन किया था। उनका विचार था कि 'उस रात को मेरे दरवाजे की घास पर चाँदनी में मेरी लड़कियों को बालडांस के लिये आमंत्रित किया जाय।" "मैं इन्कार नहीं कर सकता" वह कहता गया "कि इस संदेश को आप तक पहुँचाने में मुझे विशेष रुचि है क्योंकि मैं आशा रखता हूं कि सोफी का हाथ पकड़कर मुझे नाचने का अवसर मिलेगा। यही मेरा सबसे पहले सूचना पहुँचाने का पुरस्कार होगा।" इस पर मेरी लड़की ने उत्तर दिया कि उसे ऐसा करने में जरा भी आपत्ति नहीं होगी यदि उसे वह आदर के साथ कर सके। "किन्तु" वह कहती गयी, "यहाँ पर एक महानुभाव हैं।" मिस्टर बर्चेल की तरफ इशारा करते हुये उसने कहा, "जिन्होंने आज दिन भर काम में मेरा हाथ बटाया है और यह ठीक ही है कि रात की खुशियों

में भी वही मेरे साथ रहें।" मिस्टर बर्चेल ने उसकी इच्छा के लिये उसे बधाई दी और पुरोहित जी के सामने उसने अपना नाम वापस कर लिया। उन्होंने कहा कि उस रात उनको पाँच मील दूर जाना था, एक दावत में। उनका इन्कार करना मुझे अजीब लगा, और न मैं यही समझ सका कि मेरी लड़की जैसी बुद्धिमती लड़की एक निधन आदमी को एक बहुत धनी आदमी के सामने क्यों अधिक पसन्द करती है। किन्तु जिस तरह मनुष्य स्त्रियों में विशेष गुणों की खोज कर लेते है उसी तरह औरतें भी हम लोगों के विषय में बहुत सही निर्णय रखती हैं। मानव जाति के यह दो समुदाय एक दूसरे के भेदिये का काम करते हैं और विशेष प्रकार की योग्यता से युक्त होने के कारण आपस में एक दूसरे के गुण दोष दर्शन एवं निरीक्षण में बहुत निपुण होते हैं।

इन गुणों से स्पर्द्धा सी करती मालूम पड़तीं और जो बात मुझे खराब लगी वह थी नखशिख शृंगार और अस्वाभाविक सौंदय प्रदर्शन की लालसा। लेकिन उनके उठने बैठनें का ढंग तथा व्यवहार उनके और सब गुणों से ऊपर जान पड़ता था। उनमें से एक ने कहा कि कुमारी औलीविया कुछ अधिक सांसारिक मालूम पड़ती हैं, इससे वह काफी ठीक हो जाएगी; जिस पर दूसरी ने कहा केवल एक जाडा शहर में रहने के बाद उसकी छोटी सोफ़िया बिलकुल बदल जाएगी। मेरी पत्नी ने बडी तत्परता के साथ दोनों बार अपनी स्वीकृति दी और कहा कि वह सबसे ज्यादा इस बात की इच्छुक है कि वह अपनी लडकियों को एक जाड़े के लिए शहर में भेज कर उनके चेहरे के खुरदरे पन को दूर कर दे। इस पर मुझसे न रहा गया और मैं कहने लगा कि उनकी पैदाइश उनकी वर्तमान सम्पत्ति के अनुपात से वैसे ही अधिक है, शहर में रह कर उनमें और अधिक अमीरी की बू आ जायगी और इस तरह उनके लिए गरीबी और भी तकलीफ देह तथा हँसी को चीज हो जाएगी। उन्हें अमीरी में रहने की एक आदत सी पड़ जाएगी जिसमें इन्हें रहने का कोई अधिकार नहीं है।"

"कौन से सुख और आनन्द यह भोगने लायक नहीं हैं?" मि० थार्नहिल ने कहा, "इनसे ज्यादा आनंन्द उठाने की शक्ति और कौन रखता है? जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, वह कहते गए मेरी सम्पत्ति काफी बड़ी है, प्यार, स्वतन्त्रता और आनन्द उपभोग मेरे प्रिय विषय हैं; और मेरी जान की कसम, मैं अपनी औली'वया की प्रसन्नता के लिए अपना आधा राज्य दे सकता हूँ, और केवल एक चीज में बदले में चाहूँगा—लाभ में अपने को जोड़ना, बस।" मैं संसार की बातों से इतना अनभिज्ञ नहीं था कि मैं इस शब्द जाल के अन्दर छिपी हुई दुर्भावना एवं नीचपने की इच्छा को न समझ पाता, किन्तु मैंने यत्न पूर्वक अपने क्रोध को शांत रखा। "महोदय" मैंने कहा, "जिस परिवार के बीच बैठकर आप अपने को बड़ा समझ रहे हैं, वह परिवार उतना ही बड़ा है जितना कि आप का—जितना

सम्मानित परिवार आपका है उतना ही मेरा भी। उसके अनादर के लिए किसी तरह के प्रयत्न का फल बुरा हो सकता है। इस समय हम लोगों के पास केवल एक सम्पत्ति बची है और वह है आदर—यही हम लोगों का अवशेष कोष है जिस की रक्षा हम सब बड़ी सावधानी के साथ कर रहे हैं।" मुझे शीघ्र अपनी बात चीत में आजाने वाली गर्मी पर अफसोस हुआ क्योंकि नम्बरदार महोदय ने मेरा हाथ पकड़ कर कसम खाते हुए मेरी बात की तारीफ की, यद्यपि उन्होंने मेरे संदेहों को निर्मूल कहा। "जहाँ तक आप के इशारे का सम्बन्ध है" वे कहते गए "मैं कसम खाता हूँ मेरे हृदय से यह विचार बहुत दूर था। नहीं, मुझे मेरी सबसे प्यारी चीज की कसम, मुझे इस तरह की चीजों से जरा भी रुचि नहीं—मैं इन सबसे कोसों दूर रहता हूँ।"

दो महिलाएँ जो शेष सबसे अनभिज्ञ होने का बहाना कर रही थीं स्वतन्त्रता की अंतिम चोट से बहुत नाराज होती दिखाई पड़ीं और सदाचार पर गम्भीर थीं। खुले रूप से विवाद करने लगीं; इसमें मेरी पत्नी पुरोहित जी तथा मैंने भाग लिया और अन्त में नम्बरदार महोदय को अपनी पहले की हुई ज्यादती को अफसोस के साथ स्वीकार करना पड़ा। हम लोगों ने विकार रहित तथा दोष मुक्त मस्तिष्क पर प्रकाश के प्रभाव तथा ब्रह्मचर्य तथा नियमित जीवन के आनन्दों पर विवाद किया। मुझे तो इतना आनन्द आया कि मैं अपने छोटे बच्चों के साथ इन लाभकारी बातों को घण्टों सुनता रहा। मिस्टर थार्नहिल मुझ से भी आगे थे। उन्होंने मुझ से पूछा कि मुझे कोई आपत्ति तो न होगी यदि ईश्वर प्रार्थना प्रारम्भ की जाय मैंने प्रसन्नता पूर्वक प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और इस तरह से सारी रात बड़े मजे में बीत गयी और सबेरा होते ही लोग जाने की सोचने लगे। दोनों महिलाएं मेरी लड़कियों से प्यार जताने के कारण जाना नहीं चाहती थीं, और उन्होंने मेरी लड़कियों से अपने घर आने की प्रार्थना की। नम्बरदार महोदय ने प्रस्ताव अनुमोदन किया। और मेरी पत्नी ने मुस्कराकर अपनी सम्मति भी दे दी लड़कियों ने भी मेरी

तरफ देखा जैसे कि वे जाना चाहती हों। इस परेशानी में मैंने दो तीन बार उत्तर देने के स्थान पर चुप रहना ठीक समझा पर फिर भी मेरी लड़कियों ने मेरे इशारे को समझते हुए भी न मानना चाहा और इसलिए अन्त में मुझे मुंह फाड़ कर नांही कर देनी पड़ी जिस कारण सारे दिन मेरे ऊपर सब की क्रोध भरी निगाहें पड़ती रहीं और किसी ने भी मुझ से अधिक बात नहीं की।

मुझे लगा कि संयम सादगी और संतोष पर दिए हुये मेरे लम्बे चौड़े व्याख्यान और आदेश बिलकुल बेकार होते जा रहे हैं। नम्बरदार महोदय तथा उनके मित्रों के तीन चार बार इधर आ जाने से मेरी लड़कियों का घमण्ड जो अभी निर्मूल नहीं हुआ था वरन् सुप्त था, फिर जाग पड़ा। हमारी खिड़कियां फिर से गले और मुंह के लेपों से भर गयीं। सूरज की रोशनी को मेरी लड़कियाँ अपने शरीर की चमड़ी के रंग के लिए शत्रु समझने लगी अतएव उन्होंने आग से दूर भागना शुरू कर दिया। मेरी पत्नी ने कहा कि बहुत सबेरे उठने से उसकी लड़कियों की आंखें कमजोर हो जाएंगी तथा भोजनोपरान्त काम करने से उनकी नाक लाल पड़ जायगी, और उसने मुझे विश्वास दिलाया कि हाथ तभी सब से अधिक गोरे दिखायी देते हैं जब उनसे कोई काम न लिया जाय। फलतः मेरी लड़कियों ने घर के काम करना एकदम बन्द कर दिया और सारा दिन अपने साज शृंगार में बिताने लगीं। फ्लैमबौरों की गरीब लड़कियों के साथ मेरी बेटियों ने, उन्हें तुच्छ समझकर उठना बैठना छोड़ दिया और दिन भर केवल अब उच्च जीवन, उच्च समाज, चित्रकारी, रुचि, पसन्द शेक्शपियर और संगीत वाद्यों के विषय में ही सारी बातें हुआ करतीं।

हम लोगों ने यह सब सहन कर लिया होता यदि भविष्य बताने वाला

एक बौना वर न आया होता, उसके आने से हमारी लड़कियों के ठाट बाट में घृताहुति सी पड़ी। जैसे ही छोटी सिविल दिखाई पड़ी कि मेरी लड़कियाँ मुझसे मांगने के लिए दौड़ आयीं यदि सच कहूँ तो कहना पड़ेगा कि हर घड़ी होशियार रहते रहते ऊब गया था और मैं उनकी मांग पूरी किए बिना न रह सका। मैं उन्हें प्रसन्न देखना पसन्द करता था; मैंने हर एक को एक एक शिलिंग दिया, यद्यपि परिवार के सम्मान के लिए यह बताना आवश्यक है कि मेरी लड़कियां खाली हाथ बाहर कभी नहीं गयीं। मेरी पत्नी हमेशा बड़े प्यार के साथ उन सब की जेबों में बाहर जाते समय एक एक गिन्नी रख देती थीं और साथ ही उसे खर्च न करने के लिए भी कह देती थी। जब भविष्य बताने वाले के पास से वे लौटीं तो उनके चेहरे से मुझे यह मालूम हो गया कि उनके भाग्य में कोई बहुत बड़ी चीज बतायी गयी है। "बताओ मेरी लड़कियों कैसे बीती? बताओ लिवी क्या भाग्य बताने वाले ने कुछ लाभ की बात बतायी है?" "मैं दृढ़ता पूर्वक कहती हूँ पिता जी", लड़की ने कहा, "मेरा विश्वास है कि उसमें कुछ अति मानवीय शक्ति है, क्योंकि उसने साफ साफ बताया है कि एक वर्ष के अन्दर ही मेरा विवाह किसी एक धनी नम्बरदार से होगा।"—"कैसे" मैंने कहा "क्या अपने दो शिलिंग के बदले में तुम्हें यही सब मिला? केवल एक नम्बरदार—दो शिलिंग खर्च पर? तुम सब बेवकूफ हो, इसका आधा ही खर्च करने पर मैं तुम्हें एक नवाब और राजकुमार देने का वायदा कर देता।"

उनकी जिज्ञासा के बड़े गम्भीर परिणाम हुए। हम लोगों ने अपने लिए सोचा। जैसे कि हम किसी ऊँचे पद के लिए बनाए गए हों और भविष्य में आने वाले सुख की कल्पना में आनन्द लेने लगे।

यह बात हजारों बार कही जा चुकी है और इसे मैं एक बार और कहूँगा कि भविष्य के आनन्द की कल्पना से जितना सुख होता है उतना सुख वह भविष्य जब वर्तमान होता है तब नहीं। पहली अवस्था में हम अपनी ही भूख के लिए भोजन तैयार करते हैं; दूसरी दशा में प्रकृति

हमारे लिए पकाती है। हम लोगों ने अपनी सम्पत्ति की ओर इस तरह देखा जैसे कि वह बढ़ रही हो और चूंकि सभी लोगों की राय थी कि नम्बरदार महोदय मेरी लड़की को प्यार करते हैं, वह सचमुच ही उन्हें प्यार करने लगी। उन लोगों ने नम्बरदार के लिए उसकी वासना जगा दी। इस शुभ अवसर पर मेरी पत्नी हर रात खूब आनन्ददायी सपने देखती ऐसे आनन्ददायी सपने शायद दूसरा कोई इस संसार में नहीं देखता वह रोज अपने सपने बड़ी गम्भीरता और विश्लेषण के साथ हम लोगों को बताती। एक रात को उसने मृत शरीर और हड्डियां देखीं जो शीघ्र विवाह की प्रतीक थी; दूसरी बार उसने देखा की उसकी लड़कियों की जेबें छोटे छोटे सिक्कों से भरी थी जो इस बात का प्रतीक था कि शीघ्र ही उनकी जेबें सोने से भर जाएँगी। लड़कियाँ स्वयं भी सपने देखतीं। वे अजीव तरह के चुम्बन अपने होठों और गालों पर महसूस करतीं। उन्होंने मोमबत्ती में अंगूठियाँ देखीं आग से निकलते हुए रुपयों की थैलियाँ देखीं और हर चाय के प्याले से लटकती हुई प्रेम ग्रन्थियाँ उन्हें दिखायी पड़तीं।

सप्ताह के अन्त में हम लोगों को शहर की औरतों से एक पत्र मिला जिसमें उन्होंने आगामी रविवार को मेरे सारे परिवार से चर्च में मिलने की आशा प्रकट की थी। पत्र के फलस्वरूप शनिवार को सबेरे से ही मेरी पत्नी तथा मेरी बेटियों के बीच बहुत घुल मिल कर चुपके चुपके विमर्श होने लगा। वे कभी कभी दबी निगाह से मेरी तरफ भी छिपा कर तिरछे देख लेतीं जिससे उनकी किसी निहित योजना का प्रमाण मिल जाता। सच तो यह है कि मुझे इससे यह संदेह हो रहा था कि वे सब मूल्यवान कपड़े पहन कर निकलने का बेहूदा प्रस्ताव कर रही थीं। संध्या को उन्होंने बहुत नियमित रूप से काम प्रारम्भ कर दिया और मेरी पत्नी ने संघर्ष के नेतृत्व का भार अपने कंधों पर ले लिया। चाय पीने के बाद जब मैं कुछ प्रसन्न दिखायी दिया तो उसने प्रारम्भ किया —

"मैं सोचती हूँ, मेरे प्रियतम, चार्ल्स, कल चर्च में अच्छी भीड़

रहेगी।"—"हाँ प्रियतमे, शायद ऐसा हो" मैंने उत्तर दिया, "यद्यपि तुम्हें परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं, तुम्हें उपदेश अवश्य सुनने को मिलेगा चाहे भीड़ हो या न हो।"—"यही तो मैं भी आशा करती हूँ," उसने उत्तर दिया "लेकिन मैं सोचती हूँ प्रियतम, हमें वहाँ जितनी अच्छी तरह चल सकना सम्भव हो, चलना चाहिए, पता नहीं क्या हो!"

—"तुम्हारी यह पूर्व सावधानियाँ बहुत ही स्तुत्य हैं; चर्च में तो मुझे सुन्दर व्यवहार, सादगी तथा सफाई अधिक प्रिय है। हम लोग वहाँ प्रसन्न विनीत और साफ हृदय से चलेंगे"—"हाँ" उसने कहा, "मैं यह जानती हूँ पर मेरा मतलब है कि हम सब को बढ़िया बढ़िया ढंग से वहाँ जाना चाहिए—कंगाल बन कर नहीं।"

—"तुम ठीक कहती हो प्रियतमे" मैंने उत्तर दिया "मैं स्वयं ही यही प्रस्ताव करने जा रहा था। जाने का सब से अच्छा ढंग यह है कि वहाँ हम जितनी जल्दी पहुँच सकें पहुँच जाँय, जिससे कि उपदेश प्रारम्भ होने से पहिले सोचने और ईश्वर ध्यान के लिए पर्याप्त समय मिल सके।" —"ओह चार्ल्स" उसने रोक कर कहा "यह सब बहुत सही है; पर मैं यह नहीं कहना चाहती; मेरा मतलब है कि हम सब वहाँ शरीफ आदमी की तरह चलेंगे। तुम जानते हो कि चर्च यहाँ से दो मील दूर है और मैं दृढ़ता पूर्वक कहती हूँ कि मुझे यह रत्ती भर भी पसन्द नहीं कि मैं अपनी लड़कियों को पैदल राह घिसटते, लाल और हाँफती हुई देखूँ जैसे कि वे संसार की बहुत बड़ी दौड़ में विजय पाकर खड़ी हुई हों। मेरे प्रियतम, मेरा प्रस्ताव अब यह है हमारे पास दो हल चलाने वाले घोड़े हैं—बछेड़ा जो हमारे परिवार में पूरे ६ साल से है तथा उसका साथी ब्लैकबेरी जिसने पिछले महीने से मुश्किल से ही खेती का कोई काम किया है। वे दोनों मोटे और काहिल हो गए हैं। वह भी हम लोगों की तरह कोई काम क्यों न करें! और मैं तुम से बताती हूं कि यदि मोजेज उन्हें सजा देगा तो वे देखने में बड़े भले लगने लगेंगे।"

इस प्रस्ताव पर मैंने आपत्ति की और कहा कि पैदल चलना इस रद्दी

सवारी से बीस गुना अधिक भलमनसाहत पूर्ण होगा क्योंकि ब्लैकबेरी एक आँख का अन्धा था और बछेड़ा पूंछ से रहित; वे न तो सवारी के काम के लिए ही बनाए गये हैं तथा इसके अतिरिक्त उनमें सैकड़ों खतरनाक तथा गंदी चालें हैं; इतना ही नहीं सारे परिवार में केवल एक काठी और एक लगाम है। यह सब आपत्तियाँ किसी तरह निर्मूल सिद्ध कर दी गयीं अतएव मुझे हार कर बात माननी पड़ी। दूसरे दिन सबेरे मैंने देखा कि यात्रा के लिए आवश्यक सामान रखने में वे जरा भी व्यस्त नहीं दिखायी पड़ी पर मैंने सोचा कि पैदल चल देना एक तरह से समय का सदुपयोग ही होगा अतएव मैं पहले ही चर्च की तरफ चल पड़ा और उन्होंने पीछे से जल्दी ही आने का वायदा कर लिया। मैं लगभग एक घण्टे तक पढ़ने वाली मेज पर बैठे बैठे उनका इन्तजार करता रहा और उनके न आने पर अन्त में निराश हो कर उपदेश प्रारम्भ कर दिया। मैं उपदेश देते समय भी उनकी अनुपस्थिति के विषय में सोचता रहा। उपदेश समाप्त हो जाने पर भी जब मुझे अपने परिवार के सदस्य न दिखायी पड़े तो मेरी चिन्ता बढ़ने लगी। अतएव मैं घोड़े आने के रास्ते से घर लौटा। यह रास्ता पाँच मील लम्बा था जब कि पैदल का रास्ता केवल दो मील, जब मैं आधा रास्ता तय कर चुका तो मैंने देखा कि जलूस धीरे धीरे चर्च की तरफ बढ़ रहा था। मेरा लड़का, मेरी पत्नी और मेरे दो छोटे बच्चे एक घोड़े पर और मेरी दो लड़कियाँ दूसरे घोड़े पर थीं। मैंने उनकी देर का कारण पूंछा; पर उनकी निगाह से मुझे शीघ्र मालूम हो गया कि मार्ग में उन्हें बहुत परेशानियों का सामना करना पड़ा है। पहले तो घोड़ों ने घर के आगे एक कदम भी चलने से इंकार कर दिया और जब मिस्टर बर्चेल ने लगभग दो स गज तक अपने डण्डे से पीट कर आगे बढ़ाया तो उन्होंने रास्ता चलना शुरू किया। कुछ देर बाद मेरी पत्नी के घोड़े के रकाब टूट गए जिससे उन्हें मजबूरन रुकना पड़ा और उनको फिर से ठीक करने के बाद आगे चले। उसके बाद एक घोड़े ने चुप खड़े रहना तय कर लिया और किसी तरह भी पीटे जाने और लालच दिखाने से भी

आगे नहीं बढ़ा। इसके बाद ज्यों ही आगे बढ़े थे कि मैं उनसे मिल गया था। मैं हर चीज को सुरक्षित पाकर तथा उनके कष्टों को देख कर नाराज नहीं हुआ क्योंकि इससे मुझे भविष्य में अपनी लड़कियों और पत्नी पर विजय पाने के अनेक सुअवसर मिलने की आशा थी और अपनी लड़कियों को मैं विनीतशीलता का उपदेश भी दे सकता था।

११

दूसरे दिन माइकेल्माज की संध्या का, मेरे पड़ोसी फ्लैमबौरो ने मेरे परिवार को अपने घर आमंत्रित किया, उत्सव में भाग लेने के लिये हमारे पिछले डर ने हमें कुछ विनीत कर दिया था अन्यथा इस आमंत्रण को हम लोगों ने घृणा पूर्वक अस्वीकार कर दिया होता। हमारे ईमानदार पड़ोसी के यहाँ गोस्त और पकौड़ियाँ बहुत सुन्दर बनती थी और मेरी पत्नी भी उसके भेड़ों की ऊन की प्रशंसा करती थी। यह सही है कि उसके कहानी कहने का ढंग इतना अच्छा नहीं था, वे बहुत लम्बी और अनाकर्षक होतीं और अक्सर उनका सम्बन्ध हमेशा उसी से होता। हम लोग इन कहानियों पर दसों बार हँस चुके थे फिर भी एक बार और हँसने के लिये तैयार थे। मिस्टर वर्चेल भी उस समय वहाँ उपस्थित थे; यह हमेशा किसी न किसी भोले भाले मजाक में व्यस्त रहना पसन्द करते थे अतएव उन्होंने बच्चों के साथ खेलना शुरू कर दिया। मेरी पत्नी भी बच्चों के साथ बिना खेले न रह सकी और मुझे यह देख कर बड़ी खुशी हुई कि वह बुढ्ढी नहीं है। इस बीच में अपने पड़ोसी के साथ इधर उधर देख कर हर हँसी की बात में हँसता रहा। अपने बचपन के दिनों की याद कर हम दोनों बड़े खुश हुये। एक खेल समाप्त होने के बाद यह लोग दूसरा खेल प्रारम्भ कर देते—उन्होंने गरम काकल का खेल शुरू किया;

आशाएँ और प्रश्न किये गये और सब से बाद को चप्पल फेंक खेल आरम्भ हुआ। शायद सब लोग इस पुराने खेल से परिचित न हों अतएव इसका कुछ वर्णन करना आवश्यक है। सारे खिलाड़ी एक दायरे के अन्दर खड़े हो जाते हैं और एक खिलाड़ी उनके बीच में आ खड़ा होता है। किनारे खड़े हुए खिलाड़ी अपनी जाँघ के नीचे से दूसरे खिलाड़ी तक चप्पल फेंकते हैं, और दूसरा खिलाड़ी उसे हाथ में लेकर उसे तीसरे खिलाड़ी के पास तक फेंक देता है; बीच में खड़ा हुआ खिलाड़ी इस चप्पल को पकड़ने दौड़ता है। इस तरह जब कोई लड़की खेल के सिलसिले में बीच में आ जाती है तो बड़ा मजा आता है। चारों तरफ से लोग उसे ऐसे स्थान पर मारने की कोशिश करते हैं जहाँ की रक्षा वह आसानी से नहीं कर सकती। एक बार मेरी बड़ी लड़की भी बीच में पड़ गयी थी। सब लोग बड़ी खुशी के साथ खेल का मजा लेते हुए जोर जोर से चिल्ला कर कहते थे—बेईमानी मत करो, बेईमानी मत करो—शोर इतना अधिक बढ़ गया था कि कान नहीं दिया जा रहा था—ऐसी दशा में शोर की अधिकता के कारण कोई भी आदमी बेहोश हो सकता था। उसी समय शहर की परिचित दो महिलाएँ, 'लेडी ब्लार्नी और कुमारी कैरोलिना विलेल्मिना अमीलिया स्केग्स आ पहुँची। उनके आ जाने से जो दशा हुई उसका वर्णन करना पूर्णतया असम्भव है; हम सब चेतना हीन से हो गये। इतने ऊँचे परिवार की लड़कियों द्वारा इस दशा में पाया जाना हम लोगों के लिये एक तरह मृत्यु थी। मिस्टर फ्लैमबौरो द्वारा प्रस्तावित खेल में और अधिक उम्मीद ही क्या की जा सकती थी। कुछ देर तक तो ऐसा लगा जैसे हम लोग जमीन में गाड़ दिए गए हों और ताज्जुब से हम लोग जम से गए।

दोनों महिलायें हम लोगों को देखने के लिये अभी आईं थीं और जब हम लोग घर पर न मिले तो वे लोग यहाँ तक दौड़ी चली आयीं। उस दिन जब हमारे परिवार के लोग चर्च नहीं पहुँचे तो इन लोगों का कौतूहल बढ़ा कि कौन सी ऐसी रोकने वाली जरूरी बात हो सकती थी जिससे

हम सब को वहाँ जाने में अड़चन पड़ी। ओलीवीया ने हम सब की तरफ से संक्षेप में केवल यह कह कर कि घोड़ों ने हमें गिरा दिया था सारी कहानी कह दी। इस पर महिलाओं ने बहुत अधिक शोक प्रकट किया किन्तु जब उन्हें यह बताया गया कि किसी को चोट नहीं आई तो वे बहुत अधिक प्रसन्न हुई; लेकिन यह बताने पर कि डर के मारे करीब करीब हम लोग मर गए थे वे लोग बहुत ज्यादा दुखी हुई पर यह सुन कर कि हम लोगों की रात बड़ी खुशी से बीती वे फिर से बहुत खुश हुईं। मेरी लड़कियों से उन्हें बहुत अधिक संतोष हुआ: पिछली संध्या को उनका ढंग उत्साह पूर्ण था और अब इस उत्साह में और अधिक ज्यादती हो गयी थी। उन्होंने इस परिचय को और अधिक दृढ़ तथा मजबूत करने की इच्छा प्रकट की। लेडी ब्लार्नी ने ओलीविया से विशेष रूप से अपना प्रेम प्रकट किया। कुमारी अमीलिया ने उसकी बहिन के प्रति अधिक प्यार जताया। उन दोनों ने अपनी अपनी बातों का आपस में समर्थन किया जब कि मेरी लड़कियाँ अवाक उनकी तरफ देखती हुई बैठी रही तथा मन ही मन उन के उच्च कुल एवं रहन सहन की प्रशंसा करती रहीं। चूँकि प्रत्येक पाठक चाहे वह स्वयं कितना ही गरीब क्यों न हो, अमीर आदमियों की बात चीत राजा रानियों के किस्से कहानियाँ पढ़ने के लिये बहुत उत्सुक होता है अतएव उस समय होने वाली बात चीत का अंतिम अंश देने के लिये मैं क्षमा किया जाऊँ।

"जितना कुछ मैं इस विषय में जानती हूँ" अमेलिया ने कहा "वह यह है, चाहे सत्य हो अथवा नहीं किन्तु मैं तुम्हें इतना विश्वास दिला सकती हूँ, बहिन जी, सारे बलबाई आश्चर्य में पड़ गए, मालिक का चेहरा लाल पीला काला नीला पड़ गया जाने कितने रंग चेहरे पर आए और गए; मालकिन बेहोश हो गयीं लेकिन श्रीमान टामकिन ने अपनी तलवार तान कर कहा कि जब तब उनके शरीर में खून का एक कतरा भी बाकी है वह अपनी प्रियतमा को किसी भी मूल्य पर नहीं छोड़ सकते।"

"अच्छा" दूसरी महिला ने कहा "मैं यह कह सकती हूँ कि डचेज

ने इस विषय में एक शब्द भी नहीं कहा और विश्वास है कि मुझसे कभी कोई चीज नहीं छिपाती दूसरे दिन हमारे मालिक ड्यूक ने तीन बार अपने नौकर को पुकारा, जेर्नीगन, जेर्नीगन, जेर्नीगन, मेरा बिल्ला ले आओ इस बात को तुम सच मान सकती हो।"

किन्तु इसके पहले ही मिस्टर वर्चेल के अशिष्ट व्यवहार की चर्चाकर देनी चाहिये थी—जब यह सब बातचीत चल रही थी तो आप महाशय आग की तरफ मुंह किये हुये बैठे थे और हर वाक्य के समाप्त होते ही वह चिल्लाकर 'अनर्थक' कह देते। इससे हम सब लोग नाराज तो हुए ही पर साथ ही उठती हुई बातचीत के मजे में भी बाधा पड़ी।

"मेरी प्रिय अमीलिया स्केग्स के अतिरिक्त" महिला कहती गयी डाक्टर वर्डाक के द्वारा इस अवसर के लिए बनाई हुई पुस्तक में इस तरह की कोई भी चीज नहीं।"—अनर्थक!

"मुझे इस पर आश्चर्य है" अमीलिया ने कहा, "क्योंकि वह अपने आनन्द के लिए लिखते हैं और मुश्किल से ही कोई चीज छोड़ते हैं पर क्या बहिन जी आप उनमें से कोई चीज मुझे दिखा सकती हैं?" अनर्थक!

"मेरी लड़की" महिला ने उत्तर दिया "क्या तुम सोचती हो कि मैं इस तरह की चीजें साथ साथ लिये घूमती हूँ? यद्यपि वे बहुत ही अच्छी है, निश्चित रूप से, और मैं अपने आप को थोड़ा बहुत निर्णायक भी मानती हूँ—कम से कम इतना जानती हूँ कि मुझे क्या अच्छा लगता है। वास्तव में मैं डाक्टर वर्डाक की छोटी रचनाओं की सदा से प्रशंसिका रही हूँ, यद्यपि जो कुछ वे करते हैं उसमें उच्च जीवन की एक झलक भी नहीं मिलती।"—अनर्थक!

"आपको अपनी सब चीजें महिला पत्रिका में निकाल लेनी चाहिए," दूसरी महिला ने कहा, "मैं आशा करती हूँ आप कहेंगी, वहाँ पर कोई खराब चीज नहीं है? किन्तु मैं सोचती हूँ हम लोग उस ओर अब कुछ नहीं पा सकेंगी?"—अनर्थक!

"क्यों बहिन" महिला के कहा "तुम जानती हो मेरी पाठिका और

साथिन ने मुझे छोड़कर कप्तान रोच से अपनी शादी कर ली है और अब मैं अपनी आँखों के कारण लिख नहीं पाती, कुछ दिनों से दूसरी की खोज में हूँ। मुस्तैद आदमी पाना कोई आसान काम नहीं है; और वास्तव में तीस पाउण्ड प्रतिवर्ष के लिए एक कुलीन और सच्चरित्र लड़की जो लिख पढ़ भी सके तथा समाज में उचित व्यवहार भी कर सके, बहुत कम हैं। और जहाँ तक शहर की लड़कियों का सम्बन्ध है, उन्हें साथ रखना बेकार है।"—अनथक !

"अपने अनुभव से मैं यह जानती हूँ" अमीलिया ने कहा, "क्योंकि पिछले साल मेरी तीन साथिनें थीं जिनमें से एक ने दिन भर में एक घन्टे भी शारीरिक श्रम करने से इन्कार कर दिया; दूसरी ने पच्चीस गिन्नी प्रति वर्ष को बहुत कम वेतन समझा; और तीसरी को मुझे ही निकाल देना पड़ा क्योंकि मुझे उसके तथा पुरोहित के बीच गुप्त सम्बन्ध जान पड़ा सच्चरित्र, मेरी बहिन क्लार्नी, सच्चरित्र व्यक्ति के लिए जो भी मूल्य देना पड़े, कम है; पर सच्चरित्र व्यक्ति हैं कहाँ ?"—अनर्थक !

मेरी पत्नी बड़ी देर से यह बात सुनाने में दत्तचित्त थीं, विशेष रूप से इस अंतिम बात का उस पर बड़ा प्रभाव पड़ा। तीस पाउण्ड और पच्चीस गिन्नी प्रतिवर्ष अंग्रेजी रुपये के हिसाब से छप्पन पाउण्ड और पाँच शिलिंग होते थे और मेरी पत्नी इसे बहुत बड़ी रकम मान रही थी। कुछ देर तक मेरी तरफ वह स्वीकृति के लिए देखती रही; यदि सच कहूँ तो मेरी राय थी कि ऐसी दो जगहें मेरी दो लड़कियों के लिए बहुत ठीक थीं। और यदि नम्बरदार महोदय के हृदय में मेरी बड़ी लड़की के लिए जरा भी प्यार होगा तो इस तरह वह उसके प्यार पाने के योग्य भी हो जाएगी। मेरी पत्नी ने इस तरह स्वीकृति के अभाव में भी इस लाभ से वंचित नहीं होना चाहा और परिवार के लाभ के लिये जोर से बकने लगी। "मुझे आशा है" उसने कहा "आप लोग मुझे क्षमा कर देंगी। यह सही है कि मुझे इस प्रकार की आशा करने का कोई अधिकार नहीं है, फिर भी यह स्वाभाविक ही है कि मैं अपनी लड़कियों को

उनके उत्कर्ष के लिये आगे बढ़ने में मदद करूँ। और मैं यह दृढ़ता पूर्वक कहूँगी कि मेरी यह दोनों लड़कियाँ काफी शिक्षित और सुशील हैं— कम से कम देश में इनसे अच्छी और तो कहीं नहीं है। वे लिख पढ़ सकती हैं और अंकगणित के प्रश्न भी हल कर सकती हैं। वे कढ़ाई बुनाई के कामों के साथ ही साथ घर के और काम भी बड़ी निपुणता के साथ कर लेती हैं। नृत्यगान एवं सगीत की भी उन्हें अच्छी शिक्षा मिली है। छोटे मोटे कपड़े भी सी लेती हैं और चित्रकारी से भी उनका अच्छा परिचय है। मेरी छोटी लड़की को कुछ रेखा ज्ञान भी है और इनके सबके बातचीत करने का ढंग बहुत भला है।"—अनर्थक !

उसने यह सब बातें इतनी सुन्दरता के साथ कीं कि दोनों महिलाएं एक दूसरी की तरफ गम्भीरता के साथ चुपचाप देखती रहीं। अन्त में कुमारी अमीलिया ने शांति भग करते हुए कहा कि इस थोड़ी देर के साथ रहने के कारण वह इन दो लड़कियों के विषय में इस नतीजे पर पहुँची हैं कि यह लड़कियाँ इस तरह की नौकरी के लिये बिलकुल ठीक रहेंगी। "किन्तु इस तरह की चीज के लिए बहिन "उसने मेरी पत्नी की तरफ इशारा करते हुए कहा" चरित्र की सर्वाङ्ग परीक्षा अनिवार्य होती है इतना ही नहीं, दोनों को एक दूसरे से पूर्ण परिचित भी होना चाहिये। "यह नहीं, बहिन" वह कहती गयी "मैं इन लड़कियों के चरित्र बुद्धि, दूरदर्शिता या शील के विषय में संदेह करती हूँ किन्तु इन सब के लिये एक नियम होता है।"

मेरी पत्नी ने उसके संदेहों को यह कहते हुये स्वीकार किया कि वह स्वयं इन बातों में बहुत संदेह शील रहती है किन्तु अपनी लड़कियों के चरित्र के विषय में उसने सारे पड़ोस में पूछने की अनुमति सी दे दी दूसरी महिला ने इस सब को बेकार कहकर टाल दिया और कहा कि उसके भाई थार्नहिल की सिफारिश ही इस माने में काफी रहेगी और इसके बाद हम लोगों की बातचीत समाप्त हो गयी।

१२

घर लौटने के बाद सारी रात हमने भविष्य के विषयों की योजना बनाने में लगा दी। डिबोरह ने अपनी बुद्धि इस बात में दौड़ाई कि दो लड़कियों में से कौन सी अच्छी जगह पर रहेगी और कौन सुविधा से ज्यादा अच्छे समाज में प्रवेश पा सकेगी। हम लोगों के चुने जाने में एक मात्र बाधा जो थी वह थी नम्बरदार की शिफारिश, किन्तु वे अपनी मैत्री के कितने ही उदाहरण पहले ही दे चुके थे अतएव उनकी सिफारिश में कोई संदेह बाकी न रहा। चारपाई में लेट जाने के बाद भी मेरी पत्नी ने उन्हीं विषयों पर बातें जारी रखीं। "क्यों न प्रियतम चार्ल्स, हम लोगों ने आज यह बहुत अच्छा काम कर लिया है।"

—"बहुत अच्छा "मैंने कह दिया, बिना समझे हुये कि क्या कहना चाहिये।

"क्या केवल बहुत अच्छा" उसने उत्तर दिया "मैं समझती हूँ बहुत ही अच्छा, मानलो लड़कियां शहर में एक अच्छे समाज से परिचित हो जाती हैं। इतना मुझे पूरा विश्वास है कि लन्दन संसार हर प्रकार का पति प्राप्त करने के लिए सबसे अच्छा स्थान है। इसके अतिरिक्त, हर रोज अजीब अजीब चीजें हुआ करती हैं और जब उच्च समाज की महिलाएँ हमारी लडकियों से इतनी ज्यादा आकर्षित हुई हैं तो पता नहीं नवयुवक

कितना अधिक आकर्षित हो जाँय ?' मैं "सच कहती हूँ मुझे लेडी ब्लार्नी बहुत ही पसन्द है—कितनी परोपकारिनी है वह। कुमारी अमीलिया भी मुझे बड़ी भली लगती, किन्तु तुमने देखा कि जब वह शहर की जगहों की बात चीत करने लगी तो मैंने किस तरह उन्हें झाडा था। बताओ प्रियतम क्या तुम यह नहीं सोचते कि मैंने यह भी अपने बच्चों के लिए किया था !"

"हाँ" मैंने उत्तर दिया, बिना यह सोचे हुए कि इस विषय में क्या करना अथवा सोचना चाहिए, "ईश्वर करे वह सदा सुखी रहे।" यह उन रीतियों में से थी जिसमें मैं अपनी पत्नी के ऊपर अपनी दूरदर्शिता का प्रभाव डाला करता था क्योंकि यदि लड़कियाँ सफल हो जातीं तो एक पवित्र इच्छा पूरी हो जाती और यदि अभाग्य से कुछ अन्यथा हो जाता तो यह एक भविष्यवाणी बन जाती। यह सब बात चीत एक दूसरी योजना की भूमिका थी और वास्तव में मैं इससे डर भी रहा था। हम अब अपने रहन सहन का ढंग ऊँचा करने जा रहे थे, हम लोग अपने बछेड़े को जो अब पुराना हो गया था पड़ोस के मेले में बेच कर दूसरा अच्छा सा घोड़ा लाने की सोच रहे थे जो काफी सवारियाँ भी खींच सके और साथ ही साथ देखने में भी बड़ा मालूम पड़े। पहले तो मैंने इसका पूर्ण विरोध किया पर बाद में धीरे से मैंने अपना विरोध हटा लिया और मेरे विरोधी शक्तिमान होते गए, अन्त में घोड़ा बेचना सर्व सम्मत्ति से तय हो गया।

दूसरे दिन मेला था। मेरी इच्छा थी कि मैं स्वयं ही मेले जाऊं पर मेरी पत्नी ने कहा कि मुझे अधिक जाड़ा लग गया है और इसलिए उसने मुझे किसी भी तरह घर से निकलने न दिया। "नहीं प्रियतम" उसने कहा "मेरा लड़का बहुत होशियार लड़का है और बड़े फायदे के साथ कोई चीज बेच या खरीद सकता है, तुम जानते हो घर की बहुत सी चीजें उसी की खरीदी हुई हैं। वह जो भी सामान खरीदता है, काफी देर तक तय तोड़ कर लेता है जिससे उसे चीजें काफी सस्ती पड़ जाती हैं।"

मुझे स्वयं अपने लड़के की बुद्धि पर पूरा विश्वास था अतएव मैंने यह काम उसे निश्चिन्त होकर सौंप दिया। दूसरे दिन मैंने देखा कि उसकी बहिनें मोजेज को मेले भेजने की तैयारी में पूरी तरह व्यस्त थीं, कोई उसके बालों में तेल लगा रही थी, कोई उसे कपड़े पहिना रही थी तथा उसकी शेष तयारियों में लगी हुई थी। यह काम समाप्त होने के बाद मुझे तब संतोष हुआ जब मेले जाने के लिए घोड़े पर अपनी जरूरत का सारा सामान लेकर वह चल दिया। उसने रंगीन छींट का बना हुआ कोट पहिन रखा था जो यद्यपि जरूरत से बहुत अधिक छोटा पा हो गया था परन्तु अभी फेंके जाने लायक न था। उसकी वास्केट हरी थी और उसके बालों को उसकी बहिनों ने एक चौड़े काले फीते से बाँध दिया था। हम लोग उसे कुछ कदम छोड़ने के लिए आगे भी बढ़े थे और जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो गया, हम सब उसकी तरफ एक टक देखते रहे।

वह मुश्किल से थोड़ी ही दूर गया होगा कि मि० थार्नहिल का रसोइया हमारे घर आ पहुँचा हम लोगों को धन्यवाद देने लगा। उसने कहा कि नम्बरदार महोदय हम लोगों को प्रायः स्मरण किया करते हैं।

सौभाग्य अकेले ही आता हुआ नहीं मालूम पडा। नम्बरदार महोदय के यहाँ से एक आदमी और मेरी लडकियों के लिए पत्र लेकर आया जिसमें शहर की दोनों महिलाओं की ओर इंगित करते हुए नम्बर-दार महोदय ने लिखा था कि थोडी सी जानकारी प्राप्त करने के बाद वह पूर्ण संतुष्ट हो गयीं।

"हाँ!" मेरी पत्नी ने कहा "अब मुझे मालूम हुआ कि बड़े आदमियों के परिवार में प्रवेश पा सकना कोई आसान काम नहीं है, पर जब कोई एक बार प्रवेश पा लेता है, तो जैसे कि मोजेज कहता था, वह सो भी सकता है।" इस बात पर मेरी लडकियाँ हँस पड़ीं क्योंकि मेरी पत्नी ने जान बूझ कर यह बात हँसाने के लिए ही कही थी। संक्षेप में, इस समाचार से वह इतना अधिक प्रसन्न हुई कि उसने अपनी जेब से निकाल कर सात पैनी पत्र लाने वाले नौकर को दे दिये।

आज हम लोगों के मिलने का दिन था। इसके बाद मिस्टर वर्चेल आए, वे अब तक मेले में घूम रहे थे। वह अपने साथ मेरे बच्चों को छोटी छोटी खेलने तथा खाने की चीजें लाये थे, जिसे मेरी पत्नी ने अपने पास लेकर रख लिया और एक एक करके बच्चों में बाँट दिया। मेरी लड़कियों के लिये वह छोटी छोटी सरीफें सी ले आया था, जिनमें वह अपनी जरूरत की चीजें और मिलने का सामान भी रख सकती थीं। मेरी पत्नी चमड़े की बनी हुई एक थैली की शौकीन थी। मिस्टर वर्चेल के प्रति हम लोगों के हाथ में अब भी जगह थी यद्यपि पिछली अशिष्टता के कारण हम लोग कुछ असन्तुष्ट अवश्य हो गये थे। हम लोग हर्ष की सूचना किए बिना न रह सके और उस विषय में उसकी सलाह लेनी चाही, यद्यपि हम दूसरे की सलाह कभी नहीं मानते थे और घर में यों ही सलाह देने के लिये काफी थे। जब मैंने दोनों महिलाओं द्वारा भेजा हुआ पत्र पढ़ कर सुनाया तो सर हिलाते हुए उसने कहा कि इस तरह के विषय में काफी सोचने विचारने की आवश्कता है। बात चीत करने के इस ढंग से मुझे बड़ा संतोष हुआ।

"मैंने उससे कहा "तुम्हारे इस विरोध पर कभी भी अविश्वास नहीं किया। तुम हमेशा जरूरत से ज्यादा सोचते हो। फिर भी जब हम यह सलाह लेते हैं तो उन्हीं लोगों से जो ऐसी परिस्थितियों में स्वयं पड़ चुके हैं और उनका व्यवहारिक अनुभव रखते हैं।"

"मेरा जैसा भी व्यवहार या चरित्र रहा हो, देवी", उसने कहा, "इस समय उससे कोई मतलब नहीं, यद्यपि मैंने इस सलाह पर कभी व्यवहार नहीं किया है फिर भी जो मुझसे सलाह मांगते हैं मैं यही सलाह देता हूँ।" मुझे डर लग रहा था कि इस बातका उत्तर अन्य किसी हँसी पूर्ण बात के स्थान पर गाली के रूप में न आ जाय अतएव बात बदलने के अभिप्राय से मैंने आश्चर्य प्रगट करते हुये कहा कि पता नहीं क्यों इतनी रात बीत गई और मेरा लड़का अभी तक मेले से नहीं लौटा। "मेरे लड़के की चिन्ता न करो" मेरी पत्नी ने कहा, "विश्वास करो, उसे कब क्या करना

चाहिये वह यह अच्छी तरह जानता है। मैं कहती हूँ उसने बरसात के दिन कभी अपनी मुर्गी नहीं बेची। मैंने उसे इतने सस्ते दामों में सौदा खरीदते देखा है कि दूसरे आश्चर्य करते हैं। मैं तुम्हें एक अच्छी कहानी सुनाऊँगी जिसे सुनकर तुम सब लोट पोट हो जाओगे – किन्तु मुझे अपनी कसम, वह देखो, मोजेज घोड़ा बेचकर पैदल चला आ रहा है—अपनी पीठ पर झोला लादे हुए।

मोजेज आ गया, कंधे पर झोला था और वह पसीने से लथ पथ। "स्वागत, आओ मोजेज! तुम हम सबके लिए मेले से क्या लाए हो!"—"मैं, कहिए आप लोगों के भाग्य से खुद ही बच आया हूँ" मोजेज ने सर झुकाये हुए रुलाई के स्वर में कहा और अपने सामान को जमीन पर धीमें से डाल दिया। "हां मोजेज" उसने कहा "वह तो मैं जानती हूँ, पर घोड़ा कहां है?"—"मैंने उसे बेच दिया है, ? "तीन पाउन्ड पांच शिलिंग और दो पेंस कीमत पर।"—"बहुत अच्छा किया, मेरे बच्चे", उसने कहा; मुझे पूरी आशा थी तुम यही करोगे। हम लोगों के बीच यह कुछ कम रकम नहीं है; लाओ, मुझे रुपये दो।"

—"मैं एक भी पैसा वापस नहीं लाया" मोजेज ने फिर कहा, "मैंने सारा रूपया यह सामान खरीदने में खर्च कर दिया है।" यह कहते हुए उसने जेब से बंडल खींचकर निकाला। "यह सब सामान लाया हूं; बारह दर्जन हरे शीशे के चश्में जिनमें चाँदी के फ्रेम हैं और रखने के लिए मजबूत टीन के डिब्बे"—"बारह दर्जन हरे शीशे के चश्मे" मेरी पत्नी ने कुछ भरी हुई आवाज में दोहराया, "और तुमने घोड़ा बेच डाला, केवल यह बारह दर्जन सड़े सड़ाये चश्में ले आये!"—"प्यारी माँ" लड़के ने कहा, "तुम नहीं समझीं; मुझे यह बहुत सस्ते मिल गये अन्यथा मैं उन्हें न लाया होता—केवल चाँदी के फ्रेमों का मूल्य खरीद की कीमत से दूना है।"—"कौड़ी के भी नहीं बिकेंगे" मेरी पत्नी ने गुस्से में कहा, "मैं कसम से कहती हूँ, टूटी हुई चाँदी के रूप में वे आधी कीमत पर भी नहीं बिकेंगे"—"यह चाँदी के फ्रेम असली चाँदी के नहीं हैं" मैंने कहा,

"इन पर केवल चाँदी की हल्की पालिश है अन्दर ताँबा भरा है। इनको बेचने के लिए तुम्हें जरा भी परेशान न होना चाहिए यह सब तांबे के हैं।"—"ताँबे के हैं!" मेरी पत्नी चीख पड़ी, "फ्रेम ताँबे के हैं, फ्रेम ताँबे के हैं, चाँदी के नहीं !!"

"नहीं" मैंने कहा, "तुम्हारे चम्मच से रत्ती भर भी ज्यादा चाँदी नहीं।"

—"यह" उसने उत्तर दिया, "घोड़ा हाथ से निकल गया और उसके बदले में केवल बारह दर्जन ताँबे के हरे चश्मे मिले ! ऐसे लड़के की मौत आये, कितना बुद्धि हीन है, जरा भी तमीज नहीं।"

—"नहीं प्रियतमे" मैंने कहा, "तुम गलती करती हो; उसे यह सब कुछ नहीं मालूम होना चाहिए।"

"मेरा यह लड़का", उसने कहा, "जो ऐसी रद्दी चीज घर लाया, जी चाहता है इन्हें उठाकर आग में फेंक दूँ।"

—"फिर तुम गलती करती हो प्रियतमे" मैंने कहा, "यद्यपि वे ताँबे के हैं फिर भी हमको उन्हें अपने पास रखना चाहिए, क्योंकि तुम जानती हो कि कुछ न होने से तांबे के चश्में होना अच्छा ही है।"

इस समय तक अभागे मोजेज ने अपनी गलती महसूस कर ली थी। उसने देखा कि वह सचमुच ठग लिया गया है। उसकी भोली और अजीब सूरत देखकर किसी ठग ने उसे आसानी से अपना शिकार बना लिया। मैंने उसके ठगे जाने की परिस्थिति पूँछी। मालूम पड़ता है कि वह घोड़ा बेचने के बाद दूसरा घोड़ा खरीदने के अभिप्राय से इधर उधर घूम रहा था। एक ऊपर से भले मानुस लगने वाले आदमी ने उसे एक घोड़ा दिखाने के बहाने से अपने तम्बू में बुलाया। "यहाँ" मोजेज कहता गया, हम एक दूसरे आदमी से मिले जो अच्छे कीमती कपड़े पहने हुए था। उसने इन चश्मों के बदले बीस पाउण्ड लेने चाहे। उसे रूपयों की जरूरत थी। ज्यादा बात कहने पर एक तिहाई मूल्य देने पर राजी हो गया। पहले आदमी ने जो मेरा मित्र बन रहा था मेरे कान में चुपके से कहने लगा मैं

इन चश्मों को खरीद लूँ। चूंकि चश्में बड़ी सस्ती कीमत में बिक रहे थे अतएव मेरे मित्र ने मुझे समझाया कि यह अवसर मुझे अपने हाथ से न जाने देना चाहिए। मैंने मित्र फ्लैमवारों को बुलवा भेजा। उन्होंने उससे भी उसी विनयशीलता के साथ बात चीत की; इसलिये अन्त में हम दोनों ने बारह बारह दर्जन चश्में खरीद लिये।"

१३

हम लोगों के परिवार ने सभ्य और शिष्ट बनने के और बहुत से यत्न किये किन्तु किसी अदृश्य शक्ति ने हर बार हमारे प्रयत्नों को सफल होने से पहले ही ढहा दिया। मैंने हर असफलता और निराशा के बाद उनको सुधारने के लिये भरसक कोशिश की। जितना ही उन्हें अधिक निराशा होती मैं उतनी ही सफलता से उनकी गलती सुलझाने का प्रयत्न कर पाता। "तुम देखते हो मेरे बच्चों" मैंने कहा, "संसार के सामने अपनी मर्यादा से बढ़कर चलने में और बड़ों की नकल करके दुनियाँ को धोखा देने में कितना नुकसान है। यदि गरीब आदमी बड़े आदमियों को छोड़-कर और किसी से भी अपना सम्बन्ध नहीं जोड़ना चाहते तो उनकी हँसी होती है; उनके गरीब आदमी उन पर व्यंग करते हैं, और अमीर जिनसे वह अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहते हैं, घृणा करते हैं। असंगत संबन्धों में कम-जोर को हमेशा कष्ट होता है, गरीब आदमी को असावधानियों का सामना करना पड़ता है, और अमीर आदमी मजा लूटते हैं। लेकिन आओ, मेरे बच्चे, डिक, सबेरे जो तुम कहानी पढ़ रहे थे फिर सुनाओ—इन सब के लाभ के लिए।"

"एक समय की बात है" लड़के ने कहा, "एक राक्षस और एक बौना दो मित्र थे और साथ साथ रहते थे। दोनों ने तय किया कि एक

दूसरे का साथ कभी नहीं छोड़ेंगे और साथ ही साथ अपने सारे साहस भरे काम करेंगे। उनका पहला युद्ध दो सारसेनों के साथ हुआ, और बौने ने जो बहुत ही हिम्मती आदमी था अपने एक शत्रु को बहुत जोर से घूँसा मारा। सारसेन को इससे बहुत ही कम चोट पहुँची और उसने अपनी तलवार का इतनी जोर से वार किया कि बौने का हाथ कट कर अलग हो गया। उसे इस समय बहुत तेज पीड़ा हो रही थी; किन्तु इतने ही में राक्षस उसकी मदद के लिये आ गया और दोनों सारसेनों को उसी जगह मार डाला। बौने ने गुस्से में बदला लेने की इच्छा से मरे हुये आदमी का सिर काट लिया। तब वे दूसरी साहसिक यात्रा के लिये चल पड़े। इस बार उन्हें तीन खूनी आदमियों का सामना करना पड़ा जो एक दुःख में फँसी हुई युवती को भगाये लिए जा रहे थे। बौना इस बार उतने अधिक क्रोध में नहीं था जितना कि पहले, फिर भी उसने घूँसा जमाया जिसके बदले उसे उतने जोर का घूँसा पड़ा कि उसकी एक आँख निकल आई; किन्तु शीघ्र ही राक्षस वहाँ आ गया और यदि वे तीनों आदमी भाग न गये होते तो राक्षस तीनों को मार डालता। वे सब इस विजय से प्रसन्न थे और युवती जिसको राक्षस ने खूनी आदमी से छुड़ाया था राक्षस को प्यार करने लगी और बाद को उसके साथ अपना विवाह कर लिया।

अब वे बहुत दूर, जहाँ का वर्णन मैं नहीं कर सकता, पहुँच गए तो उन्हें डाकुओं का एक दल मिला। राक्षस पहली बार आगे था; लेकिन बौना उसके पीछे नहीं था। युद्ध देर तक चलता रहा। जहाँ कहीं राक्षस आगे आता सब उसके आगे गिर पड़ते लेकिन बौना बार बार मारा जाता। अन्त में राक्षस की विजय हुई किन्तु बौने का पैर काट डाला गया था। बौने का एक हाथ एक आंख और एक पैर गायब था जब कि राक्षस को एक खरोंच भी नहीं लगी थी; इस पर राक्षस ने बौने से कहा, 'मेरे छोटे बहादुर यह बहुत गौरवशाली काम है! चलो एक विजय और करें तब हमेशा के लिए सामान मिल जायगा।'

—'नहीं' बौने ने कहा, अब तक उसमें बुद्धि आ गई थी, मैं हार

मानता हूँ, अब मैं युद्ध नहीं करूँगा; क्योंकि मैं देखता हूँ कि हर युद्ध में आपको कोई न कोई सामान और पुरस्कार मिलता है और सारी मार मुझे खानी पड़ती है।"

मैं इस कहानी की नैतिक व्याख्या करने जा ही रहा था, मेरी पत्नी और मिस्टर बर्चेल के बीच मेरी लड़कियों के शहर जाने के विषय में गरमागरम बातचीत सुन कर रुक गया। मेरी पत्नी लड़कियों के शहर जाने के फलस्वरूप होने वाले लाभों का दृढ़ता के साथ समर्थन कर रही थी; मि० बर्चेल दूसरी तरफ उसे लड़कियों को शहर न भेजने के लिए फुसला रहे थे; और मैं चुपके से खड़ा था। सबेरे जिन तर्कों से मि० बर्चेल ने मेरी पत्नी को नाराज कर दिया था उन्हीं तर्कों का शेषान्श वे फिर कर रहे थे। वाद-विवाद तेज पड़ गया; बेचारी डिवोरह जोरदार तर्क करने के बजाय जोर जोर से बोल रही थी और हार मानने के स्थान पर शोर गुल की शरण ले रही थी। उसका जोर जोर से शोर मचाना हम सबको बहुत बुरा लग रहा था। उसने कहा कि मैं जानती हूँ कि लोग विशेष प्रकार की सलाह किन्हीं विशेष निहित कारणों से देते हैं; लेकिन उसने कहा कि मैं भविष्य में ऐसे आदमियों को अपने घर आने देना नहीं चाहूँगी। "श्रीमती जी, मि० बर्चेल ने ऐसे ढग से कहा कि जिससे मेरी पत्नी को और क्रोध आया "जहाँ तक निहित कारणों का प्रश्न है तुम सही कहती हो मेरे पास कुछ निहित कारण हैं जिन्हें मैं तुमसे नहीं बताना चाहता क्योंकि जिन कारणों को मैंने तुमसे बतलाया है तुम उन्हीं का उत्तर नहीं दे पातीं; मुझे लगता है कि मेरा यहाँ बार बार आना आप लोगों को अब नहीं रुचता; इसलिए मैं तुमसे विदा लेता हूँ और शायद अंतिम विदा लेने के लिए और एक बार आऊँ जब देश छोड़कर बाहर जाना चाहूँगा।" ऐसा कहते हुए उसने अपनी हैट उठा ली; सोफिया ने अपनी निगाह से उसे रोकने के बहुत प्रयत्न किये पर वह न रुका।

जब वह चला गया तो हम लोग एक दूसरे की तरफ काफी देर तक भ्रान्त दृष्टि से देखते रहे। मेरी पत्नी जो इस सबका कारण अपने को

मानती थी, अपना दोष छिपाने के लिए मुस्कराने क प्रयत्न कर रही थीं, मेरी तरफ स्वीकृति के लिए देखने लगी पर मेरी इच्छा स्वीकृति देने की न थी। "क्यों औरत" मैंने उससे कहा, "क्या हमें इसी तरह आगन्तुकों का स्वागत करना चाहिए? क्या उनकी दयालुता का बदला चुकाने का यही रास्ता है? विश्वास रखो प्रियतमे, यह बड़े ही कठोर शब्द थे, तुम्हारे मुंह से मुझे इतने बुरे लगने वाले शब्द कभी निकलते नहीं सुनायी दिए।" —"तब वह मुझे क्यों गुस्सा दिला रहा था?" उसने उत्तर दिया "किन्तु मैं उसकी सलाह का उद्देश्य पूर्णतया समझती हूँ। वह मेरी लड़कियों को शहर जाने से रोकता है जिससे मेरी छोटी लड़की के साथ वह यहाँ मजा ले सके। पर चाहे जो कुछ हो वह अपने लिए बढ़िया साथी चुनेगी इस तरह के नीच आदमियों को नहीं" —"प्रियतमे" तुम उसे नीच कहती हो" मैंने कहा, बहुत सम्भव है कि हम लोग इस मनुष्य के चरित्र के सम्बन्ध में गलत अन्दाज लगा रहे हों, क्योंकि कुछ अवसरों पर वह बहुत ही शिष्ट और पूर्ण व्यक्ति जान पड़ता है मेरी बेटी 'सोफिया' बताओ, क्या उसने अपने आकर्षण का कोई भेद बताया है?"—"उसकी मुझसे बातचीत, पिता जी" मेरी लड़की ने कहा, "हमेशा शिष्ट गम्भीर और प्रसन्नतापूर्ण रही है। अन्य और बातों के विषय में नहीं उसने कभी कुछ नहीं कहा, कुछ नहीं कहा। वास्तव में, हाँ एक बार उसने कहा था कि वह ऐसी किसी स्त्री को नहीं जानता जो किसी निर्धन मनुष्य के किसी गुण को जान सके।"—"यह बात, बेटी" मैंने कहा, "हर एक भाग्य-हीन अथवा काहिल मनुष्य की पहली आसान बात है। किन्तु मुझे आशा है कि तुमने ऐसे मनुष्यों के विषय में उचित निर्णय करना सीखा है और ऐसे मनुष्यों से जो स्वयं अपनी सुव्यवस्था नहीं कर सके, प्रसन्नता की आशा करना पागलपन से भी अधिक बुरा है। तुम्हारी माँ और मैं तुम्हारे भविष्य की बात सोच रहे हैं। आगामी शरद ऋतु जो तुम शायद शहर में बिताओगी, तुम्हें एक अधिक अच्छे चुनाव का अवसर देगी।"

सोफिया, इस समय क्या सोच रही थी मैं यह जानने का ढोंग नहीं

कर सकता; किन्तु अन्दर से मुझे ऐसे अतिथि के चले जाने से जिसका आना हमें बहुत अच्छा नहीं लगता था, दुख नहीं हुआ। उसके रहने से मुझे एक तरह का डर बना ही रहता था पर अब दूर हो गया। आतिथ्य धर्म के इस उल्लंघन से मुझे कष्ट तो हुआ किन्तु शीघ्र ही दो तीन विशेष कारणों से मुझे कष्ट से मुक्ति मिल गयी और मेरी चेतना तथा मेरे बीच संधि हो गयी। अपनी गलती के कारण मनुष्य की चेतना के द्वारा जो उसे दुःख मिलता है वह थोड़ी ही देर में समाप्त हो जाता है। चेतना भीरु होती है, उसमें न तो गलतियों को रोकने की शक्ति होती है और न किसी दोषी के दोष को सिद्ध करने की क्षमता।

१४

मेरी लड़कियों का शहर जाना निश्चित हो गया मिस्टर थार्नहिल ने कृपा पूर्वक मेरी लड़कियों के चरित्र निरीक्षण का वचन दे दिया तथा एक पत्र द्वारा हमें सूचित करने को कहा। किन्तु यह अनिवार्य रूप से आवश्यक समझा गया कि वे देखने सुनने में उतने ही ऊँचे घराने की लगनी चाहिएँ जितने ऊँचे घराने में वे जाने की आशा रखती हैं और इसके लिए रुपये की विशेष आवश्यकता थी। अतएव पूरे परिवार के समक्ष हम लोगों ने इस बात पर विवाद प्रारम्भ किया कि रुपया इकट्ठा करने के कौन से सरलतम उपाय हो सकते हैं? दूसरे शब्दों में, कौन सी चीज आसानी से बेची जा सकती है? विवाद शीघ्र ही समाप्त हो गया : यह मालूम किया गया बेचा हुआ घोड़ा बिना जोड़ी के हल के काम के लिए बिलकुल बेकार था—सड़क का काम भी वह एक आँख के अभाव में ठीक से नहीं दे सकता था। अतएव सर्व सम्मति से यह तय हो गया कि आने वाले पड़ोस के मेले में हम लोग उसे बेच देंगे और रुपये ठीक से घर ले आने के लिए मैं खुद ही उसे बेचने जाऊँगा। यद्यपि मुझे अपने जीवन में क्रय विक्रय का यह पहला अवसर था किन्तु फिर भी मुझे पूर्ण सफल होने का विश्वास था। मनुष्य अपनी बुद्धि के विषय में जो राय निश्चित करता है वह अपने साथियों के अनुसार

होती है। अपनी संसारिक बुद्धि के विषय में मेरी अच्छी राय थी। सवेरे जब मैं मेले के लिए कुछ कदम घर से चला तो मेरी पत्नी ने मुझे वापस बुलाकर मेरे कान में मुझे होशियारी से रहने के लिए कहा।

मैंने घोड़े को लाकर मेले में खड़ा कर दिया पर कुछ देर तक कोई भी खरीदने वाला नजर न आया। अन्त में एक पुरोहित आया और बडी देर तक घोड़े को देखने के बाद उसने अपना मुँह खोला ही था कि उसकी नजर घोड़े की आँख पर पड़ी और उसने बिना कोई शब्द निकाले अपना मुँह बन्द कर लिया और चलता बना। दूसरा एक और आया, उसने कहा "इसे तो हड्डा रोग है—क्या फायदा इसे खरीदने से" और आगे बढ़ गया; एक तीसरे ने कहा यह तो बुड्ढा है, और कोई कीमत नहीं लगायी। चौथे ने उसकी आँखें देख कर कहा कि घोड़ा रात के काम के लिए बिलकुल बेकार है क्योंकि उसे रतौंधी होती है पांचवें ने मेरी बुद्धि की दुहाई देते हुए कहा कि मुझे भी क्या सूझा था जो इस अन्धे लूले गधे को लेकर यहाँ चला आया जो केवल काटकर कुत्तों के सामने फेंक देने लायक था। अब तक मेरे मन में खुद इस घोड़े के प्रति घृणा का भाव उमड़ आया था और लगभग हर खरीदार के आने पर मुझे शर्म सी लगती। यद्यपि जो कुछ ग्राहक कह जाते वे मैंने उस पर पूरा विश्वास नहीं किया किन्तु जब बहुत से ग्राहकों ने वही बात दुहरायी तो मैंने सोचा शायद वे जो कुछ कहते हैं, सही ही हो।

जब मैं इस कष्टदायी दशा में था तो एक पादड़ी भाई जो मेरे पुराने परिचित थे और उनका मेले से भी कुछ काम था, मुझ से हाथ मिला कर कहने लगे कि चलो किसी दुकान पर एक गिलास जो कुछ मिले पिया जाय। मैं यह सुनते ही उठ खड़ा हुआ और एक दूकान के पिछले कमरे में जाकर बैठ गया। यहीं पर एक वृद्ध सज्जन अकेले बैठे हुए एक मोटी पुस्तक पढ़ने में मग्न थे। मैंने अपने जीवन में ऐसा भव्य स्वरूप जिसने इतने शीघ्र मुझे आकर्षित कर लिया हो नहीं देखा था। उनके सुनहले भूरे बाल उनकी गर्दन पर लटक रहे थे और उनकी अपक्व वृद्धावस्था

उनके स्वास्थ्य और उदारता का परिणाम मालूम पड़ती थी। फिर उनकी उपस्थित से हम लोगों की बात चीत में कोई बाधा नहीं पड़ी : मेरे मित्र और मुझमें अपने भाग्य के उतार चढ़ाव के विषय में बहुत सी बातें हुईं। इतने में ही एक नवयुवक महाशय के आ जाने से हम लोगों का ध्यान बट गया; उसने कुछ सम्मान भरे शब्दों में कोमलता के साथ वृद्ध सज्जन से कुछ कहा। "संकोच मत करो मेरे बच्चे" वृद्ध सज्जन ने कहा, "अपने साथियों के साथ भलाई करना हमारा सब का कर्त्तव्य है। लो यह लो, मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हें और दे सकता; लेकिन पाँच पाउण्ड से तुम्हारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी और तुम्हारा स्वागत है।" गम्भीर युवक ने कृतज्ञता के आंसू बहाए किन्तु उसकी कृतज्ञता मुश्किल से मेरी कृतज्ञता के बराबर रही होगी। मैं वृद्ध सज्जन की सहृदयता से इतना अधिक प्रसन्न हुआ कि मैं उन्हें अपनी गोद में उठा लेना चाहता था। उन्होंने पढ़ना जारी रखा और हम लोगों ने बात चीत करना। कुछ देर के बाद मेरे मित्र मेले में अपने काम की याद करते हुए कहने लगे कि वह थोड़ी देर में काम समाप्त कर लौट आएँगे और मैं तब तक बैठकर उनका इन्तजार करूँ; उन्होंने कहा कि वे डाक्टर प्रिमरोज के पास बैठ कर घन्टों बिता सकते थे। वृद्ध सज्जन, मेरा नाम सुनकर, मुझे ऐसा लगा, बडी देर तक मुझे ध्यान से देखते रहे और मेरे मित्र के चले जाने के बाद मुझे सम्बोधित कर कोमलता से पूँछा कि मैं किसी तरह प्रिमरोज महान् जो कि एक निडर एक पत्नी व्रत तथा चर्च के बड़े भारी स्तम्भ हैं, उनसे सम्बन्धित तो नहीं हूँ। मुझे इससे अधिक हार्दिक प्रसन्नता इसके पहले कभी न हुई थी। "महानुभाव" मैंने कहा, "आप जैसे महात्मा के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर मैं कृतार्थ हो गया हूँ। आपकी विशाल हृदयता से मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आप अपने सामने उन्हीं डाक्टर प्रिमरोज को देख रहे हैं जो कि पत्नी व्रत हैं जिनके लिए आपने महान् शब्द का प्रयोग किया है, आप अपने सामने उसी अभागे डाक्टर प्रिमरोज को देख रहे हैं जो युग की बहु विवाह प्रथा से संघर्ष कर रहा है।"

—"महोदय" आगन्तुक ने साश्चर्य कहा, "मुझे क्षमा कीजिएगा, मैंने

बहुत खुल कर आप से बातें की हैं, मुझे क्षमा कीजिएगा, महाशय जी।"

—'महाशय जी" मैंने उनका हाथ पकड़कर कहा "आप अपने परिचय से मुझे ज़रा भी नाराज नहीं कर सकते, मैं प्रार्थना करूँगा कि आप मेरी मैत्री स्वीकार करें जैसे आपने मेरा आदर स्वीकार कर लिया है।"— "तब मैं कृतज्ञता पूर्वक आपकी यह भेंट स्वीकार करता हूँ" उसने मेरा हाथ दबाते हुए कहा, "सत्य धर्म के तुम सुदृढ़ स्तम्भ हो, और मैं क्या—" वह कुछ कहने ही वाला था कि मैंने उसे रोक दिया; यद्यपि एक लेखक के रूप में अपनी कोई भी प्रशंसा दबा दे सकता था परन्तु अब किसी तरह भी मैं ऐसा नहीं कर सकता। किसी भी प्रेमी ने ऐसी उद्धरणीय मैत्री को अब तक कभी नहीं छिपाई है। हम लोग विविध विषयों पर बात चीत करते रहे; पहले मुझे लगा कि वह अधिक बातून और विद्वान कम था, और मैंने सोचा शायद वह सभी मानव सिद्धान्तों से घृणा करता है। फिर भी, इससे मेरे हृदय में उसके प्रति सम्मान की भावना कम नहीं हुई क्योंकि कुछ समय के लिए ऐसे ही विचार मेरे हृदय में भी घर कर रहे थे; अतएव मैं कहने लगा कि लोग सैद्धान्तिक विषयों में कभी-कभी निन्दनीय ढङ्ग से विरोध प्रकट करने लगते हैं और मानवीय विचारों के बहुत पीछे पड़ते हैं। "हां महाशय, तुम संसार की बात करते हो; संसार मतिक्षीणता की अवस्था में है और फिर भी विश्व की उत्पत्ति अथवा सृष्टि रचना का सिद्धान्त हर युग में दार्शनिकों के लिए एक असाध्य समस्या रहा है। जाने कितने प्रकार की सम्मतियां विद्वानों ने इस विषय में दी हैं, पर वास्तविकता तक पहुँचने में कोई भी सफल नहीं हुआ। किसी ने कहा है कि सभी वस्तुओं का न तो प्रारम्भ होता है और न अन्त। किसी और ने कहा है कि संसार को पुस्तकों से शिक्षा नहीं मिलती वरन् संसार स्वयं उनकी रचना करता है; अतएव यह अनुसंधान करने का प्रयत्न किया गया है—किन्तु महाशय जी, मुझे क्षमा कीजिएगा, मैं अपने विषय से बाहर जा रहा हूँ।"—वह सचमुच ही विषय से बाहर जा रहा था; मैं स्वयं भी नहीं समझ पाया कि विश्व रचना का सम्बन्ध हम लोगों के वर्तमान विवाद के विषय से क्या

हो सकता है; पर इससे मैं इतना अवश्य समझ गया कि वह एक विद्वान आदमी है और उसके प्रति मेरे हृदय में सम्मान अधिक बढ़ गया। अब मेरी इच्छा हुई कि इन्हें कसौटी पर कसूँ, किन्तु वह अपनी विजयार्थ संघर्ष के लिए बहुत ही कोमल और विनीत थे। जब कभी मैं ऐसी बात करता जो एक तरह से चुनौती सी होती और साथ ही विवादास्पद भी, तो वे मुस्करा कर अपना सिर हिला देते और एक शब्द भी मुंह से न निकालते; इस सब से मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि यदि वे ठीक समझें तो बहुत कुछ कह सकते थे। अतएव हम लोगों का विषय प्राचीनकाल की गाथा से बदल कर मेले के विषय में हो गया। मेरा काम, मैंने बताया, मैं मेले आया था घोड़ा बेचने के लिए। सौभाग्यवश यह सज्जन अपने एक किसान के लिए घोड़ा खरीदने के लिए ही आए थे। मैंने अपना घोड़ा तुरन्त उपस्थित किया, और बड़ी आसानी से मोल हो गया। अब केवल रुपये लेने बाकी रह गए थे; उन्होंने तीस पाउण्ड का एक नोट निकाला और मुझे भुनाने के लिए दे दिया। मुझे अपनी इस आशा के पालन के अयोग्य समझ कर उन्होंने अपने नौकर को पुकारा; नौकर बढ़िया किश्म के साफ सुथरे कपड़े पहिने हुए आया। "यहाँ आओ अब्राहीम" उसने कहा जाओ और इस नोट से सोना ले आओ, यह तुम पड़ोसी जैक्सन से या फिर अन्य और कहीं भुना लेना।" जब वह चला गया तो उसने मुझसे बाजार में चांदी की कमी के ऊपर जोर जोर से बातें करना प्रारम्भ कर दिया; सोने की कमी की ओर भी इशारा करते हुए उसकी बात में योग देने लगा; इस तरह अब्राहीम के लौटने तक हम लोग इस नतीजे पर पहुँच चुके थे कि रुपए का पास आना इतना मुश्किल कभी नहीं था जितना कि आज कल। अब्राहीम ने लौट कर बताया कि वह सारे मेले में घूम आया था पर उसे रुपया कहीं भी नहीं मिला यद्यपि उसने कुछ घाटा देकर भी नोट भुनाने का प्रयत्न किया था। यह हम सब के लिए एक बड़ी निराशाजनक बात थी; किन्तु वृद्ध सज्जन ने थोड़ी देर चुप रहने के बाद मुझ से पूँछा कि क्या मैं अपने इधर रहने वाले सोलोमन

ब्लैकबेरी को जानता था। मेरे उत्तर देने पर कि वह तो मेरा पड़ोसी ही है उन्होंने कहा "यदि ऐसी बात है तो मेरा विश्वास है कि सौदा तय हो जायगा। तुम्हें मैं एक चिट्ठी लिख दूँगा जिसे देखकर वह तुम्हें तुरन्त रुपया दे देगा। और मैं तुम से बताता हूँ कि पाँच मील के गिर्द में उस जैसा और कोई शीलवान आदमी नहीं है। मैं और इमानदार सोलोमन एक जमाने से एक दूसरे से अच्छी तरह परिचित हैं। मुझे याद है मैं उसे तीन कूद में ही पिछाड़ दिया करता था लेकिन वह फिर भी मुझसे एक कदम आगे रहता।" मेरे पड़ोसी के लिए एक चिट्ठी मेरे लिये वही माने रखती थी जो रुपये; क्योंकि मैं उसकी योग्यता का अच्छी तरह कायल था। चिट्ठी लिखकर उन्होंने अपने हस्ताक्षर करके मेरे हाथ में दे दिया और वृद्ध सज्जन जेकिन्सन, उनका नौकर अब्राहीम और मेरा पुराना घोड़ा ब्लैकबेरी तीनों बड़ी खुशी से साथ चल पड़े।

कुछ देर के बाद मैंने सोचा कि मैंने एक अपरिचित आदमी से चिट्ठी लेकर बहुत बड़ी गलती कर दी है और बुद्धिमानी के साथ मैंने सोचा कि जल्दी ही ग्राहक महोदय का पीछा कर अपना घोड़ा लौटा लूँ। परन्तु इस सब के लिये अब काफी देर हो गयी थी: अतएव मैंने जल्दी घर लौट कर अपने पड़ोसी से चिट्ठी देकर, रुपया लेने का इरादा किया। मैंने देखा कि मेरा ईमानदार पड़ोसी अपने दरवाजे बैठा हुआ हुक्का पी रहा था और जब मैंने बताया कि मुझे उससे कुछ रुपये मिलने वाले थे तो उसने दो बार बड़े ध्यान और आश्चर्य के साथ मेरी चिट्ठी पढ़ी।

मेरे विचार से तुम नाम तो पढ़ ही सकते हो "मैंने कहा इफ्रैम जेकिन्सन"—"हाँ" उसने उत्तर दिया, "नाम काफी साफ लिखा हुआ है और मैं इन महाशय को जानता भी हूँ—संसार में सबसे बड़ा धूर्त्त। यही तो वह शैतान है जिसने हम लोगों के हाथ चश्मे बेचे थे। क्या वह देखने सुनने में एक सम्मानित व्यक्ति नहीं मालूम पड़ता था, क्या उसके बाल भूरे नहीं थे, और उसकी जेबें खुली हुई थी? क्या उसने ग्रीक रोमन तथा विश्व रचना आदि विषयों पर अपनी विद्वत्ता नहीं प्रकट की?" इसका

उत्तर मैंने एक दुख भरी कराह से दिया। "हाँ" वह कहता गया, "उसके पास केवल उतना ही ज्ञान है और जब उससे कभी किसी विद्वान से भेंट होती है तो वह इन्हीं बातों की चर्चा करता है किन्तु मैं उस धूर्त को जानता हूँ और मैं उसे पकड़ूंगा।"

यद्यपि मैं अभी पर्य्याप्त रूप से घबड़ाया और डरा हुआ था किन्तु मेरे संघर्ष के सबसे अधिक दुखदायी क्षण अभी आने को शेष थे—मुझे अभी अपनी पत्नी तथा लड़कियों को उत्तर देना बाकी था। कोई भी लापरवाह विद्यार्थी स्कूल के अपने अध्यापक को इतना अधिक डरता हुआ कभी न लौटा होगा जितना डरा हुआ मैं अपने घर लौट रहा था। मैंने तय कर लिया था कि उन लोगों की डाट से बचने के लिये मैं पहले स्वयं ही जोर से क्रोधित हो जाऊँगा और इस तरह से मुझे बहुत अधिक डाट सुनने को नहीं मिलेगी।

किन्तु अफसोस! घर पहुँचते ही मैंने देखा, मेरे घर वाले लड़ने के लिए किसी तरह भी नहीं तय्यार थे। मेरी पत्नी, मेरी लड़कियाँ, सभी की आँखों में आँसू थे। मिस्टर थार्नहिल ने उसी दिन घर आकर सूचना दी थी कि उनकी शहर की यात्रा स्थगित हो गयी क्योंकि हम लोगों के विषय में किसी ईर्ष्यालु व्यक्ति ने दोनों महिलाओं को कोई गलत खबर दे दी थी और वे महिलाएँ यह सुन कर लन्दन चली गयी थीं। नम्बरदार महोदय ने हम सब को विश्वास दिलाया कि इस सूचना देने वाले आदमी के विषय में कुछ भी नहीं जानते; फिर भी चाहे जिसने भी उन्हें यह सूचना पहुँचायी हो, उन्होंने मेरे परिवार से सदा मैत्री रखने का वचन दिया था। अतएव, मुझे ऐसा लगा कि वे मेरी निराशा को और अधिक दुखमय बना रही थीं। उनके भावी बड़प्पन में खुद ही ग्रहण लग गया था। लेकिन सबसे अधिक कष्ट हम लोगों को यह सोच कर हुआ कि कौन सा आदमी इतना नीच होगा जो हम लोगों जैसे भोले भाले परिवार के चरित्र को गिराने का प्रयत्न करे। मेरा परिवार इतना अधिक विनीत तथा इतना सुखमय था कि इससे किसी दूसरे को ईर्ष्या अथवा बैर मानने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ सकती थी।

१५

उस संध्या तथा दूसरे दिन कुछ देर तक हम लोगों ने अपने शत्रुओं को जानने के असफल प्रयत्न किए। बड़ी मुश्किल से हम लोगों को अपने पड़ोस के एक परिवार के ऊपर कुछ संदेह हुआ। हम सबको ऐसा सोचने के कारण भी थे जो सबसे ज्यादा हमी लोगों को मालूम थे। हम लोग इसी विचार में परेशान थे कि मेरे एक छोटे लड़के ने, जो बाहर खेल रहा था, एक लिफाफा जिसको उसने घास पर पड़ा हुआ पाया था, लाकर मुझे दिया। जल्दी ही पता लग गया कि यह लिफाफा मिस्टर वर्चेल का था क्योंकि यह उनके पास देखा जा चुका था। ध्यान से देखने पर अनेक विषयों पर कुछ इशारे समझ में आए किन्तु विशेष कर जिस तरफ हम लोगों का ध्यान गया वह थी एक चिट्ठी जिस पर लिखा हुआ था—थार्नहिल किले में रहने वाली महिलाओं के पास भेजे जाने वाले पत्र की प्रतिलिपि। तुरन्त लगा कि यही वह सूचना देनेवाला नीच था और पत्र फाड़कर पढ़ने का विचार किया गया। मैं इसके विरोध में था; किन्तु सोफिया जिसको विश्वास था कि संसार के सब आदमियों में से वह अंतिम आदमी होगा जो इतना नीच काम करेगा और उसने पत्र पढ़ने की ज़िद की। सारे परिवार ने उसकी बात का अनुमोदन किया और उन सब के कहने पर मैंने इस तरह पत्र पढ़ दिया :—

अस्सी

"महिलाओ,—पत्र वाहक महोदय प्रेषक का नाम और पता आपको बताएँगे ! मैं कम से कम एक अबोध का मित्र हूँ और उसे फुसलाए जाने से बचाने के लिए तय्यार हूँ। मुझे एक सच्ची खबर मिली है कि आपकी दोनों लड़कियों को एक मित्र के रूप में जिनसे मेरा बहुत कुछ परिचय भी है, शहर ले जाने का विचार है। मैं बिना किसी प्रकार की सादगी अथवा सौजन्य का दावा करते हुए आप से बता देना चाहता हूँ कि इस दिशा में उठाए हुए कदमों का परिणाम बुरा होगा। मैंने किसी लम्पट से अब तक सख्ती का बर्ताव नहीं किया है और न मैं इस समय के इस आत्मविश्लेषण का कारण ही दे सकता हूँ; यदि इसका उद्देश्य पाप न होकर केवल बेवकूफी ही होता तो मैंने पत्र लिखने की कोई आवश्यकता न समझी होती। अतएव अपने इस मित्र की सलाह मानों और जिन हृदयों में शांति भोलेपन और सहृदयता का निवास रहा है उसमें पाप और कपट के निवास के परिणाम को गम्भीरता पूर्वक सोचो।"

अब हमारे संदेहों का अन्त हो गया। वास्तव में इस पत्र में दोनों पक्षों के ऊपर ठीक से लागू होने वाली बात थी, और इसके दोषों का सम्बन्ध उतना ही उन लोगों से, जिनके लिए यह लिखा गया था, हो सकता था जितना कि हम लोगों से; किन्तु द्रोहपूर्ण अर्थ स्पष्ट था और हम लोगों ने अधिक सोचने का प्रयत्न नहीं किया। मेरी पत्नी ने बड़ी मुश्किल से पत्र समाप्त होने तक धैर्य रखा और पत्र समाप्त होते ही पत्र लेखक पर अपनी गालियों के अक्षय भण्डार के साथ टूट पड़ीं। ओलीविया भी उतना ही क्रोध में थी और सोफिया उसकी लम्पटता पर पूर्ण चकित थी। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मुझे ऐसे कृतघ्न से अपने जीवन में इसके पहिले कभी परिचय न हुआ था। मैं इससे केवल यही अर्थ निकाल सका; इन पत्र लिखने वाले महाशय का अभिप्राय केवल मेरी छोटी लड़की को रोक रखना था जिससे उन्हें उससे बार-बार मिलने में सुविधा रहे। इस तरह हम लोग बैठे हुए बदला लेना की योजनाएँ बना ही रहे थे कि मेरे दूसरे छोटे लड़के ने दौड़ते हुए आकर बताया कि मिस्टर बर्चेल खेत की दूसरी तरफ से आ रहे

हस्ताक्षी

है। तात्कालिक दुख की पीड़ा और उसके बाद ही भावी प्रतिशोध के आनन्द में कैसी अनुभूति होती है—वर्णन करने की अपेक्षा इसकी कल्पना अधिक आसानी से की जा सकती है। यद्यपि हम लोगों की इच्छा केवल उसकी कृतघ्नता के लिए उसे डाटने की थी परन्तु यह तय किया गया कि इस बार उसकी अच्छी भर्त्सना की जाय। इस उद्देश्य से हम लोगों ने उससे हमेशा की तरह मुस्कराते हुए मिलना तय किया; हम लोगों ने यह तय किया था कि पहले हम लोग उससे आवश्यकता से अधिक सहृदयता बात चीत करेंगे और उसे प्रसन्न करेंगे। फिर इसी सम्मानित शान्ति के बीच हम उस पर ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ेंगे और उसकी नीचता की पोल उसके सामने खोल देंगे। यह तय हो जाने के बाद मेरी पत्नी ने इसके संचालक का सारा भार कंधों पर लिया क्योंकि वह इस तरह के कामों में बहुत निपुण थी। हम लोगों ने उसे आता हुआ देखा; वह अन्दर आया और एक कुर्सी खींच कर बैठ गया।

—"बड़ा अच्छा दिन है मिस्टर वर्चेल।"

—"बहुत अच्छा दिन है डाक्टर, शायद कुछ पानी भी बरसे।"

—"घर से आ रहे हैं।" मेरी पत्नी जोर से हा-हा कर हँसने लगी और फिर हँसने की शौकीन होने के लिये क्षमा मांगने लगी।

"श्रीमती जी" उसने उत्तर दिया, "मैं आपको हृदय से क्षमा करता हूँ। कसम से कहता हूँ, यदि तुमने यह न बताया होता तो मैं इसे मजाक न समझता।"

—"हाँ महाशय, शायद नहीं" मेरी पत्नी ने हम लोगों की तरफ आँख का इशारा करते हुये कहा, "और भी साहस पूर्वक कह सकती हूँ कि तुम मुझे, एक औंस में कितनो मजाक होती है, बता सकते हो।"

—"मैं कल्पना करता हूँ" वर्चेल ने कहा, "शायद आज सबेरे तुमने कोई हास्य पुस्तिका पढ़ी है; आँसू भर हँसी एक अच्छी सूझ है; मैं तो आधी औंस सूझ रखना अधिक पसन्द करता हूँ।"

—"जी हां, मुझे विश्वास है" मेरी पत्नी ने हम लोगों की तरफ

मुस्कराते हुये कहा, "फिर भी मैंने देखा है कि कुछ लोग होते तो बिलकुल न समझ हैं, पर हर घड़ी बड़ी समझदारी दिखाने का ढोंग करते हैं।"

—"बेशक" उसके प्रतिद्वन्दी ने कहा, "बहुत सी औरतें भी ऐसी होती हैं जो अपने को हास्य में बहुत कुशल समझती हैं जब कि असलियत में बात बिलकुल उलटी होती है।"

मैंने देखा कि मेरी पत्नी इस तरह की बात चीत में बहुत पीछे होती जा रही है अतएव मैंने और अधिक कठोरता दिखाने का इरादा किया। "हास्य और समझ दोनों ही" मैंने कहा, "बिना ईमानदारी और कृतज्ञता के बिलकुल बेकार चीजें हैं; मनुष्य के चरित्र का मूल्य इन्हीं बातों पर निर्भर होता है। दोषमुक्त एक भोला भाला किसान एक दोषमुक्त दार्शनिक से हजार गुना अच्छा है; क्योंकि ज्ञान और धैर्य बिना विशाल हृदयता के अपना कोई मूल्य नहीं रखते। एक ईमानदार आदमी भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है।"

"मैं पोप की यह प्रचलित कहावत हमेशा मानता हूँ" मिस्टर बर्चेल ने उत्तर दिया, "कि एक अयोग्य बुद्धिमान आदमी अपनी बुद्धि का प्रयोग बड़ी नीचता के साथ करता है। जैसे पुस्तकों का मूल्य उनके दोष रहित होने के कारण नहीं वरन् उनमें लिखित उपयोगिता अथवा सौंदर्य की महत्ता के कारण होता है; उसी तरह मनुष्यों का मूल्यांकन भी उनकी दोष हीनता के कारण नहीं वरन् उनके सदाचार और विद्वता की कोटि के आधार पर होना चाहिए। एक विद्वान, हो सकता है सुदूरदर्शी न हो, हो सकता है एक शासक घमण्डी हो; परन्तु क्या हम इनसे अधिक महत्व एक साधारण मजदूर को जो दिन भर अपना काम मशीन की तरह किया करता है, देंगे ? हम इसी तरह फ्लेमिश शैली पर बनी हुई सुन्दर सही तसवीरों की जगह पर रोमन ढंग से बनी हुई बड़ी और भयानक तथा बनावटी चित्रकारी को पसन्द करेंगे।"

"जनाब" मैंने कहा, "तुम्हारी बात तब सही हो सकती है जब कि गुण बहुत अधिक तथा दोष कम हो; लेकिन जिस चरित्र में गुण तो नाममात्र के लिए हों पर दोष बहुत अधिक हो तो ऐसा चरित्र तो घृणास्पद होता है।"

"शायद" उसने कहा, "हो सकता है ऐसे कुछ विलक्षण मनुष्य हों

जिनमें इस अनुपात में गुण दोषों का समन्वय हो; किन्तु अपने इस जीवन में ऐसे चरित्र का एक उदाहरण भी मुझे नहीं मिला : इसके विरोध में मैंने यह अवश्य पाया है कि विस्तृत विचार वाला मनुष्य उदार होता है। इस विशेष विषय में ईश्वर हम लोगों का मित्र लगता है क्योंकि जब हम लोगों का दिल साफ नहीं होता तो वह हमारी समझ कमजोर कर देता है। जब हम लोगों की शैतानी करने की इच्छा होती है तो वह हमारी शक्ति कम कर देता है। यह नियम मानवेतर प्राणियों पर भी लागू होता है। छोटे छोटे कीड़े मकोड़े हमेशा खतरनाक, जहरीले, निर्दय और डरपोक होते हैं जब कि उनमें जो शक्तिवान होते हैं, हमेशा सहृदय बीर और सज्जन होते हैं।"

"यह निरीक्षण सही है" मैंने कहा, "और फिर भी इस समय ऐसे आदमी को इङ्गित करना आसान है।" मैंने लगातार अपनी नजर उस पर गड़ाते हुए कहा, "जिसके हृदय और मस्तिष्क में एक घृणास्पद अन्तर है। हां महाशय", मैंने जोर डालते हुये जारी रखा, और मुझे इस समय उसकी काल्पनिक सुरक्षा के बीच से उसे खींच निकालने की खुशी है। "क्या तुम जानते हो जनाब, यह जेबी कापी ?"—"हाँ महाशय" उसने उत्तर दिया, "यह जेबी पुस्तिका मेरी है और मुझे खुशी है कि यह आपको मिल गयी—" "और यह पत्र" मैं चिल्ला पड़ा, यह भी तुम जानते हो ? नहीं, झूठ मत बोलना, देखो मेरे चेहरे की तरफ, आँख उठाओ—मैं पूछता हूँ तुम जानते हो यह पत्र !"

—"यह पत्र ?" उसने कहा "हाँ, मैंने ही यह पत्र लिखा था।"

—"और तुमने" मैंने कहा, "इतनी नीचता से, इतनी कृतघ्नता से इसे अपना मान लिया ?"

"और तुमने" उसने घृणा पूर्वक कहा, इतनी नीरसता के साथ यह पत्र खोलने का साहस कर डाला ! क्या तुम नहीं जानते कि मैं तुम सबको इस अपराध के लिए दण्ड दे सकता हूँ ! इसके लिए मुझे केवल न्यायाधीश के सामने सपथ लेनी पड़ेगी कि तुमने मेरी जेबीडायरी को खोलकर मेरा पत्र पढ़ लिया है और इसलिए तुम सबको इसी दरवाजे फांसी दे दी जाय।" उसकी

इस आशा रहित धृष्टता पर मेरा पारा बहुत ऊँचे चढ़ गया और क्रोध से मैंने अपना संयम खो दिया, "कृतघ्नी धूर्त, भग जाओ यहाँ से, अपनी नीचता से मेरा घर अपवित्र न करो! चले जाओ और मुझे अपना मुँह मत दिखाना। चले जाओ मेरे घर से। मैं केवल एक दण्ड तुम्हें देना चाहता हूँ और वह यह कि तुम्हारी चेतना जागृत हो और तुम्हें इस नीचता के लिए हमेशा कोसती रहे। इतना कह कर मैंने उसको पाकेट बुक फेंक दी जिसको उसने मुस्कराते हुए उठा लिया और गम्भीरतापूर्वक उसके पन्नों को ठीक करके हम लोगों के व्यवहार पर आश्चर्य सा करता हुआ चला गया। मेरी पत्नी विशेष रूप से इस बात पर गुस्सा थी कि उसे न तो किसी बात पर क्रोध आ पाया था और न नीचतापूर्ण कामों के लिए उसे शर्म ही लगी थी: "प्रियतमे" मैंने सबके बढ़े हुए क्रोध को शांत करने की मुद्रा में कहा, "हम लोगों को जरा भी आश्चर्य नहीं होना चाहिए नीच मनुष्यों में लज्जा नहीं होती, वे निर्लज्ज होते हैं। उन्हें लज्जा तभी आती है जब वे कोई अच्छा काम करते हुए पकड़े जाते हैं। बुरे काम करते हुए तो उन्हें गर्व होता है।

"लाक्षणिक भाषा में पाप और लज्जा साथी बताए गए हैं और अपनी यात्रा के प्रारम्भ में वे एक दूसरे से अविभाज्य रूप से सम्बन्धित थे। किन्तु अपना यह आपसी सम्बन्ध आगे चल कर दोनों को ही असुविधाजनक तथा बुरा लगने लगा। पाप ने लज्जा को बार बार परेशान करना प्रारम्भ किया और लज्जा ने कई बार पाप की भेद भूलक नीच योजनाओं पर पर्दा फाश कर दिया। बहुत दिनों के मतभेद के बाद दोनों ने हमेशा के लिए एक दूसरे से अलग हो जाना अच्छा समझा। पाप अकेले ही बहादुरी से आगे बढ़ा और भाग्य से सम्बन्ध जोड़ लिया। किन्तु लज्जा स्वाभाविक रूप से भीरु होने के कारण सदाचार से मैत्री करने के लिए पीछे लौट आयी, अपनी पाप के साथ यात्रा प्रारम्भ करने के समय सदाचार को पीछे छोड़ गयी थी। इस तरह, मेरे बच्चो, जब आदमी पाप के साथ कुछ कदम आगे बढ़ जाता है तो लज्जा उसका साथ छोड़ देती है और लौटकर शेष बचे हुए सदाचार की बाट जोहती है।"

१६

सोफिया अपने मन में चाहे जो कुछ सोचती रही हो पर शेष परिवार को मिस्टर वर्चेल की अनुपस्थित से बड़ा संतोष हुआ, नम्बरदार महोदय अब अक्सर जल्दी जल्दी आते और रुकते भी देर तक। यद्यपि वे मेरी लड़कियों को शहर में ले जाकर वहाँ की सुविधाएँ देने में असफल रहे किन्तु उन्होंने मेरी लड़कियों के मनबहलाव के लिए हर तरह से पूर्ण प्रयत्न किया। वह प्राय: सवेरे आते और जब मैं अपने लड़के के साथ खेत पर काम करने के लिए चला जाता तो मेरी पत्नी और लड़कियों के बीच बैठ कर वे शहर के जिन जिन भागों से परिचित थे उनका वर्णन करते। वे मनोविनोद गृह की सभी बातों को दुहराते और उच्च हास्य की ऐसी बातें जो अब तक किसी भी पुस्तक में नहीं छपीं थीं कहते। बात-चीत के बीच बीच वे ताश के खेल सिखाते या फिर मेरे छोटे बच्चों को बक्स के ऊपर बैठाते और कहते कि मैं इन्हें तेज कर रहा हूँ: किन्तु हम लोगों को उन्हें दामाद बनाने की इच्छा ने उनकी सभी कमियों अथवा ज्यादतियों के प्रति हम लोगों को चक्षु शून्य कर दिया। यह मैं स्वीकार करता हूँ कि मेरी पत्नी ने इन्हें जाल में फांसने की हजारों योजनाएँ बनायीं अथवा शिष्टता के शब्दों में मेरी लड़कियों के छोटे से छोटे गुणों को भी बहुत बढ़ा चढ़ा कर दिखाया। यदि चाय के साथ खाये जाने वाले

बिस्कुट खुश्क और कुरकुरे होते तो मेरी पत्नी कहती कि वे ओलीविया के बनाए हुए हैं; यदि झरबेरी की शराब अच्छी होती तो वह कह देती कि झरबेरी उसकी ओलोविया ने इकट्ठे किये थे; यदि मुरब्बे का रंग अच्छा होता तो मेरी पत्नी कह देती, वह ओलीविया की उगलियों के कारन है, और यदि पकवान का स्वाद अच्छा होता तो उसमें मसाला डालने का कौशल ओलीविया का होता। बेचारी स्त्री तब कभी कभी नम्बरदार से कहती कि वह उन्हें और ओलीविया को एक आकार का मानती है और दोनों को बराबर खड़ा होने को कहती यह देखने के लिए की कौन अधिक लम्बा है। चालाकी के यह उदाहरण जिन्हें वह अगम्य समझती थी, सब लोग साफ साफ समझते थे। मेरे हितैषी नम्बरदार को इन बातों में बड़ा मजा आता और वे प्रतिदिन अपने बढ़ते हुए आकर्षण का एक प्रमाण देते जो यद्यपि विवाह प्रस्ताव के रूप में अभी न आ पाया था फिर भी इस दशा में पहुँचने के लिए बहुत थोड़ी सी कमी रह गयी थी; विवाह प्रस्ताव में यह देर कभी नम्बरदार की स्थानीय लज्जा शीलता के कारण समझी जाती तो कभी उनके चाचा जी के नाराज हो जाने के डर को हम लोग इस देर का कारण मान लेते। इसके बाद ही शीघ्र एक घटना हुई जिसने नम्बरदार महोदय की हमारे परिवार के सदस्य बनने की इच्छा को बिना किसी संदेह के स्पष्ट कर दिया; मेरी पत्नी ने भी इसे एक पक्का वायदा मान लिया।

एक दिन मेरी पत्नी ने अपनी लड़कियों के साथ पड़ोसी फ्लैमबोरो के घर जाकर देखा कि उन लोगों ने एक चित्रकार से अपने चित्र बनवाए थे और हर चित्र के लिए पंद्रह शिलिंग व्यय किए थे। चूंकि मेरे तथा इस परिवार के बीच एक तरह की स्पर्द्धा सी चल रही थी अतएव हम लोगों ने उनके इस बिना बताए हुए काम को देखकर अपने पिछड़ जाने में अपनी बेइज्जती समझी; और बिना कुछ समझे कि मैं क्या कह रहा हूँ बहुत कुछ कह गया और यह तय किया गया कि हम लोग भी अपने चित्र तयार कराएंगे।

अतएव चित्रकार को काम दे देने के बाद—क्योंकि मैं और कर ही क्या सकता था ?—हम लोगों ने इस दिशा में अपने पड़ोसी से आगे रहने के यत्न प्रारम्भ कर दिए। मेरे पड़ोसी परिवार ने, जिसमें केवल सात सदस्य थे, अपना चित्र सात नारंगियों के साथ खिचवाया था—यह चीज बहुत पुरानी थी और अब इसका प्रचलन बिलकुल न था, इसमें न तो जीवन की विविधिता थी और न संसार से इसका कोई सम्बन्ध। हम लोगों ने अपने चित्र और अधिक सुन्दर शैली में बनवाने चाहे और बहुत विवाद के पश्चात् हम लोगों का यह एकीकृत निश्चय हुआ कि हम लोग एक साथ बैठ कर एक बड़ा सा समूह-चित्र तयार करावें। यह सस्ता भी रहेगा क्योंकि इसमें एक ही फ्रेम की आवश्यकता पड़ेगी और देखने में भी खुशनुमा रहेगा; सभी शिष्ट परिवार उन दिनों इसी रीति से अपने चित्र तैयार करवाते थे। चूंकि हम लोगों का ध्यान उस समय ऐतिहासिक पृष्ट भूमि की ओर नहीं था अतएव हम लोगों ने स्वतन्त्र ऐतिहासिक रूप से अपने चित्र तैयार करवाने में संतोष कर लिया। मेरी पत्नी ने अपना चित्र काम देवी वीनस के रूप में खिचवाने की इच्छा प्रकट की और चित्रकार ने कहा कि उसे अपने बालों और कमर में कम हीरे न पहिनने चाहिए। उसने अपने दो छोटे बच्चों का चित्र काम बाल 'क्यूपिड' के रूप में अपने दोनों ओर खड़े करके उतरवाना चाहा; मुझे चर्च के कपड़े पहनकर हिस्टोनियन विवाह की पुस्तक उसे देते हुए दिखाई देना था। ओलीविया एक अमेजन स्त्री के रूप में हाथ में एक कोड़ा सा लेकर हरे रंग के, सोने से जड़े हुए कपड़े पहन कर फूलों के तट पर बैठकर अपना चित्र बनवाना चाहती थी। सोफिया एक भेड़ चराने वाली के वेश में इतनी भेड़ें लेकर जितनी कि चित्रकार महोदय बिना अधिक फीस लिए हुए बना सकें बनवाना चाहती थी। मोजेज ने अपनी हैट तथा सफेद पंखोंदार कपड़े पहिनने पसन्द किए। हमारी इस रुचि से नम्बरदार महोदय इतना अधिक प्रसन्न हुए कि उन्होंने सिकन्दर महान के वेश में ओलीविया के पैरों के ऊपर बैठने की इच्छा प्रकट की। इससे हम सब को नम्बरदार

की हमारे परिवार में शामिल होने की इच्छा का पता लगा और हम लोग इन्हें इनकार न कर सके। चित्रकार काम में जुट गया और चूंकि वह एक परिश्रमी व्यक्ति था अतएव चार दिन के निरन्तर श्रम के बाद उसने चित्र तैयार कर दिया। चित्र काफी बड़ा था और यह माननां पड़ेगा कि चित्रकार ने अपना कोई रंग बचा न रखा था। इसके लिए मेरी पत्नी ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। हम लोग उसके काम से पूर्ण संतुष्ट थे। किन्तु एक दुर्घटना हो जाने से हम लोगों के आश्चर्य की सीमा न रही। यह चित्र इतना अधिक लम्बा चौड़ा था कि इसके लगाने के लिए मेरे घर में कोई जगह न थी। हम लोगों ने इस मोटी सी बात पर ध्यान क्यों नहीं दिया, सोचने से परे है किन्तु इतना निश्चित है कि हम लोगों ने बहुत बड़ी गलती की थी। अतएव यह हम लोगों की गौरव भावना को संतुष्ट करने के बजाय, जैसी कि हम लोगों को आशा थी, रसोई घर की दीवार के सहारे एक बहुत बुरे ढंग से रख दिया गया—क्योंकि चित्र बहुत बड़े आकार का हो गया था और वह किसी भी दरवाजे से अन्दर न जा सकता था तथा हमारे सभी पड़ोसियों को हंसी का साधन हो गया था। कोई इस चित्र की तुलना राबिन्सन क्रूसो की बड़ी नाव से करता जो अपने भार के कारण एक स्थान से हटायी न जा सकती थी; कोई इसकी तुलना बोतल के अन्दर घुसी एक बहुत बड़ी डाट से करता; कुछ लोग आश्चर्य करते कि यह किस तरह निकाली जायगी और इससे ज्यादा आश्चर्य यह था कि यह अन्दर गयी कैसे।

यद्यपि इससे कुछ लोगों को हास्यवृत्ति को प्रोत्साहन मिला पर बहुतों के हृदय में इससे बुरी भावना फैली। नम्बरदार महोदय का चित्र हम लोगों के परिवार चित्र के साथ खींचा जाना दूसरे लोगों की ईर्ष्या के लिए पर्य्याप्त कारण था। हम लोगों के विषय में तरह तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। हम लोगों की शांति प्रति दिन भंग होने लगी—हम लोगों के मित्र आकर हम लोगों के विषय में हमारे शत्रुओं की बातें बताते। इन सूचनाओं से हम सब को बड़ा क्रोध आता किन्तु अफवाहें नाराज होने तथा

क्रोध करने से और अधिक बढ़ती है। अतएव हम लोगों ने एक बार फिर से अपने शत्रुओं की घृणा को टालना चाहा और अन्त में एक निर्णय किया; यह निर्णय बहुत चालाकी से भरा हुआ था अतएव मुझे इससे अधिक संतोष न हुआ। हम लोगों का प्रधान उद्देश्य मिस्टर थार्नहिल की इच्छा का पता लगाना था; अतएव मेरी पत्नी ने तय किया कि वह अपनी बड़ी लड़की के लिये पति का चुनाव करने के विषय में उनसे बात चलाएगी और इसी सिलसिले में उनके मन की बात ठीक ठीक जान लेगी। यदि यह रीति उनकी सम्मति के प्रकटीकरण में सफल न हो तो उन्हें एक प्रतिद्वन्दी की उपस्थिति से डराने की योजना बना ली गयी। इस अंतिम क़दम के विषय में मैं अपनी स्वीकृति किसी तरह भी न देता यदि ओलीविया ने बहुत गम्भीरता के साथ मुझे यह विश्वास न दिलाया होता कि यदि मिस्टर थार्नहिल उसे ऐसी स्थिति में न अपना लेंगे तो वह इस प्रतिद्वन्दी से विवाह करना स्वीकार कर लेगी। यह योजना ऐसी थी जिसका न तो मैं डट कर विरोध ही कर सकता था और न पूर्ण रूप से स्वीकार ही।

अतएव दूसरी बार जब मिस्टर थार्नहिल घर आए तो मेरी लड़कियों ने उनसे दूर रह कर अपनी माँ को उसकी योजना नम्बरदार के सामने रखने का अवसर दिया; वे कहीं दूर जाने के बजाय पड़ोस के कमरे में छिप कर बातें सुनने चली गयीं। मेरी पत्नी ने बहुत कलापूर्ण ढंग से इसे कहना शुरू किया—उसने कहा कि फ्लैमबोरो की बड़ी लड़की का विवाह एक बहुत सुन्दर एवं धनी युवक मिस्टर स्पैंकर के साथ हो रहा है। इस पर नम्बरदार ने स्वीकार मुद्रा में सर हिला दिया और वह कहती गयी जिनका भाग्य अच्छा होता है उन्हें अच्छे पति मिल ही जाते हैं "परन्तु ईश्वर" उसने आगे कहा, "उन लड़कियों की सहायता करे जो अविवाहित हैं। सुन्दरता का क्या मूल्य है मिस्टर थार्नहिल ? आज के स्वार्थी युग में सदाचार अथवा अन्य योग्यताओं का क्या मूल्य है ? कुछ नहीं, वह क्या है ? लेकिन उसके पास है ही क्या ? सारा शोर गुल बिलकुल बेकार है।"

"श्रीमती जी" थार्नहिल ने कहा, "मैं आपके कथन के औचित्य और कहने के नवीन ढंग को पूर्णरूप से स्वीकार करता हूँ और यदि मैं एक राजा होता तो बातें बिलकुल उलटी होतीं; तब सम्पत्तिहीन लड़कियों के लिए बड़ा अच्छा समय होता हमारी यह दो महिलाएँ हमारी सहायता सबसे पहले पातीं।"

"हाँ महाशय" मेरी पत्नी ने उत्तर दिया, आप हंसी कर रहे हैं किन्तु मैं इच्छा करती हूँ कि मैं रानी होती और मैं जानती होती कि मेरी बड़ी लड़की को पति कहाँ मिलेगा। किन्तु चूँकि आपने यह बात याद दिला दी है तो मिस्टर थार्नहिल क्या उसके योग्य पति तुम हमें नहीं बता सकते। वह अब उन्नीस वर्ष की हो चुकी है; स्वस्थ, सुशिक्षित तथा शीलवान है और मेरी राय में उसे किसी चीज की कमी नहीं।"

"श्रीमती जी" उसने उत्तर दिया, 'यदि मेरे पसन्द करने की बात होती तो मैं एक ऐसा आदमी चुनता जो एक परी को भी प्रसन्न रखने की क्षमता रखता; एक ऐसा आदमी जो सुदूरदर्शी होता सम्पत्तिवान होता, ईमानदार होता—मेरी राय में ऐसा आदमी श्रीमती जी, आप की लड़की के लिए योग्य पति होगा।"

—"तो महाशय" उसने कहा, "पर क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते भी हैं?"

—"नहीं श्रीमती जी"—उसने उत्तर दिया, "उसके लिए योग्य पति का पता लगाना असम्भव है वह एक आदमी के रखने के लिए जरूरत से अधिक, एक बहुत बड़ी सम्पत्ति है; वह देवी है। मेरी कसम, मैं जो समझता हूँ वही कहता हूँ; वह एक परी है।"

—"अरे आप तो मेरी लड़की की अनावश्यक प्रशंसा कर रहे हैं, पर हम लोग उसका विवाह आप के एक किसान के साथ जिसकी माँ अभी जल्दी ही मरी है और उसे एक घर सँभालने वाली की आवश्यकता है, करने की सोच रहे हैं। तुम जानते हो मेरा मतलब किससे है—किसान विलियम्स; वह एक भला आदमी है, मि० थार्नहिल, उसे वहाँ लाने

पहिनने का बिलकुल कष्ट न रहेगा, साथ ही उसने कई बार मेरी लड़की से विवाह का प्रस्ताव भी किया है" (यह बात सही भी थी); लेकिन महाशय" उसने कहा "मुझे अपनी इस पसन्द पर आपकी स्वीकृति पाकर प्रसन्नता होगी।"

—"मेरी स्वीकृति!" उसने कहा, "ऐसी पसन्द पर मेरी स्वीकृति श्रीमती जी!—कभी नहीं। इतने अतुल्य सौंदर्य और सौजन्य का वलिदान एक मूर्ख किसान के लिए; मुझे क्षमा कीजिएगा मैं ऐसे अनुचित कामों में अपनी स्वीकृति नहीं प्रकट कर सकता और उसका मेरे पास कारण भी है।"—"वास्तव में महाशय जी,, डिवोरह ने कहा "यदि तुम्हारे पास कारण है तो और बात है; लेकिन मैं इन कारणों को जान कर प्रसन्न हूँगी।"

—"मुझे क्षमा करिएगा श्रीमती जी" उसने उत्तर देते हुए कहा, "उन्हें खोज निकालना बड़ा मुश्किल है" उसने अपना हाथ अपने हृदय के ऊपर फेरते हुए कहा, "वे इस कब्र में दबा कर गाड़ दिए गए हैं।"

उनके चले जाने के बाद हम लोगों ने आपस में सलाह की पर यह तय न कर पाए कि उनके प्यार भरे उद्‌गारों का क्या अर्थ था। ओलीविया उन्हें प्रगाढ़ प्रेम का प्रमाण मानती थी; परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आ रहा था मुझे तो बिलकुल साफ ही देख पड़ रहा था कि उनमें प्यार की मात्रा अधिक है पर विवाह की आशा कम; फिर भी उन सब का चाहे जो अर्थ हो, किसान विलियम्स वाली योजना को कार्यान्वित करना सोचा गया, वह हम लोगों के यहाँ आने के दिन से ही हम लोगों से मिला जुला करता था।

मैंने अपनी लड़की के वास्तविक सुख की बात सोची थी अतएव मिस्टर विलियम्स की तत्परता में मुझे बड़ा आनन्द आया, वह एक परिश्रमी इमानदार तथा सुखी मनुष्य था। उसके पहले प्यार को फिर से जगाना आसान था; इस तरह एक संध्या को मि० थार्नहिल और विलियम्स से मेरे घर पर भेंट हुई। दोनों ने एक दूसरे को सर से पैर तक क्रोध भरी निगाह से घूर कर देखा, मिस्टर विलियम्स को नम्बरदार महोदय का लगान देना बाकी न था अतएव उसने उसकी जरा भी परवाह न की। ओलीविया ने अपनी तरफ से पूर्णता के साथ एक विलासवती स्त्री का पार्ट अदा किया। यह उसके कुछ वास्तविक चरित्र में भी दाखिल था। वह अपना सारा प्यार मिस्टर विलियम्स के साथ दिखाने का अभिनय करती रही। मिस्टर थार्नहिल इस पसन्द पर बहुत निराश बैठे हुए थे और एक दुखभरी मुद्रा में चले गए। यद्यपि जितनी अधिक तकलीफ उनको होती मालूम पड़ती थी, उससे मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ क्योंकि यह उन्हीं के ऊपर था कि वह अपना सम्मानित प्रेम विवाह प्रस्ताव के रूप में प्रकट कर इस बाधा को तुरन्त दूर कर दे। किन्तु, उन्हें जो कुछ भी परेशानी रही हो ओलीविया के कष्ट का अनुमान बड़ी सरलता से किया जा सकता है, उसे बहुत ज्यादा दुख था। अपने प्यार करने वालों से मिलने के

बाद, जो संख्या में बहुत थे, वह किसी अकेले कमरे में चली जाती और वहाँ दुखी बनी बैठी रहती। एक बार इसी दशा में, शाम को जब वह बनावटी खुशी चेहरे पर लिए बैठी थी, मैं उससे मिला। "तुमने देखा बेटी" मैंने कहा "थार्नहिल के प्यार में तुम विश्वास करतीं थीं पर वह केवल एक स्वप्न था; वह दूसरे प्रेमी की प्रतिद्वन्दिता को जैसे स्वीकार सा कर रहा है जो उससे हर दिशा में पीछे है यद्यपि विवाह प्रस्ताव करके वह तुम्हें बिना किसी बाधा के आसानी से पा सकते हैं और यह बात उन्हें भली भाँति विदित भी है।"

"जी हां पिता जी" ओलीविया ने उत्तर दिया, "लेकिन उसके पास इस देर के कारण भी हैं मैं जानती हूँ कुछ कारण हैं; उसकी निगाह और बातचीत में मुझे अपने प्रति सम्मान और प्यार दिखायी देता है। थोड़े समय में, मुझे आशा है उसके विचारों की उदारता का पता लग जायगा और मैं तुम्हें विश्वास दिला दूंगी कि मेरी राय आपकी राय से ज्यादा ठीक है।"

"मेरी बेटी ओलीविया" मैंने उत्तर दिया, "अब तक जो भी योजना उसके द्वारा विवाह प्रस्ताव करने कराने के लिए बनायी गयी है वह सब तुम्हीं ने बनायी है; तुम यह भी बिलकुल नहीं कह सकतीं कि मैंने किसी बात के लिए तुम्हें दबाया भी है। किन्तु तुम्हें यह न मान लेना चाहिए कि मैं इस ईमानदार सरल प्रतिद्वन्दी को तुम्हारे भ्रान्त प्रेम की छलना द्वारा सताए जाने का साधन बनाये रहूँगा। जितना भी समय तुम अपने इस काल्पनिक प्रशंसक के प्रेम की सत्यता का प्रमाण पाने के लिए चाहती हो दिया जायगा, किन्तु वह अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी यदि उन्होंने प्रस्ताव न किया तो मैं पूर्णरूप से ईमानदार मिस्टर विलियम्स को उसकी सच्चाई के लिए पुरस्कृत करूँगा। जिस तरह के चरित्र को मैंने अब तक अपने लिए आदर्शमान रखा है, वह मुझसे यही आशा रखता है, और एक पिता के रूप में मेरा प्यार मानव सुलभ मेरे न्याय को कभी भी न छिपा सकेगा। इसलिए अब समय निश्चित कर लो; जितना

तुम ठीक समझती हो उतने दिन की अवधि निश्चित कर लो; और इस बीच तुम मिस्टर थार्नहिल से मेरी इस इच्छा को कि मैं तुम्हारा विवाह अब किसी और के साथ जल्दी ही करने जा रहा हूँ, प्रकट कर देना। यदि वह तुम्हें सचमुच प्यार करते हैं, तो खुद ही तुम से हमेशा के लिये वंचित होने से बचने के लिए विवाह प्रस्ताव कर देंगे।"

मेरा यह प्रस्ताव जिसे वह पूर्णतया ठीक माने बिना न रह सकी, तय हो गया। यदि मिस्टर थार्नहिल न राजी हुए तो उसने मि० विलियम्स के साथ विवाह करने के पुराने वायदे को दुहराया। उसने तय किया कि यदि इस बार मि० थार्नहिल ने देर की तो वह अगले महीने उनके सामने ही उनके प्रतिद्वन्दी की हो जायगी।

इस तरह की घोर कार्यवाहियों से मिस्टर थार्नहिल की जिज्ञासा और आतुरता बढ़ती दिखायी दी: किन्तु वास्तव में जो कुछ ओलीविया ने महसूस किया उससे मुझे कुछ परेशानी हुई। बुद्धि और प्यार के इस संघर्ष में उत्साह ने उसका पूरा साथ छोड़ दिया और वह अकेले रहने के अवसर की खोज में रहती और जब भी अकेले बैठती तो रोती रहती। एक एक सप्ताह बीत गया लेकिन मिस्टर थार्नहिल ने उसकी सगाई रोकने का कोई भी यत्न न किया। दूसरे सप्ताह उसने और अधिक निरुत्साह दिखाया पर अधिक खुलकर नहीं। तीसरे सप्ताह उसने पूरी तरह आना बन्द कर दिया और जैसी कि मुझे आशा थी, इस पर मेरी लड़की और अधिक उद्विग्न दिखायी दी, उसमें एक विचारपूर्ण शांति दिखायी दी जिसका अर्थ मैंने परित्याग समझा। जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मुझे यह सोच कर प्रसन्नता हुई कि मेरी बेटी ऐसे घर में जा रही है जहाँ आनन्द और शांति से अपना जीवन व्यतीत कर सकेगी और उसके बनावट के स्थान पर वास्तविक प्रसन्नता के वर्णन करने के निर्णय पर मुझे अपार हर्ष हुआ।

उसकी सगाई के चार दिन के अन्दर ही एक दिन हम सब जलती हुई आग के किनारे बैठे थे, बीती हुई कहानियाँ, भविष्य की योजनाएँ से भी विषयों पर सामूहिक रूप से बातें हो रही थीं; हजारों बातें सोची जातीं और

पंचानबे

जो भी बेवकूफी की बात सामने आती हम लोग हँसने लगते। "अच्छा मोजेज" मैंने कहा "अब जल्दी ही हम लोगों के घर में एक विवाहोत्सव होगा : सामान्यरूप से तुम्हारी इन विषयों के सम्बन्ध में क्या राय है?"
—"मेरी राय यह है, पिता जी, कि सब कुछ ठीक ही ठीक होगा और मैं अभी अभी सोच रहा था कि जब लिवी बहिन का विवाह किसान विलिदम्स के साथ हो जायगा, तब हम सब उससे लकड़ियाँ अन्न जो कुछ भी चाहेंगे मुफ्त में उधार ले सकेंगे।"

—"यह तो हम लोग करेंगे ही मोजेज" मैंने कहा, "और वह हम लोगों की इस काम में रुचि पैदा करने के लिए गीत भी सुनाएगा— 'महिला और मृत्यु' वाला गीत"—"उसने यह गीत डिक को सिखा भी दिया है" मोजेज ने कहा, "और मैं समझता हूँ कि वह इसे ठीक से गा भी लेता है।"

—"क्या वह सचमुच गा लेता है वह गीत?" मैंने कहा, "तब तो सुनना चाहिए कहाँ है डिक? उसे इसे जोर से गाने दो।"—"मेरा भाई डिक" मेरे सबसे छोटे लड़के बिल ने कहा, "अभी अभी लिवी बहिन के साथ बाहर गया है, किन्तु मिस्टर विलियम्स ने मुझे दो गीत सिखाए हैं पिता जी, और वह मैं आप को गाकर सुनाऊँगा। तुम किसे पसन्द करोगे मरता हुआ हँस अथवा पागल कुत्ते की मृत्यु पर शोकगीत?"

—"मैं तो शोकगीत पसन्द करूँगा" मैंने कहा, "मैंने उसे कभी नहीं सुना और डिबोरा मेरी साथिन, तुम जानती हो मेरा जीवन सूखा है; मुझे खुश रहने के लिये झरबेरी की एक बोतल पी लेने दो। मैं हर तरह के शोक गीतों पर इतना अधिक रो चुका हूँ कि बिना एक प्याला शराब पिए मैं इसे ठीक से न सुन पाऊँगा; और बेटी सोफी, तुम अपना सितार उठाओ और जरा सा इस लड़के की मदद कर दो।"

"पागल कुत्ते की मृत्यु पर शोक"

हर प्रकार के भले मनुष्यो
मेरा गान सुनो

खोटा पाओ अगर कहीं तुम
तो मत उसे गुनो।
इलिसगंटन में एक मनुज था
जिसे सभी कह सकते
देवतुल्य मानव का वंशज
कहीं प्रार्थना करते।
दया मया से भरा हृदय था
शत्रु मित्र सबके हित
वस्त्रदान देता नंगों को
वस्त्र पहन कर समुचित।
उसी शहर में एक श्वान था
जैसा होते ही हैं
छोटे लम्बे बड़े फुहफटे
घूमा करते ही हैं।
दोस्ती थी दोनों में पहले
पर जब रोष हुआ
किसी स्वार्थवश कुत्ते ने
पागल बन काट लिया।
सभी निकट की सड़कों से
सुन चकित पड़ोसी धाए
कसम खुदा, कुत्ता पागल,
तुम पर भी दाँत लगाये।
बाबू बड़ा है बहुत बुरा है
कहते सभी इसाई
कसम खुदा, कुत्ता पागल
मर जाएगा यह भाई

हुआ एक आश्चर्य अचानक.

पड़े धूर्त्त सब झूँठे

मरा श्वान बच गया मनुज

अल्ला के खेल अनूठे।

"मैं कहता हूँ बिल तुम बहुत अच्छे लड़के हो; यह शोक गीत सचमुच दुखमूलक कहा जा सकता है। आओ बच्चो, ईश्वर करे बिल स्वस्थ रहे और एक बिशप बन सके।"

"मैं भी यही चाहती हूँ" मेरी पत्नी ने कहा, "और यदि जितना अच्छा यह गाता है उतनी ही निपुणता से उपदेश भी दे सके तो इसके बिशप होने में मुझे कोई संदेह नहीं। माँ की तरफ से इसके परिवार के अधिकांश सदस्य बड़े सुन्दर गायक थे।"

—"जो कुछ भी हो" मैंने कहा, "पुराने गीत समूहों का कोई भी भद्दा से भद्दा गीत आधुनिक सुन्दरतम गीतों से अधिक अच्छा लगता है। आज के गीतों का तो केवल एक अनुच्छेद पढ़ने से मन भर जाता है और आगे पढ़ने की इच्छा नहीं होती।

—अपना प्याला अपने भाई मोजेज को दो। शोक गीत लिखने वालों का सबसे बड़ा दोष यह है कि वे उन दुखों के कारण से ही जिनसे मानव आत्मा को बहुत कम क्लेश होता है निराशवादी हो जाते हैं। किसी महिला का रुमाल अथवा शीशा या छोटा कुत्ता खोया नहीं कि चले बेवकूफ कवि दुर्घटना की तुकबन्दी करने।"

"यह बात" मोजेज ने कहा, "बड़ी रचनाओं में हो सकती हो: किन्तु रैने लाघ गीतों से हम लोग पूर्णतया परिचित हैं और प्रायः सब का ढांचा एक सा ही है: कालिन डाली से मिलता है और वे दोनों आपस में बात चीत करना शुरू कर देते हैं; वह उसे उसके बालों में लगाने के लिए एक भेंट देता है, वह उसे सुगंधित फूलों का एक गुच्छा देती है; और तब वे दोनों साथ साथ नवयुवतियों और भेंड़ चराने वाले युवकों को शीघ्र विवाह करने की सलाह देने के लिए चर्च जाते हैं।"

"और सलाह भी बहुत अच्छी है" मैंने कहा, "और मुझे बताया गया है कि संसार में चर्च से ज्यादा अच्छी जगह सलाह देने के लिए और कोई नहीं है। क्योंकि जब हमें विवाह करने के लिए फुसलाया जाता है तो हमें पत्नी भी दी जाती है; और सचमुच मेरे बच्चे, वह बहुत ही सुन्दर बाजार होगा जहाँ पर यह पूछा जाता है कि हम लोग क्या चाहते हैं और बता देने पर जरूरत की चीज मिल जाती है।"

"हाँ पिता जी ' मोजेज ने कहा, "और मैं ऐसी केवल दो पत्नियों की बाजारों के विषय में जानता हूँ—इंग्लैण्ड में रैनेलाघ और स्पेन में फाण्टेरेबिया। स्पेन का बाजार वर्ष में एक बार खुलता है, किन्तु हमारी अंग्रेज पत्नियाँ हर र त बिकाऊ र ै हैं और पत्नियाँ अपने लिए पति का इन्तजाम करने में—मैंने उसकी बात काटते हुए कहा, "विदेश में यह एक कहावत हो गई है कि यदि समुद्र के ऊपर एक पुल बनाया जाय, तो महाद्वीप की सभी स्त्रियाँ हम लोगों के पास नमूना लेने के लिए चली आएँगी; क्योंकि योरीप में हमारे यहाँ ... तरह की पत्नियाँ बिलकुल नहीं हैं। लेकिन, मुझे एक बोतल और पी लेने दो डिवोरह, मेरी जान. और मोजेज तुम मुझे एक अच्छा गाना सुनाओ। ईश्वर को हम कौन सा धन्यवाद दे जिसने हम लोगों को इतनी शान्ति, स्वास्थ्य और शक्ति दी है। मैं अपने आपको संसार के महानतम सम्राट से भी अधिक सुखी मानता हूँ। उसके पास इतना सुन्दर घर और इतने सुन्दर बच्चे कहाँ है। हाँ डिवोरह, हम लोग अब बूढ़े हो रहे हैं; फिर भी जीवन संध्या सुखमय दिखायी देती है। हम लोग जिन पूर्वजों की संतति हैं वे बिलकुल निष्कलंक थे और हम लोग भी अपने बाद सुन्दर गुणवान एव कलंक हीन बच्चों की पीढ़ी छोड़ जाएँगे। जब तक हम जीवित हैं तब तक वे हमारे लिए एक सहारा हैं, हमारी खुशी हैं, और जब हम लोग मर जाएँगे तो वे हमारे सम्मान को निष्कलंक रूप से आगे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचा देंगे। आओ मेरे बच्चे मैं तुम्हारे गाना गाने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ; चलो पहले एक सम्मिलित गीत हो जाय; परन्तु मेरी प्यारी ओलीविया कहाँ है! उस छोटे से

स्वर्गीय गायक का स्वर सबसे अधिक मीठा है।" जैसे ही मैंने यह कहा, डिक दौड़ता हुआ अन्दर आया। "पिता जी, पिता जी, वह हम लोगों के पास से चली गयी, वह हम लोगों के पास से चली गई; हमारी बहिन लिवी हम लोगों के पास से हमेशा के लिये चली गई।"—"चली गई बेटा।"

—"हां वह दो आदमियों के साथ बग्घी में बैठकर चली गयी, उनमें से एक ने उसकी चूमी ली और कहा कि वह उसके लए मर जायगा; वह बहुत जोर से चिल्लायी, और लौटने वाली थी; किन्तु उसने उसे फिर फुसला लिया, वह बग्घी में फिर बैठ गई और कहा, "मेरे बेचारे पिता जो जब सुनेंगे कि मैं बेकार हो गयी तो क्या कहेंगे!"

—"तो अब?" मैंने घबड़ा कर कहा, "जाओ मेरे बच्चों जाकर रोओ, अब हम कभी एक घण्टे भी प्रसन्न नहीं रह सकते। और, ओह, ईश्वर का अनन्त क्रोध उस पर तथा उसके—मेरी लड़की को मुझसे इस तरह भगा ले गया। मेरी लड़की का सत्यानाश कर डाला! कितनी भोली और कितनी प्यारी थी मेरी बेटी। किन्तु अब मेरे इस जीवन का सारा सुख नष्ट हो गया। जाओ मेरे बच्चो जाओ हमें दुनिया भर के दुख उठाना पड़ेगा, बदनामी सहनी पड़ेगी; मेरा दिल टूट गया है।"—"पिता जी मेरे लड़के ने कहा, "क्या यही तुम्हारी दूरदर्शिता और धैर्य है"—"बेटा, दूरदर्शिता और धैर्य! मैं उसे दिखाऊँगा कि मुझमें दूरदर्शिता है, मुझमें धैर्य है। लाओ मुझे मेरी पिस्तौल मैं दगाबाज का पीछा करूँगा—जब तक वह इस धरती पर है मैं उसका पीछा करूँगा। यद्यपि मैं बुढ़ा हूँ फिर भी मैं उसके लिए काफी हूँ। दुष्ट, लम्पट।" मैं अपनी पिस्तौल उठाने के लिये आगे बढ़ा पर मेरी पत्नी ने, जिसका क्रोध इतना अधिक बढ़ा हुआ न था, मुझे अपनी बाहों से कस कर पकड़ लिया। "मेरे सबसे अधिक प्यारे पति देव, मेरे सबसे अधिक प्यारे पति देव।" कह कर वह चिल्ला पड़ी "बाइबिल ही केवल एक ऐसा शस्त्र है जो तुम्हारे हाथों को शोभा देता है। उसे खोल कर धैर्य से पढ़िए और अपना क्रोध शान्ति कीजिए; उसने हम लोगों को बहुत बुरा धोका दिया है।"—"वास्तव में पिता जी," मेरे लड़के

ने थोड़ी देर रुक कर कहा, "आपका क्रोध बहुत प्रचंड है और यह आपको शोभा नहीं देता। तुम्हें मेरी माँ को शान्ति देनी चाहिए पर तुम उसे और अधिक दुखी कर रहे हो, तुम जैसे सम्मानित चरित्र वाले मनुष्य को अपने घोरतम शत्रु के लिए भी ऐसा करना अनुचित है : तुम्हें उस दुष्ट को इस तरह मे अभिशाप नहीं देना चाहिए।"—"मैंने उसे अभिशाप नहीं दिया; क्या मैंने उसके लिए ऐसा कुछ कहा था बेटा?"—"हां पिता जी, आपने दो कहा था, आपने उसे दोवार ऐसा कहा।"

—"तो ईश्वर मुझे और उसको क्षमा करे, यदि मैंने वैसा कहा हो। और अब मेरे बेटे, मुझे लगता है कि अपने शत्रुओं की शुभकामना करना मानवीय गुणों से भी उत्तम गुण है। ईश्वर बहुत बड़ा उपकारी है; उसने कितने सुन्दर गुण हम लोगों को दिये हैं। किन्तु यह कोई कम क्लेष नहीं जिसने बहुत दिनों से न रोयी हुई आँखों से आँसू निकाल लिए। मेरे बच्चे मेरी प्यारी लड़की को बर्बाद करना।—अत्याचार—अन्धेर—ईश्वर मुझे क्षमा करे। मैं क्या कहने जा रहा हूँ!—प्रियतमे तुम्हीं कहो, कितनी प्यारी थी वह। कितनी सुन्दर!! इसी क्षण हम लोगों को उसकी वजह से कितनी खुशी मालूम पड़ रही थी। अच्छा होता अगर वह मर ही गई होती। किन्तु वह चली गई और हमारे परिवार का सम्मान नष्ट हो गया—मझे इस धरती पर कोई खुशी नहीं रह गई, अब यह मझे परलोक में खोजनी पड़ेगी। किन्तु मेरे बच्चे, क्या तुमने उन्हें जाते हुए देखा था : शायद वह उसे जबरदस्ती ले गया? यदि उसने जबरदस्ती की तो वह अब भी निष्कलंक हो सकती।" –"अरे नहीं पिता जी" लड़के ने कहा, "उसने तो केवल उसे चूम लिया, उसे सुन्दरता की देवी कहा, वह जोर से रोने लगी, उसके कंधे पर लिपट गयी और वे दोनों बहुत तेजी से अपनी बग्घी भगा ले गये।" —'वह एक अकृतज्ञ प्राणी है" मेरी पत्नी ने जो रोने के कारण बोल नहीं पा रही थी चिल्ला कर कहा, "उसने हम लोगों के साथ इस तरह का बर्ताव किया: मैंने उसके प्यार में जरा भी कमी नहीं की। नालायक लड़की कमीनी वेश्या ने अपने माता पिता को संसार में रहने लायक नहीं छोड़ा,

नीच के साथ अकारण भाग गयी, तुम्हारे पके हुए बालों की समय से पहले ही कब्र में पहुँचाने के लिए, अब मैं भी जल्दी ही मर जाऊँगी।"

इस तरह से हम लोगों ने अपनी बदनामी की पहली रात रो चिल्ला कर तथा एक दूसरे को बुरा कहकर बिता दी। मैंने किसी तरह अपने को धोखा देने वाले शत्रु का पता लगा कर बदला लेने की ठानी। दूसरे दिन सबेरे हम लोग अपनी शैतान लड़की खो चुके थे, पिछले दिन तक वही हम सब लोगों की प्रसन्नता का कारण थी। मेरी पत्नी पहिले की तरह ही लड़की को भला बुरा कह कर अपना दिल हलका कर रही थी। "अब मैं" उसने कहा "इस लड़की को घर बुलाकर अपने निष्कलंक सम्मान पर और अधिक कालिख न पुतवाऊँगी; मेरे घर के द्वार उसके लिए अब हमेशा बन्द रहेंगे। मैं उसे अब कभी भी बेटी न कहूँगी। नहीं, अब उस नीच वेश्या को उसके फुसलाने वाले पापी के साथ ही रहने दो। वह मेरे लिए एक लज्जा का विषय है, अब वह हम लोगों को धोखा न दे सकेगी।"

"प्रियतमे" मैंने कहा "इतनी कठोरता से बात न करो : उसके इस नीच काम से मझे भी उतनी ही घृणा है जितनी तुम्हें, यह घर और मेरा यह हृदय हर एक पश्चाताप करने वाले पापी के लिए खुला है। जितनी ही जल्दी वह अपनी गलती स्वीकार करके पश्चात्ताप कर लेती है मैं उसका उतना ही अधिक स्वागत करूँगा। पहली बार तो बहुत अच्छे आदमी भी गलती कर सकते हैं; कला फुसला सकती है और नवीन उपाय आकर्षण पैदा कर सकते हैं। पहली गलती भोलेपन के कारण होती है पर बाद की गलतियाँ पाप के कारण। हाँ, उस शैतान लड़की का इस हृदय द्वारा इस घर में स्वागत होगा चाहे उसने दस हजार पाप किए हुए हों और उसने मेरे सामने पश्चात्ताप कर लिया तो मैं फिर से उसका मधुर संगीत सुनूँगा। फिर से उसकी गोद पर प्यार के साथ अपना सर रखूँगा। मेरे बच्चे मेरी बाइबिल मझे दो, यद्यपि मैं उसे शर्म से नहीं बचा सकता पर उसे सामाजिक असमानता से अवश्य बचाऊँगा।"

१८

यद्यपि मेरा लड़का, मेरी लड़की को ले जाने वाले के चेहरे का कुछ अन्दाजा हम लोगों को नहीं दे सका फिर भी हम लोगों को युवक नम्बरदार महोदय के विषय में संदेह हुआ, क्योंकि वह ऐसा कर सकते थे। अतएव मैं थार्नहिल किले की तरफ नम्बरदार महोदय को झिड़कने के लिए और यदि सम्भव हो तो अपनी लड़की को वापस लाने के लिए चल पड़ा : किन्तु किले में पहुँचने के पहले ही मुझे एक परिचित मनुष्य मिला जिसने बताया कि उसने मेरी लड़की से मिलती जुलती हुई एक नव युवती को बग्गी पर एक आदमी के साथ, जिसको उस आदमी के वर्णन के अनुसार मैंने मि० वर्चेल होने का अन्दाज किया, बड़ी तेजी के साथ जाते हुए देखा था। फिर भी इस सूचना से मुझे किसी तरह संतोष नहीं हुआ। अतएव मैं नवयुवक नम्बरदार के पास गया यद्यपि अभी काफी सबेरा था फिर भी मैंने उनसे तत्काल मिलने की जिद की। वे शीघ्र ही बड़े आदर और मैत्री भाव से मिले और मेरी लड़की के भाग जाने की कहानी सुन कर बड़ा आश्चर्य प्रकट किया तथा शपथ लेते हुए उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया कि उन्हें इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम अतएव मैंने अब अपने पहले के संदेहों को बिलकुल भुला दिया अब मि० वर्चेल के ऊपर मेरा पूरा संदेह जमने लगा क्योंकि मुझे स्मरण हुआ कि उन्होंने पहले भी मेरी लड़की से व्यक्तिगत रूप से कई बार बातचीत की थी; किन्तु शीघ्र ही एक और साक्षी के यह कहने पर कि उसने सच-

मुच मि० बर्चेल और मेरी लड़की को वेल्स की तरफ लगभग तीस मील दूर पर जहाँ पर्याप्त साथी मिल सकते थे बग्घी पर जाते हुए देखा था, मुझे विश्वास सा होने लगा। इस समय मैं ऐसी स्थिति में पहुँच गया था जब कि मैं इन लोगों द्वारा बतायी हुई बात के ऊपर केवल काम कर सकता था, विचार नहीं; मैं यह न सोच सका कि कहीं ऐसा तो नही है कि यह साक्षी मुझे बहका देने के उद्देश्य से ही इस तरह खड़े किए गये हों। और इसलिए मैं अपनी लड़की तथा उसके काल्पनिक भगा ले जाने वाले का पता लगाने के लिए चल पड़ा। मैं बहुत तेजी से चला और बहुतों से पूछता भी गया पर कोई पता न चला। शहर में प्रवेश करने के बाद एक घुड़सवार से जिसको कि मुझे याद है, मैंने नम्बरदार, महोदय के यहाँ देखा था, पूछने पर मालूम हुआ कि यदि मैं तीस मील उसी समय और दौड़ लगाऊँ तो उन्हें पिछाड़ देने की उम्मीद कर सकता हूँ; उसने मुझे विश्वास दिलाया कि उन्हें वहाँ पर एक रात पहले देखा था, सभी लोग लड़की का संगीत सुन कर आकर्षित हो रहे थे। दूसरे दिन सबेरे ही मैं चल पड़ा और दोपहर के बाद लगभग चार बजे उक्त स्थान पर पहुँच गया। देखने पर जनसमूह बड़ा खुश मिजाज दिखाई पड़ रहा था, सब लोग केवल एक चीज का पीछा कर रहे थे और वह चीज थी—आनन्द; मेरे आनन्द से कितना भिन्न था वह आनन्द—मैं अपनी खोयी हुई प्राण प्यारी बेटी की खोजकर रहा था ? मुझे लगा कि मैंने मि० बर्चेल को अपने से कुछ दूर पर देखा; पर जैसे वह मुझ से मिलने से डर रहा हो अतएव मुझे निकट पहुँचते देखकर वह भीड़ में घुस गया और फिर मुझे न दिखायी पड़ा।

मैंने सोचा कि अब अधिक पीछा करना व्यर्थ है अतएव अपने भोले भाले परिवार की तरफ जिसे मेरी सहायता की आवश्यकता थी; मैंने फिर से लौटने का निश्चय किया। किन्तु दिमाग की परेशानियों और थकावट के कारण मुझे लगा कि मेरे ज्वर हो आया है। यह एक और असम्भावित ठोकर थी, मैं अपने घर से सत्तर मील से भी अधिक दूर था; फिर भी किसी तरह मैं पड़ोस की सरांय में पहुँच गया और इस क्रम

खर्चीली जगह पर पड़ कर मैं अपने ज्वर के परिणाम पर सोचने लगा। किन्तु अन्त में मेरा स्वास्थ्य ठीक हो गया यद्यपि मैं अपने रहने के खर्च को अदा न कर सका। बहुत सम्भव था कि यहाँ थोड़ी देर रह कर आराम करने के बाद जो स्वास्थ्य लाभ हुआ था •फिर चलने से खराब हो जाती और मैं परेशानी में पड़ जाता; किन्तु इसी समय एक और यात्री जो नाश्ता करने के लिए आया था मेरा परिचित निकला। यह आदमी सेंट पाल चर्च यार्ड का सर्व हितैषी पुस्तक विक्रेता था—इसने बच्चों के लिए बहुत सी पुस्तकें भी लिखी थीं; वह अपने को बच्चों का मित्र कहता था पर वास्तव में वह सारी मनुष्य जाति का मित्र था। वह हमेशा बहुत जरूरी काम से रहता था और उस समय वह किन्हीं मि० थारमश ट्रिप के इतिहास लिखने के लिए सूचनाएँ एकत्रित कर रहा था। मैंने तुरन्त ही सहृदय मनुष्य के लाल फुंसियों वाले चेहरे को याद किया; क्योंकि इसने मेरे लिए युग की बहु विवाह प्रथा के विरोध में मेरे लेख प्रकाशित किए थे, इससे मैंने लौटते समय के लिए कुछ रुपए ले लिए। सराय छोड़ने के बाद, चूंकि अभी काफी कमजोर था, मैं अधिक नहीं चल सकता था अतएव धीरे धीरे दसमील प्रतिदिन चलना तय किया। मुझे अपना स्वास्थ्य और शांति फिर से मिल गयी। और अपनी इज्जत और बदनामी के भय से जो दुख उठा रहा था उसे गलत समझ कर मैंने भूलना शुरू किया। मनुष्य तब तक नहीं जानता कि कौन कौन से आघात और दुख ऐसे हैं जो वह नहीं सह सकता : जैसे कि किसी महान् उद्देश्य तक पहुँचने के लिए जो दूर से देखने में बहुत अधिक आकर्षक और प्रिय मालूम पड़ता है, जब हम उस तक पहुँचने का यत्न करते हैं तो प्रत्येक पद पर हमें निराशा असफलता और अन्धकार दिखायी पड़ता है : इसी तरह जब हम अपने हर्ष के चरम उत्कर्ष से नीचे उतरते हैं तो यद्यपि पहले दुख की घाटी अंधकारमय और कष्ट दायी मालूम पड़ती है पर बाद को व्यस्त मस्तिष्क धीरे धीरे अपने मन का आनन्द यहाँ भी ढूढ़ लेता है और फिर उसे अधिक कष्ट नहीं होता। ज्यों, ज्यों हम निकट पहुँचते आते

हैं अन्धकारमय वस्तुएँ भी दिखायी देने लगती है और मानसिक-चक्षु इस अंधकार के अनुसार अपने आप को ठीक कर लेते हैं।

दो घंटे तक बराबर चलते रहने के बाद मुझे एक गाड़ी सी दिखाई दी.मैं उसे पकड़ने के लिये और तेजी से बढ़ा, पर निकट पहुँचने पर मालूम हुआ कि यह एक सामान लादने का ठेला भर था। इस गाड़ी में नाटक करने के परदे तथा और दृश्य थे जो कोई नाटक कम्पनी दूसरे गाँव में नाटक खेलने के विचार से लदा कर लिए जा रही थी। गाड़ी के साथ केवल दो आदमी थे --एक गाड़ी हांकने वाला और दूसरा कम्पनी का एक आदमी शेष लोगों को दूसरे दिन आना था। "चलते समय अच्छे साथी मिल जाना "कहावत है" रास्ते का काम हो जाता है। अतएव मैंने बेचारे नाटक खेलने वाले से बातचीत करना प्रारम्भ कर दिया और चूँकि एक जमाने मे मैं भी एक अच्छा अभिनेता था मैंने इस विषय में बड़ी स्वतन्त्रता के साथ बातचीत करना शुरू कर दिया। और चूँकि मैं रंगमंच की वर्तमान परिस्थितियों से भी पूर्ण परिचित था अतएव मैंने पूछा कि आज कल कौन से नाटककार अधिक प्रचलित हैं !—आज के ड्राइडेन और रो कौन हैं ?—"मेरा विचार है", अभिनेता ने कहा "आज का कोई भी नाटककार अपनी तुलना, ड्राइडेन और रो से करके अपने को सम्मानित नहीं समझता। ड्राइडेन और रो के लिखने का ढंग का अब बिलकुल चलन नहीं रहा हम लोगों की रुचि पूरी एक शताब्दि पीछे चली गयी है केवल फ्लेशर, बेनजानसन और शेक्शपियर के सारे नाटक ही रुचिकर हैं।"—"यह कैसे" मैंने कहा, "क्या सम्भव है कि वर्तमान समाज तुम्हारे द्वारा नाम लिये हुये नाटककारों की पुरानी भाषा भद्दे और अशिष्ट हास्य अति चित्रित चरित्रों को पसन्द करता है ?"—"महाशयजी मेरे साथी ने उत्तर दिया, "जनता भाषा हास्य अथवा पात्रों के विषय में बिलकुल नहीं सोचती क्योंकि इन सब बातों से उनको कोई मतलब नहीं।

जनता वहां पर केवल अपने मनोविनोद के लिये जाती है और शेक्शपियर अथवा जानसन के नाम पर मूक अभिनय देख कर भी प्रसन्न

हो जाती है।—"इसलिये तब, मैंने कहा "मैं यह विश्वास करूँ कि आज कल के नाटककार प्रकृति के स्थान पर शेक्सपियर इत्यादि की नकल करते हैं।"—"सच तो यह है" मेरे साथी ने कहा, "कि मैं नहीं जानता कि वे किसी चीज की नकल भी करते हैं और न जनता उनसे यह माँग ही करती है। नाटक की रचना नहीं बल्कि प्रारम्भों एवं दृष्टिकोणों और विचारों की संख्या जनता की प्रशंसा पाने के लिए अधिक आवश्यक है। मैं एक नाटक के विषय में जानता हूँ जिसमें हास्य का कहीं नाम नहीं फिर भी वह बहुत जल्दी प्रचलित हो गया और इसी तरह ऐसे कई उदाहरण दिये जा सकते हैं। नहीं महाशय काँग्रीव और फरकुहर के नाटकों में हास्य भरा पड़ा है अपनी वर्तमान भाषा अधिक स्वाभाविक है।"

इस समय तक गाड़ी अपने निश्चित गांव के पास पहुँच गयी थी लगता है कि गांव के लोग हम लोगों के पहुँचने से आश्चर्य में पड़ गए थे और हम सब को देखने के लिये गांव के बाहर आ गये क्योंकि मेरे साथी ने कहा कि उन्हें बाहर जाने पर बहुत अधिक दर्शक मिल जाते हैं जब कि घर पर रुके रहने पर कम।

हम लोगों के आने से गांव वालों में कौतूहल हुआ और एक भीड़ आकर इकट्ठी हो गयी। मैंने शीघ्र ही निकट की सराय में शरण ली। ज्योंही मैं सार्वजनिक कमरे के अन्दर पहुँचा कि बेशकीमती कपड़े पहिने हुये एक सज्जन ने मेरा परिचय प्राप्त करना चाहा मैंने उन्हें ठीक ठीक बता दिया कि इस नाटक कम्पनी से मेरा किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है इसके बाद उन्होंने मुझे तथा अभिनेता को एक एक प्याला शराब पिलाने की इच्छा प्रकट की और फिर वर्तमान राजनीति में उसने गम्भीरता और रुचिपूर्ण ढंग से विवाद करना प्रारम्भ कर दिया। मैंने अपने दिमाग में सोचा कि वह कम से कम संसद का सदस्य तो अवश्य ही होगा। उसने बाद में अपनी इच्छा प्रकट की कि मैं और अभिनेता दोनों उसके साथ ही शाम का भोजन उसके घर पर करें कुछ देर शिष्टतापूर्वक इंकार करने के बाद हम दोनों ने उसकी बात स्वीकार कर ली।

'एक सौ साल'

१६

शाम को हम लोगों को जिस घर में भोजन करना था, वह गाँव से कुछ दूर पर था, अतएव निमंत्रण देने वाले सज्जन ने बग्घी के अभाव में लोगों से पैदल चलने की प्रार्थना की, और हम लोग थोड़ी देर के बाद एक बहुत बढ़िया महल में पहुँच गए, इस क्षेत्र में मैंने इतना सुन्दर घर कहीं नहीं देखा था। जिस कमरे में हम लोग ठहरे थे वह बहुत ही खूब सूरत और आधुनिक ढंग पर बना हुआ था; वह भोजन तैयार करने की आज्ञा देने के लिये अन्दर गया और अभिनेता ने अपनी आँख के इशारे से मुझे बताया कि हम लोग यहाँ भाग्य से ही आए थे। हमारे निमंत्रण देने वाले सज्जन शीघ्र लौटे : बहुत बढ़िया सा भोजन हम सबके सामने परोसा गया; साधारण से वस्त्र पहिने हुए दो या तीन महिलाओं से मेरा परिचय कराया गया और बात चीत काफी प्रसन्नता से प्रारम्भ हो गयी। राजनीति हम लोगों की बात चीत का प्रमुख विषय था; उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं अंतिम उपदेश को जानता हूँ: जिसका उत्तर मैंने नहीं में दिया। "और लेखाधीक्षक को भी नहीं!" उसने कहा। "उसे भी नहीं" मैंने कहा। "यह तो ताज्जुब की बात है, बहुत बड़े ताज्जुब की बात" मेरे आतिथेय ने कहा। "अब मैं सारी राजनीति पढ़ता हूँ : हर एक दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र तथा हर एक

पत्रिका, और यद्यपि वे एक दूसरे से स्पर्द्धा और घृणा करते हैं पर मैं इन सब को पसन्द करता हूँ। स्वतन्त्रता, महाशय जी स्वतन्त्रता आज ब्रिटेन निवासियों की आत्मश्लाघा है। और कार्नवाल की सभी कोयले की खानों की कसम, मैं इसके अभिभावकों का आदर करता हूँ।"—"तब यह आशा करनी चाहिये' मैंने कहा, "आप सम्राट का सम्मान करते हैं?"—"हाँ" मेरे अतिथेय ने कहा, "जब वह हमारी इच्छानुसार काम करते हैं, परन्तु यदि उनका रास्ता पहले जैसा ही रहता है तो मैं उनकी परवाह नहीं करूँगा। मैं कुछ नहीं कहता। मैं केवल सोचता हूँ। मैंने इससे कुछ अधिक अच्छा निर्देश किया होता। मैं नहीं समझता कि सलाहकारों की संख्या पर्याप्त थी: उन्हें इन विषयों के पूर्ण परामर्श और सहयोग से काम करना चाहिए।"

"मेरी इच्छा है" मैंने कहा, "इस तरह के सलाहकारों को तख्ते में जड़वा दिया जाय। ईमानदार आदमियों का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वे संविधान के कमजोर पक्ष की उस पवित्र शक्ति को जो इधर कुछ वर्षों से घटती जा रही है, मदद करें। किन्तु यह अनभिज्ञ लोग स्वतन्त्रता के लिए अब भी उसी तरह चिल्लाते हैं और यदि इनमें कुछ शक्ति होती तो वे इसे उखाड़ फेंकते।"

"कैसे" महिलाओं में से एक ने कहा, "क्या मैं एक ऐसे नीच और रूढ़िवादी मनुष्य को देख रही हूँ जो स्वतन्त्रता का शत्रु है और एक अत्याचारी शासन का समर्थन करता है। स्वतन्त्रता ईश्वर की पवित्र भेंट ब्रिटेन निवासियों का गौरव पूर्ण विशेषाधिकार है।"

"क्या यह सम्भव है" हमारे अतिथेय ने कहा "कि अब भी दास प्रथा के समर्थक जीवित हैं? कौन ब्रिटेन निवासी इतना नीच है जो ईश्वर प्रदत्त स्वाधीनता के अधिकार को नहीं चाहता? क्या कोई इतना पतित हो सकता है?"

"नहीं महाशय"। मैंने उत्तर दिया, मैं स्वतन्त्रता के पक्ष में हूँ। ईश्वर की वह सुन्दर देन! गौरवमयी स्वाधीनता! आधुनिक दोष का मुख्य विषय!

मैं चाहता हूँ सभी लोग सम्राट हो जाँय ! मैं स्वयं भी एक सम्राट हो जाऊँ । स्वाभाविक रूप से हम सबको राज सिंहासन पर बैठने का समान अधिकार है ! मूलतः हम सभी बराबर हैं । यह मेरी राय है और एक जमाने में सभी ईमानदार लोगों ने आपस में एक ऐसा समुदाय बनाने की योजना की थी जिसमें सब लोगों को समान स्वतन्त्रता हो । किन्तु अफसोस; यह योजना कार्य रूप में परिणित न हो सकी—क्योंकि समुदाय में कुछ अधिक बलवान भी थे और कुछ दूसरों की अपेक्षा अधिक चालाक और यही लोग शेष लोगों के नियामक बन गए । जैसे आप का साईस घोड़ों पर चढ़ लेता है क्योंकि वह उनसे अधिक चालाक जीव है इसी तरह आदमियों में भी जो अधिक चालाक अथवा शक्तिशाली था दूसरों के कन्धों पर चढ़ने लगा और तबसे मानवता ने झुकना सीख लिया और अब कुछ शासन करने के लिए पैदा होते हैं और कुछ शासित होने के लिए । अत्याचारियों का होना अनिवार्य है, अतएव प्रश्न यह है कि उन्हें एक ही घर में अपने साथ रखना अच्छा है या उसी गाँव में या फिर इससे भी दूर किसी शहर में । अब महाशय, जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है मैं स्वाभाविक रूप से एक अत्याचारी के चेहरे से घृणा करता हूँ अतएव वह मुझसे जितनी ही दूर रहेगा उतनी ही मुझे खुशी होगी । अधिकाँश मनुष्य भी साधारणतया मेरी तरह ही सोचते हैं और सबने एक मत हो कर सम्राट की रचना की है जिसका चुनाव एक साथ ही अत्याचारियों को समाप्त कर देता है और अत्याचारिता को बहुत आदमियों से बहुत दूर पर रख देता है । अब बड़े लोग, जो इस एक अत्याचारी के चुनाव के पहले स्वयं अत्याचारी थे स्वाभाविक रूप से अपने से बड़ी शक्ति का विरोध करते हैं और जिसका भार हमेशा इन लोगों पर पड़ता है अतएव यह बड़ों के हित में ही है कि सम्राट की शक्ति जितना सम्भव हो सके कम करें । क्योंकि जो कुछ वे उससे छीन लेते हैं स्वाभाविक रूपसे उनको मिल जाता है; और एक मात्र काम जो उन्हें राज्य में करना शेष रह जाता है वह है अकेले अत्याचारी को नीचा दिखाना, इससे उन्हें अपना पूर्ण स्वत्व प्राप्त

हो जाता है। अब, राज्य की ऐसी परिस्थिति हो सकती है, या उसके नियम- इस प्रकार के हो सकते हैं, या उसके समर्थ और धनी मनुष्य इस विचार के हो सकते हैं, जो सभी मिल कर सम्राट की इस शक्ति को कम करने का प्रयत्न करें। क्योंकि पहली दशा में यदि हमारे राज्य की स्थिति सम्पत्ति के एकत्रीकरण के पक्ष में हो और धनी आदमी और अधिक धनी होते जायँ, तो इस तरह उनकी अधिकार लालसा बढ़ेगी। सम्पत्ति, फल स्वरूप इकट्ठी हो जायगी। आजकल, विदेशी व्यापार से, स्वदेशी उद्योग की अपेक्षा अधिक धन आता है, क्योंकि विदेशी व्यापार की सफल व्यवस्था केवल धनी आदमी ही कर सकते हैं और साथ ही देशी उद्योग से होने वाले सारे लाभ भी उन्हीं के होते हैं, अतएव हममें से धनी लोगों के लाभ के दो साधन हैं जब कि निर्धन लोगों का केवल एक। इसी कारण सभी व्यापारिक देशों में सम्पत्ति का एकत्रीकरण हो जाता है; और इस तरह के सबके सब देश कुछ दिनों में धनिकतंत्र अथवा कुलीनतंत्र शासन के अन्दर आ जाते हैं। और फिर इस देश के कानून भी धन के एकत्र होने का प्रोत्साहन दे सकते हैं; और जब उनके साधनों के कारण गरीबों और अमीरों के स्वाभाविक सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं और तब धनी लोग धनी लोगों से ही अपने विवाह-सम्बन्ध आदि करने लगते हैं; या जब विद्वान और शिक्षित लोगों को धन के नशे में शासन-यंत्र में परामर्श देने अथवा और ऐसे ही कामों से वंचित कर दिया जाता है तो बुद्धिमान और विद्वान लोग भी अपने जीवन का उद्देश्य केवल धन इकट्ठा करना बना लेते हैं। इन साधनों से मैं कहता हूँ, और केवल इसी तरह के साधनों से धन इकट्ठा हो जाता है। अब, इस एकत्रित सम्पत्ति का स्वामी जब अपने जीवन की सारी आवश्यकताओं को पूरा कर भोग विलास के सारे साधन जुटा लेता है और उसे अपने इस एकत्रित धन का और कोई उपयोग शेष नहीं रह जाता तो फिर वह शेष धन से शासन शक्ति को अपने हाथ में लेना चाहता है। इसका अर्थ दूसरे शब्दों में हुआ, कि वे लोग अपने आश्रित बनाने में लग जाते हैं, वे गरीब और जरूरत मन्द आदमियों की स्वतन्त्रता खरीद लेते हैं

और यह बेचारे निर्धन आदमी इन धनी लोगों के अनेक तरह के अत्याचार अपनी रोटी के लिए सहने लगते हैं। इस तरह एक बहुत धनी आदमी अपने चारों तरफ गरीबी की एक बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी कर लेता है। जो लोग इस धनी आदमियों के चक्कर में घूमने की इच्छा रखते हैं, वे प्रकृति से दास वृत्ति के होते हैं, मनुष्यों में सबसे नीच, इनकी शिक्षा और इनकी आत्मा दोनों ही सेवा मूलक होती है और यह लोग स्वतन्त्र शब्द के अतिरिक्त इस विषय में और कुछ नहीं समझते। लेकिन एक बहुत बड़ी संख्या में ऐसे लोग भी होते हैं जो इन धनिक लोगों के प्रभाव क्षेत्र से बाहर होते हैं।

उदाहरण के लिए, वे लोग जो न तो बहुत धनी हैं और न बहुत निम्नकोटि के दासवृत्ति वाले आदमी; वे आदमी जिनके पास इतना काफी धन है कि उन्हें अपने पड़ोसी शक्तिमान व्यक्ति के सामने झुकने अथवा उस पर आश्रित होने का अवसर नहीं आता और धन इतना अधिक भी नहीं होता है कि वे स्वयं शक्तिमान और अत्याचारी बन कर अपने पास निर्धन आश्रितों और दासवृत्ति वाले नीच मनुष्यों की एक भीड़ इकट्ठी कर लें। समाज के इस मध्य वर्ग में ही सम्पूर्ण कलाएं ज्ञान तथा सदाचार वर्तमान रहते हैं। यह वर्ग स्वतन्त्रता की सच्ची रक्षा करने वाला कहा जा सकता है और इसे हम जनता कह सकते हैं। अब यह हो सकता है कि यह मध्य वर्ग राज्य में अपना सारा प्रभाव खो बैठे और इसकी आवाज एक तरह से बदमाश आदमियों की आवाज से दब जाय—क्योंकि राज्य कार्यों में प्रभाव रखने की योग्यता यदि संविधान बनाने के समय से अब दस गुनी कम पड़ जाय तो यह प्रत्यक्ष है कि नीच मनुष्य बहुसंख्यक रूप से शासन में आ जाएँगे और वे इन्हीं धनी लोगों के हाथ की कठपुतली बने रहेंगे, फल यह होगा कि यह धनी लोग जो रास्ता दिखाएंगे उसी दिशा में यह लोग काम करेंगे। अतएव ऐसे राज्य में जो कुछ भी मध्य वर्ग ने छोड़ रखा है वह है एक प्रधान शासक के विशेषाधिकारी एवं सुविधाओं को पवित्र सीमाओं में संरक्षण करने का यत्न। मध्य वर्ग की तुलना एक नगर से की जा सकती है जिस पर धनी लोग अपना घेरा डाल रहे हैं और जिसको

शासक बाहर से मदद भेज रहा है। जब कि घेरा डालने वालों को अपने ऊपर शत्रु का भय रहता है अतएव नगर वाले लोगों को विशेष सुविधाएँ दी जाना स्वाभाविक ही है; वे उनको विशेषाधिकार तथा और बहुत सी सुविधाएँ देने का वचन देते हैं; किन्तु यदि वे पीछे से शासक को जीत लेते तो फिर नगर की दीवारें उनके लिए कुछ भी अड़चन नहीं डालतीं। तब उन्हें क्या आशा करनी चाहिए, यह हालैण्ड, जेनोआ अथवा वेनिस की तरफ आंख उठा कर देखने से आसानी से मालूम हो जायगा जहां पर कानून गरीब आदमियों पर शासन करते हैं और अमीर आदमी कानून पर। और तब मैं राजतन्त्र शासन के पक्ष में हूँ, और इसके लिए अपनी जिन्दगी कुर्बान कर सकता हूँ पवित्र राजतन्त्र शासन : यदि मनुष्यों में कोई चीज पवित्र हो तो वह होना चाहिए राज्याभिषम्त सम्राट; और उसकी युद्ध अथवा संधि सम्बन्धी किसी भी शक्ति में कमी करना प्रजा की वास्तविक स्वतन्त्रता का अपहरण होगा। स्वतन्त्रता, देश भक्ति और ब्रिटेन निवासियों की आवाजें दुनिया में ऐसे ही बहुत कुछ कर चुकी हैं; यह अब आशा की जाती है कि स्वतन्त्रता के सच्चे सपूत अब उनकी इन करामातों को आगे बढ़ने से रोकेंगे। मैं अपने समय के बहुत से ढोंगी स्वतन्त्रता के समर्थकों को जानता हूँ किन्तु उनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो अपने हृदय से तथा अपने परिवार के प्रति अत्याचारी न रहा हो।"

मुझे लगा कि तर्क करने की मेरी यह तेजी शिष्टता की सीमा को लांघ चुकी थी। मेरे आतिथेय महोदय जो मुझे बीच में ही कई बार रोक चुके थे अब चुप न रह सके।

"क्या" वह चिल्ला पड़े, "मैं अब तक पादरी के कपड़े पहिने हुए एक जेसुइट का स्वागत कर रहा था! कार्नवाल की सारी कोयले की खानों की कसम, यदि मेरा नाम विल्किन्सन है तो मैं तुम्हें अभी निकाल भगाता हूँ।" मैंने सोचा कि मैंने अपने विवाद तथा पक्ष के समर्थन में बहुत ज्यादती कर दी है अतएव मैं अपनी गलती की क्षमा मांगने लगा। "क्षमा!" उसने बहुत क्रोधित होकर कहा, "मैं सोचता हूँ कि ऐसे सिद्धान्तों को दस हजार

क्षमा की आवश्यकता है। क्या! स्वतन्त्रता सम्पत्ति सब कुछ त्याग दो जाय, और जैसा कि गजेट कहता है, हम सब सवारी के घोड़े बन जायें! महाशय जी! मैं इस बात पर जिद कर रहा हूँ कि आप इसी क्षण घर से निकल जायँ अन्यथा परिणाम बुरा होगा, मेरी जिद है कि आप अभी रास्ता लीजिए।" मैं अपनी गलतियों के लिए दुबारा क्षमा मांगने जा ही रहा था कि हम लोगों ने एक नौकर के पैरों की आवाज सुनी और दो महिलाएँ चिल्ला उठीं, "हमारे मालिक और मालिकिन घर आ गयीं!" मुझे लगता है कि स्वागत करने वाले वृद्ध सज्जन केवल एक खानसामा थे जो अपने मालिक की अनुपस्थिति में स्वयं मालिक होने का बहाना कर रहे थे और सच बात यह है कि उन्होंने राजनीति की बात उसी ढंग से की जिस तरह देश के और सज्जन करते हैं। लेकिन जब मैंने गृहस्वामी तथा उसकी पत्नी को घर में प्रवेश करते हुए देखा तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा, हम लोगों को इतनी प्रसन्नता के साथ बैठ कर बातचीत करते हुए देख इन लोगों को भी बहुत आश्चर्य हुआ। "महाशयों" वास्तविक गृहस्वामी ने मेरे साथी तथा मेरी ओर देखते हुए कहा, "मेरी पत्नी तथा मैं आपका बहुत विनीत सेवक हूँ मैं सच कहता हूं मुझे आपकी उपस्थिति की जरा भी उम्मीद नहीं थी। हम लोग आपके बड़े अनुग्रहीत हैं।" हम लोगों की उपस्थिति उनके लिए चाहे जितनी आकस्मिक रही हो पर मेरा विश्वास है कि उन लोगों का आना हमारे लिये और भी अधिक आकस्मिक था और मैं अपनी ही बेवकूफी के डर से अवाक रह गया जब मैंने कुमारी अराबेला विल्मट को जिनका विवाह मेरे बड़े लड़के जियार्ज से होने वाला था पर बाद को न हो पाया था, अन्दर आते देखा। ज्योंही उसने मुझे देखा मेरी बाहों में असीमित प्रसन्नता के साथ कूद पड़ी। "प्यारे महाशय जी" उसने कहा, "किस बहुत अच्छे मौके से हम लोग अचानक यहाँ मिल गये? मुझे विश्वास है कि जब मेरी चाची तथा चाचा को मालूम होगा कि उनके अतिथि आज डाक्टर प्रिमरोज हैं तो उन्हें कितनी खुशी होगी।" मेरा नाम सुनकर वृद्ध सज्जन अपनी धर्मपत्नी के साथ मेरे पास

आये और बहुत अधिक विनीत शीलता तथा आदर के साथ मेरा स्वागत किया। वे हम लोगों के आने की कहानी सुन कर मुस्कराये बिना न रह सके : किन्तु अभागे खानसामे को जिसे वे नाराज होकर घर से निकाले दे रहे थे मेरे बीच बचाव करने पर क्षमा कर दिया।

मि० अर्नाल्ड और उनकी पत्नी जो इस घर के स्वामी थे मुझे अपने घर पर कुछ दिन रुकने का आग्रह करने लगे; और जब उनकी भतीजी ने भी जो पहले मेरी शिष्या रह चुकी थी और इसलिए मेरे तथा उसके विचारों में काफी साम्य भी था, आग्रह किया तो मैंने रुकना स्वीकार कर लिया। उस रात को मैं एक बहुत ही सुन्दर कमरे में रहा और दूसरे दिन सबेरे कुमारी विल्मट ने मेरे साथ वाटिका में घूमने की इच्छा प्रकट की यह वाटिका आधुनिक ढंग से खूब सजी हुई तथा हरी भरी थी। थोड़ी देर तक इधर उधर दिखाने के बाद उसने मुझसे पूछा कि मैंने जियार्ज की खबर कब से नहीं पायी थी।—"अफसोस बेटी" मैंने कहा, "उसे गए हुए तीन वर्ष हो गए और उसने अब तक न तो मुझे ही कोई पत्र दिया और न अपने मित्रों के पास ही कोई सूचना भेजी। वह कहाँ पर है, यह मुझे नहीं मालूम; शायद मुझे अब वह खुशी कभी नहीं दिखायी पड़ेगी। नहीं बेटी, हम लोगों को ऐसे सुन्दर और सुखद मौके जैसे वेक फील्ड में मिला करते थे अब कभी नहीं मिलेंगे। मेरा छोटा परिवार बहुत जल्दी जल्दी अलग होता जा रहा है और गरीबी के कारण हमें तकलीफों का ही नहीं वरन् बदनामियों का भी सामना करना पड़ रहा है।" अच्छे स्वभाव की इस लड़की के आँखों से एक आँसू टपक पड़ा, चूंकि मैं इस लड़की को सहृदयता से परिचित था अतएव मैंने अपने दुखों की विस्तृत कथा सुनाने से अपने को रोक लिया। मुझे यह जान कर संतोष हुआ कि उसको हम लोगों के प्रति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था और उसने हम लोगों के चले आने के बाद अपने लिए कितने ही आयोजित विवाह सम्बन्धों में अपनी अस्वीकृति प्रकट कर दी थी। उसने इस स्थान में हुए कितने सुधारों और परिवर्तनों को दिखाया

वह तरह तरह की बातें करती और हर बात में मेरे बड़े लड़के के सम्बन्ध में एक प्रश्न पूछने का बहाना निकाल लेती। इस तरह से हम लोगों का दोपहर के पहले का समय व्यतीत हो गया और जब खाने की घण्टी की आवाज सुन कर वापस गया तो मैंने देखा कि नाटक कम्पनी के व्यवस्थापक महोदय उस दिन खेले जाने वाले नाटक "फेयर पेनीटेन्ट" के लिए टिकट बेच रहे थे: हीरोशियों का अभिनय करने वाले सज्जन रंग मंच पर इसके पहले कभी नहीं आए थे। वह इस नए अभिनेता की बड़ी प्रशंसा कर रहे थे और उन्होंने विश्वास दिलाया कि उसने अब तक इतने सुन्दर व्यक्तित्व वाला अभिनेता कभी नहीं देखा था। "अभिनय," उन्होंने कहा, "एक दिन में नहीं सीखा जा सकता, किन्तु यह सज्जन," वह कहता गया, "मुझे लगता है रंग मंच पर ही चलने के लिए पैदा हुए हैं। इनकी आवाज, इनका आकार इनका दृष्टिकोण सभी प्रशंसनीय है। हम लोगों को यह यों ही अचानक राह चलते मिल गये थे।" उनके इस वर्णन से कुछ कौतूहल हुआ, और महिलाओं के आग्रह करने पर मैं नाटक देखने जाने के लिए, जो थोड़ी ही दूर पर था राजी हो गया। चूंकि जिन लोगों के साथ गया था वे उस स्थान के सबसे बड़े लोग थे अतएव हम लोगों को बड़े स्वागत के साथ लिया गया और रंग मंच के बिलकुल सामने वाली सीट पर पैठने को मिला जहाँ पर हम लोग हीरोशियों के रंग मंच पर आने की राह बड़े अधैर्य के साथ देखते रहे। अन्त में नया अभिनेता सामने आया; इस समय मुझे कैसी अनुभूति हुई, जब मैंने देखा कि यह मेरा अभागा लड़का था, इसे एक बाप का हृदय ही समझ सकता है। वह शुरू ही करने वाला था कि उसने दर्शकों की ओर एक निगाह फेंकी; मुझे तथा कुमारी विल्मट को देखा तो वह कुछ भी न बोल सका और मूर्तिवत खड़ा रह गया।

पर्दे के पीछे खड़े हुए अभिनेताओं ने उसके इस तरह रुक जाने को उसकी स्वाभाविक हिचक समझा और उसे धैर्य देने का प्रयत्न करने लगे; लेकिन वह कुछ कह सकने के स्थान पर फूट फूट कर रोने लगा

और रंग मंच से बाहर चला गया। मैं नहीं जानता कि मैं इस समय कैसा अनुभव कर रहा था, मेरे आश्चर्य और प्रसन्नता की सीमा नहीं थी। किन्तु कुमारी विल्मट ने मुझे इस सपने से शीघ्र ही जगा दिया, मैंने देखा उसका चेहरा पीला पड़ गया था, आवाज काँप रही थी, उसने अपने चाचा के पास पहुँचाए जाने की इच्छा प्रकट की। हम लोगों ने घर पहुँचने के बाद मि० अर्नाल्ड से, जो अब तक इस घटना से बिल्कुल अनभिज्ञ थे, बताया कि नया अभिनेता मेरा लड़का है तो उन्होंने तुरन्त उसे अपने घर आमंत्रित किया तथा उसे लिवाने के लिए अपनी बग्घी भेजी। और चूंकि उसने फिर से रंग मंच पर जाने से इंकार कर दिया इसलिए एक अभिनेता रंग मंच पर भेज दिया गया और वह शीघ्र ही हम लोगों के पास चला आया। मि० अर्नाल्ड ने बड़े प्यार से उसका स्वागत किया और मैंने अपनी स्वाभाविक खुशी के साथ उसे अपने गले लगा लिया। कुमारी विल्मट का स्वागत दिखाऊ उपेक्षा से मिश्रित था और फिर भी मैंने देखा कि वह बहुत संभल कर इस तरह कर रही थी। उसके मष्तिक की उथल पुथल अभी शान्त नहीं हुई थी: उसने बीसों इधर उधर की बातें कीं जिनमें उसकी प्रसन्नता प्रकट हो रही थी, इसके बाद वह अपनी बातों को बेकार की बातें कह कर हँस पड़ी। बीच बीच वह शीशे में अपना चेहरा भी देख लेती जैसे कि अपने असीमित सौंदर्य की अनुभूति से प्रसन्न हो रही थी; वह प्रायः तरह तरह के प्रश्न पूछती पर उत्तर की ओर जरा भी ध्यान नहीं देती थी।

२०

हम लोग जब भोजन कर चुके तो श्रीमती अर्नाल्ड अपना नौकर भेज कर मेरे लड़के का सामान मँगा लेने के लिए कहने लगी . जिस पर पहले तो उसने अपनी अस्वीकृति प्रकट कर दी पर उनके बहुत जोर देने के बाद उसने कहा कि उसके पास केवल एक छड़ी और एक थैला ही इस धरती पर गर्व करने के लिए बाकी रह गया है। "क्यों मेरे बेटे" मैंने कहा "जब तुम गए थे तो हम सब गरीब थे और अब भी गरीब हैं फिर भी मुझे विश्वास है कि तुमने कम से कम दुनिया तो देख ही ली।"—"हाँ पिता जी" मेरे लड़के ने कहा, "किन्तु सम्पत्ति के पीछे यात्रा करना उसे प्राप्त करना नहीं है; और वास्तव में मैंने अब उसका पीछा करना छोड़ दिया है"—"मैं कल्पना करती हूँ" श्रीमती अर्नाल्ड ने कहा, "तुम्हारी यात्राओं का वर्णन बड़ा मजेदार होगा; पहले की तुम्हारी बातें तो मैं अपनी भतीजी से सुन चुकी हूँ; पर बाद की बातों से मैं बिलकुल अपरिचित हूँ; मुझे उन्हें सुन कर बड़ा हर्ष होगा।"—"श्रीमती जी" मेरे पुत्र ने कहा, "मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप को उनके सुनने में उसका आधा भी मजा नहीं आएगा जितना उनके दुहराने में मुझे घमन्ड है।"

"मेरे जीवन का पहला दुर्भाग्य जैसा कि आप सब जानते हैं बहुत

बड़ा था; यद्यपि इससे मुझे दुख हुआ पर निराशा नहीं। आशा करने में मुझसे अधिक कुशल आदमी अब तक शायद कोई नहीं हुआ है। भाग्य जितना ही अधिक मुझसे रुठता उतना ही अधिक मैं आशावादी होता जाता और चूंकि मैं इस समय भाग्य चक्र में पड़ कर उसके निम्नतम बिन्दु पर पहुँच गया था अतएव मुझे पूर्ण आशा हो गयी थी कि अब यह चाहे जो करवट ले, हर दशा में मैं ठीक ही रहूँगा। अतएव दिन सबेरे मैं लन्दन की तरफ चल पड़ा, कल के लिए मुझे जरा भी चिन्ता नहीं थी पक्षियों के कलरव को सुन कर मुझे प्रसन्नता हो रही थी; मैं सोच रहा था लन्दन एक ऐसा बाजार है जहाँ पर हर तरह की योग्यता का मूल्य और पुरस्कार मिलेगा।

"शहर में पहुँचने के बाद मेरा सबसे पहला काम अपने चचेरे भाई को एक पत्र देना था जो स्वयं भी मुझ जैसी परिस्थितियों में था। आप जानते हैं, महाशय जी, शहर में मेरी सबसे पहली योजना किसी विद्यालय में उपशिक्षक होने की थी; और मैंने इस विषय में उससे परामर्श किया; मेरे भाई ने अजीब मुद्रा में इस प्रस्ताव को सुना। "हाँ उसने कहा "यह वास्तव में बहुत बुरा जीवन है जो तुम्हारे लिए निर्धारित किया गया है। मैं स्वयं ही एक स्थानीय विद्यालय में उपशिक्षक रह चुका हूँ; मेरा अनुभव है कि एक पीड़ाहर हार पहन कर मर जाना आसान है पर न्यूगेट में बन्दी गृह का सहायक ताली रखने वाला बनना नहीं। मैं कभी जल्दी और कभी देर से सोकर उठता था : मालिक मुझ पर अपनी त्योरी चढ़ाए रहता, मालिकिन मुझसे मेरे असुन्दर चेहरे के लिए घृणा करतीं; अन्दर मुझे लड़के परेशान करते, घर से बाहर निकल कर और लोगों से मिलने की मुझे आशा नहीं थी। किन्तु क्या तुम्हें विश्वास है कि तुम स्कूल के लिए योग्य हो? ठहरो मैं तुम्हारी थोड़ी परीक्षा लूँ। क्या तुम्हें इस विषय में कुछ विशेष शिक्षा मिली है?"—'नहीं'—'तो तुम स्कूल लायक नहीं! क्या तुम्हारे कभी चेचक निकली है?'—'नहीं'—"तो तुम स्कूल लायक नहीं। क्या तुम एक बिस्तर में

तीन आदमियों को लिटा सकते हो!" 'नहीं'—'तब तुम स्कूल का काम कभी नहीं कर सकते। क्या तुम्हारा पेट अच्छा है'—'हाँ'—तो तुम स्कूल का काम किसी तरह नहीं कर सकते। नहीं महाशय : यदि तुम कोई सम्मानित और आसान काम चाहते हो तो पहले सात साल तक कैंचियों में शान रखने वाले का पहिया खींचो; किन्तु स्कूल से बचने का प्रयत्न करो, चाहे जैसे भी सम्भव हो। फिर भी आओ वह कहता गया, "मैं देखता हूँ कि तुम एक उत्साही और पढ़े लिखे लड़के हो, तुम मुझ जैसे नवोदित लेखक के विषय में क्या सोचते हो? मुझे विश्वास है कि तुमने किताबों में पढ़ा होगा ऐसे अपूर्व बुद्धि मनुष्यों को भूखों मरते जिनका पेशा लेखक का पेशा है। पर मैं तुमको लगभग चालीस ऐसे लोगों के उदाहरण इसी शहर में दे सकता हूँ जो बिलकुल निकम्मे हैं पर आज इसी पेशे के बल पर मालामाल हो रहे हैं; सभी ईमानदार समगति से चलने वाले जो आसानी और सुख से अपनी जिंदगी बिता रहे हैं और इतिहास लिखते हैं, राजनीति लिखते हैं और उनकी प्रशंसा होती है—आदमी यदि वे चमार होते तो जिन्दगी भर जूतों की मरम्मत किया करते पर नया कभी बना न सकते।"

"यह जान कर कि उपशिक्षक के काम करने में कोई सम्मान नहीं है मैंने उसके प्रस्ताव को मानने का इरादा कर लिया; और साहित्य के लिए अपना हार्दिक सम्मान होने के कारण ग्रबस्ट्रीट की शरण ली। मैंने ड्राइडेन और ऑटवे द्वारा चले हुए इस रास्ते पर चलने में अपने में गर्व का अनुभव किया; मैंने इस कला की देवी को उत्तमता की जननी मान लिया; संसार के संसर्ग से हमारी बुद्धि का चाहे जितना परिष्कार होता पर उसके द्वारा दी हुई गरीबी को मैं अपूर्व बुद्धि की पोषिका और रक्षिका मानता। इन विचारों से मैं अपने में गौरव का अनुभव करते हुए लिखने बैठ गया, मुझे लगा कि जितनी अच्छी चीजें हैं वह सब गलत पक्ष में हैं; मैंने एक ऐसी पुस्तक लिखने का विचार किया जो बिल्कुल नयी हो। अतएव मैंने कुछ कौशल के साथ तीन विरोधाभास तैयार किए। वे

गलत तो अवश्य थे पर थे नए। सत्य के मोती तो प्रायः दूसरों द्वारा लिखे ही जा चुके थे, मेरे लिये केवल एक बात बाकी रह गयी थी और वह थी कि मैं कुछ ऐसी सुन्दर चीज लिखता जिसका हर स्थल दूर से देखने पर उतना ही भला लगता। मुझे विश्वास था कि सारा शिक्षित संसार मेरी लेखन प्रणाली का विरोध करेगा किन्तु तब मैं सारे संसार के विरोध का सामना करने के लिए तैयार था कांटेदार जीव, स्याही की तरह, मैं हर विरोध की तरफ अपना विरोध प्रकट करते हुए अपनी सारी शक्तियाँ समेट कर लिखने के लिए बैठ गया"।

"बहुत ठीक कहा मेरे बेटे" मैंने कहा, "और फिर तुमने किस विषय में लिखा ? मैं आशा करता हूँ कि तुमने 'एक विवाह' जैसे महान् विषय की उपेक्षा न की होगी। लेकिन मैं बाधा दे रहा हूँ; आगे बताओ; तुमने अपने विरोधाभासों को प्रकाशित किया; और शिक्षित संसार ने तुम्हारे विरोधाभासों के प्रति क्या सम्मति प्रकट की ?"

"पिता जी" मेरे लड़के ने उत्तर दिया, "शिक्षित संसार ने मेरे विरोधाभासों के प्रति कुछ नहीं कहा; बिलकुल कुछ नहीं: उनमें से हर आदमी अपनी तथा अपने मित्रों की रचनाओं की प्रशंसा करने तथा अपने शत्रुओं की निन्दा करने में लगा हुआ था; और चूंकि अभाग्यवश, मेरा मित्र अथवा शत्रु कोई भी न था अतएव मुझे सबसे भयानक आलोचना—उदासीनता का सामना करना पड़ा।

"एक दिन जब मैं काफी हाउस में बैठा हुआ अपनी रचनाओं के विषय में सोच रहा था, एक छोटा सा आदमी कमरे के अन्दर आया और मेरे सामने की कुर्सी पर बैठ गया। सामान्य बात चीत के बाद जब उसे मालूम हुआ कि मैं एक विद्वान और लेखक था तो उसने मेरे सामने बहुत से प्रस्ताव रखे; वह 'धनी संसार' का एक विश्लेषणात्मक प्रकाशन करने जा रहा था अतएव मुझसे उसमें भाग लेने की प्रार्थना की। इस माँग के बाद मुझको यह कहना आवश्यक पड़ गया कि मेरे पास रुपए नहीं हैं; इसके बाद उसने मुझसे पूछा कि मैं किस प्रकार की आशा करता

हूँ; यह जान कर कि मेरी आशाएं उतनी ही बड़ी हैं जितनी कि मेरी रुपयों की थैली—"मै देखता हूँ" उसने कहा, "तुम शहर से बिलकुल परिचित नहीं हो : मै तुम्हें इस विषय में कुछ बताऊंगा। इन प्रस्तावों को देखो—इन्हीं प्रस्तावों पर आराम से मैंने बारह साल बिता दिए हैं। जहाँ कोई बड़ा आदमी अपनी यात्रा से वापस लौटा, या कोई धनी जमैका से आया, कोई धनी विधवा अपने गाँव के मकान से—मैं उसके पास चन्दे के लिए पहुँच जाता हूँ। मैं पहले उनके हृदय को अपनी प्रशंसा अथवा चापलूसी से फुसला लेता हूँ और फिर उसी तथा अपने प्रस्तावों को उसके सामने रख देता हूँ। यदि वे आसानी से पहिली बार में ही चंदा दे देते हैं, मैं फिर से उनके पास समर्पण-शुल्क लेने के लिए जाता हूँ। और यदि वह भी मुझे मिल जाता है तो एक बार फिर मैं उनके पास किसी न किसी बहाने से रुपए की चपत दे आता हूँ।" इस तरह वह कहता गया, "मै घमण्ड के साथ रहता हूं और दूसरों के घमण्ड पर हँसता हूँ। लेकिन अपने आपसे मैं अब बहुत परिचित हो गया हूँ; अतएव तुम्हें एक बात बताता हूं। एक सज्जन अभी अभी इटली से लौटे हैं; उनका नौकर मेरा चेहरा पहचानता है; लेकिन मैं कसम से कहता हूं कि यदि कापी लेकर तुम उनके पास जाओगे तो सफल होगे और हम दोनों इस लूट को आपस में आधा बाँट लेंगे।"

"क्षमा करो मुझे जियार्ज, आज कल कवियों का काव्य यही है! क्या इतनी अपूर्व बुद्धि वाले मनुष्य इस तरह भीख माँगते फिरते हैं! क्या वे अपने को इतना नीचे गिरा सकते हैं कि दूसरों के सामने रोटी की भीख माँगे!"

"ऐसी बात नहीं पिता जी" उसने उत्तर दिया, "एक सच्चा कवि कभी इतना नीच नहीं हो सकता क्योंकि जहाँ भी प्रतिभा होती है वहाँ गर्व होता है। जिनकी बात मैं कर रहा हूं वे केवल तुकबन्दी करने वाले भिखारी हैं। सच्चा कवि यश के लिए अपनी कठिनाइयों का वीरता के साथ सामना करता है पर साथ ही अपने प्रति घृणा से डरता भी है।

"इस तरह बेशर्मी से स्थान स्थान पर भीख मांगना मेरे गर्व ने गवारा नहीं किया, मेरे पास इतना धन भी नहीं था कि मैं यश-लालसा से इस दशा में दूसरा प्रयत्न करता अतएव मुझे मध्य मार्ग की शरण लेनी पड़ी और मैंने रोटी के लिए लिखना आरम्भ कर दिया। लेकिन मैं ऐसे काम के लिए जिसमें निरे उद्योग से ही सफलता मिलती, अयोग्य था। मैं अपनी प्रशंसा के लिए लालायित इच्छा को न दबा सका; किन्तु यह समय मैंने अपनी कला के स्तर को ऊँचा करने में बिताया मेरी छोटी छोटी रचनाएँ सामयिक प्रकाशनों में कब जाने आ जातीं। जनता मेरी सरल एवं प्रभाव पूर्ण शैली को देख कर प्रसन्न होती किन्तु लेखक अर्थात् मुझ से परिचित न हो सकी। जाने मेरी ऐसी ही कितनी रचनाएँ विस्मृति के गर्भ में चली गयीं। मेरे लेख, स्वतन्त्रता सम्बन्धी लेखों पूर्वीय कहानियों, पागल कुत्ते के काटने के उपचारों के साथ समाधि में चले गये जब कि और अनेक रद्दी सद्दी लेखक बहुत अधिक प्रचलित रहे। क्योंकि वह मुझ से जल्दी लिखते थे।

"अतएव अब मैंने अपनी ही तरह निराश लेखकों से, जो एक दूसरे की प्रशंसा, निंदा और कभी कभी घृणा किया करते थे, सम्बन्ध जोड़ना शुरू कर दिया। हर एक प्रसिद्ध लेखक की रचना से हम लोगों को जो संतोष होता वह उस लेखक के गुणों के उलटे अनुपात में होता था। मुझे लगा कि दूसरों के अन्दर की किसी प्रतिभा से मुझे आनन्द नहीं आ सकता। मेरे भाग्यवान विरोधाभासों ने मेरे आनन्द के इस स्रोत को सुखा दिया था। मैं न तो संतोष के साथ लिख ही पाता और न पढ़ ही; क्योंकि लिखना मेरा काम था और पढ़ना मेरा मन बहलाव।

"सेंट जेम्स पार्क में बैठा हुआ जब मैं इस तरह निराशा पूर्ण ढंग से सोच रहा था तो एक नवयुवक प्रसिद्ध सज्जन जो यूनिवर्सिटी के हमारे एक अति परिचित मित्र थे मेरे पास आए। हम दोनों ने एक दूसरे से कुछ संकोच के साथ अभिवादन किया; मुझे लगा कि वह मुझ जैसे गंदे कपड़े पहने हुए आदमी से मिलने में कुछ लज्जा का अनुभव कर रहे हैं; मैं

डरा, कहीं वे मुझसे घृणा न करने लगे। पर मेरा संदेह शीघ्र दूर हो गया; क्योंकि श्री नेड थार्नहिल स्वभाव से बहुत भले आदमी थे।'

"क्या कहा तुमने जियार्ज ?" मैंने रोक कर कहा "थार्नहिल—क्या उसका यह नाम नहीं था ? यह मेरे नम्बरदार के अलावा और कोई दूसरा नहीं हो सकता"—"क्षमा कीजिएगा" श्रीमती अर्नोल्ड ने कहा, "क्या मि० थार्नहिल तुम्हारे इतने नजदीक के पड़ोसी हैं ? वे बहुत दिनों से हमारे परिवार के मित्र हैं और हम शीघ्र ही उनके यहाँ आने की आशा करते हैं।"

"मेरे मित्र ने" "मेरा लड़का कहता गया, "सबसे पहला काम जो किया वह था मेरी सूरत का बदलना; उसने मुझे अपने कपड़े पहिनने को दिए और तब मैं उसके कमरे में जा सका मित्र तथा आश्रित व्यक्ति के रूप में। मेरा काम था उसके साथ नीलामों पर जाना, जब वह चित्र बनवाने के लिये बैठे तो उन्हें प्रसन्न रखना रथ खाली होने पर बाईं तरफ उनके साथ बैठना और हंसी मजाक की बात में उनका पक्ष लेना। अलावा इसके परिवार के अन्दर छोटे मोटे बीस काम मुझे और करने पड़ते थे। मुझे बहुत से छोटे छोटे काम बिना किसी के कहे भी करने पड़ते थे कहने पर मैं गाना सुना देता था। मुझे हमेशा खुश रहने की आशा मिली थी; मुझे सदा बहुत विनीत रहना पड़ता और यदि सम्भव हो पाता तो बहुत खुश भी।

"इस सम्मानित नौकरी पर मेरे लिये प्रतिद्वन्दी का अभाव न था। समुद्र का एक कप्तान जो स्वभाव से ही ऐसे काम के लिये उपयुक्त था उसकी माँ एक धनी आदमी के कपड़े धोने का काम करती थी अतएव वह इस तरह के कामों में बचपन से ही कुशल था। इस आदमी ने अपने जीवन का उद्देश्य बड़े आदमियों से परिचय प्राप्त कर उनके घर उठना बैठना यद्यपि बहुत जगहों से वह अपनी बेवकूफी के कारण हटा भी दिया गया था, लेकिन बहुतों ने जो उसी की तरह मूर्ख थे उसकी इन बेवकूफियों को बरदाश्त भी कर लिया था। चापलूसी करना उसका काम

था और वह हर एक के साथ इसी का प्रदर्शन करता। मैं प्रयत्न करने पर भी यह न कर पाता। मेरे आश्रय दाता साथी अपनी प्रशंसा के शौकीन थे और मुझ से प्रशंसा प्राप्त करने की इच्छा किया करते। हर घण्टे उनकी कमियों तथा दोषों से परिचित होते जाने के कारण मेरे लिये उनकी प्रशंसा करना बिलकुल असम्भव सा हो गया। अतएव एक बार जब मैं कप्तान साहब से इस दिशा में हार मान कर उनके लिये स्थान छोड़ने ही वाला था कि मेरे मित्र महोदय को मेरी सहायता की आवश्यकता पड़ी। यह काम और कुछ नहीं था बस एक सज्जन से द्वन्द युद्ध करने का था मेरे साथी पर यह आरोप लगाया था कि इन्होंने उसकी बहिन के साथ बुरा बर्ताव किया है। मैं इस प्रार्थना पर शीघ्र ही राजी हो गया मैं देखता हूँ कि तुम मेरे इस व्यवहार पर असतुष्ट हो रहे हो पर मेरे ऊपर उस की मैत्री का ऋण था अतएव मैं ऐसा करने से इंकार न कर सका। मैंने द्वन्द में उसे हरा दिया और शीघ्र ही मालूम हुआ कि महिला शहर की एक स्त्री थी, यह आदमी उसको ठगने वाला एक धूर्त था। मेरे साथी ने बहुत खुले दिल से मेरे प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की: पर चूंकि मेरे मित्र शीघ्र ही शहर छोड़ कर जाने वाले थे अतएव उन्होंने मेरा परिचय अपने चाचा सर विलियम थार्नहिल तथा एक और सज्जन से करा दिया जो सरकार से पेंशन पाते थे और अपने जमाने में देश हित में बड़ा त्याग दिखा चुके थे। उनके चले जाने पर मैं उनकी सिफारिशी चिट्ठी लेकर उनके चाचा के पास पहुँचा; यह सज्जन चरित्रवान, सदाचारी और न्याय प्रिय थे। उनके नौकरों ने मुस्करा कर मेरा स्वागत किया; नौकरों का व्यवहार सदा उनके स्वामी के चरित्र का सूचक होता है। मैं एक बड़े कमरे में जाकर बैठ गया जहां पर सर विलियम मेरे पास जल्दी ही आये, मैंने उन्हें अपना पत्र देते हुये अपने आने का कारण बताया; पत्र पढ़ने के बाद वह कुछ देर चुप रहे और फिर कहा कृपया मुझे आप यह बताइये कि आपने मेरे भतीजे के लिये ऐसा कौन सा काम किया है जिससे तुम्हारे विषय में उसने इतनी प्रशंसा के साथ लिखा है! लेकिन मैं सोचता हूँ मैं तुम्हारे गुणों का अन्दाज

लगाता हूँ : तुम उसके लिये लड़े हो : इसलिये तुम उसके दोषों का साधन बनने के बदले में मुझ से पुरस्कार चाहते हो मैं चाहता हूँ—और हृदय से चाहता हूँ कि मेरी यह वर्तमान अस्वीकृति तुम्हारे पाप के लिये कुछ दंड हो सके; मैं यह भी चाहता हूँ कि इससे तुम्हारी आत्मा को भी कुछ कष्ट पहुँचे जिससे तुम पश्चाताप करो।" इस डाट की कठोरता को मैंने धैर्य से सहन कर लिया क्योंकि मैं जानता था कि बात सही है। अब मेरी सारी उम्मीदें दूसरे बड़े आदमी के लिये दिये गये पत्र में थी। क्योंकि बड़े आदमी के यह दरवाजे हमेशा भिखारियों से घिरे रहते हैं अतएव मैंने अन्दर प्रवेश पाना बहुत आसान नहीं समझा। फिर भी किसी तरह अपनी सांसारिक सम्पत्ति का अर्ध भाग नौकरों को देने का वायदा करने के बाद मैं एक बड़े कमरे के अन्दर बैठाया गया और मेरा पत्र पहले ही सज्जन महोदय की जांच के लिये अन्दर भेज दिया गया। इस खाली समय में मुझे अपने चारों तरफ देखने के लिये काफी मौका था, सभी चीजें सुन्दर तथा आकर्षक थीं चित्रकारी, फर्नीचर, परदे देख कर मैं भय से मूर्तिवत बैठा रहा और मन में स्वामी के बड़प्पन की बात सोचता रहा। मैंने सोचा कितने बड़े मष्तिष्क का यह आदमी होगा जिसे सारे राज्य की बातें अपने दिमाग में रखनी पड़ती हैं और जितनी सम्पत्ति सारे राज्य में है उसकी आधी केवल इन्हीं कमरों में बिखरी पड़ी है। सचमुच उसकी प्रतिभा अथाह होगी। इन विचारों के बाद दूर पर आते हुये किसी के पैरों की आवाज सुनायी पड़ी। हां यही वे बड़े आदमी हैं। नहीं केवल यह कमरे की नौकरानी थी। थोड़ी देर बाद दूसरे पैरों की आवाज सुनायी पड़ी। यह वही होंगे! नहीं; यह बड़े आदमी के कमरे का नौकर था। और अन्त में बड़े आदमी स्वयं दिखायी पड़े। 'क्या तुम्हीं' उन्होंने कहा, "इस पत्र को लाये हो?" मैंने सर झुका कर उत्तर दिया। "मुझे इससे जान पड़ता है" उसने कहा, 'कि तुम—किन्तु इसी समय नौकर ने उन्हें एक कार्ड दिया, और वे बिना अधिक ध्यान दिये हुये कमरे से बाहर निकल गए, मुझे अपनी खुशी हजम करने के लिए अकेले छोड़कर। मैंने

उनको दुबारा कमरे में आता हुआ नहीं देखा; उनके नौकर ने आकर बताया कि वे सज्जन महोदय दरवाजे पर अपनी बग्घी पर बैठने जा रहे हैं। मैं तुरन्त उनकी तरफ दौड़ पड़ा तथा तीन चार आदमियों के साथ, जो मेरी ही तरह महोदय से आश्रय पाने की आशा से आए थे—जब मैं बग्घी के निकट पहुँचा तो वे उस पर चढ़ रहे थे मैंने अपनी आवाज को ऊँची करते हुए यह जानने की इच्छा प्रकट की कि उनके पास मेरे लिए क्या उत्तर था। इस समय तक वह उसके अन्दर बैठ चुके थे और जो कुछ उन्होंने कहा मैं उसका आधा ही सुन सका; आधा उनकी बग्घी की पहियों की आवाज में मिल कर बेकार हो गया। कुछ देर तक मैं गर्दन झुकाए खड़ा रहा, इस तरह से जैसे मैं कोई बड़ी प्रिय आवाज सुनने की प्रतीक्षा कर रहा था और जब बाद को मैंने देखा तो मैंने अपने आपको उनके दरवाजे पर अकेले खड़ा हुआ पाया।

"मेरा धैर्य" मेरा लड़का कहता गया, "अब बिल्कुल समाप्त हो चुका था। मैं बहुत बार इस तरह दुतकारे जाने के कारण बहुत दुखी था और आत्म हत्या कर लेना चाहता था, अपने लिये डूब मरने की किसी जगह की तलाश में था। मैंने सोचा कि ईश्वर ने मेरी सृष्टि व्यर्थ ही कर दी है और मुझे इस संसार में न रहना चाहिए। मेरे पास अब भी किसी तरह आधी गिन्नी बाकी बच रही थी और मैंने सोचा कि ईश्वर मुझे अब इससे न वंचित करेगा; किन्तु इसका निश्चय करने के लिए मैंने तय किया कि इसे खर्च कर डाला जाय और जब तक मेरे पास है इसका उपयोग किया जाय बाद को देखा जायगा। जब मैं इस विचार से जा रहा था तो मुझे लगा कि मि० क्रिस्प का दफ्तर मुझे खुले रूप से आमन्त्रित सा कर रहा है, मेरा स्वागत करने के लिये। अपने इस दफ्तर में मि० क्रिस्प कृपा पूर्वक सम्राट की तरफ से तीस पाउण्ड प्रति वर्ष देने का वचन देते हैं, बदले में केवल जीवन भर की स्वतन्त्रता देना पड़ता है और फिर ऐसे आदमी अमेरिका भेज दिये जाते हैं दास रूप में। मैं ऐसे स्थान को, जहाँ जाकर मुझे अपने सम्पूर्ण भय से मुक्ति हो सकती थी, देख कर खुश हुआ और मैंने उस पिंजरे में—

क्योंकि इसका आकार बन्दी ग्रह की तरह था—एक महान संत की तरह निडर होकर प्रवेश किया। यहाँ पर मेरी ही तरह बहुत से गरीब आदमी बैठे हुए मिस्टर क्रिप्स का रास्ता देख रहे थे—इनकी तरफ देखने पर मुझे लगा मानों यह अंग्रेजों के अधैर्य का संक्षेप शनि-ग्रह हो। हर एक आत्मा, सम्पत्ति के अभाव से दुखी दिखाई देती थी, अपने दुखों को अपने हृदय में ही दबाये हुये बैठी थी; अन्त में मि० क्रिप्स आये हम लोगों की बातचीत बिल्कुल बन्द हो गई। वे मुझको एक अजीब स्वीकृति मूलक ढङ्ग से देखते हुए दिखाई दिये पर वास्तव में वही एक ऐसे पहले आदमी थे जो पिछले एक महीने के बाद मुझसे मुस्कराकर बोले थे।

थोड़े ही प्रश्नों के बाद वे इस निर्णय पर पहुँच गये कि मैं संसार में हर एक काम करने के योग्य था। वह मुझे बहुत उचित काम देने के लिए एक क्षण रुके; और अपना मत्था ठोक कर जैसे कि उन्होंने कुछ पा लिया हो, मुझे विश्वास दिलाया कि पेन्सिलवेनिया में राज दूतावास में एक सचिव की जगह खाली है और वे मुझे उसमें भेजने के लिए प्रयत्न करेंगे। मैं अपने दिल में जानता था कि महाशय जी सरासर झूँठ बोल रहे हैं फिर भी मुझे आनन्द मिला; उनकी बात चीत भी ऐसी थी। अतएव अपनी आधी गिन्नी को मैंने विभक्त कर दिया; जिसमें आधी उनके तीस हजार पाउण्ड में जुड़ गई और आधी लेकर मैं अगली सराय में उनसे ज्यादा प्रसन्न होने के इरादे से चल पड़ा।

"जब मैं निकल ही रहा था तो मुझे समुद्री जहाज के एक कप्तान से भेंट हुई; इन महाशय से मेरी कुछ पहले की जान पहचान भी थी और उन्होंने मेरे साथ बैठकर एक प्याला शराब पीना स्वीकार कर लिया। चूँकि मैं अपनी परिस्थिति को कभी किसी से छिपाता नहीं, अतएव उन्होंने, मेरी दफ्तर के बाबू की बात सुन कर मुझे विश्वास दिलाया कि मैं बर्बाद होने जा रहा था, क्योंकि वह मुझे खेती के लिए बेचना चाहता था। 'लेकिन' वह कहता गया, हो सकता है तुम बहुत थोड़ी यात्रा के बाद भले आदमी की तरह रोटी कमाने लगो। मेरी सलाह मानो। कल मेरा जहाज

अमस्टर डम जायगा। यदि उसमें तुम एक यात्री की तरह जाओ तो क्या बुरा है? जब तुम उतरोगे तो तुम्हें केवल डचों को अंग्रेजी पढ़ानी पड़ेगी, और मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि तुम्हें बहुत से शिष्य भी मिल जाएँगे और साथ ही रुपया भी। मैं सोचता हूँ कि तुम अंग्रेजी समझते होगे।"

"मैंने उसे इस बात का पूर्ण विश्वास दिलाया, किन्तु मैंने एक संदेह प्रकट किया कि क्या डच लोग अंग्रेजी पढ़ना पसन्द करते हैं। उसने कसम खाते हुए अपनी बात पक्की की कि वे अंग्रेजी सीखने के बहुत शौकीन हैं; उसके इस तरह विश्वास दिलाने पर मैं राजी हो गया और दूसरे दिन डचों को अंग्रेजी पढ़ाने के विचार से जहाज में बैठ कर हालैण्ड के लिए चल पड़ा। हवा हम लोगों के अनुकूल थी और यात्रा थोड़ी; अपनी आधी सम्पत्ति देकर मैंने जहाज का भाड़ा चुका दिया और अब मैं अमस्टर डम की एक प्रधान सड़क पर अजनबी था, मुझे लगा जैसे मैं आसमान से गिर पड़ा हूं। ऐसी परिस्थिति में एक क्षण बेकारी की हालत में न बिताना चाहता था। दो तीन आदमियों से जिनको देख कर मुझे कुछ आशा हुई मैंने अपनी कथा कही; पर एक दूसरे की बात समझ पाना असम्भव था। इस समय मेरी समझ में यह बात आई कि पहले डचों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिये मुझे यह जरूरी है कि मैं डचों से अंग्रेजी पढ़ूँ। मैंने इतनी बड़ी कमी पर पहले ही ध्यान क्यों नहीं दिया, मुझे बहुत आश्चर्य है कि मैंने इस विषय में ध्यान नहीं दिया था।

"यह योजना जब फिर इस तरह बेकार हो गयी तो मैंने इङ्गलैण्ड लौटने का विचार किया; किन्तु इसी समय मेरी आयरलैण्ड के एक विद्यार्थी से, जो लुवाय से वापस आ रहा था, भेंट हो गई, मेरी बात चीत साहित्य के विविध विषयों को लेकर हुई। क्योंकि मेरी आदत है कि मैं जब साहित्य जैसे उच्च विषय को लेकर बात चीत करने लगता हूँ तो मैं अपनी परिस्थिति का ध्यान बिलकुल भूल जाता हूँ। उससे मुझे मालूम हुआ कि उस विश्वविद्यालय में ग्रीक भाषा जानने वाले केवल दो ही विद्वान हैं। इससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने शीघ्र ही लुवाय जाने का विचार किया

श्रौर वहाँ जाकर मैंने अपनी रोटी कमाने की सोची; इस विषय में मेरे विद्यार्थी भाई ने मुझे उत्साह दिलाया कि मैं वहाँ जाकर अच्छी सम्पत्ति भी इकट्ठी कर सकता हूँ।

"मैं दूसरे दिन सबेरे चल पड़ा। प्रत्येक दिन मेरी चीजों, रोटियों के डिब्बे इत्यादि, का बोझ कम पड़ता जा रहा था; क्योंकि मुझे रहने और खाने का किराया भी देना पड़ता था जो यही चीजें देकर चुकाता था। जब मैं लुवाय पहुँचा तो मैंने तय किया कि मैं छोटे प्रोफेसरों के पास नहीं दौड़ता फिरूँगा, किन्तु मैंने खुले रूप में प्रधान प्रोफेसर के सामने अपनी सारी प्रतिभा खोलनी चाही। मैं वहाँ गया और प्रवेश पाने के बाद ग्रीक-भाषा के विद्वान के रूप में अपनी सेवाएँ प्रस्तुत करने के लिए कहा। मुझे बताया गया था कि इस विश्वविद्यालय में ग्रीक विद्वानों का अभाव है। प्रधान महोदय को पहले मेरी योग्यता में संदेह हुआ, किन्तु मैंने इसका प्रमाण दिया। मुझे पूर्ण रूप से योग्य पाने के बाद उन्होंने मुझसे इस तरह से कहा, "तुम जानते हो मुझे, नवयुवक। मैंने ग्रीक भाषा कभी नहीं पढ़ी, लेकिन मुझे कभी नहीं लगा कि यह मुझसे छूट गयी है। मुझे डाक्टरेट की पदवी और यह चोगा बिना ग्रीक पढ़े मिल गया है; मुझे दस हजार फ्लोरिन वार्षिक बिना ग्रीक पढ़े मिल जाते हैं; मैं बिना ग्रीक के पेट भर खाना खा लेता हूं : और संक्षेप में वह कहता गया, 'चूंकि मैं ग्रीक भाषा नहीं जानता हूं मैं नहीं मानता कि ग्रीक भाषा में कोई अच्छाई है'।

"मैं अब घर से बहुत दूर पहुँच गया था और लौटना मुश्किल था अतएव मैंने आगे बढ़ने का विचार किया। मुझे संगीत का कुछ ज्ञान था और आवाज भी सुरीली थी अतएव जो मेरे मनोविनोद का साधन था उससे मैंने पेट की रोटी कमाने का काम लिया। मैं फ्लैण्डर्स के निर्दोष किसानों के बीच से होता हुआ फ्रांस पहुँचा यहाँ के किसान निर्धन थे अतएव अधिक प्रसन्नता अथवा चहल पहल उनमें न थी; मैं उन्हें हमेशा गरीब और जरूरत मंद पाता था। संध्या समय जब मैं

किसी किसान के घर शरण लेने को होता तो मैं अपनी बांसुरी बहुत सुरीले ढंग से बजा देता जिससे मुझे केवल आराम के लिए जगह भर ही न मिलती वरन् खाने के लिए भी इतना अधिक मिल जाता कि मैं दूसरे दिन भी इसी पर गुजर कर सकता था। एक दो बार मैंने धनी आदमियों के सामने बांसुरी बजायी पर उन लोगों ने इसे व्यर्थ और भद्दी कह दिया, मुझे इन लोगों से कभी एक छदाम भी नहीं मिली। यह मेरे लिए एक बहुत असाधारण बात थी; क्योंकि जब कभी मैंने अपने अच्छे दिनों में बांसुरी बजायी थी, उन दिनों जब कि यह काम मेरा मनोविनोद भर था तो मेरा संगीत उन लोगों को विशेष कर स्त्रियों को अत्यधिक प्रसन्न करने में कभी असफल नहीं हुआ; पर इस समय चूंकि यह मेरी रोटी का एक मात्र साधन था लोग इससे घृणा करने लगे थे—यह इस बात का सबूत है कि लोग मनुष्य के उन गुणों को जिसे वह अपनी जीविका का साधन बना लेता कितना अनादर करते हैं।

"इसी तरह मैं पेरिस की तरफ बढ़ा, मेरा उद्देश्य अब केवल देखना रह गया था, इसके बाद और आगे बढ़ने की योजना थी। पेरिस के लोग धनी आगन्तुकों को गुणी आगन्तुकों से अधिक पसन्द करते हैं। और चूंकि मुझे दो में से किसी का घमण्ड नहीं था अतएव मुझे यहाँ सहानुभूति भी न मिल सकी। शहर में चार या पाँच दिन घूमने के बाद सुन्दर प्रासादों की बाहरी दीवारें देखते हुए मैं इस धन-भेद्य आतिथ्य वाले नगर को छोड़ने के विचार से मुख्य सड़क पर आया तो आपके द्वारा पहले बताए हुए चचेरे भाई जान से भेंट की, मिलकर मुझे बड़ी खुशी हुई, और मुझे विश्वास है कि उन्हें भी इससे कष्ट नहीं हुआ होगा। उन्होंने मेरी इस यात्रा का कारण पूछा और अपने विषय में बताया कि वह लंदन के एक सज्जन की तरफ से जिनको उत्तराधिकार में एक बहुत बड़ी सम्पत्ति मिली है, यहाँ तसवीरें, पदक और ऐसी ही चीजें इकट्ठी करने के लिए आए हैं। मुझे अपने भाई जान को वह नौकरी मिल जाने पर बड़ा

आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने मुझे पहले कई बार विश्वास दिलाया था कि वे इस विषय में कुछ भी नहीं जानते। मेरे यह पूछने पर कि उन्होंने यह कला इतनी जल्दी कैसे सीख ली उन्होंने मुझे बताया कि इससे आसान काम और कोई नहीं है। सारा रहस्य केवल दो नियमों के पूर्ण रूप से पालन में है : एक यह है कि चित्र और अधिक अच्छा हुआ होता यदि चित्रकार ने थोड़ा अधिक ध्यान दिया होता : और दूसरी बात है पीट्रो पेरूगिनो—लेकिन उसने कहा "जैसे कि मैंने लंदन में तुम्हें एक लेखक बनना सिखाया था अब मैं तुम्हें पेरिस में चित्र-खरीदना सिखाऊँगा।"

"इस प्रस्ताव को मैंने बड़ी खुशी से स्वीकार कर लिया; प्रश्न जीवन से सम्बन्ध रखता था और मेरी इच्छा जीवित रहने की थी। इसलिये मैं उसकी ठहरने की जगह गया, उसकी सहायता से मैंने अपनी पोशाक ठीक की और कुछ देर के बाद उसके साथ चित्रों का नीलाम देखने के लिये गया; केवल यही जगह ऐसी थी जहाँ अंग्रेज लोग नीलाम में भाग ले सकते थे। मुझे वहाँ के धनी आदमियों से उसका अच्छा परिचय पाकर जरा भी आश्चर्य नहीं हुआ; वे लोग हर एक चित्र अथवा पदक खरीदते समय उससे परामर्श करते जैसे कि वह कोई बड़ा अचूक पारखी हो। उसने इस मौके पर मेरी सहायता का बड़ा सदुपयोग किया; क्योंकि जब उससे कोई सलाह मांगी जाती तो वह गम्भीरतापूर्वक मुझको अलग ले जाता और मुझसे पूंछता मैं अपना सिर भाव पूर्ण मुद्रा में हिला देता वह समझदारी का बहाना करता हुआ लौटकर कहता कि वह वर्तमान गम्भीर विषय में कोई सलाह नहीं दे सकता है। फिर भी किसी समय और अधिक समर्पित विश्वास की आवश्यकता होती। मुझे याद है मैंने उसे कई बार देखा है जब वह अपनी राय प्रकट कर देता कि चित्र में भरे हुये रंग एक दूसरे से ठीक से नहीं मिले हैं और बहुत समझदारी एवं निपुणता दिखाते हुये समीप ही रखी हुई बादामी वार्निश उठा लेता, ब्रुश में लेकर बड़ी गम्भीर मुद्रा में चित्र पर रगड़ता सब लोगों के सामने. और फिर सबसे

पूछता कि क्या उसने अब चित्र का सौन्दर्य और अधिक नहीं बढ़ा दिया है; सब लोग स्वीकार मुद्रा में मुस्कराकर सर हिला देते।

"पेरिस में अपना काम समाप्त करके वह जब चलने लगा तो उसने बहुत से लब्ध प्रतिष्ठित आदमियों से मुझे परिचित करा दिया और एक यात्रा-अध्यापक रूप में मेरी बड़ी प्रशंसा की और कुछ समय बाद मुझे इसी बिना पर एक सज्जन ने जो अपने लड़के को पेरिस लाये थे, योरोप की यात्रा करने के लिये मुझे अपने लड़के का यात्रा शिक्षक बना दिया; केवल एक शर्त उन्होंने रखी थी वह थी कि वे लड़के पर हर समय स्वयं ही शासन करेंगे। मेरा विद्यार्थी वास्तव में रुपये पैसों के मामले में मुझसे अधिक अच्छी देखभाल कर सकता था। वह लगभग दो लाख पाउण्ड प्रतिवर्ष की सम्पत्ति का उत्तराधिकारी था जो उसके चाचा पश्चिमी द्वीप समूह में उसके लिये छोड़ गये थे, उसके संरक्षकों ने उसे इस की व्यवस्था की योग्यता देने के लिये एक महालेखा परीक्षक के नीचे काम सीखने के लिये छोड़ दिया था। अतएव लोभ और लालच उसके प्रधान गुण थे; सड़क पर चलते समय उसने जितने भी प्रश्न किये वे सब रुपया किस तरह बचाया जाय, इसी से सम्बन्ध रखते थे। वह अक्सर पूछता यात्रा के लिये सबसे कम खर्च साधन कौन सा हो सकता है कौन सी ऐसी चीज खरीदी जाय जिसे दुबारा इंग्लैण्ड में लौट कर बेचने से लाभ हो! रास्ते भर वह ऐसे ही प्रश्न पूछता रहा जब कोई चीज बिलकुल ध्यान देने योग्य न होती तो वह उसमें अपनी जिज्ञासा और कौतूहल प्रकट करता; और यदि कोई चीज देखने लायक होती तो वह विश्वास दिलाता कि उसे इन चीजों को न देखने के लिये कहा गया है। उसने ऐसा कोई भी बिल नहीं चुकाया जसे देख कर उसने यह न कह दिया हो कि यात्रा में कितना अधिक खर्च होता है, और यह सब तब था जब उसकी उम्र केवल २१ वर्ष की थी। जब हम लोग लेगहार्न पहुँच गये तो बन्दरगाह एवं जहाजों को देखने के लिये घूमते हुये निकले; उन्होंने समुद्री रास्ते से इंग्लैण्ड का किराया पूछा उसे बताया गया कि यह जमीन के रास्ते से जाने की अपेक्षा कुछ भी नहीं

है अतएव वे इस लोभ का संवरण न कर सके। उन्होने मेरा शेष बेतन देने के बाद मझसे छुट्टी ली और जहाज में एक नौकर के साथ बैठकर इंग्लैण्ड के लिये चल पड़े।

"और मैं इसलिये संसार में भूख का सामाना करने के लिये स्वतन्त्र छोड़ दिया गया; लेकिन फिर यह एक ऐसी चीज थी जिसकी मुझे आदत पड़ गयी थी। यहाँ पर मेरी संगीत कला ने मुझे जरा भी सहायता नहीं पहुँचायी क्योंकि यहां का हर एक किसान मुझसे अच्छा संगीतज्ञ था: लेकिन अब तक मैंने अपने आपको एक और कला में निपुण कर लिया था और वह थी—वादविवाद की कला। विदेश के हर विश्वविद्यालयों में एक निश्चित दिन अनेक दार्शनिक तथ्यों पर विवाद हुआ करते हैं; जिनमें यदि विवाद करने वाला अपनी कुशलता का प्रदर्शन कर ले जाता तो वह कुछ रुपये, भोजन तथा रात्रि के आश्रय का अधिकारी हो जाता है। इस तरह से संघर्ष करता हुआ मैं इंग्लैण्ड की तरफ चल पड़ा, एक शहर से दूसरे शहर घूमता हुआ; मनुष्य जाति की अधिक नजदीक से परीक्षा करते हुये, और यदि मैं इसे प्रकट कर सकूँ तो मानवता के दोनों पक्ष मुझे देखने को मिले। मेरा अनुभव इस विषय में बहुत है मुझे लगा कि गरीबों के रहने के लिये एक तन्त्र शासन सबसे अच्छा है, और अमीरों के लिये राष्ट्रमण्डल। मैंने पाया कि हर देश में साधारणतया सम्पत्ति स्वतन्त्रता का दूसरा नाम है; और स्वतन्त्रता को इतना अधिक चाहने वाला कोई आदमी नहीं है जो समाज में और व्यक्तियों की इच्छा को स्वयं न दबाना चाहता हो।

"इंग्लैण्ड में पहुँचने के बाद मेरी इच्छा हुई कि मैं पहले आप के दर्शन करूँ और फिर सेना में भर्ती हो जाऊँ: लेकिन जब मैं इस काम के लिये जा रहा था तो मुझे एक पुराने परिचित मिले जिन्होंने मेरा इरादा बदल दिया और मैं इस नाटक कम्पनी में जो देहात के लिये प्रस्थान कर रही थी मुझे रख दिया। कम्पनी मुझे अपने साथ रखने में आपत्ति प्रकट करती हुई नहीं मालूम पड़ी, यद्यपि उन्होंने जिस काम के लिये मैं रखा गया

था मुझे बड़ा उत्साह दिलाया; उन्होंने मुझे बताया कि दर्शक एक बहुत सिर वाले राक्षस होते हैं; हर एक की रुचि भिन्न होती है और उन्हें प्रसन्न करना बड़े अच्छे दिमाग का काम है, उन्होंने बताया कि अभिनय एक दिन में नहीं सीखा जा सकता; और बिना कुछ परम्परागत गुण हुये बिना मैं इसे सौ वर्षों में भी नहीं सीख पाऊंगा। दूसरी कठिनाई जो सामने आई वह मुझे पार्ट देने की थी क्योंकि सभी पार्ट ठीक से बंटे हुये थे। कुछ दिनों तक मुझे एक पात्र से दूसरे पात्र के लिये घसीटा गया और अन्त में होरेशियो का पार्ट मेरे लिये निश्चित किया गया जिसे आप लोगों की उपस्थिति के कारण मैं न कर सका।"

२१

मेरे लड़के की यात्रा का वर्णन बहुत लम्बा होने के कारण एक बार में नहीं किया जा सकता था; इस कहानी का पहला भाग उसने रात को प्रारम्भ किया था उसका अन्त दूसरे दिन भोजन के समय हो रहा था; इसी समय मि० थार्नहिल की बग्घी दरवाजे के पास रुकती दिखायी पड़ी जिससे सबको बड़ा संतोष हुआ। रसोइयें ने जो अब मेरा मित्र हो गया था कान में बताया कि मि० थार्नहिल कुमारी विल्मट पर दांत लगाये हुये हैं और उसके चाचा इस बिवाह सम्बन्ध में अपनी अनुमति देने की सोच रहे हैं। मिस्टर थार्नहिल ज्योंही मेरे कमरे में घुसे उनकी नजर मुझ पर तथा मेरे लड़के पर पड़ी तो लगा कि वे वापस जाना चाहते हैं; लेकिन मैंने सोचा कि शायद नम्बरदार महोदय को आश्चर्य हुआ है नाराजगी नहीं। फिर भी हम लोगों ने आगे बढ़कर उनका अभिवादन किया उन्होंने भी बहुत खुले दिल से मुस्कराते हुये मेरे अभिवादन का उत्तर दिया और कुछ देर के बाद उनकी उपस्थिति से सब को सामान्यतः आनन्द आने लगा।

चाय पीने के बाद उन्होंने मुझको अलग मेरी बेटी के विषय में पूँछने के लिये बुलाया; किन्तु मेरे बताने पर कि मेरी खोज असफल रही उन्हें ताज्जुब हुआ, उन्होंने बताया कि मेरे चले आने के बाद मेरे दुखी परिवार को संतोष देने के लिये वे कई बार मेरे घर गये थे और जिसे वे बिलकुल

अच्छी हालत में छोड़ कर यहां आये थे। तब उन्होंने मुझसे पूछा कि मैंने इस दुर्घटना का हाल अपने लड़के अथवा कुमारी विल्मट से तो नहीं कहा, और मेरे यह बताने पर कि मैंने अब तक नहीं कहा था, बड़े प्रसन्न हुए और मेरी बुद्धि तथा दूरदर्शिता की बड़ी प्रशंसा की और इच्छा प्रकट की कि मैं इसे हर तरह से गुप्त रखूं; "क्योंकि इससे" उन्होंने कहा, अपनी ही बदनामी बढ़ती है और शायद हो सकता है कुमारी लिवी का उतना पाप न हो जितनी हम लोग उसकी कपल्ना करते हैं।" इसी बीच नम्बरदार महोदय को ग्रामनृत्य में खड़े होने के लिये एक नौकर बुलाने आगया और हम लोगों की बातचीत रुक गयी: अतएव हम लोगों के सम्बन्ध में वह अपनी रुचि दिखाकर मुझे प्रसन्न करके वह चले गये। कुमारी विल्मट से उनकी दोस्ती करने का यत्न प्रत्यक्ष है, गलत था: और फिर भी वह पूर्ण प्रसन्न न जान पड़ती, और अपनी चाची की इच्छा अनुसार वह उन्हें परेशान सा करती। मुझे यह देख कर कुछ संतोष होता था कि वह मेरे इस अभागे लड़के को छिप कर बड़े प्यार से देखती थी किन्तु जिसका उत्तर मेरा लड़का अपनी सम्पत्ति हीनता एवं परिस्थितियों के कारण ठीक से न दे पाता। मि० थार्नहिल के कृत्रिम गांभीर्य से मुझे जरा भी आश्चर्य न हुआ था: हम लोग मि० अर्नाल्ड के बहुत कहने सुनने पर यहाँ एक सप्ताह से रुके हुये थे, लेकिन हर दिन कुमारी विल्मट मेरे लड़के को अधिक प्यार दिखातीं और मिस्टर थार्नहिल उसी अनुपात में मेरे लड़के से अपनी मैत्री बढ़ाते जाते।

उन्होंने पहले बहुत दयालुता पूर्वक मेरे परिवार की सहायता का विश्वास दिया था लेकिन उनकी उदारता अब केवल वायदों तक ही सीमित न थी। सवेरे मैं जाने की सोच रहा था, मि० थार्नहिल खुश थे, मुझे यह बताने के लिये आये कि उन्होंने अपने मित्र जियार्ज का एक बहुत बड़ा काम कर दिया है। उन्होंने मेरे लड़के के लिये पश्चिमी द्वीप समूह में जाने वाली सेना में एक जगह तय कर रखी थी और इसके लिये केवल सौ पाउण्ड जमा करना था। "जहाँ तक मेरी इस छोटी सी सेवा

का प्रश्न है" युवक सज्जन कहते गये, "मैं अपने मित्र की सहायता ही करना चाहता हूँ, इसके बदले में कोई पुरस्कार नहीं और सौ पाउण्ड देने की बात, यदि तुम लोग अभी नहीं इकट्ठा कर सकते तो मैं दिये देता हूँ, बाद को जब तुम लोगों के पास रुपये हों तो दे देना।" इस नेकी का वर्णन करने के लिये हमारे पास शब्द नहीं थे मैंने शीघ्र ही पुरनोट लिख कर रुपया ले लिया और इतनी अधिक कृतज्ञता प्रकट की जैसे यह रुपये मुझे दान में मिले थे और अब इन्हें वापस करना न रह गया था।

जियार्ज दूसरे दिन शहर के लिये जाने को था क्योंकि नम्बरदार महोदय ने सलाह दी थी कि शीघ्रातिशीघ्र पहुँच कर वहाँ रुपया जमा कर देना ठीक रहेगा अन्यथा बहुत सम्भव है कि कोई और आकर जगह ले ले। अतएव दूसरे दिन सवेरे मेरा वह नवयुवक सिपाही जाने को तैयार था। हम लोगों के बीच केवल एक वही था जिस पर जाने का जरा भी प्रभाव नहीं था। न तो आने वाले खतरों और परेशानियों से और न मित्रों और लड़कियों के बिछोह से—क्योंकि कुमारी विल्मट उसे सचमुच प्यार करती थी—उसे जरा भी दुख नहीं था। अपने सारे साथियों से विदा लेने के बाद वह मेरे पास आया, मैंने अपना आशीर्वाद उसे दिया, वास्तव में मेरे पास यही एक चीज बच रही थी "और अब मेरे बच्चे" मैंने कहा, "तुम अपने देश के लिये लड़ने जा रहे हो; याद रहे तुम्हारे पूज्य पितामह जी अपने पवित्र सम्राट के लिये किस तरह लड़े थे, उस समय ब्रिटेन निवासियों में राजभक्ति एक सदाचार था। जाओ मेरे बेटे जाओ, हर बात में उन्हीं का अनुकरण करना केवल दुर्भाग्य को छोड़ कर, यदि लार्ड फाकलैण्ड के साथ मरना दुर्भाग्य था। जाओ मेरे बच्चे, और यदि तुम मर गये तो यद्यपि तुम दूर रहोगे, कब्र नहीं मिलेगी, लाश बाहर पड़ी रह जायगी, तुम्हें प्यार करने वाले आंसू नहीं बहा सकेंगे लेकिन एक सिपाही के लिये सबसे कीमती आंसू वे होते हैं जिन्हें आकाश उसके खुले हुये सिर पर ओस के रूप में गिराता है।"

दूसरे दिन मैंने, इस अच्छे परिवार से जिसमें मैं इतने दिनों से

सानन्द रह रहा था, और मि० थार्नहिल से जिन्होंने मेरे ऊपर असीमित कृपा की थी, विदा ली। मैं उन्हें आनन्द मनाते हुये छोड़ कर घर की तरफ चल पड़ा लिवी को फ़िर से पाने की कोई आशा नहीं थी। मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि वह उसके पापों को क्षमा कर दे।

मैं अब घर से बीस मील से कम ही दूर था, मैंने—चूँकि अभी काफी कमजोर था—एक घोड़ा किराए पर ले लिया, और अपने आपको शीघ्र ही सर्वाधिक प्रिय अपने गाँव की धरती देखने का संतोष देने लगा। रात हो गई थी अतएव सड़क के किनारे की सरांय में शरण ली और नम्बरदार महोदय के साथ एक प्याला शराब पीने के लिए बैठ गया। हम लोगों ने उनके रसोई घर की आग के किनारे बैठ कर राजनीति और अन्य छोटे मोटे विषयों पर बात चीत शुरू कर दी। अन्य विषयों की बात चीत के सिल-सिले में मिस्टर थार्नहिल की भी बात चली। इनके विषय में मेरे अतिथेय ने बताया कि लोग उनसे उतनी अधिक घृणा करते हैं जितना कि उनके चाचा से प्यार। उसने मुझे बताया कि नम्बरदार महोदय का हमेशा यही काम रहता है कि जिसके घर में बैठते हैं उसकी लड़कियों से झूठ मूठ प्यार का ढोंग रच कर उन्हें बहका ले जाते हैं और पन्द्रह बीस दिन के बाद उन्हें अपुरस्कृत घर से निकाल कर दुनिया के लिये छोड़ देते हैं। जब हम लोग इस तरह आपस में बात चीत कर रहे तो उनकी पत्नी, जो मालूम होता था घूमने के लिए बाहर गई थी, लौटी, और अपने पति को आराम से बैठे बातें करते हुये, जिसमें वह हिस्सा न ले सकी थी, देखा, तो उसने बहुत गुस्से से पूँछा कि वह अब तक क्या कर रहा था? इसका उत्तर उसने व्यंग्य रूप में दिया।

"मिस्टर सिमडस" वह चिल्ला पड़ी, "तुम मेरे साथ बहुत बुरा बर्ताव करते हो, मैं इसे अब अधिक नहीं बर्दाश्त कर सकती। यहाँ तीन गुना काम मुझे करने को पड़ा है, और चौथा अभी बाकी है, जब कि तुम कुछ काम नहीं करते और आने वालों के साथ बैठ कर शराब में डूबे रहते हो;

और जब चाहे चम्मच भर शराब से मेरा बुखार ही क्यों लड़ सकता हो, पर मैं एक बूँद भी गले से नहीं उतारती।"

मुझे मालूम हो गया कि वह अब क्या कहने जा रही थी, अतएव मैंने एक प्याले में शराब भर कर उसकी तरफ बढ़ा दी उसने उसे बड़े अदब के साथ ले लिया; और मेरे स्वास्थ्य के लिये पीने के बाद उसने कहा, "महाशय जी, मैं शराब के मूल्य के लिये नाराज नहीं हूँ बल्कि इसलिये कि इस तरह से घर बहा जा रहा है। यदि आने वाले और ग्राहकों को ही यह लिये बैठे रहते हैं तो घर का सारा भार मेरे कन्धों पर आ जाता है, यह बैठे हुये आराम से शराब पीकर गप शप किया करते हैं। अब, हम लोगों के यहाँ एक जवान लड़की आयी है, ऊपर रुकी है; उसकी अत्यधिक चापलूसी भरी बातों से पता चलता है कि उसके पास रुपया बिलकुल नहीं है। इतना निश्चित है कि वह रुपया जल्दी नहीं दे पाएगी और यह मैं उससे बता देना चाहती हूं।"

—"उसे यह बता देने का क्या मतलब?" मेरे अतिथेय ने कहा, "यही तुम्हें विश्वास है कि वह रुपया जल्दी नहीं दे पायेगी।"

—"मैं यह नहीं जानती" पत्नी ने उत्तर दिया, "पर यह निश्चित है कि वह यहां पर लगभग एक पखवारे से है, फिर भी उसने हमको अभी तक एक कौड़ी भी नहीं दी।"

—"मैं सोचता हूँ प्रियतमे" उसने कहा, "वह शायद हमें इकट्ठी रकम दे दे।"

—"इकट्ठी रकम!" उसकी पत्नी चिल्ला पड़ी; "मैं तो उससे हर तरह से वसूल करने की आशा रखती हूँ; मैंने यह तय कर लिया है कि या तो आज ही रात पाई पाई चुकता करे या फिर अपना बोरिया बिस्तर लेकर अपना रास्ता ले।"

—"जरा सोचो प्रियतमे" पति ने कहा, "वह एक सज्जन महिला है और अधिक आदर की पात्री है।" —"जहाँ इस बात का सम्बन्ध है" उसकी पत्नी ने उत्तर दिया, "वह चाहे सज्जन हो या सीधी, उसे यहाँ से

निकलना पड़ेगा। रुपये पैसे का काम लेने देने ही से ठीक रहता है, सज्जनता दिखाने से नहीं; मैं आखिरी बार कहती हूँ, वह या तो रुपये देगी, या अपनी राह लेगी।" यह कहती हुई, वह ऊपर एक संकेरे रास्ते से रसोई में होकर चली गई और मैंने उसकी चिल्लाने और गाली देने की आवाज सुनी कि उसके यहाँ टिकने वाली इस महिला के पास बिलकुल रुपया नहीं है। मैं उसकी झिडकियाँ और गालियाँ बिलकुल साफ सुन रहा था : "निकल जाओ मैं कहती हूँ; इसी वक्त अपना बिस्तर समेटो; भागो यहाँ से घृणित वेश्या कहीं की, या एक ऐसी लात जमाऊँगी कि तीन महीने चलते न बनेगा। क्या, चुड़ैल तुम ने पहिले नहीं सोचा था कि जेब में एक भी कौड़ी नहीं है और एक ईमानदार आदमी के घर पड़ी रही अब तक; भगो, मैं कहती हूँ अभी भग जाओ।"

—"अरे देवी" दूसरी ने कहा, "मुझ पर दया करो, केवल एक रात और रुक लेने दो कल मैं मृत्यु के पास आश्रय ले लूँगी।" मैंने शीघ्र ही आवाज पहचान ली कि यह मेरी बेचारी ओलीविया थी जो अब पतिता थी। मैं उसकी रक्षा के लिये दौड़ा, मैंने देखा कि यह औरत उसे बाल पकड़ कर बाहर की तरफ घसीट रही है, मैंने दौड़ कर अपनी प्यारी इस परित्यक्ता लड़की को अपनी बाहुओं में ले लिया। "स्वागत, मेरे खोये हुये बच्चे तुम्हारा हर तरह से स्वागत—मेरे कोष—तुम्हारा बेचारा बाप तुम्हारा अपने हृदय से स्वागत करता है। तुम्हें अब सारा संसार छोड़ देगा लेकिन अभी एक तुम्हें अपनाने को तैयार है; यद्यपि तुम्हें अपने दस हजार पापों का उत्तर देना है, लेकिन वह उन सब को भुला देगा। "पिता जी" कुछ मिनट तक वह बिलकुल न बोल सकी—"मेरे प्यारे पिता जी! ईश्वर मुझ पर दया करे। मैं इतने दण्ड के योग्य न थी। मैं उससे तथा स्वयं अपने से घृणा करती हूँ। तुम मुझे क्षमा नहीं कर सकते, मैं जानती हूँ तुम मुझे क्षमा नहीं कर सकते।"—हाँ मेरी बेटी, मैं तुम्हें अपने हृदय से क्षमा करता हूँ और हम दोनों अब भी खुशी से रहेंगे। हम लोगों के जीवन में अब भी खुशी के दिन आएँगे।

"ओलीविया" मैं इतना ही कह पाया—"आह कभी नहीं। मेरा शेष-जीवन घर के बाहर एक बदनामी का कारण होगा और घर के अन्दर लज्जा का। किन्तु पिता जी, अफसोस, तुम पहले से अधिक पीले दिखाई पड़ते हो। क्या मुझ जैसी चीज से तुम्हें इतना अधिक कष्ट हुआ? सचमुच तुममें दूसरों के पापों के दुख को अपने ऊपर लेने की इतनी बुद्धि है।"

"मेरी बुद्धि, नवयुवती"—मैंने उत्तर दिया।—"अरे पिता जी, मुझे अब आप इस नाम से पुकारेंगे" वह चीख उठी। "यह पहली बार है जब तुमने मुझे इस नाम से पुकारा है।"—"मेरी प्यारी बेटी, मैं क्षमा माँगता हूँ"; मैंने कहा "लेकिन मैं यह कहने जा रहा था कि कष्टों से बचने के लिए बुद्धि पहले जरा भी काम नहीं देती लेकिन बाद को यह बड़ी रक्षा करती है।" नम्बरदार की पत्नी ने अब हम लोगों से पूछा कि क्या हमें अच्छे कमरे की आवश्यकता थी और मेरी स्वीकार मुद्रा देख कर उसने मुझे वहाँ जाने के लिए कहा, यहाँ पर हम दोनों और स्वतन्त्रता पूर्वक बात चीत कर सकते थे। काफी देर बात चीत करने के बाद जब वह कुछ शान्त पड़ी तो मुझसे, उसके भगाये जाने के बाद से इस समय तक घटित हुई घटनाओं को बिना जाने न रह गया। "उस धूर्त ने पिता जी", उसने कहा, "हम लोगों के मिलने के पहले दिन से ही बहुत सम्मानित पर व्यक्तिगत रूप से प्रस्ताव करने शुरू किए थे।"

"वास्तव में धूर्त है" मैंने कहा, "फिर भी मुझे कुछ आश्चर्य होता है कि मि० वर्चेल जैसा सम्मानित एवं बुद्धिमान आदमी इस तरह जान बूझ कर नीच काम क्यों करने लगा, एक भोले भाले परिवार को नष्ट कर दिया।"

"पिता जी" मेरी लड़की ने कहा, "तुम गलत सोच रहे हो। मि० वर्चेल ने मुझे कभी फुसलाने या धोखा देने का प्रयत्न नहीं किया; इसके विपरीत उसने हर अवसर पर मुझे थार्नहिल की कृत्रिमता से बचने के लिए सावधान किया था; अब मुझे अनुभव हुआ है कि थार्नहिल मि० वर्चेल के कथन से भी अधिक पतित था।"—"मि० थार्नहिल" मैंने रोक कर कहा, "क्या यह हो सकता है।"

"हाँ पिताजी" उसने कहा, "यह मि० थार्नहिल थे जिन्होंने मुझे मार्ग भ्रष्ट किया; उन्होंने उन दो महिलाओं को, जो नगर की दो परित्यक्ता एवं भ्रष्टा थीं, हम लोगों को लंदन ले जाने के लिए नौकर कर रखा था। उनकी बनावट अवश्य सफल हो गयी होती, यदि मि० वर्चेल ने वह पत्र न लिखा होता जिसमें उसने वे सब बातें लिखी थीं जिनका अर्थ हम लोगों ने अपने ऊपर लगाया था। उसके पास उन लोगों के इरादों को असफल करने की इतनी शक्ति कहाँ से आयी मेरे लिए यह अब भी एक रहस्य है; किन्तु मैं कहती हूँ कि वह हमेशा हम लोगों का बड़ा सच्चा मित्र था।"

"तुम मुझे आश्चर्य में डाल रही हो" मैंने कहा "लेकिन मुझे अब जान पड़ता है कि मि० थार्नहिल के विषय में मेरे पहले के संदेह बहुत ठीक थे। लेकिन उसकी विजय सुरक्षित रहेगी, क्योंकि वह अमीर है और हम लोग गरीब। लेकिन बताओ बेटी, वह कोई छोटा आकर्षण न रहा होगा, जिसने तुम जैसी शरीफ, शिक्षित एवं कुलीन बालिका को अपनी इज्जत इस तरह देने के लिए खींच लिया।

"वास्तव में पिता जी" उसने उत्तर दिया, "उसकी इस सफलता का कारण है मेरी, अपने को नहीं, वरन् उसे खुशी रखने की इच्छा। मैं जानती थी कि हम लोगों का विवाह संस्कार जो छिप कर एक पादड़ी ने करा दिया था किसी तरह का बन्धन नहीं है और मुझे उसके सम्मान के अतिरिक्त और कुछ भी विश्वास करने के लिए नहीं था।"—"क्या" "मैंने रोक कर कहा" "तुम्हारा विवाह सचमुच ही किसी पादड़ी ने कराया था?"—"बिलकुल सही" उसने कहा, "हम लोगों का विवाह पादड़ी ने ही कराया था पर मुझे उसका नाम न बताने की शपथ दिला दी गयी थी।"—"तब मेरी बेटी, आओ मेरी गोद में फिर आओ; तुम्हारा पहले से भी हजार गुना अधिक स्वागत है; क्योंकि तुम अब हर तरह से उसकी पत्नी हो चुकी, हर माने में; अब मनुष्यों द्वारा बनाए हुए कोई भी नियम तुम्हारे इस पवित्र सम्बन्ध की शक्ति को कम नहीं कर सकते।"

"अफसोस पिता जी" उसने उत्तर दिया, "आप उसकी धूर्तता को अभी जरा भी नहीं समझे। वह मुझसे पहले भी इसी तरह सात या आठ पत्नियों से विवाह कर चुका है—इसी पादड़ी की सहायता से और इन सब को मेरी तरह ही धोका देकर छोड़ दिया है।"

"यह बात ?" मैंने कहा "तब हम लोग पादड़ी को मृत्यु दंड देंगे, तुम कल उसका नाम बता दोगी"—"लेकिन पिता जी" उसने कहा "मैंने इसे न बताने की कसम खायी है क्या फिर ऐसा करना उचित होगा ?"—"बेटी" मैंने कहा "अगर तुमने वचन दे रखा है, तो मैं ऐसा नहीं कह सकता और न तुमसे पूछने का प्रयत्न ही करूँगा। चाहे इससे जनता का लाभ हो पर तुम उसका नाम नहीं खोलना। सभी मानव संस्थाओं में एक बड़े लाभ के लिए छोटा सा पाप कर लेने की अनुमति है; जैसा कि राजनीति में एक राज्य की रक्षा के लिए एक प्रान्त दिया जा सकता है; औषधि के क्षेत्र में सारे शरीर की रक्षा के लिए एक नस काटी जा सकती है, लेकिन धर्म के क्षेत्र में नियम हर दशा में पालनीय होते हैं और किसी भी परिस्थिति में बुराई करने की अनुमति नहीं देते। और यह नियम, बेटी, ठीक है; क्योंकि अन्यथा यदि हम एक बड़े लाभ के लिए छोटी सी बुराई करते हैं तो हर बड़े लाभ के काम के लिए छोटा सा पाप क्षम्य मान लिया जायगा। और काम के बीच का अवकाश जिसमें पाप करने की अनुमति मिल गयी है, हो सकता है इस बीच हमें उसका उत्तर ईश्वर के सामने देना पड़े और इस तरह से मानव कृत्यों का लेखा बिलकुल बन्द हो जाय। लेकिन मैं तुम्हें बाधा दे रहा हूँ, आगे कहो।"

"दूसरे दिन सबेरे ही," वह कहती गयी, मुझे उससे जो थोड़ी सी उम्मीद थी वही हुआ। उसी दिन सबेरे उसने मेरा दो और दुखी औरतों से परिचय कराया, जिनको उसने मेरी ही तरह धोखा दे रखा था लेकिन उन्हें अपनी वेश्या वृत्ति पर संतोष था। मुझे उससे बहुत प्यार था और इसलिए मैं अपने इन प्रतिद्वन्दियों को सहन न कर सकी और अपनी

बदनामी को मैंने खुशियों में भुला देने का प्रयत्न किया। इस विचार से मैं खूब हंसती खेलतीं, अच्छे कपड़े पहिनती और नाचती; मैं फिर भी दुखी थी। जो लोग मुझे देखने आते मेरे सौंदर्य और आकर्षण की प्रशंसा करते और इससे मेरे दुखों में वृद्धि ही होती क्योंकि अब तक मैं इन सारी शक्तियों से पूर्णतया वंचित थी। इस तरह से हर दिन मैं और अधिक दुखी तथा चिड़चिड़ी होती जाती थी; और अन्त में राक्षस ने मुझे एक अपने परिचित अन्य नम्बरदार के पास भेजने का आश्वासन दिया। क्या अब मुझे यह बताने की आवश्यकता है कि उसकी इस कृतघ्नता से कितना कष्ट हुआ! इस प्रस्ताव के उत्तर देने में मैं पागल हो गयी। मैंने चले जाने की इच्छा प्रकट की। जब मैं बाहर जा रही थी तो उसने मुझे रुपयों की एक थैली दी : लेकिन मैंने अपमान से क्रोधित होकर उसे उसी के ऊपर फेंक दिया; कुछ क्षण के लिए मैं अपनी परिस्थिति को भूल गयी थी। लेकिन मैंने जल्दी ही अपने चारों तरफ देखा, मैंने अपने आप को एक ऐसी अधम नीच और पापिनी पाया जिसके लिए अब संसार में कोई सहारा न रह गया था। उसी समय एक बग्घी जाती दिखायी दी, मैं इस धूर्त से जिसने मेरी इज्जत ले ली थी और जिससे मुझे अब इतनी घृणा थी, दूर जाने के उद्देश्य से बैठ गयी। मैं यहाँ आने के बाद इस स्त्री की कठोरता और मेरी परेशानियाँ ही मेरी साथिनें थीं। प्रसन्नता और हंसी के वे क्षण जो मैंने अपनी माँ तथा बहिन के साथ बिताए थे अब मुझे कष्ट दे रहे थे। उनको दुख बहुत है पर मुझे उनसे भी अधिक क्योंकि मेरे दुख मेरे पापों और बदनामी से मिले हुए हैं।"

"धैर्य रखो मेरी बेटी" मैंने कहा—"और मैं आशा करता हूँ कि परिस्थिति सुधरेगी। रात्रि को कुछ शान्ति प्राप्त करो; सबेरे मैं तुम्हें तुम्हारी मां तथा शेष परिवार के पास ले चलूंगा जिनसे तुम्हें एक प्यार भरा स्वागत मिलेगा। बेचारी औरत! वह हृदय से दुखी है; पर ओलीविया वह तुम्हें अब भी प्यार करती है, और यह सब भूल जायगी।"

२२

दूसरे दिन मैं अपनी लड़की को अपने साथ लिए हुए घर लौट पड़ा। रास्ते में चलते समय मैं उसे हर तरह फुसलाने और समझाने का प्रयत्न करता रहा; मैंने उसकी दुखी मां की डाट फटकार एवं नाराजगी को धैर्य के साथ सुन लेने के लिए उसे समझाया। मैंने हर एक दृश्य द्वारा उसे यह समझाने का प्रयत्न किया कि ईश्वर हम लोगों के प्रति कितनी अधिक दया दिखलाता है, हम लोग एक दूसरे के प्रति उतने दयालु कभी नहीं हो सकते। प्रकृति ने हम लोगों के दुख के लिए बहुत कम चीजें बनाई हैं। मैंने उसे विश्वास दिलाया कि वह मेरे व्यवहार में कोई भी परिवर्तन नहीं पाएगी, और मेरे जीवन पर्यन्त जो अभी काफी लम्बा हो सकता था, मुझ पर एक अभिभावक और मार्गदर्शक के रूप में निर्भर रह सकती है। मैंने संसार की बदनामी का सामना करने के लिए अपने को तैयार कर लिया, मैंने उसे बताया कि ऐसे अवसर पर एक दुखी आदमी के लिये पुस्तकें एक अच्छे और सच्चे साथी का काम करती हैं और यदि वे हमें जिंदगी से मजा लेना नहीं सिखा पातीं तो भी वे जिन्दा रहना तो सिखा ही देती हैं'।

किराए का घोड़ा जिस पर हम लोग चल रहे थे अपने गांव से पांच मील पहले की सराय में मुझे छोड़ देना चाहिये था; और चूँकि मुझे अपने परिवार को अपनी लड़की को अपनाने के लिये तैयार करना था अतएव मैंने

उस वक्त उसे इसी सराय में छोड़ देने का इरादा किया और सोचा कि अपनी लड़की सोफिया को लेकर उसे लेने के लिये दूसरे दिन सबेरे आ जाऊँगा। हम लोगों के सराय में पहुँचने के पहले ही रात हो गई थी; फिर भी मैंने सराय में उसे एक अच्छा सा कमरा दिला दिया और मालिकिन को उचित भोजन आदि की आज्ञा देकर घर की तरफ चल पड़ा। ज्यों ज्यों मैं अपने शान्तिमय घर के निकट पहुँचता जाता था मेरे हृदय में आनन्द का अद्भुत संचार हो रहा था।

मेरा विहंग मन मेरे घर पहुँचने के पहले ही बैठक के कमरे में मड़राने लगा, आशा एवं पूर्ण उत्साह के साथ; मैं बहुत सी मजेदार बातें जो मुझे कहनी थीं सोचता रहा और इस तरह होने वाले वास्तविक स्वागत को भूलने का प्रयत्न करता रहा। मैं मार्ग में ही अपनी पत्नी के प्रेमालिंगन तथा अपने बच्चों के हँसते हुये मुख का स्मरण कर प्रसन्न हुआ। चूँकि मैं धीरे धीरे चल रहा था अतएव काफी रात हो गई। दिन में काम करने वाले सारे मजदूर विश्राम कर रहे थे; हर झोंपड़ी का दीपक बुझाया जा चुका था कुत्तों के भूकने तथा चिड़ियों की एक आध आवाज के अलावा पूर्ण शांति थी; मैं अपने छोटे से आनन्द भवन में पहुँच गया और जब एक फर्लांग के अन्दर ही था तो मेरे इमानदार कुत्ते ने दौड़ कर मेरा स्वागत किया।

जब मैंने अपने घर का दरवाजा खटखटाया तो आधी रात बीत चुकी थी; सब कुछ शाँत और चुप था; मेरा हृदय अकथनीय आनन्द से भरा हुआ था; पर तभी मैंने आश्चर्य से देखा कि मेरा घर आग से धधक रहा है और हर एक छेद से आग की लाल लपटें दिखायी पड़ रही हैं; मैं चिल्ला पड़ा और बेहोशी के साथ जमीन पर गिर गया। इस से मेरा लड़का जो अभी तक सो रहा था घबड़ा कर उठ बैठा; उसने लपटें देख कर मेरी पत्नी और लड़की को जगाया वे सब नंगे दौड़ आये और फिर मेरी बेहोशी दूर की। पर इससे मेरी तकलीफ और बढ़ी क्योंकि अब तक आग की लपटें, छत तक पहुँच चुकी थीं, और धीरे धीरे करके मकान गिर रहा था,

जब कि मेरा परिवार शांत खड़ा अपनी यह बर्बादी देख रहा था जैसे कि आग का मजा ले रहा हो। मैंने एक बार उनकी तरफ देखा फिर दुबारा घर की तरफ, और फिर अपने छोटे बच्चों की तरफ, पर वे न दिखायी पड़े। "भगवान भगवान" मैं चिल्ला पड़ा "मेरे छोटे बच्चे कहाँ हैं?" —"वे आग में जल कर मर गये" मेरी पत्नी ने धीमे से कहा "और मैं उनके साथ मर जाऊँगी।" उसी क्षण मैंने बच्चों की चिल्लाहट अन्दर सुनी जो आग की गर्मी से अभी जगे थे, मुझे कोई रोक न सका। "कहाँ हैं मेरे बच्चे? कहाँ हैं मेरे बच्चे" चिल्लाता हुआ मैं आग की लपटों में घुस गया और जिस कमरे में वे बन्द थे, दरवाजे तोड़ने लगा।—"मेरे बच्चो कहाँ हो?"—"पिताजी यहाँ, हम यहाँ हैं पिता जी" वे दोनों एक साथ चिल्ला पड़े जब कि आग की लपटें जिस बिस्तर में वे लेटे हुये थे पकड़ चुकी थीं। मैंने दोनों के हाथ पकड़ लिये और उनको आग की लपटों के बीच से खींचता हुआ बाहर निकल आया और ज्योंही मैं बाहर निकला कि छत जल कर गिर पड़ी। "अब" मैं अपने बच्चों को पकड़े हुये चिल्लाया "अब आग की इन लपटों को उठने दो और मेरी सारी गृहस्थी को जल जाने दो; यहाँ हैं वह बच्चे; मैंने अपना खजाना बचा लिया है। प्रियतमे यहाँ हैं अपना खजाना, और हम लोग अब भी प्रसन्न होंगे।" हम लोगों ने अपने छोटे बच्चों की हजारों चूमिया लीं वे हमारे गले से चिपट गये मानो हम सब की खुशी में हिस्सा सा बटा रहे हों उनकी माँ हँसने—रोने में लगी रही।

अब मैं शांतरूप से लपटों को खड़े देख रहा था; और कुछ देर बाद मुझे मालूम पड़ने लगा कि मेरी पूरी बाहें बुरी तरह से जल गयीं थीं। अतएव अब यह मेरी शक्ति के बाहर था कि मैं अपने पुत्र को, अनाज के जलने से बचाने या सामान उठाने में सहायता कर पाता। इस समय तक मेरे पड़ोसी जग पड़े थे और मेरी सहायता के लिये आ गये थे; लेकिन जो कुछ वे कर सकते थे वह था हम लोगों की तरह खड़े होकर देखना—दुर्घटना के दर्शक बनना।

मैंने अपनी लड़कियों की सम्पत्ति के रूप में कुछ नोटें रख छोड़ी थीं जो मेरी गृहस्थी के साथ जल कर पूर्णरूप से नष्ट हो गयी थीं, केवल रसोई घर में रखा हुआ एक बक्स बच रहा था, जिसमें कुछ छोटे मोटे कागज थे ऐसी ही दो तीन साधारण सी चीजें और बच रही थीं जिन्हें मेरे लड़के ने प्रारम्भ में ही बाहर कर लिया था। पड़ोसियों ने अपनी सामर्थ्य के अनुसार चन्दा देकर हम लोगों के दुखों को हलका करने का यत्न किया। उन लोगों ने मुझे कपड़े दिये और एक बाहरी घर में रोटी बनाने के सामान का भी प्रबन्ध कर दिया और इस तरह से दूसरे दिन रहने के लिये एक घर की व्यवस्था हो गयी यद्यपि यह घर उससे भी खराब था। मेरे इमानदार पड़ोसी तथा उनके बच्चों ने मुझे हर एक आवश्यक चीज का प्रबन्ध करने में कोई यत्न उठा नहीं रखा और मुझे हर तरह से संतोष देते रहे।

जब हमारे परिवार का सारा डर शांत हो गया तो उन लोगों ने मेरे विलम्ब का कारण पूँछा: उन्हें हर विषय में सूचना देने के बाद मैंने उन्हें अपनी खोई हुई लड़की के स्वागत के लिये तैयार करना चाहा मेरा यह कार्य बड़ा कठिन हुआ होता पर शीघ्र ही हुई दुर्घटना के कारण मेरी पत्नी का गर्व काफी झुक चुका था और वह कुछ विनीत हो गयी थी। मेरे हाथ में अधिक दर्द हो रहा था अतएव मैंने अपने लड़के तथा लड़की को उसको लेने जाने के लिये भेजा जो शीघ्र ही मेरी इस पतिता लड़की को लेकर लौट पड़े; उसमें अपनी मां की तरफ देखने का साहस नहीं था और मेरे समझाने बुझाने के बाद भी मेरी पत्नी उसे प्यार से मिलने के लिये राजी न हुई क्योंकि स्त्रियों में मनुष्यों की अपेक्षा स्त्री सुलभ त्रुटियों पर अधिक क्रोध आता है। "अरे श्रीमती जी" उसकी मां ने कहा, "यह तो एक बहुत निर्धन स्थान है, तुम तो एक बहुत अमीर घर से आ रही हो। मैं और मेरी लड़की सोफी तुम जैसे उच्च समाज की स्त्री का मन बहलाव और स्वागत कैसे कर सकती हैं। हाँ कुमारी लिवी! तुम्हारे पिता जी और मैं काफी कष्ट उठा चुके हैं पर मुझे आशा है कि ईश्वर

तुम्हें क्षमा कर देगा।" स्वागत के समय यह बेचारी दुखी लड़की पीला मुंह लिये खड़ी काँप रही थी, न रो सकती थी और न उत्तर ही दे सकती थी : मैं उसके दुख का शांत दर्शक मात्र न रह सका; अतएव अपनी आवाज और बातचीत के ढंग में कठोरता दिखाते हुये जिसके बाद मेरे घर वाले मेरी बात हमेशा मान लेते थे, मैंने कहा "औरत, मैं तुझ से कहता हूँ कि मेरी यह बात अन्तिम रूप से मान ली जानी चाहिये; मैं यहाँ पर एक बेचारी फुसलायी जाने के कारण मारी मारी फिरने वाली भ्रान्त लड़की को वापस ले आया हूँ; कर्त्तव्य पथ पर पुनः लौट आने के कारण वह हम लोगों के वात्सल्य की फिर से अधिकारिणी है। जीवन की वास्तविक कठिनाइयाँ हम लोगों की तरफ अब दौड़ती चली आ रही हैं हम आपस में अलग होकर कहीं इन्हें बढ़ा न लें हमें सावधान रहना चाहिये यदि हम आपस में प्रेम से रहेंगे तो अब भी संतुष्ट रहेंगे; हम लोग अपने निन्दा करने वाले संसार से अलग सुखी रहने भर के लिये काफी हैं। ईश्वर की कृपा सदा पश्चात्ताप करने वाले पर ही होती है और हम लोग इसके एक उदाहरण होंगे। ईश्वर को एक पश्चाताप करने वाले पापी को देख कर निन्नानबे सुमार्ग पर चलने वाले मनुष्यों के देखने से अधिक प्रसन्नता होती है और यह ठीक भी है; क्योंकि वह अकेला प्रयत्न जिससे नरक की तरफ गिरते हुये ढाल से हम रुकते हैं स्वयं में ही सौ कामों से बड़ा सदाचार है।"

२३

अपने इस घर को पहले जैसा ही आराम देह बनाने के लिए थोड़े से उद्योग की आवश्यकता थी और हम लोग शीघ्र ही अपनी शान्ति का आनन्द लेने के योग्य हो गए। मैं अपने लड़के को उसके नित्य के कामों में सहायता देने योग्य न रह गया था; जो कुछ दो एक किताब जलने से बच सकीं थीं मैं उन्हें पढ़कर अपने परिवार के लोगों को सुनाता और इस तरह उन लोगों के हृदय को शान्त करने का प्रयत्न करता। हमारे अच्छे पड़ोसी भी दया पूर्वक हमारे प्रति अपना संतोष प्रकट करते, उन लोगों ने एक समय निश्चित कर लिया था जब वे लोग आकर इस भस्मी भूत मकान के पुनर्निर्माण में सहायता करते। ईमानदार किसान विलियम्स भी इस काम में पीछे नहीं था, उसने मेरी लड़की के साथ फिर से विवाह प्रस्ताव करना चाहा; लेकिन उसने उसे इस तरह से इन्कार कर दिया जिससे उसे भविष्य में फिर कभी प्रस्ताव करने का साहस नहीं हुआ। ऐसा लगा कि उसका दुख अनन्त है; हम लोगों के नन्हे परिवार में वही अकेली ऐसी थी जो एक सप्ताह तक प्रसन्न न हो सकी। वह अपनी उस भोली भाली सलज्जता को तिलांजलि दे चुकी थी जिसने उसे आत्म सम्मान तथा दूसरों को प्रसन्न रखने में ही खुद प्रसन्न रखना सिखाया था। चिंता ने उसके दिमाग में अपना किला बना लिया था;

उसका सौंदर्य उसके स्वास्थ्य के साथ खराब होता गया और इस ओर से उसकी उदासीनता ने उसे और भी खराब कर देने में योग दिया। उसकी बहिन के लिए प्रयुक्त हर एक कोमल विशेषण उसके हृदय को कष्ट देता, और उसकी आँखों में आँसू छलक आते; जब एक दोष से मुक्ति मिल जाती है तो हमेशा उस स्थान पर दूसरा दोष अंकुरित हो जाता है; उसी तरह उसका पाप यद्यपि प्रायश्चित्त से दूर हो गया था किन्तु उसके स्थान पर ईर्ष्या और द्वेष आ गया था। मैंने उसकी चिन्ता कम करने के लिए हजारों प्रयत्न किये, और उसकी चिन्ता में मैं अपनी तकलीफें भी भूल गया। इतिहास के पन्नों से अपनी स्मरण शक्ति तथा अध्ययन के द्वारा मैंने अनेक चित्ताकर्षक स्थल ढूंढ़ कर इकट्ठे किए। "मेरी बेटी, हम लोगों की प्रसन्नता," मैं कहता "उस एक के हाथ में है जो उसे हजार अदृश्य रीतियों से हमें देकर हमारी दूर दर्शिता की हंसी कर सकता है। यदि इसे सिद्ध करने के लिए उदाहरण की आवश्यकता हो, तो मेरी बेटी, तुमको मैं एक कहानी बताऊँगा जो एक गम्भीर पर एक कल्पना प्रधान इतिहासकार द्वारा लिखी गयी है।

"मटिल्डा का विवाह बहुत छोटी आयु में एक बहुत ही धनी और प्रथम श्रेणी के सज्जन से हो गया; पर वह पन्द्रह वर्ष की आयु में एक विधवा माता बन गयी। जब वह अपने नन्हे बच्चे को खिड़की के पास लिए खड़ी हुई प्यार कर रही थी, बच्चा उछला और उसके हाथ से छूट कर नीचे बहती हुई धारा में गिर पड़ा और अदृश्य हो गया। माँ को कुछ सूझ बूझ न पड़ा और वह खुद भी उसके बचाने के लिए तुरन्त कूद पड़ी; लेकिन बच्चे को बचाना तो दूर रहा वह स्वयं बड़ी मुश्किल से अपने प्राण बचा पायी और बह कर दूसरे किनारे पर जा लगी; इसी समय इस ओर फ्रांसीसी सिपाही लूट पाट कर रहे थे और उन्होंने उसे अपना बन्दी बना लिया।

"उस समय फ्रांसीसियों और इटली निवासियों में पूर्ण अमानवीय क्रूरता के साथ युद्ध हो रहा था अतएव उन्होंने उसके साथ भूख और

पशुता की दिशा में जो सबसे अधिक क्रूरता हो सकती है दिखाना चाहा इस नीच इरादे का एक युवक अफसर ने विरोध किया, और युद्ध समाप्त होने के बाद उसे अपने साथ अपने शहर लेता आया। उसकी सुन्दरता ने उसकी आँखों को आकर्षित किया; और उसके गुणों ने उसके हृदय को; उन दोनों ने विवाह कर लिया, वह सब से ऊँची नौकरी पर पहुँच गया वे दोनों बहुत दिनों तक साथ रहे और प्रसन्न थे। किन्तु एक सिपाही का भाग्य सदा एक सा नहीं कहा जा सकता; कुछ साल बीत जाने के बाद, वह जिस सेना का नेतृत्व कर रहा था, बुरी तरह से हार गयी और जिस शहर में वह इस औरत से मिला था वहीं उसे शरण लेनी पड़ी। यहाँ भी उन पर घेरा डाल दिया गया और अन्त में शहर जीत लिया गया। इतिहास में ऐसी बर्बरता एवं पशुता के बहुत कम उदाहरण हैं जैसी कि इटली और फ्रांस के इस युद्ध में मिलते हैं। इटली के सिपाहियों ने सारे फ्रांसीसियों को जो बन्दी बनाए गये थे मार डालना तय किया; लेकिन विशेषरूप से मटिल्डा के पति को मारना तय किया गया क्योंकि वही फ्रांसीसी सेना का मुख्य अफसर था। साधारणतया वे जो भी निर्णय करते शीघ्र ही उस पर अमल भी करते थे। बन्दी सिपाही ले जाया जाता और हत्यारा अपनी तलवार लिये तैयार खड़ा रहता जब कि दर्शक लोग भयानक शांति के साथ मृत्युप्रद वार का रास्ता देखते जो आज्ञा देने वाले अफसर के इशारा करते ही मनुष्य के दो हिस्से कर देती। इसी भय और आशा के बीच मटिल्डा अपने पति तथा मुक्त करने वाले से अंतिम विदा लेने के लिये आयी, वह अपनी दयनीय दशा, भाग्य की क्रूरता को, जिसने उसे पहले ही वाल्टर्ना नदी में इस भीषणतम क्रूरकाण्ड का दर्शक बनने के लिये बचा रखा था, कोस रही थी। उसका पति खड़ा था हत्यारे की तलवार के दाँव में, केवल इशारे की देर थी। इशारा करने वाला यह सेनापति जो अभी नवयुवक ही था, इसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गया, और उसके दुख पर दया दिखायी; और इससे भी अधिक दया के साथ उसने उसकी पूर्व कथा सुनी। वह उसका लड़का था, वही बच्चा जिसके लिये

उसने इतने खतरों का सामना किया था। उसने उसे तुरन्त अपनी माँ स्वी-कार कर लिया और उसके पैरों पर गिर पड़ा। शेष की आसानी से कल्पना की जा सकती है बन्दी मुक्त कर दिया गया, तथा प्यार मैत्री और कर्त्तव्य के योग से जो प्रसन्नता हो सकती है उसका उन्होंने अनुभव किया।"

इस तरह से मैं अपनी लड़की को खुश करने का प्रयत्न करता: लेकिन वह इसे आधे दिल से सुनती; क्योंकि स्वयं उसके दुर्भाग्य ने उसकी सारी दया जो उसके पास दूसरों के लिए थी अपने में आत्मसात कर लिया था और उसे किसी बात में चैन नहीं पड़ती थी, समाज में बैठने में वह घृणा से डरती; जब अकेली रहती तो उसे चिन्ता आ घेरती उसकी जब यह दशा थी तो हम लोगों को सूचना मिली कि थार्नहिल महोदय कुमारी विल्मट से अपना विवाह करने जा रहे हैं जिसके विषय में मेरा हमेशा संदेह रहा है कि वह उसे हृयय से प्यार करता है, यद्यपि वे मुझसे हर अवसर पर उसकी सुन्दरता तथा सम्पत्ति की निन्दा करते। इस सूचना से ओलीविया को और अधिक क्लेश बढ़ा; सदाचार एवं स्वामिभक्ति का पूर्णालंबन उसके धैर्य की सामर्थ्य के बाहर था। मैंने इस विषय में और अधिक निश्चित सूचना प्राप्त यदि सम्भव हो तो उसे अपनी इस योजना के पूरा करने में मैंने बाधा डालनी चाही। इस विचार से मैंने अपने लड़के को मि० विल्मट के पास सच्चाई जानने के लिए भेजा; मैंने कुमारी विल्मट के नाम एक पत्र भी लिख भेजा जिसमें मि० थार्नहिल के नीच स्वभाव तथा मेरे परिवार के प्रति किये गये उनके व्यवहार का वर्णन था। मेरी आज्ञानुसार मेरे लड़के ने सूचना की सत्यता का पता लगा लिया पर वह कुमारी विल्मट को पत्र न दे सका था क्योंकि वे इस समय मि० थार्नहिल के साथ देश यात्रा के लिये निकली हुई थीं, अतएव उसे तीन दिन बाद लौट आना पड़ा। उसने बताया कि उनका विवाह शीघ्र ही होने वाला था, उसके वहाँ पहुँचने के पहिले ही इतवार को वे दोनों बड़े सजधज के साथ चर्च जा चुके थे: दूल्हन के साथ छः नवयुवतियाँ थीं और इतने ही नवयुवक दूल्हे के भी साथ थे। उनकी

इस आयोजित सगाई से हर जगह आनन्द मनाया जा रहा था और वे अक्सर साथ ही ऐसी सुन्दर बग्घी में, जैसी कि बहुत सालों से उधर नहीं दिखायी पड़ी थी, बैठ कर निकलते थे। उसने बताया कि दोनों परिवारों के सभी मित्र विशेष कर नम्बरदार के चाचा, सर विलियम थानहिल जैसे सच्चरित्र व्यक्ति भी उपस्थित थे। उसने आगे कहा कि हर जगह बड़ी धूम धाम से खुशियाँ मनायी जा रहीं थीं, सारे देश में नव-पत्नी के सौंदर्य एवं दूल्हे के सुन्दर स्वरूप की प्रशंसा हो रही थी, वे एक दूसरे को बहुत प्यार करते हैं; उसने अन्त में कहा कि वह मि० थानहिल को संसार का सबसे सुखी मनुष्य मानता है।"

"क्यों, यदि वे प्रसन्न हो सकते हैं तो होने दो" मैंने उत्तर दिया: "लेकिन मेरे बेटे इस घास के बिस्तरे और इस टूटी छत की तरफ ध्यान करो; यह टूटी हुई दीवारें और यह सीलन से भरी हुई फर्स; आग से जलने के कारण अयोग्य हुआ मेरा यह शरीर, और रोटी के लिये बिल-बिलाते हुए मेरे यह बच्चे : मेरे बच्चे तुम इस सब के पास घर आगये हो; और फिर भी यहां तुम एक ऐसा आदमी देखरहे हो, जो हजारों संसार पाकर भी अपनी स्थिति नहीं बदलेगा। मेरे बच्चों, यदि तुम अपने हृदय से बातचीत कर सकते तो तुम्हें पता चलता कि वह तुम्हारा कितना अच्छा साथी है और तुम इस निकम्मे आदमी की तड़क भड़क तथा धन की जरा भी परवाह न करते। लगभग सभी आदमियों को बताया गया है कि जीवन एक यात्रा है और हम सब उस यात्रा के पथिक। इस उपमा को और आगे बढ़ाया जा सकता है जब हम यह कहें कि अच्छे आदमी प्रसन्न और शाँत हृदय होते हैं और जिनकी कल्पना अपने घर की तरफ जाते हुये यात्री से की जा सकती है; दुष्ट लोग बीच बीच ही प्रसन्न रहते हैं जैसे देश निकाला जाता हुआ आदमी।"

इस दुर्घटना से मेरी बेचारी लड़की के प्रति मेरे हृदय की करुणा पीछे पड़ गयी और मैं जो कुछ कहने जा रहा था रुक गया। मैंने उसकी मां को उसे सहारा देने के लिये कहा और थोड़ी देर में वह ठीक हो गयी।

मि० थार्नहिल की बग्घी आती दिखायी पड़ी जिससे हम लोग सशंकित हो उठे और विशेष कर मेरी बड़ी लड़की की बेचैनी और भी बढ़ी वह अपने को इस तरह पथ भ्रष्ट करने वाले का मुंह तक नहीं देखना चाहती थी अतएव वह अपनी छोटी बहिन के साथ घर चली गयी। थोड़ी ही देर बाद वह उतरे और जहाँ हम लोग अब भी बैठे हुये थे आकर बड़ी आत्मीयता दिखाते हुये मुझसे हम लोगों की क्षेम कुशल पूंछने लगे। "महाशय जी" मैंने उत्तर दिया, "आपकी इस उपस्थिति से केवल आपकी अत्यधिक नीचता का ही पता चलता है; और एक समय था जब मैं आपको आपकी इस नीचता के लिये दण्ड दे सकता था; लेकिन अब आप सुरक्षित हैं वृद्धावस्था ने मेरी शक्ति छीन ली है और मैं फिर से यह नहीं करना चाहता।"

"मैं कसम खाता हूँ महाशय जी" उसने उत्तर दिया, "मुझे इस सबसे बहुत आश्चर्य है और न मैं यही समझ सकता हूँ कि इस सबका क्या अर्थ है। मुझे आशा है कि आप अपनी लड़की की मेरे साथ हुई पिछली आनन्द यात्रा का गलत अर्थ नहीं सोचेंगे! उसमें कोई पाप की बात नहीं थी।"

"भग जाओ यहाँ से" मैंने कहा "तुम बड़े धूर्त हो, लम्पट हो, हर तरह झूठ बोलते हो: लेकिन तुम अपनी नीचता के कारण मेरे क्रोध से सुरक्षित हो। फिर भी जनाब, मैं ऐसे परिवार में पैदा हुआ हूं जो तुम्हारी इस शैतानी को बर्दास्त नहीं कर सकता।—और इसलिये तुम, एक नीच —तुमने अपनी क्षणिक वासना तृप्ति के लिये एक बेचारी लड़की की जिंदगी को बर्बाद कर दिया है—और एक ऐसे परिवार को जिसके पास इज्जत के अतिरिक्त और कुछ शेष न रह गया था, कलंकित कर दिया है।"

"यदि उसने या तुमने," उसने जवाब दिया "दुखी होना तय कर लिया है तो मेरा क्या दोष। लेकिन तुम अब भी खुश हो सकते हो; और तुमने मेरे प्रति चाहे जो भी धारणा बना ली हो पर तुम मुझे अपनी

प्रसन्नता वृद्धि के लिए सदा तत्पर पाओगे। हम उसका विवाह थोड़े ही समय में एक दूसरे के साथ कर सकते हैं; और इससे भी बड़ी बात यह है कि उसका प्यार करने वाला हमेशा उसके साथ रहेगा; क्योंकि मैं कसम खाता हूँ मैं उसका हमेशा सच्चा हितैषी रहूँगा।"

मुझे उसके इस नये नीच प्रस्ताव पर बड़े जोर का गुस्सा आया; क्योंकि यद्यपि दिमाग अधिक दुःख पाने से शान्त हो सकता है; पर जब छोटी सी बेहूदी बात हृदय में लग जाती है तो बड़ा क्रोध आता है—हट जा मेरी आँख के सामने से धूर्त। "मैं चिल्ला पड़ा अपनी उपस्थिति से मेरी बेइज्जती मत कर। अगर मेरा लड़का घर पर होता, तो उसने यह सब यों ही न सुन लिया होता; मैं बुड्ढा हूँ बेकाम हूँ, हर तरह से लूटा जा चुका हूँ।"

"मुझे लगता है" उसने कहा, "कि तुम इस बात पर तुले हो कि तुमसे अपनी अनिच्छा कठोरता से पेश आऊँ। लेकिन जैसा मैंने तुमको बताया है तुम मेरी मैत्री से कितना लाभ उठा सकते हो और अतएव यह बताना भी अनुचित न होगा कि मेरी शत्रुता से तुम्हें कितनी तकलीफ हो सकती है। मेरा लेखा-परीक्षक जिसको तुम्हारी पिछली पुरनोट दे दी गयी है, बड़े जोर की धमकियाँ देता है। मैं यह भी नहीं जानता कि न्याय से कैसे बचा जाय जब तक मैं स्वयं ही रुपया न चुका दूँ और चूंकि मैं अचानक अपने आयोजित विवाह के सिलसिले में काफी खर्च में पड़ गया हूँ अतएव ऐसा करना मेरे लिये बहुत आसान भी नहीं है। और अब मेरा जिलेदार रुपया वसूल करने के लिए निकलने वाला है; यह तय है कि वह अपना कर्त्तव्य जानता है; क्योंकि मैं अपने आप को इस तरह के कामों में कष्ट नहीं देता। लेकिन फिर भी मैं आपकी सहायता करना चाहता हूँ और तुम्हें तथा तुम्हारी लड़की को कुमारी विल्मट के साथ आयोजित अपने विवाह में आमंत्रित करना चाहता हूँ मेरी प्यारी अरावेला की भी यही प्रार्थना है और मुझे आशा है कि तुम इन्कार नहीं करोगे।"

"मि॰ थार्नहिल," मैंने उत्तर दिया, "मेरी अंतिम बात सुन लो; जहाँ तक तुम्हारे विवाह का प्रश्न है, इस बात की स्वीकृति मैं अपनी लड़की के अतिरिक्त और किसी के साथ नहीं दे सकता; और चाहे तुम्हारी मैत्री मुझे राजा बनादे या तुम्हारी नाराजगी मुझे रसातल पहुँचा दे लेकिन मैं फिर भी दोनों से घृणा करूँगा। एक बार तुमने मुझे निर्दयता एवं असाध्यता के साथ धोखा दिया है। मैंने अपनी इज्जत तुम्हारे विश्वास पर छोड़ दी थी और तुमने अपनी नीचता का इस तरह परिचय दिया। इसलिए, मुझसे अपनी मैत्री की आशा कभी मत करो। जाओ—सौंदर्य, सम्पत्ति स्वास्थ्य, प्रसन्नता जो कुछ भी तुम्हें सौभाग्य से मिला है जाकर लो। जाओ मुझे भूखों मरने बदनाम होने, रोग और दुख से पीड़ित होने को छोड़ जाओ। फिर भी मैं जिस तरह विनीत हूँ, उसी तरह गौरान्वित रहूँगा; और यद्यपि मैं तुम्हें क्षमा किए देता हूँ; लेकिन तुम सदा मेरी घृणा के पात्र रहोगे।"

"यदि ऐसा है" उसने उत्तर दिया, "तो विश्वास रखो, तुम्हारी इस धृष्टता का मजा चखाऊँगा; और तब हम लोग देखेंगे कि सब से अधिक घृणित कौन है, तुम या मैं।"—इस तरह कहता हुआ वह क्रोध से चला गया।

मेरी पत्नी और मेरा लड़का जो इस विवाद के समय में उपस्थित था भय से काँपने-सा लगा; मेरी लड़कियाँ भी, जब उन्होंने देखा कि वह चला गया था, तो बात चीत का परिणाम जानने के लिए आ गयीं और जब उन्हें सब बातें मालूम हुईं तो उनके भय की सीमा भी उतनी ही रही जितनी कि मेरी पत्नी और मेरे लड़के की। लेकिन जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैंने उसके क्रोध की जरा भी चिन्ता नहीं की : वह सबसे बड़ा आघात पहुँचा ही चुका था और अब मैं उसके हर आघात का उत्तर देने के लिए तैयार खड़ा था।

हम लोगों को शीघ्र ही पता लगा कि उसने अपना क्रोध व्यर्थ ही नहीं दिखाया; क्योंकि दूसरे दिन सबेरे ही उनका जिलेदार वार्षिक लगान लेने के लिये मेरे यहाँ आया जो पूर्व वर्णित दुर्घटनाओं के कारण दे सकने

में मैं असमर्थ था। जिसका परिणाम यह हुआ कि वह मेरी भेड़ें जबरदस्ती खेद ले गया और दूसरे ही दिन आधी कीमत से कम पर वह बेंच दी गयीं। अतएव मेरी लड़कियों तथा मेरी पत्नी ने मुझे उससे किसी भी दशा में सुलह कर लेने के लिए कहा जिससे बढ़ती हुई तकलीफों में कुछ कमी हो सके। उन्होंने मुझसे यह भी प्रार्थना की कि मैं उसको अपने घर बुलाना स्वीकार कर लूँ और फिर वे अपनी सारी वाक्पटुता से उसको प्रसन्न कर, आने वाले दुर्भाग्यों से अपनी रक्षा कर सकें—क्योंकि ऐसी ऋतु में बन्दीग्रह का भय बहुत ज्यादा था। और फिर मेरा स्वास्थ्य पिछली अग्नि दुर्घटना से बहुत ही खराब हो चुका था। लेकिन मैं दृढ़ रहा।

"क्यों, मेरे अतुल कोष" मैंने अपने बच्चों और लड़कियों के सर पर हाथ फेरते हुए कहा, "तुम लोग मुझे एक अनुचित काम करने के लिए क्यों कह रहे हो? मेरे कर्त्तव्य ने मुझे क्षमा करना सिखाया है; लेकिन मेरी आत्मा ने उसे स्वीकृति नहीं दी। क्या तुम सब चाहते हो, जिसे मैं हृदय से घृणा करता हूँ संसार में उसका यश गीत गाऊँ? क्या तुम चाहते हो कि मैं शान्त बैठकर हम लोगों को कलंकित और पथ भ्रष्ट करने वाले की चापलूसी करूँ; और बन्दीग्रह से बचने के लिये आत्मा को संकुचित कर उससे अधिक पीड़ा पहुँचाने वाले मानसिक क्लेश का वरण कर लूँ? नहीं, कभी नहीं। यदि हम इस जगह से हटाये जाने को ही हैं तो हमें उचित और सत्य का ही साथ रखना चाहिए; और हम लोग चाहे कहीं भी क्यों न फेंक दिए जाँय हर जगह अपना मनहर नीड़ तैयार कर लेंगे, क्योंकि हम लोग अपनी आत्मा की पुकार सुनते हैं और ईश्वर के आश्रय में हैं।"

इस तरह से हमने वह संध्या बिता दी। दूसरे दिन तड़के सबेरे चूंकि बर्फ रात को अधिक गिर गयी थी, मेरा लड़का रास्ता साफ करने के लिए बरफ हटा रहा था, उसने देखा कि दो आगन्तुक आ रहे हैं; उसने उन्हें पहचान लिया। वे न्याय के अफसर थे और रुपया वसूल करने के लिए आ रहे थे।

ज्यों ही उसने आकर मुझे यह सूचना दी वे दोनों आगन्तुक मेरे कमरे में घुस आए। उन्होंने मुझे बन्दी बना लिया तथा मुझसे न्यायाधिकरण चलने को तैयार होने के लिए कहा जो यहाँ से ग्यारह मील दूर था।

"मेरे दोस्तो" मैंने कहा, "इस समय जब तुम मुझे बन्दीग्रह लिये चल रहे हो ऋतु बड़ी खराब है; और विशेष रूप से इस समय जब मैं बहुत कष्ट में हूँ; मेरा हाथ बुरी तरह से जल चुका है जिससे मुझे कुछ ज्वर भी है, मेरे पास कपड़े भी नहीं हैं अपना शरीर ढकने के लिए, और मैं ऐसी बर्फ और ठंडक में चलने लायक बिलकुल नहीं; पर लेकिन यदि ऐसा ही होना है—"

मैंने अपनी पत्नी तथा बच्चों को बुला उन्हें जल्दी से शेष ग्रहस्थी लेकर चलने को तैयार होने के लिए कहा। अपने लड़के से इच्छा प्रकट की कि वह अपनी बड़ी बहिन को, जो यह सोच कर कि वही अकेली इस सारी विपत्ति का कारण थी, बेहोश होकर गिर पड़ी थी, सहायता दे। मेरी पत्नी इन आगन्तुकों के आ जाने से डरे हुए बच्चों को चिपकाये काँपती हुई मेरी तरफ देखती रही, मैंने उसे प्रोत्साहित किया। इसी बीच हमारी छोटी लड़की ने अपने चलने की तैयारी कर ली और मेरी इच्छानुसार सामान बाँध कर लगभग एक घन्टे के अन्दर ही तैयार हो गयी।

२५

हम लोग अपने इस शांति-मंदिर से विदा हुए और धीरे धीरे चल पड़े न्यायाधिकरण की ओर। मेरी बड़ी लड़की कुछ दिन से बुखार से पीड़ित रहने के कारण कमजोर और दुबली हो गयी थी, चल नहीं पा रही थी, अतएव अफसरों में से एक ने जिसके पास घोड़ा था अपने साथ पीछे बैठा लिया, क्योंकि यह लोग भी मानवता से इतना वंचित नहीं रह सकते। मेरा लड़का अपने एक छोटे भाई को गोद लिये हुए था और मेरी पत्नी दूसरे को, मैं अपनी लड़की के सहारे अपना हाथ उसके कंधे पर रखे हुए पीछे पीछे जा रहा था, उसकी आँखों से आँसू गिर रहे थे, अपनी तकलीफ के कारण नहीं, वरन् मेरे कष्टों को देख कर।

जब हम लोग गाँव से दो मील दूर निकल गए तो मैंने एक बड़ी चिल्लाती हुई भीड़ को अपने पीछे तेजी से आते देखा, लगभग मेरे पचास पड़ोसी तथा गाँव के मित्र दौड़ते चले आ रहे थे। इन लोगों ने गुस्से में आकर इन दोनों अफसरों को पकड़ लिया और कहने लगे कि वे अपने रक्त की अंतिम बूँद रहने तक भी मुझ जैसे विद्वान पुरोहित को जेल नहीं जाने देंगे, और वे लोग इन अफसरों के साथ बड़ी कठोरता का बर्ताव करने जा रहे थे। यदि मैंने तुरन्त ही हस्तक्षेप न कर दिया होता तो परिणाम भयावह हुआ होता, मैंने बड़ी मुश्किल से दोनों अफसरों को

उस भीड़ के कोप से बचाया। मेरे बच्चे जो अब मेरी मुक्ति निश्चित समझते थे खुशी से चिल्ला पड़े। पर उनका यह भ्रम शीघ्र ही दूर हो गया। मैंने भीड़ के बेचारे भ्रान्त आदमियों को जो मेरी सहायता एवं सहानुभूति के लिए आए थे संबोधित करते हुए उनके इस गलत प्रयत्न की तरफ संकेत किया।

'मेरे दोस्तो' मैंने कहा, "क्या मेरे प्रति प्यार दिखाने का यही मार्ग है? क्या मेरे धर्मोपदेशों का यही अर्थ था? तुम न्याय के काम में अपना गलत तरीके से हाथ डाल कर स्वयं अपने को तथा मुझे बर्बाद करने पर तुल गए हो, यह शायद तुम्हें नहीं मालूम। तुम्हारा नेता कौन है? मुझे उस आदमी को बताओ जिसने तुम्हें इस तरह भड़काया है। जब तक वह जीवित रहेगा मैं उससे नाराज रहूँगा। अफसोस! मेरे प्यारे भूले हुए साथियों, ईश्वर अपनी मातृभूमि तथा मेरे प्रति अपने कर्तव्यों का ध्यान रखो। मैं शायद अब भी एक बार तुम लोगों के देखने की आशा करता हूं और तब मैं आप लोगों के जीवन को हर तरह सुखी बनाने का यत्न करूँगा। और मुझे मरते समय तक बड़ा सुख होगा जब मैं देखूंगा कि आप सब सुखी हैं।"

वे मुझे सब के सब प्रायश्चित करते दिखायी दिए उनकी आँखों में आँसू थे, और एक के बाद एक मुझसे बिदा लेने के लिए आए। मैं हर एक से ममता और प्यार से मिला और उन्हें आशीर्वाद देते हुए और अन्य किसी बाधा के आये धीरे धीरे आगे बढ़ा। रात होने के कुछ घन्टे पहले मैं उक्त शहर अथवा कहिए गांव में, क्योंकि यहां पर बहुत थोड़े से छोटे मोटे मकान भर बच रहे थे, सारी पुरानी चमक मिट्टी में मिल चुकी थी, पहुँचे। यहीं पर वह बन्दीगृह था जो यहां के और सारे वैभवों के समाप्त हो जाने के बाद अकेला रह गया था।

यहाँ पर आकर हम लोग एक सराय में ठहरे और जो कुछ भी आसानी से मिल पाया उसे हम सब ने सदा की भांति हँसी खुशी से खा लिया। जब मैंने देखा कि रात भर के लिये उनकी ठीक व्यवस्था हो गयी

तो मैं दोनों अफसरों के साथ बन्दीग्रह गया। यह बन्दीग्रह आदि रूप में युद्ध के उद्देश्य से बनाया गया था इसमें एक बहुत बड़ा कमरा था जिसके किनारे खूब मजबूत सींकचे थे जो पत्थर से जड़े हुये थे, दिन रात में कुछ समय के लिये कर्ज तथा पाप कर्मों के लिये कैद किये हुये बन्दी एक साथ इस कमरे में रहते थे; इसके अतिरिक्त हर कैदी के लिये एक अलग कोठरी भी थी, जिसके अन्दर वह रात भर ताले में बन्द रहता।

मुझे यह आशा थी कि मेरे अन्दर पहुँचते ही रोने पीटने की तथा दुख भरी आवाजें सुनने को मिलेगी : पर वास्तव में बात इससे भिन्न थी। सभी बन्दी एक सामान्य योजना में लगे थे और वह योजना थी हंस कूद कर अपनी अपनी चिंताओं को भुला देने की। मैं बैठकर इन सबके विषय में सोचने लगा; पूरे बन्दीग्रह में हँसी खेल कूद और ऊधम मचा हुआ था।

"यह कैसे", मैंने अपने मन में कहा, "कि यह सब इतने पापी तथा नीच खुशियाँ मना रहे हैं और मैं दुखी हूँ ? मैं भी उसी बन्दीग्रह में हूँ उनके साथ और मैं सोचता हूँ मुझे और अधिक प्रसन्न रहने का कारण भी है।"

इन विचारों में पड़ कर मैंने प्रसन्न रहने का प्रयत्न किया; पर सयत्न प्रसन्नता और अधिक दुखदायी होती है। अतएव जब मैं बन्दीग्रह के कोने में बैठा हुआ चिंतित सोच रहा था तो उन बन्दियों में से एक ने आकर मुझसे बात चीत शुरू कर दी। यह मेरा हमेशा से नियम रहा है कि जब कोई मुझ से बात चीत करना चाहता है तो मैं उसे इन्कार नहीं करता, क्योंकि यदि बात अच्छी होती है तो उसके विचारों से मैं स्वयं लाभ उठाता हूँ; और यदि बुरी होती है तो वह मेरे विचारों से सहायता ले सकता है। मुझे लगा कि यह आदमी निरा अपढ़ किन्तु जानकार है, उसे संसार का अथवा कहिये मानव स्वभाव के गलत पक्ष का पूर्ण ज्ञान था। उसने मुझसे पूछा कि क्या मैंने अपने लिये बिस्तर की व्यवस्था कर ली थी; यह एक ऐसी बात थी जिसके लिये मैंने कभी भी परवाह नहीं की।

"यह बुरा है" उसने कहा, "क्योंकि तुम्हें यहाँ बिछाने के लिए घास के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिलेगा और फिर तुम्हारी कोठरी बहुत बड़ी और ठंढी है। फिर भी तुम एक सज्जन आदमी मालूम पड़ते हो और चूँकि मैं भी अपने समय में ऐसा ही था अतएव मैं अपने बिस्तर के आधे कपड़े तुम्हारी सेवा में हाजिर करता हूँ।"

मैंने इस सज्जन मनुष्य को सम्पत्ति हीनता के कारण इस बन्दीग्रह में अपने दुर्भाग्य के दिन बिताते देखकर आश्चर्य प्रकट किया और उसकी उदारता के लिये उसे धन्यवाद दिया। मैंने उसे बताने के लिये कि मैं एक विद्वान आदमी था कहा, "पुराने जमाने में सज्जन लोग दुख के दिनों में साथ का मूल्य समझते थे, और वास्तव में" मैं कहता गया, "इस संसार का अर्थ क्या यदि हमें सदा सर्वदा एकान्त ही मिले!"

"तुम संसार की बात करते हो" मेरे बन्दी साथी ने उत्तर दिया, "संसार अभी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है; और फिर भी सृष्टि रचना अथवा विश्व की उत्पत्ति का सिद्धान्त हर युग में दार्शनिकों के लिये एक असाध्य समस्या रहा है। सृष्टि रचना के सम्बन्ध में कौन कौन से सिद्धान्त नहीं बने, पर सभी दार्शनिकों के प्रयत्न बेकार जा चुके हैं—"

"मुझे" मैंने कहा, "इस विद्वत्तापूर्ण बात में बाधा डालने के लिए क्षमा कीजिए; लेकिन मैं सोचता हूँ कि मैं यह सब एक बार सुन चुका हूँ। क्या मुझे आपको एक बार विल्ब्रिज मेले में देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है और क्या आपका नाम इफैस जेंकिन्सन नहीं है!" इस प्रश्न पर उसने केवल एक लम्बी साँस खींची। "मैं सोचता हूँ" मैंने फिर कहा, "कि तुम्हें डाक्टर प्रिमरोज का नाम तो अवश्य याद होना चाहिए जिससे तुमने मेले में एक घोड़ा खरीदा था!"

अब वह मुझे एकदम पहिचान गया; स्थान के अंधेरेपन और डूबते हुए सूरज के कारण वह मेरे चेहरे को पहले न पहचान सका था। "जी महाशय" मिस्टर जेंकिन्सन ने उत्तर दिया, "मुझे बहुत ठीक से याद है; मैंने एक घोड़ा खरीदा था पर उसके दाम देना भूल गया था; अगली पेशी में

मुझे केवल आप के पड़ोसी फ्लैमबोरो के मुकदमें का डर है; क्योंकि वह मेरे खिलाफ निश्चित रूप से मेरे रुपये बनाने के अपराध में गवाही दे रहा है। मुझे आपको वास्तव में किसी भी आदमी को ठगने का हृदय से दुख है; क्योंकि तुम देखते हो" उसने अपने बेड़ियों से कटे हुये निशान दिखाते हुये कहा—"मेरी तरकीबों ने मेरी कैसी दुर्दशा कर डाली है।"

"अच्छा" मैंने कहा, "तुमने मुझे अपना बिस्तर ऐसे अवसर पर दिया है जब कि तुमको बदले में मुझसे मिलने को कुछ भी उम्मीद नहीं है अतएव तुम्हारी इस भलाई के बदले में मैं अपने पड़ोसी फ्लैमबोरो की गवाही को या तो बिलकुल दबवा दूँगा या फिर कम करा दूँगा; इस काम के लिए मैं अपने लड़के को जल्दी ही उसके पास भेजूँगा; मुझे पूर्ण विश्वास है कि वह मेरी बात मान लेगा; और जहाँ तक मेरी गवाही की बात है, उसके लिये तुम्हें बिलकुल परेशान न होना चाहिए।"

"अच्छा महाशय" उसने उत्तर दिया, "इसके बदले में मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा करूँगा। तुम रात को मेरे आधे से ज्यादा कपड़े ले लेना, और मैं तुम्हारी मदद करूँगा, क्योंकि मैं समझता हूँ कि बन्दीग्रह में मेरा कुछ प्रभाव है।"

मैंने उसे धन्यवाद दिया, पर उसके चेहरे पर पूर्ण जवानी के चिन्ह देख कर मैं बिना अपना आश्चर्य प्रकट किए न रह सका; मैंने उसे जब मेले में देखा था तब उसकी आयु साठ के करीब लगती थी। "महाशय जी" उसने उत्तर दिया, "तुम संसार से बिलकुल परिचित नहीं; मैं उस समय अपने नकली बाल लगाये हुये था और सत्रह वर्ष से सत्तर वर्ष तक किसी भी आयु का भेष बना सकता था। महाशय जी! मैंने जितना प्रयत्न धूर्तता की इस कला को सीखने में किया था यदि इतना ही प्रयत्न कोई अच्छा काम करने में किया होता तो आज एक बहुत धनी आदमी होता। पर आज मैं एक धूर्त हूँ, फिर भी मैं तुम्हारी भलाई कर सकता हूँ और वह भी तब जब तुमसे उसकी बहुत कम आशा होगी।"

हम लोग आगे बात न कर सके क्योंकि इसी समय बन्दीगृह के एक नौकर ने आकर हम लोगों की हाजिरी ली और हम लोगों को ताले में एक एक करके बन्द करने लगा। एक आदमी ने थोड़ी सी घास लाकर मेरे बिस्तरे के लिए एक अंधेरी तथा सीलन से भरी हुई कोठरी के कोने में डाल दी। यहीं पर मैंने अपने बन्दी साथी द्वारा दिए हुये बिछौने को लगा दिया। कमरा बन्द होने के बाद मैंने अपने सरजक ईश्वर की बन्दना की और लेटने के बाद रात भर पूर्ण शान्ति के साथ सोता रहा।

२६

दूसरे दिन सबेरे जल्दी ही मेरे परिवार ने मुझे जगाया; मैंने उन्हें देखा कि वे अपनी आँखों से आँसू भरे हुये मेरे बिस्तर के पास बैठे हुए थे। लगता है हम लोगों के चारों तरफ छायी हुई निराशा से वे लोग भयभीत हो रहे थे। मैंने कोमलता के साथ उन्हें दुख सहने के लिए उत्साह दिलाते हुए विश्वास दिलाया कि मैं इससे अधिक शान्ति से इसके पहले कभी न सोया था; बाद को मैंने अपनो ओलीविया के बारे में पूछा जो उस समय उन लोगों के बीच नहीं थी। उन्होंने बताया कि कल की यात्रा के कारण उसे कुछ अधिक ज्वर हो गया है अतएव उसे वहीं छोड़ देना उचित समझा गया था। मेरा दूसरा काम था एक या दो कमरों का पता लगाना जो बन्दी-ग्रह से अधिक दूर नहीं और जिसमें मेरा परिवार आसानी से रह सके; इस काम के लिए मैंने अपने लड़के को भेजा। लेकिन वह केवल एक कमरा पा सका जो उसकी मां तथा बहिना के लिये किराये पर ले दिया गया, बन्दी-ग्रह के अधिकारी ने दया पूर्वक मेरे लड़के तथा मेरे बच्चों को मेरे साथ बन्दी ग्रह में रख लेना स्वीकार कर लिया। उनके लिये भी कमरे के कोने में बिस्तर तैयार किया गया और मेरे विचार से यह उनका काम आसानी से निकाल सकता था। मैं पहले यह जानने का इच्छुक था कि क्या मेरे छोटे बच्चे इस कमरे में आने के लिये तैयार थे क्योंकि बाहर से देखने पर यह कमरा बड़ा डरावना मालुम पड़ता था।

"अच्छा" मैंने पूछा, "बच्चो, तुम अपने इस बिस्तरे को कैसा पसन्द करते हो! मैं आशा करता हूँ कि तुम इस अंधेरे कमरे में लेटने से डरते नहीं होगे!"

"नहीं पिता जी" डिक ने कहा, "तुम्हारे साथ लेटने में मुझे कहीं डर नहीं है।"

"और मैं" बिल ने कहा, "जहाँ मेरे पिता जी आप रहेंगे, मैं वहीं सबसे ज्यादा रहना पसन्द करूँगा।"

इसके बाद मैंने अपने परिवार के हर आदमी को करने के लिये एक एक काम सौंप दिया। मैंने अपनी लड़की को विशेष कर उसकी बहिन के गिरते हुये स्वास्थ्य की देख रेख करने का काम सौंपा; मेरी पत्नी को मेरी देख रेख करनी थी; मेरे लड़के को मुझे किताब पढ़ कर सुनाने का काम दिया गया: "और जहाँ तक तुम्हारी बात है मेरे बेटे" मैं कहता गया, "हम सब तुम्हारे हाथों के परिश्रम पर ही आश्रित हैं। एक मजदूर के रूप में तुम्हारी रोज की मजदूरी सारे परिवार के लिये काफी रहेगी, इससे हम लोग आराम से जिन्दगी बिता सकेंगे। तुम अब सोलह वर्ष के हो चुके हो और तुममें शक्ति है; ईश्वर ने तुम्हें इसे बहुत भलाई पूर्ण काम करने के लिये दिया है; इससे तुम्हें अपने परिवार और बूढ़े मां बाप को भूखों मरने से बचाना है। अतएव आज शाम की कल के लिये मजदूरी तलाश कर लो, और हर शाम को जो रुपया तुम कमाओ, हम लोगों के पालन के लिये लाकर दो।"

इस तरह उसे सावधान करके शेष सबको एक एक काम सौंप देने के बाद बन्दीग्रह के बड़े कमरे में गया जहाँ पर पर्याप्त प्रकाश और वायु मिल जाती थी। मैं वहाँ अधिक देर तक बैठा न रह सका; तरह तरह की पशुता एवं नीचता भरी बातें सुनने से बचने के लिए मैं अपनी कोठरी में लौट आया यहाँ पर बड़ी देर तक बैठे बैठे इन नर राक्षसों की बातें सोचता रहा। इन लोगों ने शेष संसार से शत्रुता मान रखी थी और उनसे भविष्य में फिर युद्ध करने की तैयारी में लगे हुये थे।

इन सबकी चेतना शक्ति नष्ट हो चुकी थी और इन लोगों के कारण एक तरह से मेरे मस्तिष्क की बेचैनी भी कुछ दूर सी हो रही थी। मुझे लगा कि इनकी चेतना को जाग्रत करना मेरा बहुत अनिवार्य कर्तव्य है जो मेरे कंधों पर आ पड़ा है। मैंने अतएव एकबार फिर लौटने का इरादा किया और उनकी घृणा के बावजूद भी मैंने उनको सलाह देनी चाही; मैंने प्रतिज्ञा की कि मैं इनके इस अचेतन अंधकार को दूर करने का प्रयत्न करूँगा। अतएव एक बार उनके बीच में मैं फिर गया और मि० जेंकिन्सन से अपना विचार प्रकट किया, जिस पर वह बड़ी जोर से हँसा लेकिन उसने मेरी बात को सब तक पहुँचा दिया। मेरे प्रस्ताव को सब लोगों ने बड़ी हँसी के साथ स्वीकार कर लिया क्योंकि इससे उन लोगों को अपने मनोविनोद के साधनों में वृद्धि होने की आशा थी, वे लोग अपने नीचता एवं मनोविनोदों से ऊब गये थे।

अतएव मैंने उन्हें एक उपदेश दिया और मुझे श्रोतागण बहुत प्रसन्न दिखायी दिये। मेरे भाषण को सुन कर कोई फुसफुसाया किसी ने आँख मटकायी किसी ने मुंह बनाया किसी ने खाँस दिया और हर बार जोरों की हँसी हुई। फिर भी मैं अपनी स्वाभाविक गम्भीरता के साथ भाषण देता गया इस आशा से कि शायद किसी न किसी को कुछ लाभ हो ही जाय।

उपदेश सुना देने के बाद मैंने उसका अर्थ बताना शुरू किया इसका उद्देश्य केवल उन्हें प्रसन्न करना था उनमें सुधार करना नहीं। मैंने बताया कि मैं किसी अन्य व्यक्तिगत स्वार्थ से ऐसा नहीं कर रहा था वरन् उनके चरित्र का सुधार करना ही मेरा उद्देश्य था; अब मैं उनका साथी बन्दी था और इन उपदेशों के बदले में मुझे कुछ मिलना नहीं था। मैंने कहा कि उनको इस स्थिति में पाकर मुझे दुख है; इससे उन्हें कुछ मिलने के बजाय हानि की अधिक आशंका थी: "मेरे मित्रो, विश्वास रखो," मैंने कहा "तुम लोग मेरे मित्र हो, फिर भी संसार हम लोगों की मित्रता को चुनौती दे सकता है चाहे तुम अपनी मैत्री के लिए दस हजार

शपथें रोज लो इससे तुम्हारी जेब में एक कौड़ी भी नहीं आने की। तब हर बात में शैतान की कसम खाने का क्या अर्थ? उसकी मित्रता पाने का कैसा प्रयास? उसने तुम्हें यहाँ कुछ भी नहीं दिया केवल कुछ शपथों तथा भूखे पेट के अतिरिक्त; और जहाँ तक मेरा ज्ञान है वह तुम्हें ऐसी कोई चीज नहीं देगा जो इसके बाद तुम्हारा किसी तरह भला कर सके।

यदि कोई आदमी हम लोगों के साथ दुर्व्यवहार करता है तो हम स्वाभाविक रूप से दूसरी जगह जाते हैं। सचमुच मेरे मित्रो, ससार में सब से बड़ा बेवकूफ वह है जो किसी घर में चोरी करने के बाद चोर पकड़ने वालों के पास अपनी रक्षा के लिए जाता है। और फिर भी तुम कैसे अधिक समझदार हो? तुम सब उससे आराम पाने की सोच रहे हो जिसने तुम्हें पथ भ्रष्ट किया है, यह चोर पकड़ने वालों से भी बुरा प्राणी है जिसकी तुम लोग शरण में जाना चाहते हो; क्योंकि वे पहले तुम्हें पाप सिखाते हैं और फिर पाप के लिए दण्ड देते हैं; पर वह तुम्हें पाप सिखाता है, फांसी के तख्ते से लटकाता है और जो सबसे बुरी बात है वह यह है कि वह फिर भी तुम्हें नहीं छोड़ता।

जब मैंने अपना भाषण समाप्त कर लिया तो मेरे श्रोताओं ने मेरी बड़ी प्रशंसा की; उनमें से कुछ ने आकर मुझसे हाथ मिलाते हुए कसम खायी कि मैं एक बहुत ईमानदार आदमी था और उन्होंने मुझसे अधिक परिचित होने की इच्छा प्रकट की। मैंने अपना भाषण दूसरे दिन फिर देने का वचन दिया और सुधार की कुछ आशा मुझे जान पड़ी, क्योंकि मेरी राय है कि हर आदमी का सुधार हो सकता है; हर हृदय में सुधार की वृत्ति होती है, केवल जरूरत इस बात की रहती है कि सुधारक का लक्ष्य न्याय हो। जब मैं अपने कमरे में लौटा तो देखा कि मेरी पत्नी मेरे लिए कुछ रूखा सूखा भोजन तैयार कर रही थी; मि० जेन्किन्सन ने प्रार्थना की कि उसका भोजन भी हम लोगों के साथ ही बन जाय क्योंकि वह मुझसे बात चीत करना चाहता था। उसने अब तक मेरा परिवार नहीं देखा था; क्योंकि वे मेरे कमरे में एक संकरे दरवाजे से होकर आते थे

जिससे उन्हें बड़े कमरे से होकर न जाना पड़े। अतएव जेन्किन्सन पहली भेंट में मेरी छोटी लड़की के सौन्दर्य से जरा भी प्रभावित नहीं हुआ; उसने मेरे छोटे बच्चों को ध्यान से देखा।

"अरे डाक्टर" उसने कहा, "इतने सुन्दर लड़के इस स्थान में रहने लायक नहीं।"

"क्यों मि० जेन्किन्सन" मैंने उत्तर दिया "ईश्वर की कृपा से मेरे लड़के धर्म सम्बन्धी विषयों में काफी अच्छे हैं; और यदि वे इस विषय में अच्छे हैं तो और पक्षों में खराब होना भी कोई ज्यादा माने नहीं रखता।"

"मैं कल्पना करता हूँ" मेरे बन्दी साथी ने कहा "तुम्हें अपने इस छोटे परिवार को अपने पास पाकर बड़ी प्रसन्नता होती होगी।"

"प्रसन्नता! मि० जेन्किन्सन", मैंने उत्तर दिया, "हाँ वास्तव में मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है और मैं सारे संसार की सम्पत्ति पाकर भी इन्हें नहीं छोड़ सकता, क्योंकि जहाँ वे रहते हैं एक अंधेरी कोठरी महल में बदल जाती है। संसार में मेरी प्रसन्नता को कम करने का केवल एक ही अकेला उपाय है और वह है इन बच्चों को आघात पहुँचाना।"

"तब मुझे डर लगता है श्रीमान जी" उसने कहा "मैं कुछ सीमा तक अपराधी हूँ, क्योंकि" उसने मेरे लड़के मोजेज की तरफ देखते हुए कहा "मैं तुम्हारे इन बच्चों में से एक को चोट पहुँचा चुका हूँ और इस अपराध के लिए मैं उससे क्षमा चाहता हूँ।"

मेरे लड़के ने तुरन्त उसकी आवाज तथा चेहरे को पहचान लिया यद्यपि पहली बार उसने उसे भेष बदले हुए देखा था और उसका हाथ पकड़ कर मुस्कराते हुए उसने उसे क्षमा कर दिया। "फिर भी" वह कहता गया, "मुझे आश्चर्य होता है कि तुमने मेरे चेहरे पर ऐसी कौन सी चीज देखी थी जिसे तुमने मुझे अपनी ठगी के योग्य समझ लिया।"

"मेरे दोस्त" दूसरे ने उत्तर दिया, "तुम्हारे चेहरे को देख कर नहीं, वरन तुम्हारे सफेद मोजों तथा सर पर बँधे हुए काले फीते को देख कर मैंने ऐसा किया था। लेकिन तुम्हें इस पर आश्चर्य न करना चाहिए,

मैंने अपने समय में तुमसे भी अधिक बुद्धिमान आदमियों को ठगा है। मेरी यह चातुरी कितने दिन चल पाती और आज उसी के फलस्वरूप मैं यहाँ उपस्थित हूँ।"

"मैं सोचता हूँ" मेरे लड़के ने कहा "तुम जैसों की जीवनी बड़ी ही आकर्षक और नसीहत मन्द होगी।"

"नहीं ऐसी कोई बात नहीं" मि॰ जेंकिन्सन ने उत्तर दिया। "वे सम्बन्ध जो केवल मनुष्य जाति के कपट और चालाकी का वर्णन करते हैं हम लोगों को जीवन के प्रति अधिक संदेह शील बना कर हमारी सफलता को कम कर देते हैं। वह यात्री जो मार्ग में मिलने वाले हर व्यक्ति का अविश्वास करता है, और हर ऐसे आदमी की सूरत देख कर जो उसे देखने में डाकू जान पड़ता है, लौट आता है अपनी मंजिल पर कभी भी नहीं पहुँचता।"

"मैं अपने बहुत बचपन से ही चालाक समझा जाता था; जब मैं केवल सात साल का ही था तो औरतें मुझे छोटा किन्तु पूर्ण मनुष्य कहती थीं, चौदह साल की आयु में दुनियाँ पहचान चुका था, अपनी टोपी उछालता तथा औरतों से प्यार करता था; बीस बरस की आयु में मैं यद्यपि पूर्ण ईमानदार था, पर हर एक मुझे बहुत चालाक समझता था और कोई मुझ पर जरा भी विश्वास न करता था। इस तरह मुझे अपनी ही रक्षा के लिए धूर्तता और चालाकी अपनानी पड़ी और तबसे मेरा दिमाग हमेशा दूसरों को ठगने की तरकीबें सोचने में तथा मेरा हृदय पहचाने जाने के भय से डरने में लगा रहता। मैं तुम्हारे सरल और ईमानदार पड़ोसी फ्लैमबोरो के ऊपर अकसर हँसता, और एक अथवा दूसरे उपाय से साधारणतया वर्ष में एक बार अवश्य ठग लेता। फिर भी वह ईमानदार आदमी जिसने कभी संदेह नहीं किया धनी होता गया और मैं जो तरह तरह से ठगी करता रहता था गरीब होता गया और ईमानदार होने का भी संतोष न रख सका। फिर भी, वह कहता गया "मुझे बताओ, तुम्हें किस कारण से यहाँ आना पड़ा; शायद मुझमें स्वयं बन्दीग्रह से

बाहर सुरक्षित रहने का कौशल नहीं है लेकिन मैं अपने मित्रों को यहाँ से निकाल सकता हूँ।"

उसके पूछने पर मैंने अपनी सारी दुर्घटनाएँ उससे कह दीं और बताया कि मैं असाध्य परिस्थितियों में फँस गया हूँ जिनसे निकल पाना मेरे लिए असम्भव है।

मेरी कहानी सुनने के बाद उसने अपना मत्था ठोका जैसे कि उसको कोई पार्थिव उपाय सूझ पड़ा हो; वह उठ कर यह कहता हुआ चला गया कि जो कुछ उससे बन पड़ेगा हम लोगों के लिए करेगा।

२७

दूसरे दिन सबेरे मैंने बन्दियों के चरित्र सुधार की अपनी इस योजना को अपनी पत्नी तथा बच्चों के सामने रखा जिसका सब ने एक मुख होकर विरोध किया और कहा कि मेरी यह योजना असम्भव और अनुपयुक्त थी; उन्होंने मुझसे यह विचार छोड़ने की बात कही क्योंकि इससे उनका सुधार नहीं हो सकता था, वरन उलटे मेरी हँसी होती।

"मुझे क्षमा कीजिए" मैंने कहा, "यह पतित चाहे कितने ही क्यों न हो गए हों पर हैं आखिर आदमी ही; और मेरा प्यार पाने के लिए इतना होना बहुत काफी है। जब अच्छी सलाह अस्वीकृत होकर लौटा दी जाती है तो देने वाले के हृदय को और विकसित करती है; और चाहे मैं जो सीख देता हूँ उससे उनका सुधार न हो लेकिन निश्चित रूप से मेरा तो सुधार होगा ही। यदि मेरे यह अभागे बच्चे राजकुमार होते तो उनको उपदेश देने वाले हजारों हो जाते, किन्तु मेरी राय में एक गंदी अँधेरी कोठरी में रहने वाला हृदय राजसिंहासन पर बैठने वाले हृदय से अधिक मूल्यवान होता है। हाँ मेरे बच्चों, यदि मैं उनका सुधार कर सका तो जरूर करूँगा : शायद वे सब मुझसे घृणा करेंगे। यदि उनमें से एक को भी ऊपर उठा सका तो मैं अपना प्रयत्न सफल समझूँगा, क्योंकि मानव आत्मा से अधिक मूल्यवान वस्तु संसार में और कौन सी है!"

इतना कह कर मैं बड़े कमरे में चला आया जहाँ पर बैठे हुए शेष बन्दी प्रसन्नता पूर्वक मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे, उनमें से हर एक जेल की कोई न कोई चाल डाक्टर के ऊपर चलाने के लिए तैयार बैठा था। इस तरह, जब मैं शुरू करने जा रहा था एक ने मेरा साफा खींच लिया और बाद में क्षमा मांगने लगा जैसे उसने अनजाने ऐसा कर दिया हो। एक दूसरे ने जो मुझसे कुछ दूर पर खड़ा था ऐसा जोर से थूका कि थूक के सारे छींटे मेरी पुस्तक पर गिर पड़े। एक तीसरा बीच बीच 'ऐसा ही' कह देता और इस पर दूसरे लोग हँस देते। चौथा आकर चुपके से मेरी जेब से मेरा चश्मा निकाल लेता। लेकिन वहाँ पर एक ऐसा भी था जिसकी चाल से सब को मजा आया, क्योंकि जिस तरह मैं मेज पर अपनी पुस्तकें रखता था उसी तरह उसने भी अपनी एक पुस्तक रखकर मेरी निकाल ली। पर मैं उनकी इन बातों की ओर जरा भी ध्यान नहीं देता था और अपनी बात पूर्ण विश्वास तथा धैर्य के साथ कहता जाता था इस विश्वास से कि यदि मेरे इस प्रयत्न में कोई हंसने की बात होगी भी तो दो चार बार के प्रयोग के बाद उस पर किसी को हंसी न आएगी और जो गम्भीर बात होगी उसका स्थायी प्रभाव पड़ेगा। मेरी योजना सफल हुई और छः दिन के अन्दर ही कुछ ने प्रायश्चित कर लिया और कुछ ने मेरी बातों में ध्यान देना शुरू कर दिया।

अब मुझे अपने उद्योगों और अपने उपदेशों की सफलता पर हर्ष हुआ, सभी मानव अनुभूतियों से पूर्ण वंचित इन पतितों में चेतना का संचार करने में मैंने अपने को गौरवान्वित समझा। मैं अब उनकी सांसारिक सेवा करना चाहता था जिससे उनका जीवन अधिक सुविधामय हो जाय। उनका अब तक का समय भूखों मरने, अतिक्रमणों, भयानक झगड़ों, तथा पश्चात्ताप पूर्ण कार्य करने में विभाजित था। उनका एक मात्र पेशा आपस में लड़ना, जुआ खेलना तथा समय पड़ने पर चोरी करना था। मैंने इन सब के लिए किसी न किसी तरह के काम की व्यवस्था जेल के अन्दर ही कर दी, जिससे

यद्यपि उनको अधिक आय न हो पाती थी फिर भी उनके खाने भर के लिए काफी हो जाता।

मैंने इतने ही से संतोष नहीं किया वरन् अनैतिकता के लिए स्वल्प आर्थिक दण्ड तथा विशेष अच्छे कार्यों के लिए विशेष पुरस्कारों की व्यवस्था की। इस तरह एक पखवारे के अन्दर ही मैंने उनमें बहुत कुछ सामाजिक तथा मानवीय गुण पैदा कर दिए। मुझे अपने आप को इस समाज का एक सफल नियामक पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैंने इनमें इनकी आदि भयानकता को नष्ट कर मैत्री और आज्ञा पालन के गुण पैदा कर दिए।

मेरी बड़ी इच्छा थी कि मेरे इन नियमों से इन लोगों की कठोरता का आभास होने के स्थान पर इनमें सुधार की भावना जागृत हो, क्योंकि साधारणतया कहा जाता है कि सुधार की भावना से बनाए हुए कानूनों का अधिक कठोर होना कभी कभी अपने वास्तविक लक्ष्य से असफलता की ओर ले जाता है।

मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि यहाँ के बन्दी ग्रहों में एक पूर्ण परिवर्तन वांछनीय है; क्योंकि देखा गया है कि इनमें एक छोटे से अपराध के कारण जाने वाला बन्दी जीवित निकलने का अवसर पाता है तो एक नहीं अनेक अपराधों में निपुण होकर निकलता है। इस तरह से यह बन्दीग्रह सुधारग्रह होने के स्थान पर अपराधों के शिक्षालय हैं। हम लोगों को अन्य योरोपीय देशों के बन्दीग्रहों की नकल करनी चाहिये जहाँ पर बन्दीग्रहों में पापी अपराधियों को प्रायश्चित कराके मनुष्य बनाया जाता है और निर्दोष अपराधियों को अनेक गुणों की शिक्षा का आयोजन है। एक राज्य के चरित्र को उठाने के लिए इन्हीं उपायों का आश्रय लेना चाहिए; दण्ड में कठोरता की वृद्धि प्राय: अपराधों और फलस्वरूप अत्याचारों को बढ़ाती है। छोटे छोटे अपराधों के लिए कठोर दण्ड देने की व्यवस्था को भी मैं बिना चुनौती दिए नहीं रह सकता। हत्याकाण्डों में मृत्युदण्ड न्याय है। आत्मरक्षा का अधिकार सबको है अतएव दूसरे

के इस अधिकार को छीनने वाले से यदि उसका भी यह अधिकार छीना जाता है तो उचित ही है। इन सबके विरुद्ध सारी प्रकृति उठ खड़ी होती है, लेकिन हमारी सम्पत्ति को चुराने वाले के विरुद्ध ऐसा नहीं होता। प्राकृतिक विधान दूसरे की जिन्दगी लेने का अधिकार हमें नहीं देता, लेकिन एक घोड़ा जब चुरा लिया जाता तो जैसे वह मेरा होता है वैसे ही उसका भी हो जाता है। और यदि तब मुझे कोई अधिकार है तो वह हम दोनों के बीच हुए समझौते के अनुसार होना ही चाहिए कि जो कोई दूसरे का घोड़ा चुरा लेगा मार डाला जायगा? आदमी को न तो अपनी जान देने का ही अधिकार है और न दूसरे की जान लेने का, क्योंकि यह उसकी सम्पत्ति नहीं है, वह इसकी अदला बदली नहीं कर सकता। इसके अतिरिक्त यह समझौता अनुचित और अपूर्ण है और वर्तमान समानता के न्यायालय भी इसे अवैध घोषित कर देंगे क्योंकि दोनों आदमियों का जिन्दा रहना अधिक जरूरी है। लेकिन एक समझौता दो आदमियों के बीच में गलत है तो दो हजार और दो लाख आदमियों के बीच भी गलत होगा; क्योंकि जिस प्रकार दस करोड़ वृत्त मिलकर भी एक वर्ग नहीं बना सकते इसी तरह हजारों आदमियों की सामूहिक ध्वनि भी गलत बात को सत्य सिद्ध नहीं कर सकती। असभ्य लोग जिनका केवल प्राकृतिक विधान द्वारा नियमन होता है एक दूसरे की जिन्दगी का खयाल रखते हैं; वे अपने प्रति किये गए किसी क्रूरता पूर्ण कार्य का बदला लेने के अतिरिक्त कदाचित् ही कभी खून खराबी और मारकाट करते हैं।

हमारे सैक्शॅन पूर्वज जो युद्ध में बड़े भयानक और निर्दय थे शान्ति-काल में एक भी हत्या नहीं करते थे; और उसके बाद होने वाली सभी सरकारों में जिन पर प्रकृति के चिन्ह अब भी पर्याप्त रूप से शेष रह गये थे, बड़ी मुश्किल से कोई अपराध मृत्यु दण्ड के योग्य समझा जाता था।

केवल हम लोगों के सभ्य कहे जाने वाले समाज में ही, ऐसे दण्ड विधान हैं जो धनी वर्ग के हाथ में हैं और उन्हें गरीबों पर निर्दयता से लागू

किया जाता है। सरकार ज्यों ज्यों पुरानी होती जाती है उसमें पुराने-पन का चिड़चिड़ा पन आता जाता है और जैसे हमारी सम्पत्ति-वृद्धि के अनुपात में और महँगी हो गयी हो—जैसे हमारी सम्पत्ति जितनी ही अधिक होती है हमारा भय भी उतना ही बढ़ जाता है—हमारे सारे स्वामित्व नित्य नए बनने वाले कानूनों के साथ सीमित होते जाते हैं, और इनके हर एक उल्लघन करने वालों को मृत्युदण्ड का भय बना रहता है।

हमारे इस देश में अपराधियों की संख्या अन्य योरोपीय आधे देशों की सम्मिलित अपराधी संख्या से अधिक होती है, मैं नहीं कह सकता कि यह हमारे देश के दण्ड विधानों की बहुतायत के कारण है अथवा हमारी जनता की धूर्त वृत्ति के कारण। शायद यह दोनों ही कारण है; क्योंकि वे आपस में एक दूसरे की सृष्टि करते हैं। जब अविवेकी और अव्यवस्थित दण्ड विधानों के कारण जनता देखती है कि अनेक तरह के छोटे अथवा बड़े अपराधों में एक ही दण्ड दिया जाता है, तो वह दण्ड में विभेदन देख पाने के कारण अपराधों में भी विभेद करने का ज्ञान खो बैठती है; और अपराधों में विभेद करने का ज्ञान ही नैतिकता की आधार शिला है; इन दण्ड विधानों की बहुतायत से नये नये अपराधों का आविष्कार होता है और इन नये अपराधो को रोकने के लिये और नये कानून की जरूरत पड़ती है।

अतएव प्रयत्न यह होना चाहिए कि बजाय अपराधों को रोकने के लिये नये कानून बनाए जाँय: समाज की लगाम को इतना अधिक खींचे कि उसमें विप्लव हो जाय, अपराधियों को उनकी उपयोगिता को परीक्षा लेने के पहले ही समझ कर उनको समाज से बाहर निकाल दिया जाय; सुधार करने का प्रयत्न करने के पहले बदला ले लिया जाय।

—प्रयत्न यह होना चाहिये कि हम शासन को अपराध रोकने की कला की परीक्षा करें, कानूनों को जनता का रक्षक और त्राता बनाएँ उनको दुख देने वाला और उनके साथ अत्याचार करने वाला नहीं।

जब हमें पता लगेगा कि वे लोग, जिनकी आत्मा को हम कलुषित मानते हैं केवल एक परिष्कार करने वाले की सहायता पाने से भले हो सकते हैं : तब हमें पता लगेगा कि यह अपराधी जो अवलम्बी सजायें भुगत रहे हैं, यदि इनके साथ उचित बर्ताव किया जाय तो राज्य की विपत्ति के दिनों में उसकी रक्षा कर सकते हैं; हमें पता लगेगा कि जिस तरह उनके चेहरे हमारे ही तरह हैं वैसे वैसे ही उनकी आत्मा भी हम लोगों की तरह ही हैं; ऐसा कोई नीच आदमी नहीं है जिसका सुधार न हो सके; ऐसी दशा में समाज की सुरक्षा बिना थोड़ा सा रक्तपात किये भी सम्भव हो सकता है।

२८

बन्दी ग्रह में रहते हुए मुझे एक सप्ताह होने को आया था लेकिन मेरी बड़ी लड़की ओलीविया मुझसे एक बार भी मिलने के लिए नहीं आई थी और मेरी उसे देखने की बड़ी इच्छा थी। मैंने अपनी पत्नी से यह बात कही और दूसरे दिन ओलीविया अपनी बहिन के कंधे के सहारे झुकी हुई मेरे कमरे में आई। उसके चेहरे पर अद्भुत परिवर्तन देख कर मुझे दुख हुआ। उसके मुख का असीम सौन्दर्य अब विलीन हो चुका था और मुझे लगा कि वह दिन रात मृत्यु के निकट पहुँचती जा रही है, मैं घबड़ाया। उसकी कनपटी बैठ गई थी, माथा सूख गया था और उसके गाल बुरी तरह से पीले हो गए थे।

"मुझे तुम्हें देखकर खुशी है, बेटी" मैंने कहा, "लेकिन लिवी तुम इतनी निराश क्यों हो? प्यारी बेटी, तुम से मैं आशा रखता हूँ कि तुम मेरा इतना अधिक ध्यान रखती हो कि इस तरह से निराश पूर्ण चेहरा बनाकर तुम मुझ जैसे वृद्ध को दुखी कर शीघ्र मरने में मदद न करोगी। तुम प्रसन्न रहा करो; मुझे आशा है हम लोगों के दिन अभी फिर लौटेंगे।"

"आप मुझ पर" उसने उत्तर दिया "हमेशा दयालु रहे हैं, और यह सोच कर कि मैं आप के साथ आने वाले सुखी दिनों तक जीवित न रह सकूँगी मुझे दुख होता है। मैं डरती हूँ, प्रसन्नता और सुख मेरे लिए इस

धरती पर अब नहीं रह गये; और मैं ऐसी जगह से जहाँ पर दुख ही दुख है अपना पीछा छुड़ाना चाहती हूँ। वास्तव में पिता जी, अब मैं चाहती हूँ कि आप मिस्टर थार्नहिल से उचित समझौता कर लें; इससे वह शायद आपके ऊपर कुछ दया करने को तैयार हो जाय, इससे मुझे मरने में शान्ति मिलेगी।"

"कभी नहीं बेटी" मैंने उत्तर दिया, मैं अपनी पुत्री को कभी भी वेश्या बनाना नहीं स्वीकार कर सकता; क्योंकि चाहे संसार तुम्हारी गलती पर घृणा करे पर मैं इसे सहज विश्वास की एक भूल मानता हूँ पाप नहीं। बेटी, मैं इस स्थान पर किसी तरह दुखी नहीं हूँ; और विश्वास रखो, जब तक तुम जीवित हो वह मुझसे दूसरे विवाह की स्वीकृति नहीं पा सकता।"

मेरी लड़की के चले जाने के बाद मेरा एक बन्दी साथी जो इस अवसर पर उपस्थित था मुझे मेरी ऐसी जिद के लिये जिसके न करने से मैं मुक्त हो सकता था, बुद्धिमानी से समझाने लगा; आखिर थोड़ा सा झुक जाने की ही बात तो थी। उसने कहा कि शेष परिवार की शान्ति का बलिदान परिवार के एक सदस्य की शान्ति के लिए अनुचित था और फिर वह भी ऐसा सदस्य था जिसने मुझे दुख पहुँचाया था।

"इसके अतिरिक्त" उसने आगे कहा, "मैं यह नहीं जानता कि इस तरह पति और पत्नी के सम्बन्ध में बाधा देना कहां तक उचित है, जो तुम इस समय एक ऐसी सगाई में अपनी अनुमति न देकर कर रहे हो जिसे तुम इस कारण रोक नहीं सकते, पर दुखमय बना सकते हो।"

"महाशय" मैंने उत्तर दिया, "हम लोगों को दुखी करने वाले आदमी को तुम नहीं जानते। मैं भली भाँति जानता हूँ कि मैं अपने को चाहे जितना झुका सकूं पर मेरी स्वतन्त्रता एक घन्टे के लिए भी मुझे नहीं मिल सकती। मुझे बताया गया है कि इसी कमरे में पिछले साल ही उनका एक कर्जदार भूखों मर गया है। यद्यपि मेरा इस विषय में झुकना और स्वीकृति देना मुझे यहाँ से ले जाकर उसके सबसे ज्यादा सजे हुए कमरे में बैठा सकता है लेकिन फिर भी मैं कुछ नहीं चाहता; क्योंकि मेरी आत्मा

कहती है कि इस सब करने का अर्थ होगा व्यभिचार को खुली छूट देना। जब तक मेरी बेटी जीवित है उसका कोई भी विवाह मेरी आखों में वैध नहीं होगा। यदि वह मर जाती, और तब मैं यदि उनके विवाह सम्बन्ध में बाधा पहुँचाता तो निश्चित रूप से मैं एक महानीच होता। नहीं तब मैं उस दुष्ट के विवाह के लिए प्रयत्न भी करता जिससे कि वह आगे व्यभिचार न कर सके। लेकिन अब ऐसी स्थिति में, मैं यदि केवल जेल से बचने के लिए ऐसी स्वीकृति दूँ जिससे कि मेरी बेटी तिल तिल कर मर जाय तो मैं कितना क्रूर नीच और स्वार्थी बाप कहलाऊँगा; और इस तरह एक दुख से बचने के लिए, मैं अपनी बच्ची का हजारों दुखों से दिल तोड़ दूँ!"

वह मेरे इस उत्तर के औचित्य से सहमत तो हो गया पर उसने फिर कहा कि उसे डर है कि मेरी लड़की वैसे ही मुझे बहुत दिन जेल में रखने के लिए नष्ट हो चुकी है। "फिर भी" वह कहता गया "यद्यपि तुम भतीजे के सामने झुकने से इन्कार करते हो, मुझे आशा है कि तुम उसके चाचा से जो राज्य भर में अपने औचित्य और न्याय के लिये प्रसिद्ध है, अपनी फरियाद कर ही सकते हो। मैं तुम्हें सलाह दूँगा कि तुम उसके भतीजे के सारे दुर्व्यवहार की सूचना एक चिट्ठी में लिख कर डाक से उसके पास भेज दो; और मेरी कसम, तुम्हें तीन दिन में ही जवाब मिल जायगा।" मैंने उसकी इस सलाह के लिए धन्यवाद दिया और तुरन्त ऐसा करने के लिए तैयार हो गया; मुझे कागज की जरूरत था और अभाग्य से सारे पैसे खाने पीने का सामान लेने में खर्च हो गए थे; उसने किसी तरह मेरे लिए कागज़ ला दिया।

आने वाले तीन दिनों तक मुझे बराबर इस बात को जिज्ञासा और कौतूहल रहा कि मेरे पत्र का क्या असर होता है; लेकिन इस बीच मेरी पत्नी बार बार मेरे पास आकर मुझे नम्बरदार महोदय से क्षमा मांगने के लिए उकसाती रहती मेरी बड़ी लड़की के गिरते हुए स्वास्थ्य की सूचना पाकर मेरी चिन्ता भी बढ़ती जाती। तीसरा और चौथा दिन भी बीत गया, लेकिन मेरे पत्र का कोई उत्तर न मिला: मुझ जैसे एक अनजान व्यक्ति की फरयाद

अपने प्यारे भतीजे के विरुद्ध वह सुन सकता है इसकी मुझे अधिक आशा न रही; इस कारण मेरी पहले की आशाओं की तरह मेरी यह आशा भी विलीन हो गयी। मेरा दिमाग अब भी बिलकुल सही था, यद्यपि दिन रात बन्द रहने और गन्दी हवा में सांस लेने से मेरा स्वास्थ्य खराब होने लगा था और मेरे आग में जले हुए हाथ में अब अधिक तकलीफ हो रही थी मेरे बच्चे जब मैं घास पर लेटा हुआ रहता तो मुझे बारी बारी से पढ़कर सुनाते रहते या मेरी बातों को सुनते और मेरे आदेशों से रोने लगते थे। लेकिन मेरी लड़की का स्वास्थ्य मुझ से ज्यादा जल्दी खराब हो रहा था। उसकी हर खबर से मेरी पीड़ा और दुख बढ़ता था। सर विलियम थार्नहिल को पत्र लिखने के पांचवें दिन मुझे यह सुन कर कि मेरी लड़की की आवाज बन्द हो गयी है बड़ी घबड़ाहट हुई। अब मुझे बन्द रहना दुख देने लगा; मेरी आत्मा बेटी के तकिये के पास खड़ी होने के लिये तड़प रही थी; मैं चाहता था कि मैं उसके पास जाकर उसे संतोष और उत्साह दिलाऊँ, उसकी अन्तिम इच्छाएँ सुन सकूँ और उसकी आत्मा को सीधे स्वर्ग जाने का मार्ग बताऊँ। दूसरी खबर आयी : वह अब चलने को थी प्राण पखेरू उड़ना चाहते थे और मैं उसके पास खड़े होकर रो भी न सकता था। मेरा एक बन्दी साथी कुछ देर बाद आखिरी खबर लेकर आया। उसने मुझे धैर्य रखने को कहा : वह मर चुकी थी—दूसरे दिन सबेरे वह लौटा और मुझे मेरे दोनों छोटे बच्चों के साथ पाया, मेरे अब यही साथी थे और मुझे संतोष देने के लिये हर तरह के भोले भोले प्रयत्न कर रहे थे। वे मुझे पढ़कर सुना रहे थे और मेरे आंसू पोंछते हुये मुझे चुप कर रहे थे क्योंकि मैं इस समय रो रहा था। "और क्या अब मेरी बहिन एक देवी नहीं है, पिता जी? मेरी इच्छा है कि पिता जी हम सब तुम्हारे साथ यहाँ से भाग चलें।"—"हां" मेरे सबसे छोटे बच्चे ने कहा "स्वर्ग जहाँ पर मेरी बहिन चली गयी है इस जगह से बहुत अच्छा है, वहाँ पर सब अच्छे आदमी हैं, यहाँ पर सब बुरे आदमी हैं।"

मि० जेंकिन्सन ने उनकी इन भोली भाली बातों को रोकते हुये मुझ

से कहा कि अब मेरी लड़की मर चुकी थी, मुझे अपने शेष परिवार के विषय में गम्भीरता से सोचना चाहिये और अपने समाप्त होते हुये जीवन को जो आवश्यक खाद्यों और स्वच्छ हवा के अभाव में दिन दिन जल्दी ढलता जा रहा था बचाने का यत्न करना चाहिये। उसने आगे कहा कि मुझे अपने लिये नहीं वरन् अपने बच्चों के लिये जो अपनी रोटी और कपड़े के लिये मुझ पर आश्रित थे अपने स्वाभिमान और क्रोध का बलिदान कर विचार और न्यायपूर्वक नम्बरदार महोदय से समझौता कर लेना चाहिये।

"ईश्वर साक्षी है" मैंने उत्तर दिया मुझ में अब कोई गर्व शेष नहीं रहा : यदि मैं अपने में गर्व या क्रोध का एक छींटा भी पाऊँ तो मैं अपने हृदय से घृणा करने लगूँ। मुझे सताने वाला मेरे धर्म क्षेत्र का निवासी रह चुका है, मैं आशा रखता हूँ कि एक दिन उसकी आत्मा को ईश्वर के न्यायालय में उसकी गलती स्वीकार करने के लिये बाध्य करूँगा। नहीं महाशय, मुझ में अब जरा भी क्रोध नहीं रह गया है; और यद्यपि उसने मुझसे मेरा सर्वाधिक प्रिय कोष छीन लिया है, यद्यपि उसने मेरे हृदय को बहुत बुरा आघात पहुँचाया है—क्योंकि मैं तकलीफ से मरा जा रहा हूँ—बहुत दुखी हूँ, बड़ा क्लेश है मेरे बन्दी साथी, मुझे बड़ा आत्मिक क्लेश है—लेकिन फिर भी मुझमें जरा भी बदला लेने की इच्छा नहीं है। मैं उसके विवाह की अनुमति देने को राजी हूँ और यदि मेरे इतना झुकने से उसे कुछ आनन्द मिल सकता है तो उससे कहो कि मैं अपने अपराधों के लिये यदि मैंने कोई अपराध किया है तो क्षमा मांगता हूँ।"

मि० जेंकिन्सन ने कलम दावात उठायी और मेरे इस क्षमादान को लिख दिया; मैंने अपने हस्ताक्षर कर दिये। मेरा लड़का यह पत्र लेकर मि० थार्नहिल के पास भेजा गया, वे इस समय देहात का दौरा कर रहे थे। वह गया और लगभग छः घन्टे में एक मौखिक उत्तर लेकर लौट आया। उसने बताया कि उसे नम्बरदार महोदय से मिलने में काफी कठिनाई हुई थी क्योंकि उनके नौकर भी हम लोगों से नाराज थे और

संदेह करते थे : लेकिन वह अपनी तीन दिन बाद होने वाली शादी के इन्तजाम में लगा था और तभी उसने मुझे देख लिया। वह मुझसे बताता गया कि उसने बड़े विनीत भाव से मि० थार्नहिल को पत्र दिया था जिस पर उन्होंने कहा था कि वह पत्र उनके लिये तब बिलकुल बेकार था; उसने कहा कि वह मेरे चाचा के पास भेजे हुये प्रार्थना पत्र को सुन चुका था जिसको उचित रूप से ही फाड़कर फेंक दिया गया था; शेष पत्र व्यवहार उसने बताया कि उसके सहायक से होना चाहिये उसके पास सीधे कोई पत्र नहीं भेजा जाय। उसने बताया कि मेरी दोनों लड़कियों के विषय में उसकी बहुत अच्छी राय थी और वे बहुत अच्छी मध्यस्थ हो सकती थीं।

"देखा महाशय" मैंने अपने बन्दी साथी से कहा, "तुम्हें अब मेरे सताने वाले के स्वभाव का पता लगा होगा। वह एक साथ ही झूठ भी बोल सकता है और क्रूरता भी कर सकता है। लेकिन कोई चिन्ता नहीं, उसे मेरे साथ मन चाहा बर्ताव कर लेने दो; मैं हर ताले और कारागार के रहते हुये भी बहुत शीघ्र मुक्त होने वाला हूँ। मैं अब उस निवास की तरफ बढ़ रहा हूँ जो अधिक प्रकाशवान है : यह आशा मेरे कष्टों को दूर कर रही है; और यद्यपि मैं एक बेसहारा अनाथ परिवार छोड़े जा रहा हूँ फिर भी वह पूर्ण परित्यक्त नहीं होंगे। कोई न कोई मित्र मेरे कारण उनकी सहायता अवश्य करेगा और कोई न कोई दया पूर्वक उन्हें उनके स्वर्गीय बाप की आत्मा की शांति के लिये उनका पोषण करेगा ही।"

जब मैं यह कह ही रहा था कि मेरी पत्नी मुझे दिखायी पड़ी, उसे मैंने एक दिन पहले से नहीं देखा था, वह बोलने का प्रयत्न कर रही थी पर बोल न पा रही थी। "क्यों मेरी प्रियतमे" मैंने कहा "तुम अपने दुखों से मुझे कष्ट क्यों दे रही हो ? क्या हुआ, यदि मुझे इसी स्थान में मर जाना लिखा है तो मर जाऊँगा, यद्यपि हमारी प्यारी बेटी मर चुकी है फिर भी तुम्हें मेरे मरने के बाद इन बच्चों के साथ रह कर संतोष होगा।" —"सचमुच हम लोग, अपनी प्यारी बेटी से वंचित हो गए हैं" उसने

उत्तर दिया "मेरी सोफिया भी हम लोगों के पास से चली गयी; हमसे छिना ली गयी, दुष्ट लोग जबरदस्ती खींच ले गए।"—"कैसे देवि" मेरा बन्दी साथी चिल्ला उठा "कुमारी सोफिया को दुष्ट लोग पकड़ ले गए। सचमुच ? क्या यह सही है ?"

उसने खुली आंखों से आंसू की धारा बहाते हुए उत्तर दिया लेकिन एक बन्दी की स्त्री जो उसके साथ आयी थी उसने पूरी घटना का वर्णन किया। उसने बताया वह जब मेरी पत्नी तथा मेरी बेटी के साथ बड़ी सड़क पर शहर से कुछ दूर टहलती हुई जा रही थीं तो एक बग्घी उनके पास आकर रुकी; जिसमें से अच्छे कपड़े पहने हुए एक आदमी, मि० थार्नहिल नहीं, उतरा और कमर पकड़ कर उसे जबरदस्ती अन्दर घुसेड़ ले गया तथा बग्घी भगा दी जिससे थोड़ी ही देर में वह निगाह से ओझल हो गए।

"अब" मैं चिल्ला पड़ा "अब मेरे क्लेशों की सीमा पार हो चुकी, अब संसार की कोई शक्ति मुझे इससे बड़ा कष्ट नहीं दे सकती ! क्या एक भी नहीं बची ?—मेरे बाद एक भी नहीं ! धूर्त !—मेरी बेटी, मेरी हृदय से प्यारी बेटी ! एक देवी सा सौन्दर्य और बुद्धि की साक्षात प्रतिमा।—लेकिन उस औरत को सँभालो, कहीं गिर न जाय।—एक भी नहीं बची, मेरी बेटी।"

"मेरे प्रियतम" मेरी पत्नी ने कहा, 'तुममें मुझसे ज्यादा धैर्य की कमी है, तुम्हें मुझसे अधिक विश्राम की आवश्यकता है। हम लोगों को बहुत बड़ा कष्ट है; पर यदि तुम ठीक होते तो मैं अभी और कष्ट आसानी से सह सकती थी। वे मेरा सब कुछ, मेरे सब बच्चे ले जा सकते हैं पर तुम्हें छोड़ जाँय।"

मेरा लड़का जो मेरे पास बैठा था, हम लोगों के दुख को कम करने का प्रयत्न कर रहा था क्योंकि वह आशा करता था कि हमें अब भी कृतज्ञ होने का कारण था। "मेरे बच्चे" मैंने कहा, "मैं संसार में चारों तरफ अपनी नजर घुमाता हूँ और देखता हूँ कि मेरे लिए कौन सा

सुख बच रहा है। क्या हम लोगों के लिए धरती पर किसी सुख की आशा अब भी है? सारी खुशियाँ कब्र के बाद हैं पहले नहीं!" "पिता जी" उसने उत्तर दिया "मैं आशा करता हूँ कि अब भी एक चीज ऐसी बची है जिससे तुम्हें सुख हो सकता है, क्योंकि मेरे पास भाई जियार्ज का एक पत्र आया है।'—"क्या खबर है उसको, बेटा" मैंने रोक कर कहा, "क्या वह हम लोगों की इस बर्बादी की कहानी जानता है? मैं आशा करता हूँ कि हम लोगों के इस दुखी परिवार की कहानी से वह परिचित न होगा!"—"जी पिता जी" उसने उत्तर दिया, "वह बिलकुल प्रसन्न और सुखी है। उसके पत्र से केवल उसकी खुशी प्रकट होती है; वह अपने अफसर का कृपा पात्र है जिसने शीघ्र ही कोई पद खाली होने पर उसकी तरक्की का वचन दिया है।"

"क्या सचमुच यही लिखा है!" मेरी पत्नी ने उत्सुकता से पूछा, "क्या तुम्हें विश्वास है कि मेरा बच्चा सकुशल है!"—"सब कुशल है, माँ; "मैं तुम्हें पत्र दिखाऊँगा जिससे तुम्हें बहुत खुशी होगी; और यदि तुम्हें किसी चीज से संतोष मिल सकता है तो उससे तुम्हें अवश्य आनन्द मिलेगा।"—"पर क्या तुम्हें विश्वास है" उसने फिर दुहराया "कि यह पत्र उसी का है और वह सचमुच इतना खुश है!"—"हाँ मां" उसने उत्तर दिया "यह निश्चित रूप से उसी का है, और वह एक दिन हम लोगों के लिए एक गौरव और आश्रय होगा।"—"तब मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ," उसने कहा, "कि मेरा आखिरी पत्र उसके पास नहीं पहुँचा। हाँ प्रियतम" वह मेरे तरफ देख कर कहती गयी "मैं अब कहूँगी कि यद्यपि अब तक ईश्वर हमारे साथ हर जगह कठोर ही रहा है, पर यहाँ पर उसने हमें दयालुता दिखायी है। पिछले पत्र में मैंने अपने लड़के को क्रोध और दुख के साथ लिखा है कि उसे मेरे प्यार की कसम है, और यदि उसके पास आदमी का दिल है, यदि वह अपने बाप और बहिनों के साथ औचित्य और न्याय करना चाहता है तो वह हमारा बदला ले। लेकिन उस सर्वज्ञ ईश्वर को धन्यवाद है जो सारे संसार

का नियामक है, पत्र कहीं और चला गया है, मैं खुश हूँ।"—"औरतु" मैं चिल्ला पड़ा "तूने बहुत बुरा किया; दूसरे समय मेरा गुस्सा बड़ा तीखा हुआ होता। ओह कितने बड़े खड्ड से तू बच गयी, नहीं तूने उसे भी इस अनन्त विनाश के भँवर में डुबा दिया होता : भगवान, सचमुच तुम बड़े दयालु हो हम लोग एक दूसरे को आपस में इतनी दया कभी नहीं दिखा सकते। मेरे मरने के बाद उसे इस परिवार का रक्षक और पोषक होना था। मैं जब हर सुख छीन लिए जाने की वजह से चिल्ला रहा था तो कितनी गलती कर रहा था; मेरा बेटा अब भी प्रसन्न है, हम लोगों के कष्टों को अब भी नहीं जानता; वह अपनी विधवा माँ तथा अनाथ भाई बहनों को सहारा देने के लिए अब भी जीवित है। पर उसके कौन सी बहनें रह गयी हैं? उसके अब कोई बहिन नहीं है : वे अब सब चली गयीं, मुझसे जबरदस्ती खींच ली गयीं; मैं लुट गया हूं।"—"पिताजी" मेरे लड़के ने रोका "मैं तुमसे उसका पत्र सुनने की प्रार्थना करता हूँ— मैं जानता हूँ इससे तुम्हें खुशी होगी।" इसके बाद मेरे कहने पर उसने इस तरह उसे पढ़ना शुरू कर दिया :

सम्मानित पिता जी—मैं अपनी यहाँ की खुशियों से जिनसे मैं इस समय चारों ओर से घिरा हूँ, अपनी कल्पना इससे भी सुखद वस्तुओं— अपने छोटे घर के आनन्दों—की तरफ़ ले जाता हूँ। मैं कल्पना कर रहा हूँ कि मेरे सब प्यारे भाई बहिन मेरे इस पत्र की हर पंक्ति को बड़े ध्यान से बैठे सुन रहे हैं। मैं उनके उन चेहरों की तरफ देख रहा हूँ जो हमेशा प्रसन्न रहते हैं। घर में आप लोग सब प्रसन्न होंगे और मुझे यह विश्वास है कि आप लोग मेरी प्रसन्नता सुन कर और भी सुखी होंगे। मुझे अपनी इस नौकरी से पूरा संतोष और प्रसन्नता है।

हम लोगों की फौज स्थायी रूप से राजधानी में ही रहेगी। कर्नल साहब मेरे बड़े मित्र हैं और जिस सेना का भी निरीक्षण करने जाते हैं, मुझे साथ ले जाते हैं, जब मैं कभी वहाँ दुबारा जाता हूँ तो मेरा अच्छा स्वागत होता है। मैं पिछली रात ग—सी के साथ नाचा था, और मैं,

तुम जानते हो, जिसके साथ सफल हो सकता हूँ, क्या मैं भूल पाता हूँ। पर यह मेरा भाग्य ही है कि मैं औरों को अब भी याद करता रहूँ जब कि बहुत से दोस्तों ने मुझे भुला दिया है, मैं सोचता हूँ शायद आप लोग भी मुझे भूल गए हैं; क्योंकि मैं घर से एक पत्र पाने की बहुत दिनों से असफल बाट जोह रहा हूँ। ओलीविया और सोफिया ने मुझे पत्र देने का वचन दिया था, लेकिन लगता है वे भी भूल गयीं। उनसे कहना कि वे बड़ी शैतान हैं और उनकी मुझे बड़ी याद आती है, कभी कभी उन पर गुस्सा भी आता है, वे मुझे पत्र नहीं लिखतीं। उनसे कहना पिता जी मैं उन्हें बहुत प्यार करता हूँ और हमेशा करता रहूँगा।

आपका आज्ञाकारी पुत्र

"हम लोगों के सारे कष्टों से" मैंने कहा "कम से कम हमारे परिवार का एक सदस्य बचा है, इसके लिए हमें भगवान को धन्यवाद देना चाहिये। भगवान उसकी रक्षा करे और उसे प्रसन्न रखे; वही अपनी विधवा माँ का सहारा और इन दो नन्हें मुन्नों का बाप होगा; केवल इतनी पैतृक सम्पत्ति मैं उसके लिए छोड़ रहा हूँ। वह इनका पेट भर सके और सम्मान मार्ग पर पथ प्रदर्शन करे।" मैंने इतना कहा ही था कि बन्दीग्रह के बाहर से एक जोर की आवाज सुनायी दी : यह थोड़ी देर में समाप्त हो गयी और मेरी कोठरी की तरफ आती हुई बेड़ियों की झनकार सुन पड़ी। बन्दीग्रह का स्वामी, एक खून से लथपथ आदमी को, जिसके शरीर में बहुत से घाव थे और बहुत मोटी मोटी बेड़ियाँ पड़ी हुई थीं, लेकर आया। मैंने उसे सहमी हुई दृष्टि से अपनी ओर आते हुए देखा। पर मुझे बहुत भय लगा जब मैंने देखा कि वह मेरा लड़का जियार्ज था। "मेरे जियार्ज! मेरे जियार्ज! क्या मैं तुम्हें इस तरह देख रहा हूँ! घायल—बन्दी? क्या यही तुम्हारा सुख है? तुम मेरे पास इस तरह लौटे? ओह इस दृश्य से मेरा हृदय टूट सकता और मैं मर जाता।"

"कहाँ गयी तुम्हारी बुद्धि और दूरदर्शिता?" मेरे लड़के ने निर्भय

स्वर में कहा । "मुझे भोगने दो; मुझे मृत्युदण्ड मिला है, उन्हें मेरा जीवन ले लेने दो।"

मैंने अपने क्रोध को शांत रखना चाहा पर लगा कि इस प्रयत्न से मैं मर जाऊँगा "मेरे बच्चे ! तुमको इस दशा में देख कर मेरा दिल रोता है। अभी इसी समय मैं तुम्हें आशीर्वाद दे रहा था तेरी भलाई की कामना कर रहा था, मैं फिर, तुझे इस हालत में देखूँ ! जंजीरों में बंधा हुआ—घायल, पर फिर भी युवक, मृत्यु प्रसन्नता है। लेकिन मैं बुड्ढा, हूँ बहुत बुड्ढा मैं अब तक यही दिन देखने को जीवित था ! मैं अपने सब बच्चों को अपने सामने, समय से पहले मरते देखने के लिये जिन्दा हूँ, और बर्बादी और बदनामी उठाने के लिए ईश्वर अभी मुझे जीवित रख रहा है। संसार के भीषण तम दुख मेरे बच्चों के हत्यारों के सर पड़ें। भगवान ! वह मेरी ही तरह—"

"चुप रहो पिता जी" मेरे लड़के ने उत्तर दिया "अन्यथा मुझे तुम्हारे लिए लज्जित होना पड़ेगा। तुम कैसे भूल गए पिताजी, अपने दिन अपने ईश्वरी वाक्य; इस तरह गालियां देकर ईश्वर के न्याय का विरोध कर रहे हो, यह गालियाँ ईश्वर के यहाँ से लौट कर तुम्हारे इन पके सफेद बालों को कलुषित कर देंगी, तुम्हारा यह सारा जीवन और सदाचार नष्ट हो जायगा। नहीं पिता जी। अब तुम्हें मुझे मेरी आत्मा की स्वर्ग यात्रा के लिए उपदेश करना चाहिए, मेरा जीवन अब कुछ ही क्षणों का है। मुझमें आशा और दृढ़ता का संचार करो जिससे मैं अभी आने वाली मौत का हँस कर सामना कर सकूँ।"

"मेरे बच्चे ! तुम्हें अभी न मरना चाहिए; मुझे विश्वास है कि तेरा कोई अपराध इतने दण्ड के लायक नहीं हो सकता। मेरा जियार्ज ऐसा कोई पाप नहीं कर सकता जिसके लिए उसके पूर्वज लज्जित हों।"

"मेरा अपराध" मेरे लड़के ने उत्तर दिया, मैं "समझता हूँ अक्षम्य है। जब मुझे मेरी मां का पत्र मिला तो मैं तुरन्त अपनी इज्जत लेने वालों को दंड देने के विचार से चल पड़ा और उससे मिलने के लिए एक आशा

भेजी, जिसका उसने पालन किया—स्वयं आकर नहीं वरन् अपने चार नौकरों को मुझे पकड़ने के लिए भेज कर। जो मेरी तरफ लपका उसको मैंने घायल कर दिया और मुझे बुरी तरह भय हुआ, लेकिन शेष ने मिलकर मुझे कैद कर लिया। कायर ने मुझे फांसी दिलाना तय कर लिया है; सच्ची पक्के हैं; मैंने चुनोती भेजी थी, और चूँकि मैंने पहले कानून भंग किया है इसलिए मैं अक्षम्य हूँ। लेकिन आपने अपनी दूरदर्शिता के पाठों से मुझे सदा आकर्षित किया है, कृपा करके मुझे वही फिर सुनाइए।"

"और मेरे बच्चे मैं तुम्हें सुनाऊँगा। मैं अब इस संसार से ऊपर उठ चुका हूँ; इसके सारे आनन्दों के ऊपर। इस क्षण से मैं पृथ्वी के सारे सम्बन्धों से अपना लगाव समाप्त करता हूँ और हम दोनों ईश्वर के यहाँ साथ चलेंगे। हाँ, मेरे बच्चे, मेरी आत्मा तुम्हारा पथ प्रदर्शन करेगी, क्यों कि हम दोनों साथ मरेंगे। अब मैं देखता हूँ और मुझे विश्वास है, तुम यहाँ क्षमा नहीं किए जा सकते; और मैं केवल तुमसे यही कहूँगा कि वह शीघ्र ही तुम्हें ईश्वर के न्यायालय में मिल जायगी। लेकिन हमें अकेले ही ईश्वर से विनय न करनी चाहिए, सारे बन्दी साथियों को भी भाग लेने दो; बन्दीग्रह के स्वामी! उन सब को यहाँ इकट्ठे होने की अनुमति दे दो, मैं उन्हें सबको एक साथ उपदेश करूँगा।" इतना कहते हुए मैं अपने घास के बिस्तर से उठना चाहता था पर कमजोरी अधिक होने के कारण उठ न सका और दीवार के सहारे बैठ गया। सारे बन्दी मेरे निर्देशानुसार इकट्ठे हो गए, क्योंकि वे मेरी सलाह पसन्द करते थे: मेरे लड़के और मेरी पत्नी ने मुझे दोनों तरफ से सहारा दिया; मैंने देखा कि सब लोग आ चुके थे और तब निम्न रीति से प्रारम्भ किया।

२६

"मेरे मित्रो, बच्चो, और साथी बन्दियो, जब मैं धरती पर अच्छाई और बुराई के वितरण पर सोचता हूँ, मुझे लगता है कि मनुष्य को प्रसन्न रहने के लिए बहुत दिया गया है, पर दुखी रहने के लिए इससे भी अधिक चाहे हम सारे संसार की परीक्षा लें हमको कोई भी इतना प्रसन्न आदमी नहीं मिलेगा जिसकी कोई इच्छा शेष न रह गयी हो; लेकिन हम आत्म हत्या करने वालों से नित्य इस बात का प्रमाण पाते हैं कि उन्हें इस जीवन से कोई आशा न रह गई थी। तब यह जान पड़ता है कि इस जीवन में हम पूर्ण रूप से सुखी नहीं हो सकते लेकिन फिर भी हमें अनेक दुखों का सामना करना पड़ता है।

"मनुष्य इस तरह पीड़ित क्यों हो; हम लोगों की दीनता विश्व की प्रसन्नता की सृष्टि के लिए क्यों आवश्यक; और जब सब प्रणालियाँ उनके अन्तर्गत अंशों की पूर्णता को पूर्ण बनाई गई है, जब कि महाप्रणाली को अपनी पूर्णता के लिए उन अंशों पर निर्भर करना पड़ता है जो दूसरों के अधीन है और फिर पूर्ण भी नहीं—यह ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर कभी नहीं दिया जा सकता, और जान लेने पर बेकार भी हो सकता है। इस विषय पर विधायक ने हम लोगों के कौतूहल को शान्त करने के लिए संतोष करना सिखाया है।

"इस परिस्थिति में मनुष्य ने दर्शन की मैत्रीपूर्ण सहायता ली है; पर दर्शन मानव को पूर्ण संतुष्ट करने में समर्थ नहीं था अतएव ईश्वर ने उसकी सहायता के लिए धर्म दिया। दर्शन के आश्वासन अक्सर बड़े प्रिय लगते हैं पर वे गलत होते हैं; इसके अनुसार जीवन सुखों से भरा है, हम लोग बिना उनका आनन्द उठाए नहीं रह सकते; और दूसरी तरफ, यद्यपि हम दुखों से बच नहीं सकते, जीवन थोड़ा है, और वे शीघ्र समाप्त हो जाएँगे। इस तरह से यह आश्वासन एक दूसरे को नष्ट कर देते हैं, क्योंकि यदि जीवन आनन्द का स्थान है तो इसका छोटा पन अवश्य एक कष्ट और दुख होगा, और यदि जीवन लम्बा है तो हमारे कष्ट अधिक होंगे। इस तरह दर्शन कमजोर है: परन्तु धर्म हमें इससे अधिक संतोष देता है। यह बताता है, मनुष्य यहाँ पर रह कर अपने दूसरे निवास स्थान की तैयारी करता है। जब एक नेक आदमी अपना शरीर छोड़ता है और एक प्रतिभावान् मस्तिष्क रह जाता है, उसे मालूम पड़ेगा कि वह यहाँ पर एक प्रसन्नता के स्वर्ग की सृष्टि करता रहा है; जब कि एक बुरा आदमी जो अपने पापों और दोषों से कलंकित और अपवित्र रहा है, भय से अपने शरीर से चिपटता है और ईश्वर के कोप को समय से पहले ही सहता है। अतएव अपने वास्तविक सुख और शान्ति के लिए हमेशा धर्म पर निर्भर करना चाहिए: क्योंकि यदि हम पहले से ही सुखी हैं तो उस सुख के अधिक दिन बने रहने के लिए ईश्वर से प्रार्थना कर आनन्द उठा सकते हैं; और यदि हम लोग दुखी हैं तो इस आश्वासन से कि एक सुख से रहने का स्थान है आनन्द मिलता है। इस तरह धनी आदमी के लिए धर्म सुख के तारलम्य का आधार है और एक दुखी आदमी के लिए कष्ट से छुटकारे का आश्वासन।

"परन्तु यद्यपि धर्म सब मनुष्यों के लिए बहुत दयालु है पर अप्रसन्न और दुखी को आश्चर्यजनक पुरस्कारों का वचन देता है। बीमार, नंगे, गृहहीन, दुखी और बन्दी—इन सबके लिए हमारे पवित्र नियम में बहुत से आश्वासन हैं। हमारे धर्म का लेखक हर जगह अपने को पतितों का मित्र

बताता है, और अपनी सारी दया मया निर्धनों एवं असहायों के ऊपर दिखाता है। अविचार पूर्ण लोग इसे पक्षपात कहते हैं, बिना गुण और योग्यता के देने की पसन्द कहते हैं। लेकिन वे कभी नहीं सोचते कि यह ईश्वर की शक्ति में भी नहीं है कि वह अपने इस पुरस्कार का वितरण निधन और दुखी सबके साथ एक सा करे। पहले के लिए अनन्तता केवल एक पुरस्कार है, क्योंकि इससे अधिक से अधिक उनके स्वामित्व में जो कुछ अभी से है वृद्धि हो जाती है। बाद वाले के लिए यह दोहरा लाभ है; क्योंकि इससे उसके यहाँ के दुख कम पड़ जाते हैं और इस जीवन के बाद ईश्वरीय पुरस्कार का आश्वासन भी मिल जाता है।

"किन्तु ईश्वर एक और अर्थ में धनी लोगों से दुखियों पर अधिक दया दिखाता है, क्योंकि जब वह मृत्यु के बाद का जीवन और सुखमय बना देता है तो मार्ग भी प्रशस्त कर देता है। दुखी लोग हर तरह के भय और दुख से परिचित रहते हैं। वे आसानी से अपना शरीर छोड़ते हैं और इस काम में उन्हें दुख नहीं होता क्योंकि उनकी विदायी को रोकने वाले बन्धन भी कम होते हैं: वह प्रस्थान के अन्तिम क्षण केवल प्राकृतिक दुख का अनुभव करते हैं और यह उनके द्वारा सहे पहले दुखों से हर तरह कम ही होता है, क्योंकि कुछ क्लेश के बाद शरीर में जो दर्द बढ़ता है प्रकृति उसे बेहोशी से ढक देती है।

"इस तरह ईश्वर ने दुखी मनुष्यों को सुखी मनुष्यों से दो सुविधाएँ अधिक दी हैं—मरने में अधिक सुख, और स्वर्ग में वह सब आनन्द की प्रधानता जो तुलनात्मक आनन्द में होती है। और यह प्रधानता, मेरे मित्रो, कोई छोटा लाभ नहीं है और कहावत में दिये हुए गरीब आदमी के आनन्द सी लगती हैं, क्योंकि यद्यपि वह स्वर्ग में पहले ही से था और वहां के सारे आनन्दों का अनुभव करता था, किन्तु फिर भी उसका निर्धन होना उसके आनन्द में एक योग बताया गया कि वह एक समय निर्धन था और अब सुखी है, क्योंकि वह जान चुका था कि दुखी होना क्या होता है और अब अनुभव करता है कि आनन्द और सुख क्या है।

"इस तरह मेरे मित्रो, तुम देखते हो धर्म वह काम करता है जो दर्शन कभी नहीं कर सकता : यह सुखी और दुखी दोनों से ईश्वर के समान व्यवहार को बताता है और मानव आनन्दों को भी लगभग उसी स्तर पर छोड़ देता है। यह धनी और निर्धन दोनों को इस जीवन के समान सुख देता है और उसके लिए बराबर उत्साहित करता है, लेकिन यदि धनिकों को यहाँ आनन्द उठाने की सुविधा है, तो जीवन के बाद गरीबों को कष्ट से परिचय का अनन्त संतोष। और यह भी एक छोटा लाभ कहा जा सकता है किन्तु अनन्त होने के कारण यह अपनी अवधि से धरती पर के सुखों से अधिक हो जाता है।

"यही वे आश्वासन हैं जो निर्धनों के लिए आश्चर्यजनक हैं और जिनमें वे मानव जाति से परे हैं : दूसरी बातों में वे उनसे नीचे हैं। वे जो गरीबों के दुखों को जानते हैं वे जीवन देखते हैं और सहन करते हैं। जिन मनुष्यों के पास रहने भर के साधन हैं वे निर्धन नहीं, और जिनके पास यह साधन नहीं हैं अवश्य दुखी होंगे। हाँ मेरे मित्रो, हम अवश्य दुखी होंगे। शिष्ट कल्पना के कोई भी प्रयत्न प्रकृति की कमियों को पूरा नहीं कर सकते केवल एक टूटे दिल को शान्ति दे सकते हैं। अपनी मुलायम कुर्सी पर बैठे हुए दार्शनिक को बकने दो कि हम सब इन्हें रोक सकते हैं। अफसोस, जिन प्रयत्नों से हम उन्हें रोकते हैं वह स्वयं भी सबसे बड़ा कष्ट है। मृत्यु क्षणिक होती है और हर आदमी उसे सहन कर सकता है लेकिन कष्ट भयानक होते हैं और इन्हें कोई भी नहीं सह सकता।

"अतएव, मेरे मित्रो, हम लोगों को स्वर्ग में सुख के आश्वासन बहुत प्रिय होने चाहिए, क्योंकि यदि हम लोगों का पुरस्कार केवल इसी जीवन में होता तो हम लोग सबसे दुखी मनुष्य होते। जब मैं इन अंधेरी दीवारों की ओर चारों तरफ देखता हूँ जो हम लोगों को डराने तथा बन्द रखने के लिए बनायी गयी हैं, यह प्रकाश जो केवल यहाँ की भयानक चीजों को प्रकाशित करता है, यह बेड़ियां जो अत्याचारियों ने तैयार कर रखी

हैं या अपराधों ने उन्हें आवश्यक बना दिया है, जब मैं इन क्षीण और दुर्बल दृष्टियों को देखता हूँ और इन दर्द भरी कराहों को सुनता हूँ—अरे मेरे दोस्तो, क्या ही सुन्दर स्वर्ग लगेगा हम लोगों को तब। हम लोग वायु के असीमित क्षेत्र से होकर उड़ेंगे—अनन्त आनन्द की रोशनी में बैठेंगे—ईश्वर प्रार्थना के अनन्त गीत गाएँगे—कोई स्वामी नहीं होगा हमें धमकाने या हमारी इज्जत लेने के लिए—ईश्वर सदा हम लोगों के सामने रहेगा।

"जब मैं इन चीजों के विषय में सोचता हूँ तो मृत्यु बहुत आनन्द मय वस्तुओं की सूचना देने वाली भर रह जाती है, जब मैं इन चीजों के विषय में सोचता हूँ तो उसके तीखे से तीखे वाण मेरे समर्थन की शिला बन जाते हैं, जब मैं इन चीजों के विषय में सोचता हूँ तो ऐसी कोई चीज नहीं रह जाती जिससे घृणा न की जा सके? प्रसादों में बैठे हुए सम्राटों के लिए भी इन लाभों से स्पर्धा हो सकती है, लेकिन हम जैसे दुखियों को इसके लिए उत्कण्ठित रहना चाहिए?

"और क्या यह चीजें हम लोगों की होंगी? हम लोगों की वह अवश्य होंगी यदि हम लोग उनके लिए प्रयत्न करें; और आराम क्या है, हम लोग बहुत से आकर्षणों से भी अछूते हैं जिन के कारण हमारी लगन में बाधा पड़ सकती। आओ केवल हम उनके लिए प्रयत्न करें और वे निश्चित रूप से हमारे होंगे; और यह शांति भी हमारी होगी बहुत ही शीघ्र क्योंकि यदि हम अपने बीते जीवन को लौटकर देखते हैं तो बहुत छोटा मालूम पड़ता है और अपने शेष जीवन के लिए चाहे कुछ भी सोचें वह बीते जीवन से भी छोटा लगेगा; ज्यों ज्यों हम बढ़ते हैं दिन छोटे होने लगते हैं, और समय से हमारा परिचय, उसके ठहरने की अनुभूति की ओर भी कम करता है। अतएव हम को अब आराम करना चाहिए क्योंकि शीघ्र ही हमारी इस यात्रा का अन्त होगा; हम लोग ईश्वर द्वारा अपने ऊपर लादा हुआ बोझ शीघ्र उतार फेंकेंगे; और यद्यपि मृत्यु जो निर्धनों का एक मात्र मित्र है, कुछ देर तक थके हुये यात्री को परेशान करती है

और सामने फैले हुए क्षितिज की भांति उसके आगे उड़ती रहती है; फिर भी समय निश्चित रूप से शीघ्र ही आयेगा, जब हम लोग परिश्रम से मुक्ति पा जाएँगे; जब संसार के सुखी बड़े लोग हमें अपने पैरों से नहीं कुचल सकेंगे; जब हम लोग धरती पर की परेशानियों के विषय में सोचेंगे; जब हम लोग चारों ओर से अपने मित्रों से अथवा ऐसे लोगों से जो मित्र बनने लायक हों घिरे होंगे; जब हमारा आनन्द अकथनीय होगा और फिर यह सब अनन्त होंगे।"

३०

मैंने अपना उपदेश समाप्त किया, श्रोतागण चले गए; जेल स्वामी ने जो अपने पेशे का सब से सीधा आदमी था आशा की कि यदि वह आज्ञानुसार मेरे लड़के को एक मजबूत कोठरी में बन्द करे तो मैं नाराज न हूँगा, यह करना उसका कर्त्तव्य था। उसने मेरे लड़के को रोज सबेरे मुझ से मिलने की स्वीकृति दे दी। मैंने उसे उसकी कृपा के लिये धन्यवाद दिया और अपने लड़के का हाथ पकड़ कर उसे उसके कर्त्तव्य के प्रति सचेत रहने की बात कह कर विदा किया।

मैं फिर लेट गया। मेरे छोटे बच्चों में से एक ने बैठ कर पढ़ना शुरू किया था कि मि० जेंकिन्सन ने मेरी कोठरी में आकर बताया, मेरी लड़की का पता चल गया था; दो घन्टे पहले एक सज्जन ने उसे एक अपरिचित आदमी के साथ देखा था, वे लोग कुछ जलपान के लिये पड़ोस के गांव में रुके थे, और शहर को लौटते हुए मालूम पड़ते थे। उसने मुश्किल से अपनी बात समाप्त की थी कि जेल स्वामी ने शीघ्रता से आकर प्रसन्न मुद्रा में कहा कि मेरी लड़की का पता लग गया था। मोजेज एक क्षण बाद दौड़ता हुआ आया; उसने बताया कि उसकी बहिन हम लोगों के पुराने मित्र बर्चेल के साथ आ गयी थी।

जैसे ही उसने अपनी यह खबर सुनायी थी कि मेरी सबसे प्यारी

बेटी अन्दर आयी, वह आनन्द से पागल सी हो रही थी, मेरी तरफ मुझे चूमने के लिए दौड़ी। उसकी माँ की आंखों के आँसुओं तथा उसकी शांति ने उसके प्यार को प्रकट किया। "यहाँ पिता जी" खूबसूरत लड़की ने कहा "यही वह वीर सज्जन हैं जिन्होंने मुझे मुक्ति दी है; इन्हीं सज्जन की कृपा के कारण मैं प्रसन्न और सुरक्षित हूँ"—मि० वर्चेल के एक चुम्बन से, जिसकी प्रसन्नता मेरी लड़की की प्रसन्नता से अधिक लग रही थी आगे कुछ कहने से रुक गयी।

"आह मि० वर्चेल" मैंने कहा "जिस जगह तुम आज मुझे देख रहे हो कितनी खराब है; हम लोग उस समय से जब तुमने हमें पिछली बार देखा था, बिलकुल बदल चुके हैं। तुम हमेशा हमारे मित्र रहे: हम लोगों ने तुम्हारे प्रति की हुई अपनी गलती को बहुत पहले अनुभव कर लिया था और अपनी अकृतज्ञता के लिए पश्चात्ताप भी। जब से हम लोगों ने तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया, मुझे तुम्हारा चेहरा देखने में भी लज्जा आती है। फिर भी मैं विश्वास करता हूँ कि तुम मुझे क्षमा कर दोगे; मुझे एक नीच और क्रूर व्यक्ति ने बहका दिया था और उसी लम्पट ने मैत्री का जामा पहन कर मुझे बर्बाद कर दिया।"

"यह असम्भव है" मि० वर्चेल ने कहा, "कि तुम्हें क्षमा कर दूँ क्योंकि तुमसे मैं कभी नाराज ही नहीं हुआ। मैंने आंशिक रूप में तब तुम्हारी भूल देख ली थी और चूँकि उसे रोकना मेरी शक्ति के बाहर था मैं केवल उस पर रहम करके रह गया।"

"यह मेरा हमेशा से अनुमान था" मैंने कहा "कि तुम उच्च विचार के आदमी हो, और अब मैं अपने अनुमान को सत्य पा रहा हूँ। पर बताओ मेरी बेटी तुम उनसे मुक्ति कैसे पा गयीं, या कौन थे वह नीच जो तुम्हें भगा ले गए थे?"

"वास्तव में पिता जी" उसने उत्तर दिया, "जहाँ तक मेरे ले जाने वाले नीच का प्रश्न है मैं उसे अब भी नहीं जानती। क्योंकि जब मैं अपनी माँ के साथ बाहर टहल रही थी, वह हम लोगों के पीछे से आया, और

मैं सहायता के लिए चिल्लाने वाली ही थी कि उठा कर उसने मुझे बग्घी में ठूँस दिया और घोड़े दौड़ पड़े। मुझे बहुत लोग रास्ते में मिले जिनसे मैंने सहायता के लिए पुकारा पर सबने मेरी पुकार अनसुनी कर दी। इस बीच वह दुष्ट मुझे शांत करने के प्रयत्न में लगा था: वह कभी मेरी प्रशंसा करता और कभी धमकाता और कसम खायी कि यदि मैं शांत रही तो वह मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। इसी बीच मैंने बग्घी के कपड़े की दीवारों को फाड़ डाला जिनसे मैंने आप के पुराने मित्र वर्चेल को अपनी स्वाभाविक तेजी के साथ अपनी पुरानी लम्बी लाठी लिए, जिसकी हम लोग हंसी उड़ाया करते थे, जाते देखा। जब मैंने देखा कि मेरी आवाज उन तक पहुँच सकती थी तो मैंने उनका नाम लेकर जोर से पुकारा और अपनी सहायता के लिए प्रार्थना की। मैं कई बार जोर जोर से चिल्लायी, जिस पर उसने बड़ी तेज आवाज में साईस को बग्घी रोकने की आज्ञा दी; लेकिन उसने इसकी कुछ भी परवाह न की और घोड़ों को और तेज कर दिया। अब मैंने सोचा कि वह मुझे कभी न पकड़ पाएगा, पर एक मिनट के अन्दर ही मैंने मि० वर्चेल को घोड़ों की तरफ से आता हुआ देखा, और एक ही लाठी से साईस को नीचे गिरा दिया। घोड़े उसके गिरने के बाद तुरन्त ही रुक गए, और उस नीच ने अपनी तलवार को हाथ में लिए उनसे कहा कि यदि वे अपनी जिन्दगी की कुशल चाहते हैं तो लौट जांय; लेकिन मि० वर्चेल ने उसकी तलवार छुड़ा कर तोड़ डाली, और करीब चौथाई मील तक उसका पीछा किया; लेकिन वह भग गया। इस समय मैं अपने को मुक्त करने वाले की सहायता के लिए बाहर निकल आयी थी; लेकिन वह शीघ्र विजय के साथ लौट आए। साईस अब तक ठीक हो गया था और भगना चाहता था; लेकिन मि० वर्चेल ने उसको डाँटते हुए कहा कि यदि वह जीवित रहना चाहता हो तो, शहर अपनी बग्घी वापस ले चले। जब उसने देखा कि इनकार करना खतरे से खाली नहीं है, तो वह आज्ञा मानने को राजी हो गया, यद्यपि घाव जो उसके लग गया था, कम से कम मुझे खतरनाक मालूम पड़ रहा था। ज्यों ज्यों वह

आगे बढ़ता बराबर अपनी पीड़ा की शिकायत करता जाता था जिसके कारण मि० वर्चेल को दया आ गयी और मेरे प्रार्थना करने पर एक सराय में पहुँच कर उसे छुट्टी दे दी और एक दूसरे को बुला लिया।"

"तुम्हारा स्वागत" मैंने कहा "मेरी बेटी! और तुम्हारा वीर, मेरी बेटी को छुड़ा लाने वाले वीर, तुम्हारा हजार बार स्वागत! यद्यपि हम लोगों की प्रसन्नता दुख से भरी हुई है, फिर भी मेरा हृदय तुम्हारा स्वागत करने को तैयार है। और मि० वर्चेल, चूँकि तुमने मेरी लड़की को मुक्त किया है इसलिए तुम उसे चाहो तो पुरस्कार में लेकर अपनी बना सकते हो: यदि तुम मुझ जैसे गरीब परिवार से सम्बन्ध जोड़ना चाहते हो, तो उसे ले लो; उसकी स्वीकृति जान लो,—मैं जानता हूँ तुम उसे चाहते हो—और वह तुम्हें। मैं तुमसे बताता हूँ, मैं तुम्हें कोई छोटा कोष नहीं दे रहा: यह सही है कि वह अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन अर्थ यह नहीं है—मै तुम्हें एक बुद्धिमान लड़की दे रहा हूँ।"

"लेकिन मैं कल्पना करता हूँ" मि० वुर्चेल ने कहा "आप मेरी स्थिति से परिचित हैं, और मुझमें उस जैसी रूपवती को उचित रूप में रखने की सामर्थ कैसे हो सकती है?"

"यदि तुम्हारी यह आपत्ति" मैंने उत्तर दिया, "मेरी बात को इन्कार करना है तो अपनी बात वापस लेता हूँ; लेकिन तुम जैसा योग्य आदमी उसके लिये मेरी दृष्टि में और कोई नहीं है; और यदि मैं उसे हजारों दे सकता, और हजारों आदमी उसके विवाह के लिए मुझसे अपनी इच्छा प्रकट करते तो मेरी पसन्द ईमानदार वीर वर्चेल तुम्हीं होते।"

इस सब के प्रति उसका मौन एक भयंकर अस्वीकृति लग रहा था: मेरी बात का जरा भी उत्तर न देते हुए उसने मुझसे पूछा कि क्या उसे पड़ोस की सराय से खाना मिल सकता था; स्वीकारात्मक उत्तर मिलने पर उसने उतने कम समय पर जो अच्छा से अच्छा खाना मिल सकता था लाने को कहा। उसने वहाँ से एक दर्जन बढ़िया शराबें और मेरे लिए कोई खाने की अच्छी चीज मँगायी; उसने मुस्कराते हुए अपने

पैर फैला दिए और कहा कि यद्यपि वह इस समय जेल के अन्दर था पर उसे इतनी अधिक प्रसन्नता इसके पहले कभी नहीं हुई थी। सराय* का नौकर जल्दी ही खाना लेकर लौटा; जेल स्वामी ने मुझे एक मेज उधार दे दी, वह इस समय बहुत प्रसन्न दिखायी दे रहा था; शराब और भोजन बड़े कायदे के साथ मेज पर सजा दिया गया।

मेरी लड़की ने अपने भाई की शोक पूर्ण परिस्थिति के बारे में अब तक नहीं सुना था और हम लोगों ने उसे दुखी न करने के विचार से उसे यह बताना ठीक न समझा। लेकिन मैं प्रयत्न करने पर भी प्रसन्न न रह सका : मेरे अभागे लड़के की परिस्थति छिपायी न जा रही थी; और इसलिए अन्त में मैंने सारी कथा कह दी, और इच्छा प्रकट की कि वह भी इस अवसर पर आकर भोजन में हिस्सा लेता।

मैंने जेन्किन्सन और अपने लड़के को दावत में सम्मलित करने के विचार से जेल स्वामी से प्रार्थना की और उसने सदा की भाँति मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। ज्योंही मेरे लड़के की बेड़ियों की झनकार मेरी बेटी के कानों में पड़ी, वह बहुत तेजी से अपने भाई से मिलने के लिए दौड़ी, जब कि इसी बीच मि० वर्चेल ने पूछा कि क्या मेरे लड़के का नाम जियार्ज था जिसका स्वीकारात्मक उत्तर पाकर भी वह शान्त रहा। जब मेरा लड़का कोठरी के अन्दर आया तो वह मि० वर्चेल की ओर आदर और आश्चर्य भरी निगाह से देखने लगा। "आओ मेरे बच्चे," मैंने कहा, "यद्यपि हम लोग बहुत नीचे गिर चुके हैं फिर भी ईश्वर ने पीड़ा से कुछ देर के लिए मुक्ति दी है। तुम्हारी बहिन वापस आ गयी, और इन्होंने इसे छुड़ाया था; इस आदमी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, इन्होंने मेरी लड़की मुझे वापस ला दी थी : मेरे बच्चे इनकी तरफ अपनी मैत्री का हाथ बढ़ाओ वह हम सब की कृतज्ञता का अधिकारी है।"

अब तक जो कुछ मैं कह रहा था मेरे लड़के ने उस पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया और वह अब भी कुछ दूर पर खड़ा था। "मेरे भइया"

उसकी बहिन ने कहा, "तुम मेरे भले मुक्तिदाता को धन्यवाद क्यों नहीं देते? बहादुरों को हमेशा एक दूसरे से प्यार करना चाहिए।"

वह अब भी मौन आश्चर्य में था मेरे अतिथि ने देखा कि वह पहचान लिया गया है, और अपनी सारे देशीय गौरव के साथ मेरे पुत्र से आगे आने की इच्छा प्रकट की। इसके पहले मैंने कोई चीज वास्तव में इतनी खूबसूरत न देखी थी जितनी उसके इस अवसर पर स्वागत करते देख पड़ी। एक दार्शनिक का कहना है कि एक भले आदमी का विपरीत परिथिस्तियों से संघर्ष संसार की एक महानतम वस्तु है लेकिन एक इससे भी महान बात है वह आदमी जो इससे छुटाने के लिए आता है। मेरे लड़के को कुछ देर बड़प्पन की निगाह से देखने के बाद—"मैं फिर" उसने कहा, "वही बात पा रहा हूँ, न सोचने वाले लड़के, फिर वही अपराध—लेकिन जेल स्वामी के एक नौकर ने बातचीत में बाधा देते हुए कहा कि एक कोई बहुत बड़ा आदमी अपने कई नौकरों के साथ बग्घी में बैठकर आया था और वह मेरे अतिथि से मिलना चाहता था और मिलने का समय जानने की प्रार्थना की थी। "उनसे रुकने के लिए कहो" मेरे अतिथि ने कहा, "जब समय मिलेगा आऊँगा" और तब मेरे लड़के की तरफ घूम पड़ा। "मैं फिर" वह आगे बढ़ा, "देखता हूँ कि तुमने अपनी वही गलती फिर दोहरायी जिसके लिए मैंने तुम्हें डांटा था और जिसके लिए कानून अब सबसे अधिक उचित दण्ड तैयार कर रहा है। तुम शायद कल्पना करते हो कि अपने जीवन के प्रति तुम्हारी घृणा तुम्हें दूसरों का जीवन लेने का अधिकार दे देती है: लेकिन महाशय जी, एक द्वन्द युद्ध करने वाले मनुष्य में, जो बेकार जीवन को संकट में डालता है और एक हत्यारे में जो अधिक सुरक्षित रह कर काम करता है, क्या अन्तर है?"

"महाशय जी" मैंने कहा, "तुम चाहे कोई भी हो, इस बेचारे भ्रान्त पर दया करो, क्योंकि इसने जो कुछ किया है अपनी न समझ मां की बात मान कर किया है जिसने क्रोध के आवेश में इसे लिख दिया कि,

वह हम लोगों के साथ की गयी ज्यादतियों का बदला ले। यह पत्र है जो आपको उसकी माँ की बेवकूफी और उसके दोष की कमी का प्रमाण देगा।

उसने पत्र ले लिया और तेजी से पढ़ गया। "यह" उसने कहा "यद्यपि पूर्ण छुटकारे के लिए काफी नहीं है फिर भी मैं उसे क्षमा कर सकता हूँ। और अब महाशय" वह मेरे लड़के को दया पूर्वक हाथ से पकड़ कर कहता गया, "मैं देखता हूँ कि तुम मुझे यहाँ देख कर आश्चर्य कर रहे हो; लेकिन मैं अक्सर इससे भी कम आवश्यक कामों में बन्दी-ग्रह देख चुका हूँ। अब मैं एक निर्दोष आदमी को न्याय पूर्वक छुटाने के लिए आया हूँ, इनके लिए मेरे हृदय में बहुत अधिक सम्मान है। मैं बहुत दिनों तक छिपे रूप से तुम्हारे बाप की सहृदयता और सज्जनता को देख चुका हूँ। मैं उसके छोटे से घर में बहुत दिन रह कर प्रशंसा रहित सम्मानित आनन्द उठा चुका हूँ; और उसकी बैठक में जो हास्यपूर्ण और मोदमयी सादगी थी वह मुझे बड़े बड़े दरबार और न्यायालय भी नहीं दे सके। मेरा भतीजा मेरे यहाँ आने पर ताज्जुब करता है, और मुझे लगता है वह यहाँ आ गया है। उसकी बिना परीक्षा लिए निन्दा करना दोनों तुम्हारे और उसके प्रति गलती करना होगा : यदि वहाँ आघात मिले तो उसका उपचार हो सकता है; और यह मैं बिना गर्व के कह सकता हूँ, कि अभी तक सर विलियम थार्नहिल ने किसी के साथ अन्याय नहीं किया।

हम लोगों को मालूम हुआ कि जिस आदमी से हम लोग अपने अतिथि के रूप में बातें कर रहे थे वह कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे वरन् सर विलियम थार्नहिल स्वयं ही थे जिनके सदाचार और न्याय से सभी परिचित थे। बेचारे मि० वर्चेल वास्तव में एक बहुत धनी और विशाल हृदय व्यक्ति थे उनकी बात संसार में सुनी जाती थी और उनके दल के लोग उनकी बात मानते थे : यह अपनी जनता के मित्र, राजा के भक्त थे। मेरी पत्नी अपने पहिले के परिचय की याद कर भय से

सिकुड़ी सी जा रही थी; लेकिन सोफिया जो अब तक उन्हें अपना समझ रही थी सम्पत्ति का भेद खुलता देख उन्हें अपने से दूर समझ आँसू बहाने लगी।

"अरे मेरे महाशय", मेरी पत्नी ने कुछ रोने की आवाज में कहा "यह कैसे सम्भव है कि मैं कभी आपसे क्षमा प्राप्त कर सकूँ ? पिछली बार जब आप मेरे घर पधारे थे तो मैं आपको बकने लगी थी, मैंने जो आपसे तरह तरह की मजाकें की हैं—वह सब हँसी, मुझे डर है, मुझे कभी क्षमा नहीं मिलेगी।"

"श्रीमती जी," उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "यदि तुमने हँसी की थी तो मैंने उसका उत्तर दिया था : मैं इसे तुम लोगों पर छोड़े देता हूँ कि मेरी हँसी तुम लोगों की तरह ही थी या नहीं। इस समय यहाँ पर कोई आदमी नहीं है केवल एक को छोड़ कर जिसने अपनी उपस्थिति से इस लड़की को डरा दिया था, जिससे मैं नाराज हूँ। मैं उस दुष्ट के चेहरे को भी न याद रख सका जिससे कि उसकी हुलिया अखबारों में छपा देता। क्या सोफिया तुम उस आदमी को फिर से पहचान सकती हो ?"

"जी हां" उसने उत्तर दिया, "यद्यपि बहुत ठीक से नहीं; फिर भी अब मुझे कुछ याद आती है, उसकी एक भौंह पर एक बड़ा निशान था।"—"मुझे क्षमा करना देवि" जेन्किन्सन ने रोकते हुए कहा "कृपा करके मुझे यह बताओ कि क्या उस आदमी के बाल लाल थे ?"—"जी हाँ, शायद ऐसे ही," सोफिया ने कहा। "और क्या महाशय जी," उसने सर विलियम की ओर घूमते हुए पूछा "आपने उसके पैरों की लम्बाई की तरफ ध्यान दिया था ?"—"मैं ठीक से उनकी लम्बाई तो नहीं बता सकता सर," विलियम ने कहा, "लेकिन मैं उनकी तेजी से हार मान गया हूँ; क्योंकि दौड़ कर मुझसे आगे निकल गया जिसे मैं समझता हूँ, राज्य में बहुत थोड़े आदमी कर सकते हैं"—"महाशय जी" जेन्किन्सन ने कहा "मैं उस आदमी को जानता हूँ : यह निश्चित रूप से वही है :

लन्दन का सबसे तेज दौड़ने वाला; वह न्यूकैसेल के पिनवायर को पिछाड़ चुका है : टिमोथी बैक्सटर उसका नाम है; मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ और जहाँ वह आजकल छिपा रहता है, उस जगह को भी। यदि कृपा करके जेल स्वामी से कह कर मेरे साथ दो आदमी भेज दें तो मैं अधिक से अधिक एक घन्टे में उसे पकड़ कर ला सकता हूँ।" जेल स्वामी बुलाया गया और सर विलियम ने उससे अपना परिचय पूछा। "हाँ महाशय" जेल स्वामी ने कहा "मैं सर विलियम थार्नहिल को ठीक से जानता हूँ।"

"अच्छा तो" सर विलियम ने कहा "मेरी प्रार्थना है कि तुम मेरे कहने से अपने दो नौकरों को इस आदमी के साथ भेज दो; और मैं इस आदमी को वापस कर देने की जमानत लेता हूँ।"—"आपका वचन पर्याप्त है," दूसरे ने कहा "और एक मिनट का समय देकर आप इंग्लैण्ड भर में जहाँ चाहे वहाँ भेज सकते हैं।"

जेल स्वामी की स्वीकृति के अनुसार जेन्किन्सन टिमोथी बैक्सटर की खोज में भेज दिया गया; मेरा छोटा बच्चा सर विलियम के कन्धे पर उन्हें वर्चेल समझकर चढ़ गया और चूमने लगा। उसकी माँ शीघ्र ही उसे इस बात के लिए डांटने जा रही थी लेकिन भले आदमी ने उसे रोक दिया; और उस फटे तथा गन्दे कपड़े पहिने हुए बच्चे को उन्होंने अपनी गोद में लेते हुए कहा, "क्या बात है मेरे शैतान बिल, क्या तुम्हें अपने पुराने मित्र वर्चेल की याद है! और डिक, मेरे सच्चे साथी, क्या तुम भी यहाँ हो! तुम्हें मालूम होगा कि मैं तुम्हें भूला नहीं हूँ" इतना कहते हुए उन्होंने एक बिस्कुट का बन्डल उन्हें दिया जिसको उन्होंने बड़े चाव से खाया, वे सबेरे से भूखे थे।

हम लोगों ने अब भोजन करना शुरू किया, यह अब खूब ठंढा हो चुका था; मेरे हाथ में दर्द हो रहा था इसलिए सर विलियम ने मेरे लिए एक नुसखा लिख दिया, उन्होंने चिकित्सा शास्त्र में भी अच्छी योग्यता प्राप्त कर रखी थी : यह नुसखा तैयार होकर आ गया और मुझको तुरन्त लाभ

मालूम पड़ने लगा। हमारे भोजन के समय जेल स्वामी भी उपस्थित था क्योंकि वह मेरे अतिथि को अपने स्वागत से प्रसन्न करना चाहता था। लेकिन हम लोगों के पूरा भोजन समाप्त करने के पहले ही एक सूचना उसके भतीजे के पास से और आयी जो यहाँ आने की आज्ञा चाह रहा था। इस प्रार्थना को सर विलियम थार्नहिल ने स्वीकार करते हुए मि० थार्नहिल को अन्दर लाने की आज्ञा दी।

३१

मिस्टर थार्नहिल ने मुस्कराते हुए कोठरी में प्रवेश किया, मुस्कान उनके चेहरे पर हर घड़ी रहती थी; वे अपने चाचा से आलिंगन करना चाहते थे लेकिन उन्होंने आँखों से घृणा दिखाते हुए उन्हें दूर हटा दिया। "नहीं, मुझे इस समय तुम्हारी चापलूसी पसन्द नहीं" सर विलियम ने अपनी आवाज में कठोरता दिखाते हुए कहा; "मेरे हृदय में स्थान पाने का केवल एक रास्ता है और वह है सम्मान का रास्ता; पर यहाँ मैं अत्याचार, धूर्त्तता, और कपट के उदाहरण पा रहा हूँ। यह क्या बात है कि इस बेचारे आदमी के साथ जिसे तुम अपना मित्र कहते थे, इतना बुरा बर्ताव कर रहे हो?" तुमने इनकी लड़की को बुरी तरह बहका कर बर्बाद कर दिया और इस तरह उसके अपने हार्दिक स्वागत किये जाने का बदला दिया और इन्हें स्वयं जेल में डाल दिया शायद केवल इसलिये कि यह अपने अपमान पर नाराज हो गए थे? उसके लड़के को भी, जिसकी वीरता के साथ सामना करने से तुम डर गए थे—"

"यह असम्भव है चाचा जी" थार्नहिल ने बात काटते हुये कहा, "कि आप मेरे इस काम को मेरा पाप कहें, आपके कई बार सावधान करने पर ही मैंने द्वन्द्व युद्ध से बचने का प्रयत्न किया था।"

"तुम्हारी बात" सर विलियम ने कहा, ठीक है; 'इस स्थान पर तुमने

बड़ी बुद्धि से काम लिया है, फिर भी तुम्हारे पिता जी ने इस तरह न किया होता; मेरे भाई साहब सचमुच सम्मान की आत्मा थे; लेकिन तू—हाँ तुमने इस विषय में बिलकुल ठीक किया है, और मैं इससे प्रसन्न हूँ।"

"और मैं आशा करता हूँ" भतीजे ने कहा, "कि मेरा शेष व्यवहार भी निन्दनीय नहीं है। मैं इनकी लड़की के साथ कई बार सार्वजनिक स्थानों में दिखाई पड़ा: और इस तरह लोगों ने मेरी बदनामी और मजाक उड़ाने के विचार से यह अफवाह फैला दी कि मैंने उसे पथ भ्रष्ट कर दिया है। मैं इन सज्जन से अपने बीच के मनमुटाव को व्यक्तिगत रूप से मिल कर दूर करने के लिए गया था लेकिन उन्होंने बेइज्जती और गालियों से मेरा स्वागत किया था। जहाँ तक इन्हें जेल भेजने का प्रश्न है, मेरे लेखा परी-क्षक और सहायक इस विषय में आपको पूरी सूचना दे सकेंगे, क्योंकि ऐसी व्यवस्था मैंने इन्हीं लोगों के हाथ सौंप रखी है। यदि इन्होंने कर्ज लिया था और उन्हें दे नहीं सकते थे या देना नहीं चाहते थे, तब इनके साथ इस तरह का व्यवहार करना उनका कर्त्तव्य हो जाता है, और मैं धन वसूल करने में वैधानिक साधनों का आश्रय लेना अनुचित नहीं समझता।"

"यदि बात ऐसी है" सर विलियम ने कहा "तो तुम्हारा इसमें सच-मुच कोई दोष नहीं; और तुम्हारा चरित्र और भी दयालु कहा जाता यदि तुम कर्मचारियों को इस सज्जन आदमी के साथ अत्याचार करने से रोकते, तुम्हें इनके विषय में और अधिक ध्यान देना चाहिए था।"

"वह मेरे किसी भी कथन का विरोध नहीं कर सकते" नम्बरदार ने उत्तर दिया, "मैं उसे इसके लिये चुनौती देता हूं, मेरे काफी नौकर मेरी इस बात की गवाही देने को तैयार हैं। इस तरह उसने मुझे शान्त देखकर", क्योंकि मैं उसका विरोध नहीं कर सकता था, कहा, "इस तरह विषय में मैं निर्दोष हूँ: और मैं आपके बीच में पड़ने के कारण इनके सब दोषों को क्षमा कर सकता हूँ, लेकिन इन्होंने आपकी नजरों में मुझे गिराने का जो प्रयत्न किया है, उसे मैं नहीं भूल सकता। और यह भी ऐसे समय में जब इनका लड़का मेरी जिन्दगी का गाहक बना हुआ था—यह, मैं कहता हूँ,

एक ऐसा बड़ा पाप था कि मैंने इस पर पूरी कानूनी कार्यवाही करना तय कर लिया था। यह चुनौती मेरे पास उसने लिख कर भेजी थी, इसके दो साक्षी भी हैं : हमारा एक नौकर बुरी तरह से घायल भी हो गया था, और अब चाहे मेरे चाचा भी मुझे फुसलाने का यत्न करें, जैसा कि मैं जानता हूँ वह नहीं करेंगे, मैं इस विषय में पूर्ण न्याय चाहता हूँ और इसका दण्ड उन्हें भुगतना पड़ेगा।"

"नीच, अधम" मेरी पत्नी चिल्ला पड़ी "क्या तूने अपना बदला अभी नहीं चुका लिया? पर अब भी मेरा बेटा तेरे अत्याचार सहेगा? मैं आशा करती हूँ कि दयालु सर विलियम हम लोगों की रक्षा करेंगे, क्योंकि मेरा बेटा नन्हें बच्चों की तरह भोला है और हर मनुष्य का भला चाहता है।"

"श्रीमती जी" भले आदमी ने उत्तर दिया, "मैं तुमसे अधिक उसके बचाने का इच्छुक हूँ, लेकिन मैं उसके अपराध को बिलकुल स्पष्ट पाकर दुखी हूँ, और यदि मेरा भतीजा जिद करता है तो—"

लेकिन जेन्किन्सन तथा जेल स्वामी के दो नौकरों के आ जाने से हम सब का ध्यान बँट गया, वे एक लम्बे आदमी को ढकेलते हुए लाये। वह अच्छे कपड़े पहने हुआ था और मेरी बेटी द्वारा बताई हुई हुलिया से बिलकुल मिलता था "यह है" मिस्टर जेन्किन्सन ने उसे अन्दर खींचते हुए कहा, "यही है वह, यही है वह जिसने तुम्हारी लड़की को गायब करने का प्रयत्न किया था।"

ज्यों ही मिस्टर थार्नहिल ने बन्दी और मि० जेन्किन्सन को देखा वह मारे डर के सिकुड़ने लगा। उसका चेहरा अपने अपराध की चेतना से पीला पड़ गया, वह बाहर भागना ही चाहता था कि मिस्टर जेन्किन्सन ने उसे रोक लिया।

"क्या बात है नम्बरदार" उसने कहा "क्या तुम अपने इन दो पुराने साथियों जेन्किन्सन और बैक्सटर से लज्जा करते हो? लेकिन इस तरह सभी बड़े आदमी अपने मित्रों को भूल जाते हैं, लेकिन मैंने तुम्हें कभी न

भूलना तय कर लिया है। हमारे इस बन्दी ने, महाशय जी" उसने सर विलियम को सम्बोधित करते हुए कहा, "सब बातें पहले ही कह दी हैं। यही वह सज्जन हैं जिनके विषय में बुरी तरह से घायल होने की बात कही गई है। यह बताता है कि मिस्टर थार्नहिल ने ही उसे यह काम करने के लिये नियुक्त किया था, यह कपड़े जो वह इस समय पहिने है, इन्हीं के दिये हैं, इन्होंने उसे एक बग्घी भी दी थी जिससे वह देखने में एक भला आदमी जान पड़े। इन्होंने मिलकर यह योजना बनाई थी कि इस लड़की को पकड़ कर वह किसी सुरक्षित स्थान में ले जाय और मार डालने की धमकी देकर भयभीत करें, लेकिन मिस्टर थार्नहिल उसी बीच जाकर उसकी रक्षा करे, जैसे कि वह अचानक ही वहाँ आ गए हों, और तब वे वहाँ कुछ देर तक लड़ने का अभिनय करे और फिर वह तेजी से भाग जाय—जिससे मिस्टर थार्नहिल उसको रक्षा करने वाले के रूप में उसका प्यार आसानी से पा सकें।

सर विलियम ने अपने भतीजे का कोट पहचान लिया, शेष सभी बातें बन्दी ने स्वयं कह दीं: उसने बताया कि मिस्टर थार्नहिल अक्सर कहा करते थे कि वे दोनों बहिनों की ओर एक साथ ही आकर्षित थे।

"ईश्वर!" सर विलियम ने कहा "मैं अब तक इतने नीच पापी को अपने हृदय में स्थान दिये रहा, तुम जनता के प्रति न्यायी होने का ढोंग करते हो। लेकिन तुम्हें इसका दण्ड मिलेगा, बन्द कर दो जेल स्वामी इसे—फिर भी, ठहरो—मुझे डर है कि इसे रोकने का कोई वैधानिक प्रमाण नहीं।"

इस पर मिस्टर थार्नहिल ने बहुत विनीत भाव से कहा कि उनके विरुद्ध इन दो अपराधियों का प्रमाण न माना जाय और उनके नौकरों से उनके चरित्र की सूचना ले ली जाय। "तुम्हारे नौकर" सर विलियम ने उत्तर दिया, "नीच, तुम अब भी उन्हें अपने नौकर कहते हो: लेकिन आओ मैं अभी उनकी बात भी सुनता हूँ, पहले तुम्हारे रसोइए को बुलाता हूँ।"

रसोइए ने आते ही समझ लिया कि मि० थार्नहिल अपने अधिकारों से हाथ धो बैठे हैं। "बताओ मुझे" सर विलियम ने कठोरता से कहा, "क्या तुमने अपने मालिक और उस आदमी को कभी साथ यह कपड़े पहिने हुए देखा है?"—"हाँ मालिक" रसोइए ने कहा, "हजार बार यही तो वह आदमी था जो औरतें पकड़ पकड़ कर लाता था"—"कैसे?" थार्नहिल ने रोककर कहा, "मेरे सामने?"—"हाँ" रसोइए ने उत्तर दिया, "सबके सामने भी; तुम से सच कहता हूँ मि० थार्नहिल मैंने तुम्हें कभी पसन्द नहीं किया और तुमसे अपने मन की बात बताने में मुझे कोई चिन्ता नहीं।"—"तो अब" मि० जेन्किन्सन ने कहा, "बड़े नम्बरदार से मेरे विषय में तुम जो कुछ जानते हो कहो"—"मैं नहीं कह सकता" रसोइए ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारे भी गुण जानता हूँ। उस रात इन महाशय की लड़की को जब फांस कर लाया गया था तब तुम भी तो उपस्थित थे।" "अतएव तब" सर विलियम ने चिल्लाकर कहा "तुम अपने भोलेपन को सिद्ध करने के लिए बहुत अच्छे साक्षी लाए हो: मानवता के कलंक तुम्हारे ऐसे नीचों से सम्बन्ध! लेकिन उन्होंने अपनी बात जारी रखी "तुम बताओ रसोइए क्या यही आदमी था जो तुम्हारे मालिक के लिए इस बुड्ढे आदमी की लड़की भगा कर ले गया था।"—"नहीं मालिक" रसोइए ने उत्तर दिया "यह उसे नहीं लाया था; यह काम तो हमारे नम्बरदार ने स्वयं अपने हाथों से किया था; लेकिन यह एक पादरी को बुला कर लाए थे जिसने उनके विवाह कराने का ढोंग किया था"—"बिलकुल सही" जेन्किन्सन ने कहा, "यह बात बिलकुल सही है, मैं इससे इंकार नहीं करता; यह काम मुझे सौंपा गया था, और मैं इस योजना को न समझ सका था।"

"ईश्वर" सर विलियम ने कहा, "इसकी हर नीचता का खुलना मुझे कितना दुख दे रहा है। इसका हर अपराध अब बिलकुल प्रत्यक्ष है, और मुझे लगता है कि यह सब कष्ट उसने अपने अत्याचार; कायरता और बदला लेने की भावना से किए हैं। मेरी प्रार्थना पर जेल स्वामी,

इस युवक अफसर को मुक्त कर दो और परिणामों के लिए मुझ पर विश्वास करो। मैं अपने मित्र न्यायाधीश को सारी बातें स्पष्ट रूप में समझा दूँगा। लेकिन कहाँ है वह अभागी लड़की? उसे इस नीच का सामना करने के लिए बुलाओ, मैं जानना चाहता हूँ कि इसने उसे किस तरह फुसला लिया उससे यहाँ आने की प्रार्थना करो। कहाँ है वह?"

"अरे महाशय" मैंने कहा, "इस प्रश्न से मुझे हार्दिक क्लेश होता है : एक दिन था जब मैं अपनी बेटी के कारण प्रसन्न था पर उसके दुखों" एक दूसरे कारण से मुझे रुकना पड़ा। इसी बीच कुमारी अराबेला विल्मट आगयी एक दिन बाद ही इनका मि० थार्नहिल से परिणय होने को था। उसे मि० थार्नहिल और सर विलियम को बन्दीग्रह के अन्दर देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ; वह अचानक आगयी थी। बात ऐसी थी कि वह अपने वृद्ध पिता के साथ शहर होकर अपनी चाची के घर जा रही थी उसकी चाची उसका विवाह अपने ही घर से करना चाहती थीं; जलपान के विचार से शहर के दूसरे सिरे पर स्थित सराय में वह रुके थे। वहाँ से इस कुमारी ने मेरे एक बच्चे को खेलते हुए देखा था और तुरन्त एक नौकर को बच्चे को अपने पास लाने की आज्ञा देकर हम लोगों के दुर्भाग्य की बात मालूम की थी; लेकिन उसे यह नहीं पता चल पाया था कि इस सब का कारण मि० थार्नहिल ही है। यद्यपि उसके पिता ने उसको बन्दीग्रह में हम लोगों से मिलने आना अनुचित समझ कर आपत्ति की थी पर उसने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया था; वह मेरे लड़के के साथ हम लोगों से मिलने अचानक आगयी थी।

साधारणतया हम दिन में कितने ही बार कितनों से अचानक मिल जाते हैं, पर विशेष अवसरों को छोड़ कर प्रायः हमें अधिक आश्चर्य नहीं होता। हम अपने जीवन का प्रत्येक आनन्द अपने जीवन की प्रत्येक सुविधा किसी न किसी दैवाधीन अचानक समागम में ही पाते हैं। कितने संयोगों के आपस में मिलने पर हम लोगों को भोजन मिलता है कितने अचानक संयोगों के मिलने पर हमें कपड़ा मिलता है। किसान का काम

करना पड़ता है पानी बरसता है, हवा समुद्री व्यापारियों के जहाज को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती है या उत्पादन की पूरी खपत कैसे हो जाती है क्या सब में संयोग-समागम ही नहीं होता ?

हम लोग कुछ क्षण तक मौन रहे मेरी सुन्दरी शिष्या ने, मैं इस कुमारी को साधारणतया इसी नाम से पुकारता था सद्भावना और आश्चर्य से कहना प्रारम्भ किया—"सचमुच मि० थार्नहिल" यह सोचकर कि वह मेरी मदद करने यहाँ आए थे कष्ट देने नहीं उसने नम्बरदार महोदय को सम्बोधित किया "मैं इसे एक कम सज्जनता की बात मानती हूँ कि तुम यहाँ बिना मुझे लिए हुए चले आए और इस परिवार की ऐसी दशा की तुमने मुझसे बात नहीं चलायी यह परिवार तो तुम्हें भी बहुत प्रिय था तुम जानते हो कि मेरे हृदय में इस सम्मानित परिवार के प्रति कितनी श्रद्धा है, यह वृद्ध सज्जन मेरे गुरु रह चुके हैं और मैं इनका आप से अधिक आदर करती हूँ। लेकिन अब मुझे मालूम पड़ा है कि तुम भी अपने चाचा की तरह छिप कर भलाई करने में आनन्द लेते हो।"

"इन्हे भलाई करने में आनन्द आता है?" सर विलियम ने उसे रोक कर व्यंग्य पूर्वक कहा। "बेटी उसके आनन्द उतने ही तुच्छ हैं जितना कि वह स्वयं। कुमारी वह मानवता का सबसे बड़ा कलंक है। यह वह दुष्ट है जिसने इस बेचारे वृद्ध की बेटी को पथ भ्रष्ट कर दिया, उसकी बहिन के भोलेपन के विरुद्ध चाल चल रहा था, बाप को जेल में ठूँस दिया, और उसके लड़के के शरीर में बेड़ियाँ डलवा दीं क्योंकि इस लड़के ने अपनी बहिन का बदला लेने का साहस किया था। अब देवी मुझे तुम्हें बधाई दे लेने दो, क्योंकि तुम इस राक्षस के आलिंगन से बच गयीं।"

"हे ईश्वर" सुन्दरी लड़की ने कहा, "मैं कितनी अधिक छली जा चुकी हूँ। मि० थार्नहिल ने मुझ से बताया था कि इन वृद्ध सज्जन का बड़ा लड़का, कप्तान प्रिमरोज अपनी नवपरिणीता के साथ अमरीका चला गया था।"

"सुन्दरी कुमारी" मेरी पत्नी ने कहा, "इसने तुमसे सब झूठ कहा है। मेरा लड़का जियार्ज राजधानी छोड़ कर कभी कहीं नहीं गया था और उसने अब तक अपना विवाह भी नहीं किया है। यद्यपि तुमने उसे छोड़ दिया है लेकिन वह तुम्हें इतना अधिक प्यार करता है कि वह अन्य के साथ विवाह की बात भी नहीं सोच सकता; और मैंने उसे कहते सुना है कि वह तुम्हारे लिए अविवाहित मर जायगा।" इसके बाद उसने मेरे बेटे के प्यार की सच्चाई की तारीफ की : उसने मि० थार्नहिल के साथ हुए द्वन्द को न्याय बताया इसके बाद वह मि० थार्नहिल पर जुट पड़ी तथा उसके सारे अपराधों व्यभिचारों का पर्दाफाश करके उसकी इज्जत धूल में मिलाने लगी।

"भगवान!" कुमारी विल्मट ने कहा "मैं बर्बादी की कोर पर पहुँच गयी थी। किन्तु मुझे इससे बच कर बड़ी खुशी है। इस आदमी ने मुझे एक नहीं दस हजार झूँठी बातें बतायी हैं मुझे अपने प्रेम पात्र से निराश करके अपने साथ परिणय के लिए फुसलाने में सफल हो गया था। इसकी झूँठी बातों में आकर मैंने इस वीर और सहृदय से घृणा करना शुरू कर दिया था।"

इस समय तक मेरा बेटा अपने अपराध से मुक्त कर दिया गया थी क्योंकि जिस आदमी को मेरे बेटे ने घायल किया था वह स्वयं ही एक धूर्त और नीच अपराधी था। मि० जेन्किन्सन ने उसके बाल ठीक करने तथा भले आदमी बनने के लिए अन्य आवश्यक सामान लाकर उसकी सहायता कर दी। अब वह अपनी सेना की पोशाक पहन कर आया; उसे जरा भी गर्व नहीं था, वह अपनी इस पोशाक में बड़ा भला लगता था। उसने कुमारी विल्मट को दूर से ज़रा झुक कर अभिवादन किया उसे इस समय कुमारी की मानसिक स्थिति का पता नहीं था। लेकिन कुमारी का प्यार प्रयत्न करने पर भी न छिप सका और गालों की लाली के बहाने बाहर आ गया। उसके आँसू उसकी चितवन सबने मिलकर उसके हृदय की वास्तविक अनुभूति को प्रकट कर दिया। मेरे लड़के को उसकी यह

दशा देख कर आश्चर्य हुआ और उसे इस पर विश्वास न हो सका—"सचमुच कुमारी" उसने कहा, "यह भ्रम है; मैं इस योग्य कभी नहीं था इस तरह से प्यार पाना ही सुख है।"—"नहीं महाशय" उसने कहा "मुझे धोखा दिया गया है नीचता पूर्वक धोखा दिया गया है अन्यथा मैंने अपने वचन के प्रति सत्यता का पालन किया होता। तुम मेरी मैत्री जानते हो—तुम इसे बहुत पहले से जानते हो—लेकिन जो कुछ मैंने किया है, उसे भूल जाओ मैंने तुम्हारे प्रति सच्ची रहने की प्रतिज्ञा की थी अब उसे फिर दुहराती हूँ और विश्वास रखो कि यदि अरावेला तुम्हारी न हुई तो फिर किसी की भी नहीं हो सकती।"—"और तुम किसी दूसरे की नहीं होने पाओगी सर" विलियम ने कहा, "मैं तुम्हारे पिता जी के ऊपर इस बात के लिए प्रभाव डालूँगा।"

मेरे लड़के मोजेज के लिए इतना इशारा काफी था, वह कुमारी के वृद्ध पिता को इन सब बातों की सूचना देने के लिये दौड़ा। इस बीच युवक नम्बरदार ने यह देखकर कि हर तरफ से उनकी पोल खुल गयी है, और चापलूसी अथवा झूठ बोलने से काम नहीं चल सकता तो उन्होंने अपनी निन्दा करने वालों का खुलकर सामना करना चाहा। इस तरह उसने अपनी सारी लज्जा उठा कर एक तरफ रख दिया और पक्के धूर्त की तरह जान पड़ने लगा। "अब मुझे मालूम हुआ" उसने कहा, "कि मेरे साथ यहां न्याय नहीं होगा; लेकिन मैंने तय कर लिया है कि मैं न्याय पाकर ही रहूँगा। तुम्हें मालूम होना चाहिए, महाशय" उसने सर विलियम को सम्बोधित करते हुए कहा "अब मैं कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूँ जो तुम्हारी दया पर आश्रित होऊँ। मैं तुम्हारी दया से घृणा करता हूँ। कुमारी विल्मट की सम्पति को अब मुझसे कोई अलग नहीं कर सकता। उनके पिता जी की बुद्धि और दूरदर्शिता पर मुझे विश्वास है। मैंने उनसे कुमारी विल्मट की सम्पत्ति का दस्तावेज लिखा लिया है; वह मेरे पास सुरक्षित रखा है। मैं उसकी सम्पत्ति के लिए ही उससे विवाह करना चाहता था उसको स्वयं पाने के लिए नहीं। अब मुझे सम्पत्ति

मिल जायगी; कुमारी विल्मट चाहे जिससे विवाह करें, मुझे चिन्ता नहीं।"

यह एक भयानक आघात था। सर विलियम उसके इन अधिकारों के औचित्य को जानते थे क्योंकि विवाह सम्बन्ध की सारी लिखा पढ़ी उन्हीं के हाथों हुई थी। कुमारी विल्मट को भी अपनी सम्पत्ति के चले जाने का विश्वास हो गया अतएव उन्होंने मेरे लड़के जियार्ज को सम्बोधित करके पूछा कि क्या वह उनको इस दशा में भी स्वीकार करेगा? "यद्यपि सम्पत्ति" उसने कहा "मेरे पास नहीं रह गयी पर मैं अपना हाथ तो तुम्हें दे ही सकती हूँ।"

"और प्रियतमे" उसके सच्चे प्रिय ने कहा, "मैं तुमसे वही चाहता भी था; केवल इसी उपहार की मुझे कामना थी। अब मैं दृढ़ता पूर्वक कहता हूँ कि इस समय तुम्हारी धन हीनता मेरे आनन्द में वृद्धि करती है, क्योंकि इससे मुझे तुम्हारे सच्चे प्यार का प्रमाण मिलता है।"

मिस्टर विल्मट ने अब कमरे में प्रवेश किया; वे अपनी लड़की के वर्तमान खतरे से बच जाने पर अधिक प्रसन्न नहीं हुये और सगाई भङ्ग होने की अनुमति दे दी। लेकिन यह जानकर कि उनकी सम्पत्ति जो मिस्टर थार्नहिल को प्रतिभू लिख देने से कानूनन मिल गई थी वापस न होगी, तो उन्हें बड़ा दुख हुआ। उन्होंने देखा कि उनकी सम्पत्ति एक ऐसे आदमी के पास जायगी जिसके पास स्वयं की सम्पत्ति कुछ भी नहीं है। वे उसकी धूर्तता की परवाह न करते पर उसके पास उनकी लड़की की सम्पत्ति के बराबर सम्पत्ति न होना बहुत बुरा था। अतएव वह बैठे हुए बड़ी दुखी मुद्रा में इस समस्या पर विचार कर रहे थे, सर विलियम ने उनके दुख को कम करने का प्रयत्न किया।

"मैं कहूँगा" उन्होंने कहा, "कि तुम्हारी वर्तमान निराशा से मैं नाराज नहीं हूँ। सम्पत्ति की तुम्हारी भीषण लालसा को उचित दण्ड मिला है। यद्यपि नवयुवती धनी नहीं हो सकती, लेकिन उसमें अब भी एक ऐसा गुण है जो संतोष के लिए काफी है। यहाँ पर तुम एक ईमानदार युवक सिपाही

देखते हो जो उसे बिना सम्पत्ति के स्वीकार करने को तैयार है : वे बहुत दिनों से एक दूसरे को प्यार करते आए हैं; और उसके पिता का मित्र होने के कारण उसकी उन्नति में मैं रुचि रखूँगा। अतएव उस लिप्सा को जिससे तुम्हें निराशा होती है छोड़ दो और इस नए सुख को जो तुम्हारी बाट जोह रहा है अपनाओ।"

"सर विलियम" वृद्ध सज्जन ने उत्तर दिया "विश्वास रखो, मैंने अब तक अपनी बेटी की इच्छाओं का कभी भी दमन नहीं किया है और न अब करूँगा ही। यदि वह अब भी इस नवयुवक सज्जन से प्यार करती है तो मैं हृदय से कहता हूँ वह उसे अपना ले, मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी। ईश्वर की कृपा से अब भी कुछ सम्पत्ति शेष है और तुम्हारे वचन देने से वह कुछ और बढ़ जायगी। केवल मेरे पुराने मित्र" (मुझे) "को प्रतिज्ञा कर लेने दो कि जब उसके पास सम्पत्ति होगी तो मेरी लड़की को छः हजार पाउण्ड देंगे और मैं इनके परिणयोत्सव में खुशी मनाने वाला पहला आदमी होऊँगा।"

अब केवल मुझ पर नव दम्पत्ति के प्रसन्न करने का काम रह गया था अतएव मैंने उसकी बात स्वीकार करने का वचन दे दिया; सम्पत्ति पाने की मुझे कोई आशा न थी अतएव मैंने इसे कोई बहुत बड़ी करुणा नहीं समझी। मैंने देखा कि दोनों ने प्रसन्नता से एक दूसरे का आलिंगन कर लिया, मैं आनन्द विभोर हो गया। "अपने सब अभाग्यों के बाद" मेरे लड़के जियार्ज ने कहा, "मुझे यह पुरस्कार मिला है। वास्तव में मैंने इतने बड़े पुरस्कार की कभी आशा भी न की थी। इतने दुख के बाद इतना बड़ा पुरस्कार। मैं इतने आनन्द की कभी कल्पना भी नहीं कर सका।"

"हाँ मेरे जियार्ज" खूबसूरत दूल्हन ने कहा, "लेने दो उस पतित को मेरी सम्पत्ति; तुम बिना सम्पत्ति के ही प्रसन्न हो और मैं भी; मैंने कितनी अच्छी बदली की है—एक सबसे नीच मनुष्य को देकर एक सर्वोत्तम मनुष्य पा लिया है। उसे मेरी सम्पत्ति का आनन्द लेने दो मैं गरीबी में आनन्द उठाऊँगी।"

—"और मैं तुम्हें वचन देता हूँ" मिस्टर थार्नहिल ने घृणा दिखाते कहा "कि मैं जिससे तुम घृणा करती हो पाकर आनन्द उठाऊँगा।"—"शांत शान्त" जेन्किन्सन ने कहा "उस दस्तावेज के विषय में दो शब्द कहने हैं—कुमारी की सम्पत्ति का एक अधेला भी तुम अपने लिए खर्च नहीं कर सकते महाशय जी" उसने सर विलियम को संबोधित करते हुए कहा "क्या यह नम्बरदार महोदय कुमारी की सम्पत्ति को उस दशा में भी पा सकते हैं जब उनका विवाह अन्य किसी के साथ हो गया हो ?"

"—तुम इतनी साधारण सी बात कैसे पूछते हो ?" सर विलियम ने उत्तर दिया "बेशक, वह नहीं पा सकता—।"

—"इसके लिये मुझे अफसोस है" जेन्किन्सन ने कहा "क्योंकि मैं इनका लंगोटिया यार था और अब भी हूँ। लेकिन मैं कहूँगा, क्योंकि मैं उसे प्यार करता हूं, यह दस्तावेज चिलम के अन्दर रखे हुये ढेले के बराबर भी मूल्य नहीं रखता, क्योंकि मेरे मित्र का विवाह पहले ही हो चुका है।"
—"तुम झूठ बोलते हो।" नम्बरदार महोदय ने जो अपनी इस बेइज्जती में क्रोधित हो गये थे कहा, "वैधानिक रूप से अब तक मेरा विवाह किसी स्त्री के साथ नहीं हुआ।"

"मुझे क्षमा कीजिये" दूसरे ने उत्तर दिया, "तुम्हारा विवाह हो चुका है : और मुझे विश्वास है कि तुम अपने ईमानदार जेन्किन्सन को उसकी मैत्री का अच्छा बदला दोगे; मैं तुम्हारे लिए एक पत्नी लाया था; और यदि थोड़ी देर अपने कौतूहल को शान्त रखो तो मैं अभी आप लोगों के सामने ला सकता हूँ।" यह कहता हुआ वह बाहर चला गया, सदा की तरह मुस्कराता हुआ; हम लोग उसकी इस चाल का कुछ भी अन्दाज नहीं लगा सके। "जाने दो उसे" नम्बरदार ने कहा; "मैंने और चाहे जो कुछ भी किया हो, इस विषय में मैं उसे चुनौती देता हूँ। मैं अब बच्चा नहीं हूँ जो इस तरह धमकियों से डर जाऊँगा।"

"मुझे आश्चर्य है" सर विलियम ने कहा, "यह आदमी क्या करना चाहता है। मैं कल्पना करता हूँ कि वह कोई भद्दी मजाक करना चाहता

है।"—"शायद" मैंने उत्तर दिया "उसका उद्देश्य और अधिक गम्भीर हो। जब हम ध्यान देते हैं कितनों को इसने पथभ्रष्ट किया है, कितने मां बाप इसकी नीचता के कारण बेदना भी उठा रहे हैं तो मुझे आश्चर्य न होगा यदि उनमें से कोई एक—आश्चर्य! क्या मैं अपनी खोयी हुई लड़की को देख रहा हूँ? क्या यह वही है? यह मेरी जिन्दगी है, मेरी प्रसन्नता है। औलीविया मैंने सोचा था तुम अब न मिलोगी पर तुम मिल गईं—तुम अब मुझे प्रसन्नता देती रहोगी।" अत्यधिक आकर्षित प्रेमी से भी अधिक मुझे आनन्द मिला, उसने मेरी बेटी को ला खड़ा किया; वह चुप थी आनन्द सारे मुख से फूटा पड़ रहा था।

"क्या तुम मुझे" मैं चिल्ला पड़ा "मेरे बुढ़ापे में सुखी करने को लौट आयी?" यह वही है जेन्किन्सन ने कहा "यह तुम्हारी ही लड़की है, पूर्ण ईमानदार और सच्चरित्र; और मेरे दोस्त, थार्नहिल, यह महिला तुम्हारी वैध परिणीता है! अपने सत्य की पुष्टि के लिये मेरे पास यह पत्र है जिसमें सब कुछ लिखा है।" इतना कहते हुये उसने पत्र को सर विलियम के हाथों पर रख दिया, उन्होंने पढ़ कर देखा तो वह हर दशा में पूर्ण था और अब सज्जनों" उसने कहा "मैं तुम सबको आश्चर्य चकित देख रहा हूँ; लेकिन थोड़ी बात में आपकी परेशानी दूर हो जायगी।"

मेरे यह सम्मानित नम्बरदार ने जो मेरा एक अभिन्न मित्र है (लेकिन वह हम दो के ही बीच की बात है) अपने ऐसे ही छोटे मोटे कामों के लिये मुझे नौकर रख छोड़ा था। एक बार इन्होंने मुझसे एक बनावटी पुरोहित और कृत्रिम अनुमति लाने के लिए कहा, वे इस महिला को पथभ्रष्ट करना चाहते थे। पर चूँकि मैं इनका सच्चा मित्र था इसलिए एक सच्चा पुरोहित और वास्तविक अनुमति ले आया और दोनों का विवाह सम्मानित शीघ्रता से करा दिया। शायद आप सोचेंगे कि यह मेरी सहृदयता थी जिससे मैंने यह सब कुछ किया किन्तु नहीं. मुझे लज्जा आती है फिर भी मैं बताता हूँ मेरी चाल केवल यह थी, मैं यह अनुमति पत्र अपने पास रखना चाहता था और नम्बरदार महोदय को यह बता देना चाहता था कि मैं उनके

विरुद्ध जब चाहूँ इसे सिद्ध कर सकता हूँ, और इस तरह जब मुझे धन की आवश्यकता होती कान पकड़ कर ले लेता।" सारे आदमियों में खुशी की एक लहर दौड़ गई। हम लोगों की खुशी बड़े कमरे में भी पहुँची जहां पर सब ने अपनी सहानुभूति प्रकट की, खुशी में उन्होंने अपनी हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ हिला कर झन झन की ध्वनि की।

हर मुख पर प्रसन्नता फैल गई और ओलीविया के गाल भी प्रसन्नता से लाल हो गए। इस तरह सम्मान, मित्र, सम्पत्ति सबके साथ मिल जाने से मुझे बड़ी खुशी हुई और मेरा गिरा हुआ स्वास्थ्य संभलने लगा। लेकिन शायद सबसे अधिक प्रसन्नता मुझे हुई। उसको मैंने अपनी गोद में लिए हुये अपने हृदय से पूछा कि कहीं यह सब मेरा भ्रम ही तो नहीं है। "तुमने" मैंने जेन्किन्सन को सम्बोधित करते हुए कहा "ओलीविया की मृत्यु का झूठा समाचार देकर मेरे दुख को क्यों बढ़ाना चाहा था! लेकिन कोई बात नहीं; मुझे उसे दुबारा पाकर उसके अभाव में उठायी हुई तकलीफों की अपेक्षा अधिक सुख है।"

"तुम्हारे प्रश्न" जेकिन्सन ने कहा "का उत्तर आसान है। मैंने सोचा कि बन्दी ग्रह से तुम्हें छुड़ाने का सबसे अच्छा तरीका तुम्हारा झुक जाना और नम्बरदार महोदय को उनके पुनर्विवाह की स्वीकृति देना है। लेकिन तुमने यह सब अपनी लड़की के होते अस्वीकार करने को कहा था : अतएव मुझे और कोई रास्ता न सूझा और मैंने कहला दिया कि वह मर गयी है। मैंने तुम्हारी पत्नी को इस धोखेबाजी में शामिल कर लिया था और अब तक सही बात बताने का अवसर नहीं मिल पाया था।"

सारे उपस्थित लोगों में केवल दो ऐसे थे जिनके मुख पर प्रसन्नता नहीं थी। मि० [illegible]ल के विश्वास ने उनका साथ छोड़ दिया था; उसने अपने सामने बदनामी और निर्धनता का कूप देखा वह इसमें डूबने के भय से काँप उठा। वह अपने चाचा के पैरों पर गिर पड़ा और एक बहुत दुख पूर्ण रुदन के स्वर में क्षमा के लिए प्रार्थना करने लगा। सर विलियम उसे ठोकर मारकर निकालने जा रहे थे पर मेरी प्रार्थना पर उन्होंने उसे

उठा लिया। "तेरे पाप तेरे अपराध और तेरी कृतघ्नता" उन्होंने एक क्षण रुकने के बाद कहा "किसी तरह की दया के योग्य नहीं; फिर भी तुम्हारा पूर्ण परित्याग नहीं किया जायगा—"

"तुमको जीवन का पालन करने भर के लिए कुछ सम्पत्ति दी जायगी। यह नव युवती तेरी पत्नी, तेरी पूर्व सम्पत्ति के एक तिहाई की स्वामिनी होगी और केवल उसकी इच्छा से तुझे खर्च करने के लिए धन मिला करेगा" वह उनकी इस दयालुता के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करने जा ही रहा था कि सर विलियम ने उसकी बात काटते हुए कहा कि वह बोल कर अपनी नीचता जिसका पर्याप्त उदाहरण दे चुका है अब न दिखाए। उन्होंने उसी समय उससे निकल जाने को कहा और पुराने नौकरों में से केवल एक नौकर जिसे वह पसन्द करे चुन लेने की आज्ञा दी।

जब वह चला गया तो सर विलियम ने अपनी नयी भतीजी से प्रसन्न होने के लिए कहा। मि० विल्मट ने भी यही किया। मेरी पत्नी ने बड़े प्यार से अपनी बेटी को चूम लिया, सोफिया और मोजेज प्रसन्न थे; मेरे मित्र जेन्किन्सन ने भी इस आनन्द में भाग लेना चाहा। हम लोगों को बड़ा संतोष हुआ। सर विलियम ने जिनको परोपकार और भलाई करने में सर्वाधिक आनन्द आता था, अब अपने चारों तरफ़ देखा तो सोफिया को छोड़ कर सब लोग प्रसन्न दिखायी दिए; सोफिया किन्हीं अज्ञात कारणों से संतुष्ट नहीं जान पड़ती थी।

"मैं अब सोचता हूँ" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा "कि एक दो को छोड़कर सब मुस्कराते हुए दिखायी पड रहे हैं। मुझे न्याय का केवल एक काम करने को बाकी रह गया है। तुम बुद्धिमान हो, महाशय जी," उसने मुझे संबोधित करते हुए कहा; "तुम्हें मि० जेन्किन्सन के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये; और यह बहुत उचित है कि हम उसे इस के लिए पुरस्कृत करें। मुझे विश्वास है कि कुमारी सोफिया उसे प्रसन्न कर सकेंगी, और मैं उसे पाँच हजार पाउण्ड सम्पत्ति के रूप में दूँगा;

और इतने धन से मुझे विश्वास है वे आराम से रह सकते हैं। आओ: कुमारी सोफिया तुम मेरी इस इच्छा के विषय में क्या कहती हो? क्या तुम उसे स्वीकार करोगी?"

मेरी लड़की अपनी माँ की गोद में इस गन्दे प्रस्ताव को सुन कर मुर्झाती सी दिखायी पड़ी।

"उसे स्वीकार करूँ?" उसने काँपती आवाज में कहा, "नहीं महाशय, कभी नहीं"—"क्या" उसने फिर कहा 'मि० जेन्किन्सन को नहीं स्वीकार करोगी, वह तुम्हारा हितैषी है, सुन्दर है वह नवयुवक उसके पास है पाँच हजार पाउन्ड की सम्पत्ति"—"मैं क्षमा चाहती हूँ" उसने बड़ी कठिनाई से बोलते हुए उत्तर दिया "मुझे इतना न करो, मैं क्षमा चाहती हूँ।"—"क्या उससे जिद्दी और कोई भी है" उन्होंने फिर कहा "जो अपने पूरे परिवार को कृतज्ञ बनाने वाले को अस्वीकार कर रही हो, उसने तुम्हारी बहिन को सुरक्षित रखा है, और जिसके पास पाँच हजार पाउण्ड है। क्या! उसे स्वीकार न करोगी।"

"नहीं जनाब, कभी नहीं" उसने क्रोध से कहा; "मैं इसके पहिले मर जाऊँगी।"

"यदि ऐसी बात है" उसने कहा "यदि तुम उसे स्वीकार न करोगी—तो मैं सोचता हूँ मैं तुम्हें अपना बना लूँ।" और इतना कहते हुए उसने उसे छाती से लगा लिया।

"मेरी सबसे सुन्दर, सबसे बुद्धिमान लड़की" उसने कहा "तुम कैसे सोचती थीं कि तुम्हारा वर्चेल तुम्हें कभी धोखा दे सकता है या सर विलियम थार्नहिल कभी उस लड़की को प्यार किए बिना कैसे रह सकते हैं जो उनसे प्रेम रखती है उनके धन अथवा वैभव से नहीं? मैं बहुत दिनों से एक ऐसी पत्नी की खोज में था जो मेरी सम्पत्ति के कारण नहीं वरन् मेरे मानव गुणों के कारण मुझसे प्यार कर सके। सुन्दर और बद सूरत सब तरह की औरतों को ढूँढ़ने के बाद भी असफल रहा और ऐसी स्थिति में तुम जैसी देव दुर्लभ योग्य सुन्दरी को पाकर मैं आनन्द

विभोर हूँ" तब उन्होंने जेन्किन्सन को सम्बोधित किया : "मैं इस लड़की को अपने से अलग नहीं कर सकता, क्योंकि यह मुझ से केवल मेरे लिए प्रेम करती है, इसलिए मैं इसका हरजाना आपको दे सकता हूँ; और तुम कल मेरे खजांची से इस लड़की की सम्पत्ति, पाँच हजार पाउण्ड ले सकते हो।" हम सब ने अपनी कृतज्ञता प्रकट की। श्रीमती थार्नहिल ने सब को उसी तरह अभिवादन किया जिस तरह उसकी बहिन पहिले कर चुकी थी। इसी बीच सर विलियम के एक सहायक ने बताया कि हम लोगों को सराय ले जाने के लिये बग्घियाँ तैयार थीं, जहाँ पर हम लोगों के स्वागत की पूरी तैयारी थी; मैं अपनी पत्नी के साथ सबसे आगे की बग्घी पर थाँ।

सहृदय सर विलियम ने बन्दियों को चालीस पाउण्ड बांटने की आज्ञा दी, मि० विल्मट ने इससे उत्साहित होकर बीस पाउण्ड बांटने के लिए स्वीकृति दी। गाँव वालों ने नारे लगा कर हम सब का स्वागत किया मैंने अपने गाँव के भी कुछ इमानदार लोगों को देखा और उनसे हाथ मिलाया। उन लोगों ने सराय में हम लोगों की दावत में भाग लिया और जनता में भी बहुत से पुरस्कार बाँटे गए।

भोजन के बाद मुझे कुछ थकावट मालूम पड़ी और विश्राम करना चाहा; सबकी अनुमति मिल जाने के बाद मैं एक शान्त कमरे में आया और आनन्द तथा दुखों के देने वाले उस परम पिता से अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के पश्चात् सुख से बिस्तर पर लेट गया [illegible] तक सोता रता।

३२

दूसरे दिन सबेरे जब मैं उठा तो मैंने देखा कि मेरा लड़का सिरहाने बैठा हुआ था, वह मेरे आनन्द को बढ़ाने के लिए एक शुभ सम्वाद लेकर आया था। मैंने पिछले दिन उसके लिए जो सम्पत्ति निर्धारित की थी उसको मुझे वापस करने के लिए कहते हुए उसने मुझे बताया, कि मेरा व्यापारी जो शहर में असफल हो गया था, सेएट वर्थ में पकड़ लिया गया है और वहाँ पर उससे बहुत ज्यादा सम्पत्ति प्राप्त हुई है, अब हम सबको अपनी खोयी हुई सम्पत्ति फिर से मिल जायगी। मुझे अपने बेटे की सहृदयता और आने वाली सम्पत्ति के विषय में सुन कर प्रसन्नता हुई; लेकिन मैं संदेह में था कि क्या मुझको उनका यह धन स्वीकार करना चाहिए। जब मैं यह सोच रहा था, सर विलियम कमरे में आए; मैंने अपने संदेह कहे। उनकी राय थी कि मेरे लड़के को उसकी शादी में वैसे ही असीमित सम्पत्ति मिल गयी है मैं यह धन बिना किसी हिचक के स्वीकार कर [illegible] हूँ। वह मेरे पास इस लिए आए थे कि वे वैवाहिक अनुमति पत्रों की जिनको उन्होंने मगाया था, आने की बाट जोह रहे थे, और मुझसे उस अवसर पर आने की प्रार्थना की। जब हम लोग बात चीत कर रहे थे तो एक नौकर ने आकर बताया, कि अनुमति पत्र आ गए हैं; और मैं अब तक चलने के लिए तैयार हो चुका था, मैंने जाकर

देखा सभी लोग, अत्यधिक प्रसन्न थे। चूँकि वे इस समय एक गम्भीर और पवित्र कार्य के लिये तैयार हो रहे थे, उसकी इस अत्यधिक प्रसन्नता को देख कर मैं बहुत नाराज हुआ; मैंने बताया कि इस शुभ अवसर पर उन्हें गम्भीरता और शालीनता पूर्ण व्यवहार करना चाहिए और उनको तैयार करने के लिए मैंने एक धर्मोपदेश किया और इस अवसर के लिए लिखा हुआ अपना लेख पढ़ कर सुनाया। लेकिन फिर भी वे लोग बिलकुल हठी और मेरी बातों को न मानते दिखायी दिए। उस समय भी जब हम सब चर्च जा रहे थे उनमें कोई गम्भीरता नहीं दिखायी पड़ती थी, मैं बार बार गुस्से से कुछ कह देना चाहता था। चर्च में एक और नया उभय सम्भव भ्रम सामने आया जो आसानी से हल नहीं किया जा सकता था। यह था कि किस युग्म का परिणय पहले हो : मेरे लड़के की दूल्हन ने जिद की कि लेड़ी थार्नहिल (होने वाली) का परिणय पहले हो; लेकिन दूसरे ने भी इसका उतनी ही तेजी से विरोध किया। कुछ देर तक दोनों ने अपने तर्कों का समर्थन समान रूप और सज्जनता के साथ किया! लेकिन चूँकि मैं पुस्तक लिए तैयार खड़ा था और इस विवाद से परेशान सा हो रहा था, मैंने कहा "मैं देखता हूँ कि तुम में से कोई भी विवाह नहीं करना चाहता, और तब अच्छा है कि हम सब वापस चले जाँय; सोचता हूँ यह झगड़ा तय होने का नहीं।" इससे उनमें चेतना आ गयी। सर विलियम का परिणय पहले हुआ और फिर मेरे लड़के और उसकी साथिन का।

मैंने पहले ही से, सबेरे आज्ञा दे रखी थी कि मेरे ईमानदार पड़ोसी फ्लैमबोरो के लिए बग्घी भेज दी जाय; जब हम लोग सराय लौटे तो फ्लैमबोरो की दो कुमारियों को बग्घी से उतरते हुए देखा। मि० जेन्किन्सन ने बड़ी लड़की की तरफ अपना हाथ बढ़ाया और मेरे लड़के मोजेज ने छोटी की तरफ (और मैंने जब से देखा है कि वह लड़की को सचमुच पसन्द करता है; और जब कभी वह चाहेगा मैं अपनी स्वीकृति और आशीर्वाद दोनों ही उसके साथ कर दूँगा।) जब हम लोग सराय पहुँचे तो मैंने

देखा कि मेरे गांव के लोग मेरी सफलता के लिए बधाई देने के लिए आए थे; लेकिन शेष लोगों में वे भी थे जो मुझे छुड़ाने के लिए पिछली बार दौड़े थे और इसके लिए मैं उनसे नाराज भी पड़ गया था। मैंने अपने दामाद सर विलियम से कहानी बतायी तो उन्होंने आकर उनको कठोरता से डांटा; लेकिन उन्हें अपनी डांट से अत्यधिक निराश हुआ समझ कर उन्हें आधी गिन्नी शराब पीने के लिए दी।

इसके शीघ्र बाद मि० थार्नहिल के रसोइए ने स्वयं आयोजित एक मन बहलाव में भाग लेने के लिए हम लोगों को आमंत्रित किया। इस आदमी के विषय में यह बताना अनुचित न होगा कि अब वह एक मित्र की भाँति अपने एक सम्बन्धी के घर में रहता है, सब लोग इसे पसन्द करते हैं और वह हम लोगों के बगल में तभी बैठता है जब कमरे में और कहीं बैठने का स्थान नहीं होता; सब उसे घर का ही मानते हैं। उसका काफी समय अपने सम्बन्धी के साथ बीत जाता है। मेरी बड़ी लड़की अब भी अफसोस के साथ उसे याद करती है : और उसने मुझसे हमेशा बताया है, यद्यपि मैं इसे बहुत गुप्त रखता हूँ: कि जब वह अपना सुधार कर लेगा तो वह उसे क्षमा कर देगी।—लेकिन, मैं अपने विषय से दूर जा रहा था; प्रश्न यह था कि मेरी बड़ी लड़की पूर्व विवाहिता होने के नाते दोनों नयी दूल्हनों से ऊपर क्यों न बैठे; लेकिन विवाद को मेरे लड़के जियार्ज ने छोटा कर दिया, उसने कहा कि सब लोग बराबर अपनी अपनी पत्नियां के साथ बैठेंगे। मेरी पत्नी को छोड़ कर इस प्रस्ताव से सबको बड़ी प्रसन्नता हुई। मेरी पत्नी मेज के किनारे सबसे ऊपर बैठने की इच्छा रखती थी, वह चाहती थी कि स्वयं अपने हाथ से ही भोजन परोसे। लेकिन [illegible] समझते हुए, हम लोगों की हंसी वर्णन करना असम्भव है। मैं नहीं कह सकता कि इस समय हम लोगों में सदा से अधिक वाक्पटुता आ गयी थी; पर इतना निश्चित है कि हम लोग हँसे खूब थे। एक मजाक मुझे विशेष कर याद है वृद्ध मि० विल्मट मेरे लड़के मोजेज के स्वास्थ्य के लिए शराब पी रहे थे, जिस पर मोजेज ने जो

दूसरी तरफ देख रहा था, "देवि, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ," कहा। जिसे मि० विल्मट ने अपनी आँख मटकाते हुए कहा कि वह अपनी भावी पत्नी की बात सोच रहा है। इस मजाक पर, मुझे लगा कि फ्लैमबोरो की दोनों लड़कियाँ हंसते हंसते मर जायेंगी। जब भोजन समाप्त हुआ तो मैंने सदा की भाँति मेज को हटवा दिया और इच्छा प्रकट की कि मेरा सारा परिवार जलती हुई आग के किनारे बैठे जिससे मैं एक बार फिर से अपने पुराने दिनों की याद कर और अधिक प्रसन्न हो सकूँ। मेरे दोनों बच्चे मेरी गोद में बैठ गए और शेष लोग अपनी अपनी पत्नियों के साथ। मुझे कब्र के इस तरफ किसी वस्तु की इच्छा न रह गयी थी: मेरी सभी चिन्तायें समाप्त हो चुकीं थीं; मेरा आनन्द अकथनीय था। अब केवल इतना शेष रह गया था कि सम्पत्ति के दिनों में मेरी कृतज्ञता निर्धनता के दिनों से भी अधिक बढ़े।

इति

मुद्रक—रामायण प्रेस, प्रयाग।